पुस्तक की प्रेरणा

बड़े भाईजी व भोजाईजी मेरे लिए माता पिता ही थे। १९५६ में बम्बई आकर छठी कक्षा में भर्ती हुआ, तबसे मेरे सारे जीवन को इन्होंने ही ढाला। मेरा बचपन, मेरी पढाई लिखाई, मेरा विवाह, मेरा बिज़नेस में लगना, मेरे बच्चे होना, बच्चों का बड़ा होना, बच्चों का विवाह होना, मेरे पोते पोतियां होने तक सब कुछ भाइजी ने ही संभाला। सब कुछ उनके ही मार्गदर्शन में, उनकी ही छत्रछाया में हुआ। हमें उनके मार्गदर्शन की एक लत सी लग गयी थी। सात भाइयों में सब से छोटा होने के कारण मुझे आशीर्वाद लेने की आदत थी और आशीर्वाद देने वाले भी बहुत थे।

बचपन से मैं देखता आया था कि चाहे बिज़नेस की समस्या हो या पारिवारिक समस्या हो या समाज की समस्या, भाईजी मानो पैदा ही उन समस्याओं को हल करने के लिए हुए थे ।

इस आपाधापी के जीवन में कल्पना ही नही की कि ऐसा भी हो सकता है कि एक दिन भाईजी नहीं रहेंगे। अब जब पारिवारिक समस्याएं सामने आती हैं तब भाईजी की अनुपस्थिति महसूस होती है।

देहावसान के बाद जो अनगिनत व्यक्तियों ने भाईजी के बारे में अपने भाव प्रकट किये, अपने अनुभव शेयर किये तब मुझे लगा कि यदि इन सब बातों को लिपिबद्ध नहीं किया तो परिवार व समाज बहुत अनमोल बातों से वंचित रह जाएगा। यह भी लगा कि मैं ही वह सौभाग्यशाली हूँ जिसने बहुत लम्बे समय तक बहुत करीब से भाईजी के सभी रूपों को देखा है और थोड़ी बहुत लेखन कला भी आती है। अंदर ही अंदर पता नहीं कौन प्रेरणा भी दे रहा था। तो फिर लिखना शुरू कर दिया। पर शुरू करने के बाद समझ में आया कि यह काम सोचा था, उतना छोटा नहीं था।

अब उपाय भी नहीं था। परिवार और माहेश्वरी समाज जान चुका था कि मैंने लिखना शुरू कर दिया है। आगे बढ़ने के अलावा कोई चारा नहीं था। कोई अदृश्य शक्ति इसे पूरा करने के लिए मुझे मानों ढकेल रही थी। यह अंदाज बिलकुल नहीं था कि यह लेखन इतना समय लेगा और इतनी रातें खराब करेगा। फिर भी मैंने सोचा था दो तीन साल, और लग गए पूरे नौ साल! इसके लिए सभी पाठकों से क्षमायाचना ।

भाईजी को पूरा जानना हो तो तीन तरह से जानना होगा। उनकी जीवनी , उनके लिखे लेख और उनके बारे में उनके करीबियों द्वारा लिखे श्रद्धा सुमन। यही तीनों इस पुस्तक में संकलन करने का एक किंचन प्रयास है। यदि इसमें ५% भी सफलता मिली तो कृतकृत्य समझूंगा।

यदि यह पुस्तक पढ़ी गयी, पसंद की गयी तो उसका श्रेय भाईजी के प्रेरणादायक जीवन को ही है।

आज की नयी पीढ़ी के लिए पुस्तक इंग्लिश में चाहिए पर वे मोबाइल और कंप्यूटरमय जीवन जी रहे हैं इसलिए सोचा है कि English version soft copy के रूप में ही circulate करें।

इस पुस्तक की कम्पोजिंग व छपाई में श्रीमती वैशाली बापट व श्री रमेश मधुश्री काबरा के योगदान के लिये हार्दिक धन्यवाद!

विनीत
जयप्रकाश तापड़िया
जुलाई २०२३

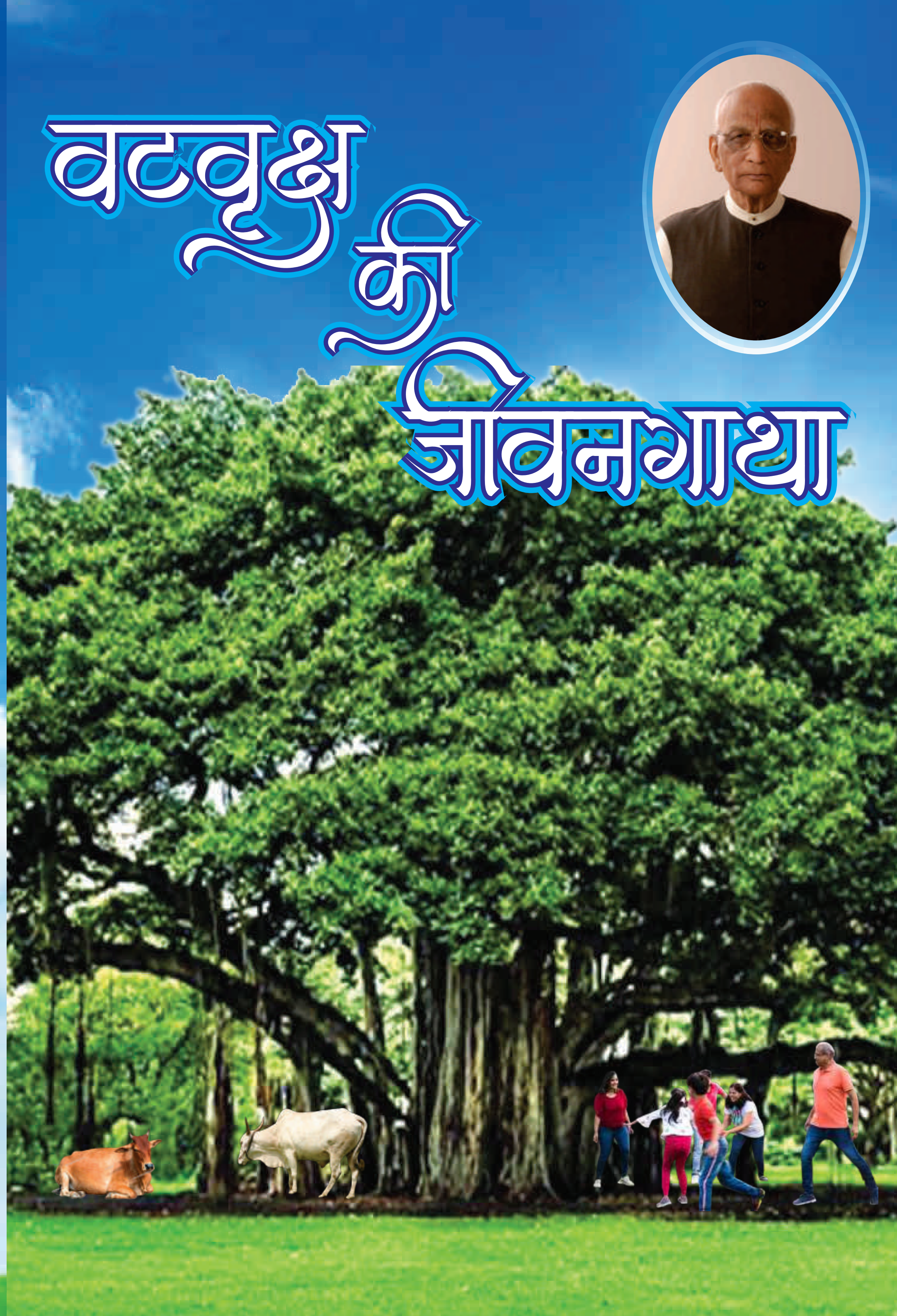

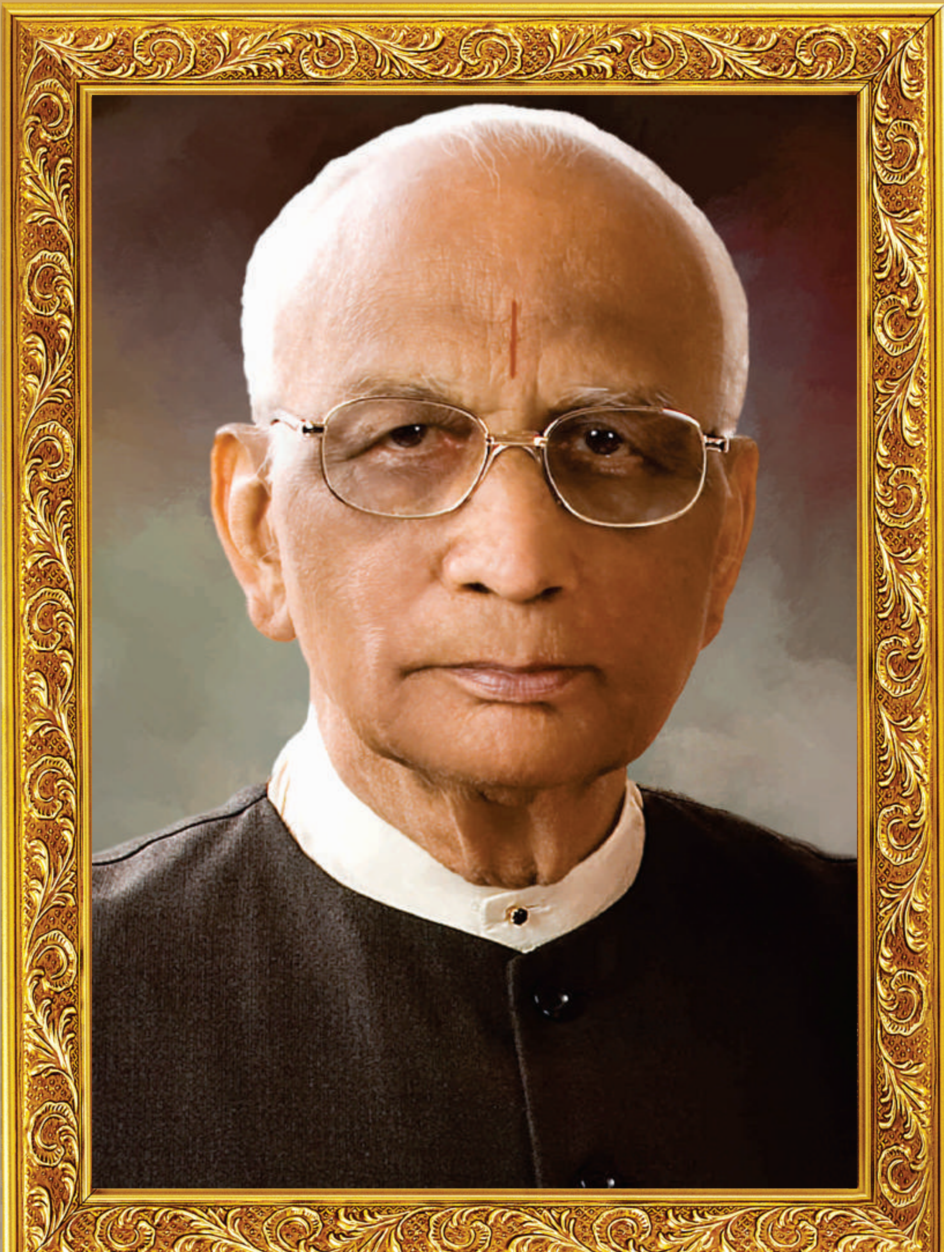

कीर्तिशेष श्री श्रीरामजी तापड़िया

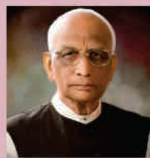

ता पड़िया परिवार के उपवन में अविरत

बहती समयधारा के तट पर 60 वर्षों से
अविचल खड़े है पीपल के विशाल तरूवर !

तुम अद्बितीय हो !!!

- आपत्तिकाल हो या उत्सवकाल, तुम्हारी विशाल शाखारूपी बाहें सदैव सहायता के लिये फैली रहतीं है ।
- तुम्हारे कोटर के आश्रय में अनगिनत नन्हे घर बसे है ।
- तुम्हारी शीतल छाया ने अनगिनत जीवन पथिकों को नई ऊर्जा व प्रेरणा प्रदान की है । प्रचण्ड आतप तीव्र झंझावात व शिशिर को झेलकर अपने आश्रितों के जीवन को अधिकाधिक सुख-शान्तिमय बनाये रखना यही तुम्हारा निरपेक्ष चिरध्येय है ।
- हम सीमित ऊँचाई के लता गुल्म कैसे समझ पाये कि तुम्हारा मस्तक जीवनाकाश के किस उच्च स्तर पर चिन्तनरत रहता है ?

पर हम जानते है कि तुम्हारे बिना हम सब यह उपवन
और यह निश्चिन्तता का वशीवादन एक स्वप्नमात्र है।
अतः हे कर्मयोगी । तुम्हारे सुकोमल पल्लव शतशत
बसन्त तक अपने मञ्जुल रव से हमे लोरियाँ और
मृदुस्पर्शी आशीर्वाद प्रदान करते रहे ।

२४ अक्टूबर १९८८

''वटवृक्ष की जीवन गाथा'' का विमोचन समारोह

श्री श्रीराम तापड़िया स्मृति सेवा कोष के अन्तर्गत, माहेश्वरी प्रगति मण्डल, मुम्बई द्वारा
दि. १६ जुलाई २०२३ को माहेश्वरी भवन अंधेरी में आयोजित सामाजिक विषयों की
प्रबोधन पुष्पमाला के अष्टम् पुष्प में उद्‌बोधन हेतु पधारे,
आर्ष गुरूकुल महाविद्यालय एटा, उ.प्र. के प्रधानाचार्य
डॉ. श्री वागीशजी शर्मा के करकमलों से
स्मृतिशेष भाईजी श्री श्रीरामजी तापड़िया की जीवनी पर आधरि़त पुस्तिका
''वटवृक्ष की जीवन गाथा'' का विमोचन सम्पन्न हुआ।

श्री श्रीराम तापड़िया स्मृति सेवा कोष के अन्तर्गत, माहेश्वरी प्रगति मण्डल, मुम्बई द्वारा आयोजित सामाजिक विषयों की प्रबोधन पुष्पमाला के गणमान्य अतिथि

Pratham Pushp 2016

Dwitiya Pushp 2017

Tritiya Pushp 2018

Chaturth Pushp 2019

Pancham Pushp 2020

Shashtam Pushp 2021

Saptam Pushp 2022

Astham Pushp 2023

सेवा, स्नेह, समर्पण एवम् सामाजिक चिन्तन के प्रणेता श्री श्रीरामजी तापड़िया का वैकुण्ठवास २ २ जुलाई २ ० १ ४ को हुआ। भाईजी की वसीयत के अनुसार प्राप्त अनुदान से श्री श्रीराम तापड़िया स्मृति सेवा कोष की स्थापना उनके प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर माहेश्वरी प्रगति मण्डल, मुम्बई द्वारा की गई। कोष का मुख्य उद्देश्य सामाजिक विषयों पर प्रबोधन हेतु विचार गोष्ठी, लेख, साहित्य रचना इत्यादि के माध्यम से प्रचार प्रसार करना है। तद्नुसार वर्ष २ ० १ ६ से वर्ष २ ० २ ३ तक ८ आयोजन मण्डल द्वारा सम्पन्न हुए जिनका विवरण निम्नानुसार है।

पुष्प	दिनांक	वक्ता	विषय
प्रथम	10.04.2016	स्व. श्री रमेशचन्द्रजी लाहोटी (सर्वोच्च न्यायालय के निवृत्तमान मुख्य न्यायाधीश)	सार्थक जीवन के सूत्र
द्वितीय	21.05.2017	राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी शिवानी बहन (Renowned Spiritual & Inspirational Speaker) (प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय)	मेरे साथ ही ऐसा क्यों!
तृतीय	19.08.2018	डॉ. संजयजी मालपाणी (शिक्षाविद् प्रेरणादायक वक्ता एवम् गीता परिवार के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष)	हंसते हुए जिन्दादिली से जिये
चतुर्थ	21.07.2019	डॉ. हंसाजी योगेन्द्र (योग गुरू एवम् डायरेक्टर, योगा इन्स्टीट्यूट, सान्ताक्रुज -पू.)	योग, स्वास्थ्य एवम् परिवार
पंचम्	30.08.2020	श्री सुभाषजी मुन्धड़ा (Ex Dy. Gov. Reserve Bank of India)	वर्तमान परिवेश की सामाजिक व आर्थिक चुनौतियाँ
षष्टम्	25.07.2021	स्वामी डॉ. ज्ञानवत्सलजी BAPS स्वामीनारायण संस्था (Renowned Social & Spiritual Motivational Speaker)	सकारात्मक सोच - सुखी जीवन की कुँजी
सप्तम	31.07.2022	पद्मश्री मनोजजी जोशी (विख्यात अभिनेता एवम् प्रखर प्रवक्ता)	जीवन के सपने करे साकार चाणक्य नीति बने आधार
अष्टम	16.07.2023	डॉ. श्री वागीशजी शर्मा (Spiritual & Motivational Speaker एवम् आर्ष गुरूकुल महाविद्यालय एटा, उ.प्र. के प्रधानाचार्य)	जीवन का विस्तार -जीवन के अनुपम रंग - परिवार, समाज व राष्ट्र के संग

एक वटवृक्ष की गाथा

टन टन टन टन कांसे की थाली बजी।

'' बधाई द्योजी !! सेठां लादूरामजी क पेलो पोतो हुयो ह.......!! '''

खबर बिजली की तरह जसवन्तगढ़ गांव में फैल गयी। सेठ लादूरामजी का पहला पोता, और वह भी तीन बेटियों के बाद !! इस सुसंवाद को सुनकर गांव का कौन शख्श रुकता ?

दादाजी लादूरामजी आगन्तुकों को बधाई बांटने में व्यस्त थे। पिता हणमानबगसजी मन्द मन्द मुस्करा रहे थे। यही उनकी खुशी का इजहार होता था। खुलकर हंसना उनके स्वभाव में नहीं था। कौन जानता था कि जापाघर यानी १० × ७ फुट के सन् १९२८ के मैटर्निटी में लेटी बड़ी बहू रामप्यारी देवी ने जो अपनी बैटिंग की शानदार शुरूआत की थी उसका फाइनल स्कोर ७ बेटे और ६ बेटियां यानी १३ सन्तानों का होने वाला था। हालांकि उनमें से २ बेटियां जन्म के बाद कुछ ही दिनों में अपनी माता के नाम को अपना कर राम को प्यारी हो गयी।

पहले पोते का उपहार देने के उपलक्ष्य में उनकी सास सूरजू देवी शिशु को भरपूर दूध का उत्पादन मिले इसके लिये उनको गोंद, अजवाइन , सौंठ और न जाने क्या क्या पदार्थों की डिशेज बनाकर खिलाने में व्यस्त थी। ऐसे स्वादिष्ट पौष्टिक पदार्थ सिर्फ ''जापायती '' को नसीब होते थे। गर्भावस्था व जापे के कष्ट के बाद यह एक कोन्सोलेशन प्राइज बुरा नही था।

इसी दिन का इन्तजार था। ज्योतिष के गहन ज्ञाता लादूरामजी ने चांदारूण गांव के रामचन्द्रजी तोतला की छोरी रामप्यारी को इसीलिये पसन्द करके अपने बड़े बेटे ''हणमाना'' को

ब्याह दिया था कि उनको छोरी की कुण्डली में साफ नजर आ गया था कि यह ११ बेटे बेटियों की शानदार क्रिकेट टीम खड़ी करने की क्षमता रखती है। वह भविष्य अब साकार होने की तरफ बढ़ रहा था।

दो लड़कियों के जापे के बाद प्यारीदेवी (रामप्यारी का बोलचाल का नाम) ने संवत १९८५ आश्विन शुक्ल दशमी अर्थात् २४ अक्टुबर १९२८ रात २ बजकर ५ मिनट पर पहले पोते को जन्म दिया। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार पण्डितजी ने नवजात शिशु की कुण्डली बनाकर जिन अक्षरों से नाम शुरू हो सकता था, वे बताये। उसमें जो नाम लादूरामजी को सबसे अधिक जंचा, वह था ''श्रीराम''।

पीहर चांदारूण से बेटी को बुलावा आया और रामप्यारी २-४ महीने के शिशु श्रीराम को लेकर पीहर गयी। पीहर का सबसे बड़ा आकर्षण यह होता था कि बेटी अपने शिशु को अपनी मां यानी नानी को सौंपकर खूब सो सकती थी क्योंकि वह ''ऑफ ड्यूटी'' होती थी। पर इस बार यह ''ऑफ ड्यूटी'' बहुत भारी पड़ी। उन्हीं दिनों गांव में ''बड़ी माता'' यानी चेचक का प्रकोप फैल गया जिसकी चपेट में श्रीराम आ गया। प्रकोप भी इतना जबरदस्त हुआ कि सारे शरीर में कोई जगह नहीं बची जहां फाला न हो। आंखें भी पूरी ढक गयीं। उस जमाने में चेचक का कोई वैद्यकीय या डॉक्टरी इलाज नहीं था। गधे की सूखी लीद की धूनी लगाना, मोरपंख से खाज को सहलाना और झाड़ा देना आदि इलाज ही थे। पर सबसे अधिक विश्वास वाला इलाज था ''शीतला माता की मनौती''। विश्वास का यह अजीब उदाहरण था कि जो देवी स्वयं चेचक प्रकोप की देवी मानी जाती थी, उसी से बच्चे के जीवन की याचना की जाती थी।

मनौती जितनी कठिन जानलेवा होगी, उतना ही शीतलामाता दया करके बख्श देगी इस आस्था के साथ नानीजी ने ''जात'' बोली कि वे भर दोपहरी नंगे पांव सिर पर जलते अंगारों की सिगड़ी रखकर अढाई किलोमीटर दूर शीतलामाता के मन्दिर तक चलकर जायेगी और दर्शन पूजा करेगी। प्यारीदेवी ने मनौती मानी कि वह अमरकुण्डाळो की पूजा जीवनभर हर साल करेगी। उसमें ९ दीये होते हैं। अपनी मनौती को मां प्यारीदेवी ने जीवनभर निभाया। ५३ वर्ष की उम्र के बाद उन्होंने इस मनौती को अपनी बहू श्रीरामजी की पत्नी सुमनदेवी को चालू रखने के लिये कहा और उन्होंने भी निभाया। शायद इस मनौती ने ही श्रीराम के जीवन की रक्षा ८६ वर्ष तक की।

इस जानलेवा विपत्ति पर एक और कुठाराघात हुआ। जैसे ही सेठ लादूरामजी को श्रीरामा के

''माता उपड़ने'' की खबर मिली तो वे आपे से बाहर हो गये। तापड़िया के भावी कर्णधार के जीवन को खतरे में डालने का दोष पूरा तोतला परिवार का ही माना गया। दादाजी ने नानाजी को अल्टीमेटम दे दिया ''जे म्हारा टाबर क कीं हूयग्यो तो देख लीज्यो पछ मं काई करूंलो'' ? पूरा तोतला परिवार दहल गया। तापड़िया परिवार की अमूल्य धरोहर की जान बचाने में पूरा तोतला परिवार लग गया। पर कर के भी क्या कर सकते थे ? प्यारीदेवी पर क्या बीती होगी ? दिनरात जागकर शिशु की देखभाल और शीतला माता से प्रार्थना!! खुद की जान की परवाह करने की फुरसत ही कहां थी और परवाह भी किसको थी ?

पर एक ''माँ'' के हृदय की गहराई से उठी करुण पुकार को ''शीतला माता'' ने सुन लिया। जहां गांव के गांव साफ हो रहे थे वहां जच्चा व बच्चा दोनों सकुशल जसवन्तगढ़ पहुंच गये। लादूरामजी को अपना रौद्र रूप दिखाना नहीं पड़ा।

श्रीरामजी का बचपन जो जसवन्तगढ़ की गलियों में गुजरा, वह उनकी रगरग में मातृभूमि के प्रति अगाध प्यार को भर गया। ''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'' यह उनका जीवनमन्त्र बन गया।

यह तापड़िया परिवार के आर्थिक स्वर्णिम काल का उदय था। दादाजी लादूरामजी ने कलकत्ते में कपड़े के कामकाज को तेजी से बढाया। अपने तीनों छोटे भाइयों को भी व्यापार में स्थापित किया। दादाजी स्वयं पाठशाला नहीं जा सके पर शिक्षा के महत्व को पूरा जान चुके थे। जसवन्तगढ़ में आगे की पढ़ाई उपलब्ध नहीं थी इसलिये श्रीरामजी को कलकत्ते में पढ़ाई के लिये रखा गया।

आज के न्यूक्लियर परिवार में जन्मे युवाओं को उन दिनों के संयुक्त परिवार; (जॉइन्ट फैमिली) के तौरतरीकों को समझना कठिन है। बच्चों की देखरेख जॉइन्टली होती थी। मां बाप ही अपने बच्चों की देखरेख करें यह न आवश्यक था न प्रेक्टिकल था। सारे बच्चों के काम होलसेल में मास प्रोडक्शन बेसिस पर होते थे। कोई सबको नहला रही है, कोई सबको खाना खिला रही है, कोई छड़ी लेकर सबको पढ़ा रही है, कोई सबको सुला रही है। इसी

सिलसिले में बच्चा अपने मां बाप से दूर काका, बाबा, बड़े भाई , मामा, नाना किसी भी के संरक्षण में कहीं भी भेज दिया जाता था। वहां वह वे नखरे नहीं कर सकता था जो मां के सामने बच्चा किया करता है। बड़ों की ऑथोरिटी अनक्वेश्चन्ड होती थी। वह दूसरों के बच्चे को पीट सकता था और अपनत्व के साथ पीटता भी था। इस प्रकार वह बच्चा एक तरफ सहनशीलता एडजस्टमेन्ट का अमूल्य पाठ पढ़ता था और दूसरी तरफ पूरे संयुक्त परिवार को अपना अटूट परिवार मानना उसकी रगों में आ जाता था। दादाजी लादूरामजी सबके लिये पितामह की तरह थे जिनसे सब डर से कांपते भी थे और दिल की गहराई में आदर भी रखते थे। सब बड़ों व बच्चों के लिये अन्तिम निर्णय उनका ही होता था। श्रीरामजी भी उसी संस्कृति में पले बढ़े। दादाजी लादूरामजी के विचारों संस्कारों को जितना उन्होंने आत्मसात किया उतना किसी ने नहीं किया। कलकत्ते में माहेश्वरी विद्यालय से हाईस्कूल पास किया। फिर बीए के लिये स्कॉटिश चर्च कॉलेज में दाखिला लिया।

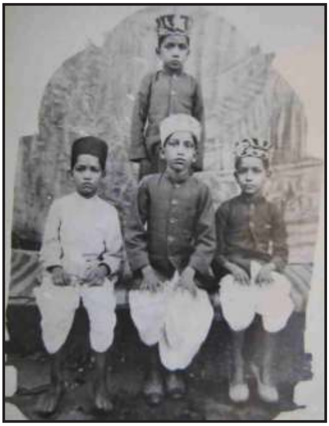

ट्यूशन की परम्परा थी। संस्कृत भाषा में हमारी संस्कृति छिपी है यह दादाजी समझ चुके थे। इसलिये संस्कृत का एक अध्यापक सभी बच्चों के लिये खोजा गया। वे थे प्रकाण्ड विद्वान श्री रमाकान्तजी उपाध्याय। वे सब तरह से योग्य दीखे पर उनमें एक खतरा दादाजी को दीखा। वे आर्यसमाज के वरिष्ठ उपदेशक थे। दादाजी थे घोर सनातनधर्मी। चोर को ही चौकीदार बनाने की नीति उन्होंने अपनाई। आर्यसमाज के वरिष्ठ उपदेशक पण्डितजी पर बड़ा विश्वास जताते हुए उन्होंने अपनी चिन्ता बताई ''पण्डितजी, इन दिनों आर्यसमाज की बड़ी हवा चल रही है। आप ध्यान रखना कि बच्चे कहीं आर्यसमाजी न बन जायें।''

पर होनी तो होकर रहती है। दादाजी को भी क्या मालूम था कि इस ट्यूशन का साइड इफेक्ट क्या होगा और यह ट्यूशन तापड़िया परिवार में भारतीय संस्कृति का कितना गहरा बीज बो देगी जिसका असर पीढ़ी दर पीढ़ी रहेगा।

हुआ यह कि संस्कृत भाषा की पढ़ाई तो हुई ही, पर साथ ही श्री रमाकान्तजी उपाध्याय ने चरित्रनिर्माण, स्वास्थ्य-जागरूकता, व्यवहारकुशलता, सरलता, सादगी निरहंकारिता,

परोपकारिता, देशभक्ति आदि के संस्कार उस पीढ़ी के सभी किशोरों व युवाओं में, जो वहां संयुक्त परिवार में पल रहे थे, कम-अधिक आत्मसात करवा दिये। श्रीरामजी ने भी पूरा आत्मसात किया। इसी का फल है कि लक्ष्मी की कृपा से सम्पत्तिवान हो जाने पर भी तापड़िया परिवार उन बुराइयों से आज भी बचा हुआ है, जो काफी परिवारों को ग्रस्त कर लेती है। आज परिवार की समाज में इतनी प्रतिष्ठा है उसका बड़ा श्रेय दादाजी के इस एक कार्य को है। पूज्य रमाकान्तजी के एहसान से तो परिवार कभी उऋण हो ही नहीं सकता।

अब आगे की गाथा में आपको श्रीरामजी नाम के बजाय भाईजी नाम पढ़ने को मिलेगा क्योंकि आगे चलकर परिवार ही नहीं, बल्कि सारा माहेश्वरी समाज उन्हें स्नेह आदर से भाईजी बोलकर ही सम्बोधित करता रहा था और आज भी कर रहा है।

भाईजी १५ साल के हो गये तो ''ब्यावमान'' यानी 'फिट फॉर मैरेज' हो गये। तो सम्बन्ध देखने की शुरूआत हुई। उस जमाने में विवाह लड़के लड़की का कम, बल्कि दो परिवारों का ज्यादा होता था। लड़के लड़की तो बच्चे होते थे। उनके गुण स्वभाव कैसे जानें ? उसके दो तरीके थे। एक तो परिवार की समाज में प्रतिष्ठा, धर्मपरायणता और परिवार के मुखिया कर्ता के स्वभाव, विचार, योग्यता से यह साइन्टिफिक कनक्लूजन निकाला जाता था कि आगे चलकर उस लड़के लड़की का स्वभाव विचार योग्यता कैसी होगी। एक तरह से पेडिग्री का सम्पूर्ण विज्ञान था। दूसरे कुण्डली मिलान किया जाता था। दादाजी ज्योतिष के अदभुत ज्ञाता थे। कुन्डली से सारा चित्र सामने आ जाता था कि दाम्पत्यसुख, स्वास्थ्यसुख, सन्तानसुख क्या लिखा है। तापड़िया हवेली के पीछे श्री जसवन्तमलजी मूंदड़ा रहते थे, जो मूलत: डीडवाना के थे। उन्होंने अपनी भतीजी डीडवाना के सेठ श्री लक्ष्मीनारायणजी मून्दड़ा की कन्या गोदावरी का प्रस्ताव दादाजी के सामने रखा, जो दादाजी के इन दोनों टेस्ट में पास हो रहा था।

कन्या व घरघराने को देखकर सम्बन्ध पक्का करने के लिये दादाजी ने छोटे दादाजी गणपतरायजी, काकाजी जीवणमलजी , काकाजी कन्हैयालालजी और काकाजी जीतमलजी की कमिटी को अधिकार देकर भेजा। श्रीरामजी के पिताजी हणमानबगसजी को भी नहीं भेजा गया तो श्रीराम के जाने का तो सवाल ही कहां था। कन्या सामने आकर बैठ गयी। सवाल पूछा गया ''गीता आव ह के ?'' ९ वर्ष की कन्या ने हां में सिर हिला दिया । और अधिक क्या जानना था ? कमिटी को कन्या व घरघराना दोनों सम्बन्ध करने लायक लगे और वहीं कन्या को बींटी (अंगूठी) पहना

कर नेग कर दिया गया। रिश्ता पक्का हो गया। इस निर्णय में श्रीराम के पिता हणमानबगसजी और श्रीराम की माँ रामप्यारीदेवी को या पोते श्रीराम को खुद को पूछने का या उसे लड़की दिखाने या मिलाने का तो कोई तुक ही नहीं था। कई कारणों से और सर्वोत्तम मुहूर्त के हिसाब से विवाह अढ़ाई साल बाद करने का तय रहा। इस बीच भावी पतिपत्नी ने न एक दूसरे को देखा, न चिट्ठी लिखी। फोन तो था ही नहीं।

विवाह की तैयारी दोनों तरफ धूमधाम से हुई। आजकल की तरह लड़की वालों को नहीं बुलाया जाता था। लड़के की १५० से ३०० जनों की बारात जाती थी जिसमें पूरे परिवार के पुरुष व लड़के, सगे सम्बन्धी, पूरे गांव के परिचित मित्र और पण्डित नौकर नाई जाते थे। महिलायें नहीं जाती थीं। नारागाड़ी (बैलगाड़ी) भैंसागाड़ी, ऊँटगाड़ी आदि का पूरा काफिला होता था। पहले बनड़ा और फिर बीनराजा के टाइटल से युक्त और ललाट पर पट्टा, साफा, बागा, तलवार से सुसज्जित श्रीराम को लेकर

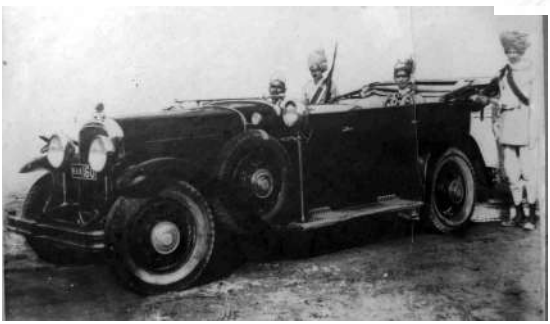

बैण्डबाजा बजाती तापड़िया परिवार की ४०० जनों की मोडेस्ट बारात डीडवाना पहुँची। बारात की जबरदस्त आवभगत हुई यानी खूब मनुहार करके इतना

और इतनी बार खिलाना पिलाना हुआ कि बारातियों को जिन्दगी भर याद रहा। सिर्फ ४ दिन की आवभगत का आनन्द लेकर विवाह सम्पन्न कर वधू को लेकर बारात वापिस आयी। आगे चलकर भाईजी को गोदावरी नाम पसन्द नहीं आया इसलिये नाम बदलकर सुमन रख दिया।

युवावस्था

बीए की पढाई पूरी करके भाईजी दादाजी लादूरामजी के मातहत घर के यानी कपड़े के कामकाज में लगे। दादाजी ने कपड़े के कामकाज को कैसे विशाल रूप दिया इसकी कहानी भी बड़ी रोचक व प्रेरणादायक है जो आगे आप पढेंगे।

बम्बई भारत का आधुनिकतम शहर था। अंग्रेजों ने दहेज़ में मिली इस सम्पत्ति को वे सब सुख सुविधायें दी जो लन्दन में आविष्कृत हुई। उद्योग में, व्यापार में, मनोरंजन के साधनों में, जनसंख्या में, पढ़ाई में, राष्ट्रीय चेतना में, सबमें बम्बई ने अन्य सब शहरों को पीछे छोड़ दिया। बम्बई एक कर्मनगरी भी है और भोग नगरी भी।

सो कर्म के साथ भोग यानी मौज शौक का सिलसिला चला। सूट बूट पहनना, क्लब जाना, सिनेमा, पिकनिक, रेस्त्रां आदि। पर इसे ईश्वर की कृपा कहें, दादाजी की धाक कहें या रमाकान्त पण्डितजी के दिये संस्कार कहें कि बम्बई में रह कर और बड़ों के अंकुश से दूर रहकर भी कोई भी बुरी आदत, नशा, जुआ, या गलत खानपान परिवार के किसी भी सदस्य के नहीं लगी। वृहद्

परिवार के युवाओं की परिवार में ही दोस्ती सीमित होना भी शायद कारण रहा।

कार चलाने के लिये हर युवा १८ साल पूरा होने के पहले ही छटपटाने लगता है। भाईजी भी अपवाद नहीं थे। जसवन्तगढ़ में दादाजी ने एक बड़ी एम्बुलेंस गाड़ी खरीदी। उनकी परिवार की परिभाषा में छोटी गाड़ी कैसे बैठती? उसके लिये किसनपुरी ड्राइवर रखा गया। पर भाईजी से रहा नहीं गया। सो हाथ आजमाना शुरू किया। पता नहीं दादाजी की जानकारी में था या नहीं। पर जसवन्तगढ़ की गलियों में गाड़ी को घुमाने के लिये जो स्किल चाहिये थी वह अभी आनी बाकी थी। तो नतीजा जो आना था वह आ गया। भाईजी ने एक गली में पड़ी किसी की एक जोधपुरी पत्थर की पट्टी पर गाड़ी चढ़ा कर पट्टी तोड़ दी। पट्टी का मालिक दादाजी के पास शिकायत लेकर पहुंच गया। सुनते ही दादाजी आगबबूला हो गये। उग्र होकर ''सिरीरामा'' को बुलवाया। शिकायतकर्ता के सामने ही डांटते हुए उन्होंने कहा '' सीतारामजी (मुनीमजी), ईं सिरीरामा न अबार बो अबार पुलिस थाणा मं ताबा मं दे द्यो। आज तो पट्टी तोड़ी है, काल मिनख न मारसी''

इस अपराध की इतनी भयानक सज़ा से शिकायतकर्ता ही दहल गया। वह तो इतनी ही अपेक्षा लेकर आया था कि थोड़ी डांट पड़े और पट्टी का मुआवज़ा मिल जाय। अब वही दया की अपील करने लगा। ''जाण द्यो सेठां टाबर है''। पर दादाजी अड़े रहे ''आ कोई बात है? लेज्याओ सिरीरामा न थाणा मं''। अब तो शिकायतकर्ता मुसीबत में फंस गया। यदि पट्टी तोड़ने के अपराध में सेठ लादूरामजी का पोता सचमुच गिरफ्तार होता है तो गांव शिकायतकर्ता को ही थू थू करेगा। बड़ी मुश्किल से उन्होंने दादाजी को माफ करने के लिये मनाया और पता नहीं पट्टी का मुआवजा लिया या नहीं। इस तरह दादाजी ने भाईजी को सामाजिक सम्बन्धों को निभाने का बड़ा पाठ पढ़ाया।

दादाजी के पीछे परिवार के सारे ही सदस्य जसवन्तगढ़ गांव छोड़कर कलकत्ते आ गये। मेहनत और सूझबूझ के कारण व्यापार दिन दूना रात चौगुना बढने लगा। ऐसा नहीं कि कम्पिटीशन नहीं था। सुना था कि जरूरत पड़ने पर खरीद भाव पर भी माल आगे बेच देते थे। कपड़े की गांठ जो खोली, उसके बारदान को बेच लिया, वही नफा था।

उस समय बम्बई कपड़ा निर्माण का बड़ा केन्द्र था। सारे भारत में कपड़ा वहीं से वितरित होता था। तापड़िया परिवार भी वहीं से दलालों के माध्यम से मिलों से खरीदकर मंगाता था। दादाजी को लगा कि परिवार का एक सदस्य यदि बम्बई रहकर माल भिजवाये तो हम जीत में रहेंगे। भाईजी की योग्यता को देखकर उनको बम्बई शिफ्ट होने का आदेश हुआ। बम्बई में शेख मेमन स्ट्रीट जवेरी बाजार में पगड़ी पर जगह ली। किफायत का जमाना था और उसके कारण कमाई थी। आगे ऑफिस जिसको गद्दी या पेड़ी कहा जाता था और पीछे रहने की ''खोली''। वहीं बासा यानी पेड़ी के सारे मुनीम गुमाश्तों व मालिकों के लिये भोजनालय। पेड़ी में मुनीम सुबह से देर शाम तक गद्दे पर पालथी मार कर बैठे सामने एक बड़े तकिये पर बही खाता लिखते थे। रात को उसी गद्दी पर सारे मुनीम लाइन से सो जाते थे। मुनीम व मालिक और मालकिन भी सिर्फ एक कॉमन बाथरूम से काम चलाते थे।

फिर भी दादाजी के विचार में भाईजी जरूरत से ज्यादा खर्चीले थे इसलिये वे भाईजी के खर्च पर अपने तरीके से कन्ट्रोल करते रहते थे। यह सही भी था कि बम्बई में जो आमोद प्रमोद के साधन थे, उनका सीमित रूप में उपभोग भाईजी करते भी थे। बस ट्राम से आना जाना था। जवेरी बाजार में ही छोटे दादाजी के परिवार ने भी भाईजी की मदद से पेढ़ी ले ली थी और वहीं रहते थे। काका भतीजे साथ ही सुख दुख बांटते थे, सिनेमा पिकनिक जाते थे, ताश खेलते थे।

बम्बई में काम बढ़ता गया और परिवार के सदस्य भी एक एक कर कलकत्ते से बम्बई शिफ्ट होते गये। इसलिये दादाजी की अनुमति से रहने की जगह अलग ली गयी। उस समय के प्रतिष्ठित एरिया मरीन ड्राइव में कल्पना बिल्डिंग में ५०००० रु में फ्लैट खरीदा गया। उसमें फर्निशिंग के लिये सुमन भोजाईजी ने बड़ी किफायत से १०००० रु में सारा फर्नीचर खरीदा। पर इस फिजूलखर्ची के लिये दादाजी ने बड़ा लताड़ा।

जैसे जैसे हनुमानबगसजी परिवार के सदस्य बढते गये, क्रमशः कल्पना बिल्डिंग से शिवप्रसाद बिल्डिंग और शिवप्रसाद बिल्डिंग से निम्फ बिल्डिंग शिफ्ट हो गये। एक

ऐसा भी विलक्षण समय था जब निम्फ में ४ फ्लैट को जोड़कर एक साथ रहने वाले हणमानबगसजी तापडिया परिवार के करीब ४० सदस्य एक ही रसोई में भोजन करते थे। यह भाईजी की नेतृत्वक्षमता और परिवार को बांधकर रखने की क्षमता का अप्रतिम उदाहरण था।

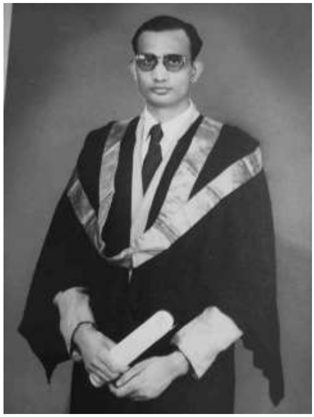

बम्बई आने का फायदा सबको नज़र में आया होगा। अत: धीरे धीरे जो तापड़िया परिवार कलकत्ते में बसा था, वह करीब करीब सारा बम्बई आकर रहने लगा। जवेरी बाजार में और पेड़ियां खुली। परिवार भी तेजी से बढ़ रहा था। दादाजी के बेटों की पीढ़ी के हर सदस्य ने ५ से लेकर १ ३ तक वंशवृद्धि की। कामकाज, जो एक समय चारों दादाजी का साथ में था, वह भी अलग अलग हो गया। कपड़े के व्यापार ने सबको काफी सम्पन्न बना दिया और उसके अनुसार रहने का स्तर भी बढ़ा जो कि लादूरामजी की विचारधारा के विपरीत था। पर उन्होंने समय के अनुसार नयी पीढ़ी को कुछ छूट दे दी। यह परिवार का आर्थिक स्वर्णिम काल था।

बम्बई आकर भाईजी को लगा कि कानून की जानकारी बहुत उपयोगी है। सो कामकाज देखने के साथ उन्होंने सुबह के गवर्नमेन्ट लॉ कॉलेज में दाखिला लेकर एल एल बी किया।

व्यापार व उद्योग

क्रिकेट के जुनून के कारण भाईजी सीसीआई क्लब के सदस्य बने। उससे भाईजी की पहचान बम्बई के मारवाड़ी, गुजराती व अन्य सम्भ्रान्त समाज में भी हुई। उनकी संगत से भाईजी को यह बात समझ में आई कि व्यापार तो व्यापार ही रहेगा, वह उद्योग यानी इंडस्ट्री का मुकाबला नहीं कर सकता। बहुत ऊँचे उठना हो तो उद्योग में कदम रखना पड़ेगा। टेक्सटाइल मिलों का काम रोज देखते ही थे। उनके मालिकों से भी मित्रता थी। व्यापार में धन बरस रहा था। पैसा लगाने की क्षमता बन गई थी। सो दादाजी को मनाकर उद्योग की शुरूआत भाईजी ने की। ताड़देव में एक ''सूर्योदय मिल'' थी जो आग से जलकर खाक होकर बन्द पड़ी थी। उसे लेकर लूम चलाने की शुरूआत की।

फिर नई आइडिया आई कि कपड़े का सबसे सस्ता प्रोसेस है कैलेण्डरिंग, वह शुरू किया जाय। पॉवरलूम का काम बहुत मारवाड़ी करने लग गये थे, जिसके बड़े केन्द्र थे भिवण्डी, इचलकरंजी आदि। उनको कैलेण्डरिंग के प्रोसेस के लिये मिलों की आजिजी करनी पड़ती थी। उनके प्रोसेसिंग चार्ज भी अधिक थे। तो भाण्डुप में एक बड़ी जमीन ली गई और पॉवरलूम वहां शिफ्ट हो गई। उसे संभालने की जिम्मेदारी भाईजी ने जगदीशभाईजी व जयकृष्णभाईजी को दी।

ताड़देव में सेकेण्डहैण्ड कैलेण्डरिंग मशीन लगा कर बॉम्बे टेक्सटाइल मिल नाम से कैलेण्डरिंग प्रोसेसिंग हाउस का काम शुरू हुआ जिसको सम्भालने की जिम्मेदारी हरनारायणभाईजी को दी गयी। पहली मशीन लगते ही ऑर्डर की बाढ़ आ गई। सो दूसरी मशीन लगी। एक एक कर पांच मशीने लग गयीं और बॉम्बे टेक्सटाइल मिल दुनियां की सबसे बड़ी कैलेण्डरिंग प्रोसेसिंग हाउस बन गया, जिसमें तीनों शिफ्ट में ५.५ लाख मीटर प्रतिदिन का उत्पादन होता था। इसके बावज़ूद सीज़न में व्यापारी अपने अपने माल की पहले प्रोसेसिंग के लिये टूट पड़ते थे।

पूरे ग्रुप के फाइनेंस का काम लक्ष्मीनारायणभाईजी को दिया गया। भाईजी ने सभी व्यापार और उद्योग को रोजमर्रा खुद न देखकर छोटे भाइयों के जिम्मे कर दिया था और खुद लाँग टर्म की बातों में ही लगे रहते थे। अगला उद्योग भाईजी ने शुरू किया पर्मनिन्ट मेग्नेट्स लि.। यह भी एक बीमार कम्पनी थी। इसे स्थापित किया था मुम्बई के मुख्यमंत्री श्री मोरारजी भाई के पुत्र श्री कान्तिभाई देसाई ने। इटली का कॉलेबोरेशन था और टेक्नॉलॉजी थी चुम्बक यानी मेग्नेट बनाने की। उन्होंने श्री मदनमोहन रुइया जी को बेच दिया पर उनसे भी न चली। परिवार ने स्वीकृति दी और १९६० में भाईजी ने यह कम्पनी खरीदकर

चलाना शुरू किया। इसे भाईजी ने खुद बहुत साल तक देखा और इसमें भी अच्छी कमाई हुई। बादमें इसको भी छोटे भाई श्यामसुन्दर को सौंप दिया।

तीसरे उद्योग की बात आई जब छोटे भाई श्यामसुन्दर ने आइ आइ टी खड़गपुर से बी टेक मैकेनिकल इंजिनियरिंग १९६० में पास की। पढ़ाई पूरी करके श्यामसुन्दर भाईजी ने जर्मनी में

बाहोल्जर कम्पनी में १ २ महीने की ट्रेनिंग ली। उसी समय एक और नये उद्योग को ढूंढने के लिये भाईजी ने वर्ल्ड टूर का प्लान किया । उन दिनों विदेश यात्रा एक बहुत बड़ी घटना मानी जाती थी। जीवन में एक बार हो गयी तो दुबारा हो या न हो। अत: बिजनेस और टूरिज्म का मिलाजुला प्रोग्राम बनाया । टूरिज्म कोई अकेले करने की चीज तो है नहीं, इसलिये भोजाईजी को साथ ले चलने का तय हुआ। पर परिवार के खर्च पर उनको कैसे ले जा सकते थे ? सो उनकी टिकट और उनके कारण जहां जो भी एक्स्ट्रा खर्च लगेगा वह पर्सनल होगा, इस आधार पर उनके साथ यात्रा हुई। आज की तरह घड़ियां तेजी से नहीं चलती थीं। पूरी दुनियां देखनी है तो समय तो लगेगा ही। सो चार महीने के ''अल्प'' समय में दोनों सैलानियों ने विश्वयात्रा की। एथेन्स, मिलानो, जर्मनी, फ्रांस, हॉलेंड, इंगलैंड, स्वीडन , नॉर्वे, कनाडा सैनफ्रांसिस्को, होनोलूलू, जापान आदि देशों के भ्रमण का आनन्द लिया। विदेशी चीजों की खरीदी की तो साथ ही इतने बड़े परिवार के सभी लोगों के लिये भी कुछ न कुछ खरीदी की।

इसी ट्रिप में श्यामसुन्दरभाईजी उनसे आ मिले और कई विदेशी कम्पनियों के साथ कोलेबोरेशन की बातें की। आखिर स्वीडन की कम्पनी बाहको के साथ हेण्डटूल मैन्यूफेक्चरिंग के लिये कोलेबोरेशन का एग्रीमेन्ट फाइनल हुआ। नासिक में १ ९ ६ ७ में बाहको तापड़िया टूल्स लि. (बाद में नाम बदल कर तापड़िया टूल्स लि.) का कारखाना शुरू हुआ। इसमें शुरू में दोनों भाईजी लगे, पर यह दोनों के लिये बहुत भारी पड़ रहा था इसलिये पीएमएल को श्यामसुन्दर भाईजी ने संभाला और श्रीराम भाईजी ने टीटीएल को। सबसे छोटे जयप्रकाश ने बी टेक कर ली तो उसे भी टीटीएल में श्यामभाईजी के मातहत लगाया गया।

उद्योग में भाईजी की मेनेजमेन्ट की स्टाइल कुछ अलग थी। अपने मातहत सीनियर जूनियर

सभी कर्मचारियों को वे अपना पारिवारिक सदस्य मानते थे। उनके निजी सुखदुख में शामिल होते थे। निजी समस्याओं को हल करते थे। इस कारण सभी के मन में उनके प्रति इतना गहरा सम्मान होता था कि यदि किसी ने नौकरी छोड़ भी दी तो भी भाईजी से रिश्ता आजीवन रखता था।

उद्योग की समस्याओं को सुलझाने के लिये उनकी स्टाइल थी; सबके साथ मीटिंग करके एकमत बनाना। यह बड़ा लम्बा घण्टों चलने वाला प्रोसेस था, जिसमें सब थक जाते थे, पर भाईजी के पास थकावट का नामोनिशान नहीं होता था। रात को १० या ११ बजना मामूली बात थी। सबके लिये घर से नाश्ता आता था। पर उस निर्णय में जो अन्त तक असहमत होते थे उनकी भी आदर के कारण या थक जाने के कारण सहमति हो जाती थी। यानी विरोध करने वाला भी बहुमत को स्वीकार कर अपना विरोध वापिस ले लेता था। एकमत भले न हो पर कॉन्सेन्सस बनाकर गाड़ी आगे बढ़ती थी।

लेबर प्रॉब्लेम हल करने की भी उनकी विलक्षण स्टाइल थी। पहले तो कई कई बार खूब लम्बी मीटिंग करना। हल भले न निकले पर बातचीत टूटे नहीं। कौन सही है और कौन गलत यह मायने नहीं रखता। बॉटम लाइन यह थी कि सेटल तो करना ही है। यदि कोई बहुत नाजायज मांग लेकर अड़ जाय तो उसकी उस मांग को जितना कम नाजायज करा सको, उतना कर लो और फिर मान लो। हड़ताल या लॉक आउट की स्थिति आने नहीं देना चाहिये। लेबर हार गये और उनको मजबूर होकर अपनी मांग छोड़नी पड़ी तो यह आपके हित में नहीं है। बल्कि उनको लगना चाहिये कि हम जीत गये। इस फिलॉसोफी को समझाने के लिये वे एक कहानी सुनाते थे।

आपके घर में मेहमान भोजन पर आने वाले हैं और उनको बैंगन बहुत पसन्द हैं। आपको श्रीमतीजी ने थैला पकड़ा दिया कि बाजार से बैंगन लाने हैं। पर सीजन न होने के कारण बैंगन बहुत कम दिखाई दे रहे हैं। भाव भी आसमान पर हैं। अब आपको निर्णय करना है। गैरवाजिब भाव पर बैंगन खरीदना या नहीं। पर आपको नहीं खरीदने का ऑप्शन कहां है ? समय भी सीमित है। नहीं खरीदूंगा, इसका नाटक करके आखिर जितना भाव कम करा कर बैंगन तो खरीदकर ही घर लौटना होगा।

परिवार बड़ा हो रहा था। कामकाज में काफी सदस्य आ गये थे। एक समय ऐसा आता है जब एक ही काम में परिवार के कई सदस्य आ जाते हैं। तब उनका स्वविकास उतना नहीं हो पाता। इसको भांप कर भाईजी ने कामकाज में भाइयों को स्वतन्त्र करने की शुरूआत की। लादूरामजी के

तीन बेटों के १५ बेटे थे। वे एक एक कर अलग हुए और कुछ अलग अलग कम्पनियों के छोटे ग्रुप बन गये। हालांकि अलग होने की प्रक्रिया इतनी आसान नहीं होती, पर तापड़िया परिवार इस मायने में सौभाग्यशाली रहा कि परिवार के ही बड़ों की मध्यस्थता से हर सेपरेशन आखिर बिना तनातनी के हो गया। इसका श्रेय परिवार के बड़ों को तो है ही जिसमें श्रीरामभाईजी की मुख्य भूमिका रही, साथ ही उन सदस्यों को भी है जिन्होंने १०० प्रतिशत न्याय के लिये अडिग होने के बजाय पारिवारिक प्रेम सामंजस्य को अधिक महत्व दिया। आज पूरे जगन्नाथ तापड़िया परिवार यानी चारों दादाजी का परिवार जितना सुदृढ़ प्रेम डोर में बंधा है वह समाज के सामने एक अद्भुत मिसाल है। सुख के लिये धन चाहिये पर पारिवारिक प्रेम न हो तो धन की वर्षा होते हुए भी सुख नष्ट हो जाता है।

व्यापार अलग होने के साथ रहने के घर भी अलग होते गये, बढ़ते गये। आज लादूरामजी परिवार के १८ फ्लैट बम्बई में हैं। बम्बई में हर फ्लैट जरूरत जितना ही या उससे भी कुछ कम ही होता है इसलिये हर घर में लड़के का विवाह होते ही कमरा कम पड़ जाता है।

शौक व मनोरंजन की गतिविधियां

नई नई चीजों का भाईजी को हमेशा शौक रहा। परिवार में हर नई चीज की खरीद की पहल उन्होंने की। कार (१९५३), ८ रिकॉर्ड का ऑटोमेटिक ग्रामोफोन रेडियो (१९५५), टेप रिकॉर्डर (१९६३), कैसेट प्लेयर (१९७२), टीवी (१९६६), कैमेरा (१९५१) विडियो कैमेरा (१९६१), ८ एमएम

प्रोजेक्टर (१९६३), एसी (१९५९) वॉशिंग मशीन (१९६५), आटा पीसने की चक्की (१९६४), ये सब नई टेक्नॉलॉजी की चीजें घर में भाईजी ही पहले लाये। विदेशी कार फोर्ड (१९६७) भी उस जमाने में रईसी का चिन्ह था।

सिनेमा का जबरदस्त शौक। शायद ही कोई नया सिनेमा छूटा होगा। एक ही सिनेमा को ५ या १० बार देखना भी सामान्य था। एक साल तो १०० सिनेमा का रेकॉर्ड बनाया। नाटकों में भी जाते थे।

ताश हर रविवार को घर पर परिवार के हमउम्र सदस्यों के साथ सुबह से शाम जमती जिसमें

घनश्यामकाकाजी, डूंगरकाकाजी, बजरंगकाकाजी, महावीरकाकाजी गोपालकाकाजी, मदनभाईजी आदि मुख्य थे। ताश में एकमात्र खेल स्वीप ही सालों साल खेला गया। पर पैसे लगाकर खेलने पर हमेशा प्रतिबन्ध रहा। उस दिनभर सुबह से शाम सहगल, पंकज व लता रफी मुकेश आदि के गानों की ७८ आरपीएम रिकॉर्ड बजती रहती। न चाहते हुए भी हम छोटे बच्चों ने उन गानों को इतनी बार सुना कि उनकी एक एक लाइन, स्वर और धुन रिकॉर्ड की ग्रूव की तरह दिल में स्थायी हो चुकी है।

उन दिनों पिकनिक का भी क्रेज़ था जो अब खतम हो गया है। साल में १२ बार दिन भर की पिकनिक होती। बम्बई के बाहर की झीलों के पास पिकनिक स्पॉट होते थे जैसे वैतरणा, तानसा, विहार, तुलसी पवई। इसके अलावा जुहू बीच, आरे कॉलोनी आदि भी थे। कारों में ठसाठस भर कर सहगल पंकज के गाने गाते हुए जाने का रिवाज़ था। एम्बेसेडर कार में १२ जनों का भर कर जाना आम बात थी। वहां जाकर चटाई बिछाकर बैठकर ताश खेलना या गपशप करना। खोखो, रूमाल आदि खेल खेले जाते थे और घूम फिर कर कड़ी भूख लगने पर घर का लाया आम सेण्डविच आदि नाश्ता खाते थे।

साल में ५-७ बार ऐसी पिकनिक होती थी जिसमें रात भी बाहर बिताना होता था जैसे महाबलेश्वर पंचगनी लोनावला माथेरान खंडाला एलीफेन्टा आदि। वहां खुद भोजन पकाकर खाना भी आनन्द का हिस्सा था।

भाईजी खुद तो बहुत कम खेल खेले। शायद जसवन्तगढ़ में वॉलीबॉल खेले होंगे। पर बम्बई में क्रिकेट देखने का गज़ब का शौक था। उन दिनों ५ दिनों के टेस्ट मैच बम्बई में ही होते थे। उसकी टिकटें मंगाकर दिनभर पिकनिक सा माहौल बनता था। सबके लिये टिफिन भर कर ले जाते थे। क्रिकेट का शौक अन्त तक कायम रहा, हालांकि बाद में टीवी पर ही देखते थे।

संगीत का गहरा शौक था। शाास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम भी और फिल्मी गीतों के कार्यक्रम भी। अन्त तक यह आदत रही कि जहां दीखा, संगीत की टेप / सीडी खरीद ली। भले बाद में उसे सुनने का समय न मिले। खुद गाने का भी शौक गज़ब का था। घर पर कई बार संगीत सन्ध्या होती थी, जिसमें भाईजी को गाने के लिये आग्रह नहीं करना पड़ता था। उनकी खास पसन्द के भजनों को, मारवाड़ी गीतों को, देशभक्ति के गीतों को, उन्होंने टाइप करवा कर कॉपियां वितरित की थीं। मारवाड़ी कविताओं के शीर्ष कवि विमलेश को उन्होंने बहुत प्रोत्साहन दिया। घर पर काव्यगोष्ठी रखी।

यही बात किताबों पर लागू थी। स्टॉल दीखने पर खरीदे बिना रहा नहीं जाता था। घर के ऑफिस में पूरा कमरा किताबों की लाइब्रेरी बना हुआ था। उन पुस्तकों को पढ़ने का समय कुछ मिला, कुछ नहीं मिला। प्रेमचन्द, शरत साहित्य, राजस्थानी साहित्य, काव्य, फिल्मी गीत आदि आदि से लाइब्रेरी से भरी पडी थी ।

७५/४५/३३ आरपीएम रिकॉर्ड का जमाना आया तो जमकर रिकॉर्ड खरीदी। कैसेट का जमाना आया तो जमकर कैसेट खरीदी। सीडी का जमाना आया तो जमकर सीडी खरीदी। भाईजी का ऑफिस इन सारी खरीदी की विशाल लाइब्रेरी था।

यात्रा का शौक कम नहीं था। कुछ भोजाईजी के साथ और कुछ परिवार के छोटे बड़े ग्रुप के साथ अनगिनत यात्रायें कीं। दादाजी के साथ बृजयात्रा, बापूजी के साथ द्वारका,

सोमनाथ, ऐलोरा अजन्ता, मां के साथ वृन्दावन, जयप्रकाश के साथ तिरुपति व दक्षिण के मन्दिर, बहन बहनोई जयप्रकाश छाया के साथ चारधाम, भोजाईजी के साथ डलहौजी, कुलू मनाली, नैनीताल रानीखेत। एक महीने काश्मीर में श्रीनगर गुलमर्ग सोनमर्ग आदि। बर्मा में पांच दिन, जिसमें विपश्यना भी की, गुरु सयाजी ऊ बा खिन के दर्शन भी हुए और चर्चा भी हुई। हाँगकाँग,

थाईलैंड, पोलैंड की भी यात्रा हुई।

खाने पीने का भी शौक पूरा था। मिठाई नमकीन जंक फूड किसी भी चीज को न खाने की कसम नहीं थी। चीजे सब खाते थे पर मात्रा में संयम नहीं खोते थे। आधुनिक डिशेज़ जैसे पिज्जा, पास्ता बर्गर आदि भाईजी को भाते तो नहीं थे पर बच्चों का मान रखने के लिये थोड़ा सा खा लेते थे। हाँ, भारतीय बानगी के स्वाद के भाईजी ऊँचे पारखी थे। किस चीज में क्या ठीक है और क्या कमी है, इसपर पूरी विस्तृत व्याख्या दे सकते थे और देते भी थे। संयुक्त परिवार में विवाह तो आये दिन होता रहता था। उसमें हर एक मेनू के बारे में उस महाराज के साथ लम्बी मीटिंग चलती थी। कार्यक्रम के बाद में क्वालिटी फीडबेक भी देते थे। कई पुरानी आउटडेटेड मिठाइयों को समाज में फिर से इज्जत दिलवाने का श्रेय भाईजी का है। जैसे कि बादाम की कतली, जलेबी, घेवर आदि। बादाम की कतली में कौन सी बादाम का उपयोग हो। कैसे भिगोना, कैसे पीसना, कैसे सेंकना और किस साइज़ की काटकर बनाना। जलेबी की रस्सी कितनी पतली हो, साइज़ क्या हो, तलने में कितनी कड़क हो, चाशनी में केसर इलायची कितनी हो। पिस्ता बुरकाकर कैसे पेश किया जाय इसकी ट्रेनिंग रसोइया महाराज को देते देखा है। हर चीज में केसर डालने से उसका स्वाद और इज्जत बढ़ जाती है इस थियरी के जन्मदाता उनको कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

आज की सभी गृहिणियों को भाईजी का यह सन्देश था कि बाहर का खाने के बजाय अपने घर पर ही खाने खिलाने पर जोर दो। स्वास्थ्यपूरक भोजन बनाओ पर उसे इतना स्वादिष्ट बनाओ कि परिवार को बाहर का खाना याद न आये। जंक फूड भी हेल्दी होना चाहिये।

भाईजी ने खुद कभी गहने नहीं पहने पर उनको गहनों का पूरा ज्ञान था और घरवालों के लिये गहने बनवाने के काम में पूरा रस लिया। पर इस विषय में भोजाईजी की विद्वत्ता उनसे भी अधिक ऊंची है।

कुल मिलाकर भाईजी ने समय समय पर उपलब्ध सारे सांसारिक भोगों का उपभोग किया पर साथ ही ईशोपनिषद का यह मन्त्र भी अपने जीवन में चरितार्थ किया ''तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा:''

दादाजी लादूरामजी

हालांकि यह संस्मरण भाईजी के बारे में है, पर इस बीच में दादाजी लादूरामजी के बारे में कुछ बताना इसलिये संगत है कि भाईजी पर सबसे अधिक प्रभाव किसी का पड़ा है तो दादाजी का। दादाजी तापड़िया परिवार के भीष्म पितामह थे।

परदादाजी जगन्नाथजी, जिन्होंने जसवन्तगढ़ गांव को बसाया, बड़े आत्मसम्मान वाले व्यक्तित्व थे, पर उनका कामकाज़ सट्टा ही था। सट्टे के व्यसन के कारण सिर पर बड़ा कर्ज इकट्ठा कर लिया। चार सन्तानों का घर था, पर कमाई का और कोई साधन नहीं था। बड़े बेटे लादूरामजी का विवाह होकर जब जगन्नाथजी के पहले पोते यानी हणमानबगसजी का जन्म हुआ तो धूमधाम से ''दसोटन'' आयोजित हुआ जिसके लिये परिवार को बड़ा कर्ज लेना पड़ा। परदादाजी जगन्नाथजी इस कर्ज को चुकाने के पहले ही गुजर गये। सबसे बड़े बेटे लादूराम ने १४ साल की उम्र में इस कर्ज को उतारने, और अपने व अपने तीन छोटे भाइयों, शिवचन्दराय, सूरजमल व गणपतराय के परिवारों के भरण पोषण की जिम्मेदारी ले ली।

जहां पूरा राजस्थान ही पिछड़ा, गरीब व अकाल भुखमरी से पीड़ित था वहां छोटे से गांव जसवन्तगढ़ में व्यापार का स्कोप नहीं के बराबर था। पर जब जिम्मेदारी आ पड़ती है तो आदमी की छिपी हुई प्रतिभा को उभार देती है। सो दादाजी लादूरामजी ने सोचकर यह निष्कर्ष निकाला कि ''दिसावर'' जाकर ही कमाई हो सकेगी। तय करके उन्होंने अपना भीष्मसंकल्प जाहिर कर दिया कि ''जद ताणी करजो नईं उतार द्यूं बड़ ताणी पाछो कोनी बावड़ूं।''

ऊँट पर बैठकर कुचामण जाकर रेल पकड़नी पड़ती थी। वहाँ से फुलेरा, टूंडला होते हुए हावड़ा। वहां से आसाम डिब्रूगढ़। बड़ी लम्बी कठिन यात्रा करके युवा लादूरामजी कलकत्ता होते हुए आसाम के डिब्रूगढ़ शहर पहुंचे। उनके जैसे कई मारवाड़ी उद्यमी आज से २००-२५० साल पहले अपनी जन्मभूमि से हमेशा के लिये विदा होकर भारत के दूरदराज़ कस्बों में वहीं के होकर रह गये थे। वे राजस्थान के अपने बन्धुओं को, जो नये नये वहां पहुंचते थे, उनको वहां कामकाज जमाने में मदद करते थे। और इस ट्रेनिंग प्रोसेस में उन्हें अपने भरोसे का सहायक भी कम वेतन में मिल जाता था। लादूरामजी को भी किसी अग्रवालजी ने कपड़े की दूकान में नौकरी दी। नौकरी में व्यापार का हॉर्ससेंस, इन्ट्यूशन, अटकल, विश्वसनीयता और मेहनत के बल पर मालिक के व्यापार को खूब बढ़ाया। पिता का माथे पर डाला कर्ज चुकाने में लादूरामजी को पूरे ३ साल लग

गये। फिर उनको संग्रहणी (डायरिया) पेट की बीमारी होने के कारण जसवन्तगढ़ लौटना पड़ा। दादीजी सुरजूदेवी ने भी इतने साल युवावस्था में अपनी विरहव्यथा को मन में ही रखकर घर व बच्चों को सम्भाला। दोनों की इस महान तपस्या को एक्नॉलेज करने का न रिवाज़ था न अपेक्षा थी।

तबियत ठीक होकर जब दादाजी के वापिस काम पर आसाम लौटने की बात आई तो उनकी माताजी ने बेटे लादूरामजी के कमजोर शरीर को देखकर नाराज होकर कह दिया कि अब मैं लादूरामा को आसाम नौकरी के लिये नहीं भेजूंगी।

आसाम की मनाही हो गयी तो लादूरामजी ने कलकत्ते जाकर कपड़े का काम करने की इच्छा जाहिर की। पर काम करने के लिये रुपया नहीं था। जसवन्तगढ़ के पास सुजानगढ़ में नोखा के रामचन्द्रजी तापड़िया रहते थे, जो जगनन्नाथजी के परिवार से घनिष्ट थे। जगन्नाथ जी के सबसे छोटे बेटे गणपतरायजी उनको गोद गये थे, पर मन नहीं लगा तो वे लौट आये थे। रामचन्द्रजी लादूरामजी की प्रतिभा और ईमानदारी के कायल थे। उन्होंने सुजानगढ़ के बड़े नामी सेठ कनकमलजी लोढा के सामने प्रस्ताव रखा कि कलकत्ते में कपड़े का काम शुरू किया जाय और यह काम लादूराम देखेगा । उसमें रुपया पूरा लोढ़ाजी का लगेगा पर उनकी व जगन्नाथजी तापड़िया की भागीदारी होगी १४ आना : २ आना। लोढ़ाजी ने पूछा ''यदि घाटा हुआ तो ?'' रामचन्द्रजी को लादूराम पर इतना विश्वास था कि उन्होंने घाटापूर्ति की व्यक्तिगत गारन्टी दी। बात तय हो गयी और लादूरामजी अपनी कर्मभूमि कलकत्ता के लिये शुभ मुहूर्त देख कर रवाना हो गये।

सन १९०० से कामकाज चला, बड़े जोरों से चला और कुछ ही सालों में कलकत्ते में लादूरामजी की एक अतिकुशल व्यापारी के रूप में धूम मच गयी। लोढाजी भी अपने भागीदार से बड़े खुश थे। लादूरामजी ने अपनी हिस्सेदारी बढ़ाने की बात की, जो लोढाजी ने मान ली। उस हिस्सेदारी को बढ़ाने में दादाजी ने अपने तीनों छोटे भाइयों को भी भागीदारी दिलवा दी। धीरे धीरे लोढाजी का हिस्सा कम होता गया और तापड़िया भाइयों का बढ़ता गया। आखिर जब लोढाजी के देहान्त के बाद उनके परिवार में कोई पुरुष कर्ता नहीं रहा तब उनकी पत्नी ने भागीदारी समापन की इच्छा प्रकट की, जिसे स्वीकार कर, हिसाब कर के पूरा बिजनेस १९३८ में तापड़िया परिवार के हाथ आ गया।

लादूरामजी ने अपने भाइयों को पहले अपने साथ भागीदारी में काम में लगाया। १९४४ में

शिवचन्दरायजी व सूरजमलजी अलग होकर साथ रहे। लादूरामजी ने गणपतरायजी को कुछ साल अपने साथ रखा और फिर उनको भी स्वतन्त्र काम में स्थापित कर दिया। अगली पीढ़ी को भी उन्होंने काम में प्रवृत्त किया। उनके बेटे और फिर पोते एक एक करके कलकत्ते में व्यापार में आ गये। दादाजी का प्यार और अनुशासन का अद्‌भुत बैलेंस था। उनके व्यक्तित्व और धाक के प्रभाव से न तो कोई व्यसन आदि में बिगड़ा, न विलासिता की तरफ झुका और न आपस में झगड़े की प्रवृत्ति पनपी। उनके काम काज के उसूलों को सबने आत्मसात किया जिससे बाजार में व समाज में साख बनी रही और घाटे से भी बचे रहे।

लादूरामजी का हृदय अतिविशाल था। उनका अपनापन का दायरा अपने व अपने भाइयों के पूरे परिवार तक ही सीमित नहीं था, बल्कि पूरा जसवन्तगढ़ गांव उनका अपना था। एक विशाल वटवृक्ष की तरह अनगिनत परिवार उनकी छाया में पले, समृद्ध हुए या मुसीबत से निकले जिसकी अनगिनत कहानियां हैं।

जिस परिस्थिति से वे उठकर खड़े हुए उसके कारण उनमें मितव्ययिता व सादगी तो आनी ही थी, पर जब कमाई होने लगी तब उसी कारण अपने गांव के लिये उन्होंने जो कुछ मुक्तहस्त से किया उसकी गाथा सदियों तक गाई जायेंगी।

- कलकत्ते की प्रसिद्ध काली माईजी की कृपा से ही मां लक्ष्मी की कृपा घर में आई है इस भावना से उन्होंने गांव में कालीजी का मन्दिर बनवाया। जब मूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा का समय आया तब किसी ने यह शंका रख दी कि कालीजी की मूर्ति पर तो बलि चढ़ती है। इसलिये काली माता के ही दूसरे स्वरूप लक्ष्मीमाताजी की मूर्ति की मन्दिर में स्थापना करने का निर्णय हुआ।
- दादाजी स्वयं किसी पाठशाला में पढ़ नहीं पाये, पर पढ़ाई के महत्व को, और वह भी लड़कियों की पढ़ाई के महत्व को पूरा समझ लिया था। सो एक के बाद एक तीन विद्यालयों का निर्माण करवाया और चलाने के लिये सरकार को सौंप दिया। कई दशकों तक इन पाठशालाओं में दूर दूर के विद्यार्थियों ने पढ़कर अपने अपने क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त की।
- गांव में पानी की बेहद समस्या थी। जमीन बेहद खारी थी इसलिये जितने भी कुयें खुदवाये वे सारे फेल थे। श्रमदान के जरिये दो तालाब बनाये गये, पर वे पूरे नहीं पड़ते थे और तालाब से पानी घड़े से भरकर या भैंसागाड़ी से लाना बड़ी तपस्या थी। पास के शहर लाडनू में

अपेक्षाकृत मीठे पानी के सरकारी बोरवेल थे। दादाजी ने सरकार को राजी किया कि ४ मील लम्बी पाइपलाइन बिछाकर लाडनूं के बोरवेल का पानी पम्प करके जसवन्तगढ़ में पाइप का जाल बिछाकर घर घर पानी पहुंचाया जाय। पाइप लाइन का, टंकी का व टंकी की जमीन का खर्च तापड़िया परिवार ने दिया। बूंद बूंद को तरस रहे गांववासियों के लिये जैसे अमृतवर्षा हुई।

- ✦ गांव में बिजली व पक्की सड़क भी दादाजी के प्रयत्न व परिवार के योगदान से आयी।
- ✦ इलाज के अभाव में मौतें होना आम बात थी। दादाजी ने औषधालय बनाकर अति सुयोग्य मोतीलालजी मिश्रा वैद्यजी की नियुक्ति की जिसका दूर दूर के गांवों से रोगी नि:शुल्क इलाज, नि:शुल्क दवाई का लाभ लेने लगे। यह सेवा आज भी परिवार दे रहा है जिसमें अब होमियोपैथी व फिजियोथेरपी भी जुड़ गयी हैं।
- ✦ एक ऊंटगाड़ी वाला जलाने की लकड़ियां भरकर दादाजी की बैठक के पास से गुजरा। उसने दादाजी को दो रुपये गाड़ी का भाव बताया। भाव कसकर लेना बनिये का धर्म है सो दादाजी ने उसे डेढ़ रुपया ऑफर किया, जिसे अस्वीकार कर वह आगे बढ़ गया। दिन भर गांव में घूम कर भी उसे कोई भी ग्राहक नहीं मिला। शाम को भरी गाड़ी उदास लौटता देख दादाजी ने उसे बुलाया और मुनीमजी को आदेश दिया कि २ रु में गाड़ी खाली करवा लो। यह माजरा मुनीमजी की समझ में नहीं आया। ''सेठां, आज सुबह तो आप ने डेढ़ रु कहा था। अब २ रु क्यों ?'' दादाजी बोले, ''इसकी एक भी लकड़ी नहीं बिकी। रात को घर जाकर क्या खुद खायेगा, क्या अपने घरवालों को खिलायेगा, क्या ऊंट को खिलायेगा ?''
- ✦ दादाजी के देहावसान के समय सारे गांववालों ने जिस शानदार तरह से उनको बिदाई दी वही उनके व्यक्तित्व का परिचायक है। वैकुण्ठी निकाली गई। सारे गांव को ही नहीं, गांव से गुजरने वाले हर राहगीर को भोजन कराया गया।

तापड़िया परिवार

ईश्वर की अनुकम्पा से जगनन्नाथजी तापड़िया का परिवार बढ़ते बढ़ते करीब १५० सदस्यों का हो गया है। बहनों बेटियों भानजे भानजियों को जोड़ेंगे तो शायद ३५० हो जायेंगे। इनमें से

अधिकतम देरसबेर आकर बम्बई में ही स्थायी हो गये हैं। दादाजी लादूरामजी से जो संस्कृति छोटे बड़ों को सभी को विरासत में मिली थी, यानी अपनेपन का दायरा पूरे परिवार तक फैलाये रखने और उसे जीवित रखने का सक्रिय प्रयास करने के कई उपक्रम बड़े भाईजी और उनके समवयस्क काकाजी व भाइयों ने मिलकर सोचे, उनमें से कुछ विशेष उल्लेखनीय ये हैं -

- ✦ हर खुशी या दु:ख के अवसर पर सभी का न केवल उपस्थित होना बल्कि काम की जिम्मेदारियाँ भी बांट लेना।
- ✦ नियमित क्रम से सभी का मिलना। बहुत पहले तो हर रविवार को ताश पार्टी होती थी। बाद में उसे हर महीने मिलन का रूप दिया गया।
- ✦ साल में कई बार पिकनिक करना।
- ✦ जसवन्तगढ़ गांव में साल में एक या दो बार किसी बहाने इकट्ठा होना। पहले पूरे गांव में मन्दिरों में सावन के झूलों की झांकी का बड़ा त्यौहार होता था। उसकी जगह दिसम्बर के अन्त में छुट्टियां मनाना शुरू हो गया। अब हर २५ फरवरी को लक्ष्मी मन्दिर में पाटोत्सव होने लगा है।
- ✦ परमात्मा की असीम अनुकम्पा कहें या सभी दादाजी के हृदय की विशालता कहें कि सौ साल से चारों दादाजी के परिवारों में आज भी अतिस्नेह, मेलजोल बना हुआ है। सुखदु:ख के अवसर पर, विवाह या गमी पर सभी आकर खड़े हो जाते हैं। व्यापार में भी एक दूसरे की मदद करते हैं, गाइड करते हैं।
- ● इन सब से प्रेरणा लेकर युवा पीढ़ी ने हर चार साल एक बहुत बड़े आयोजन की शुरूआत की जिसका नामकरण है तापड़िया युवा जसवन्तगढ़ मीट। इस मीट ने सारे युवाओं और बच्चों को आपस में सुदृढ़ प्रेम में बांध दिया।
- ● इसी सिलसिले में भाईजी ने एक बार एक मीट लादूरामजी परिवार की आयोजित की।
- ● चारों दादाजी ने मिलकर गांव की भलाई के लिये कई उपक्रम शुरू किये थे उनमें पूरे परिवार का सालाना योगदान स्वेच्छा से मिल रहा है जिससे वे न केवल चल रहे हैं बल्कि उनकी समयानुसार वृद्धि व अपडेट करने का काम हो रहा है। इस बहाने सब का मिलना व बात करना हो जाता है। इतने बड़े परिवार का ऐसे संयुक्त उपक्रम का उदाहरण शायद ही

कहीं मिलेगा।

✦ भाईजी, श्यामसुन्दरभाईजी और मैं जयप्रकाश आजीवन साथ रहे। पहले निम्फ और फिर वास्तुशिल्प बिल्डिंग में सारे सुख दुख भाईजी की छत्रछाया में गुजरे। बच्चे बड़े हुए, उनके विवाह हुए, पोते पोती हुए और सभी ने कम अधिक संस्कार लिये। ३४ सालों से हर वर्ष एक आनन्दोत्सव के लिये पूरा परिवार कहीं बाहर ३-४ दिन बिताता है।

✦ भारत में एक पुरानी परम्परा शायद सभी प्रान्तों में थी। यदि भुवा या बहन या उनके बेटे बेटी विपन्न अवस्था में हों या ऐसी जगह काम में लगे हों कि वहां रहकर उनके बच्चे नहीं पढ़ पायेंगे तो उनके बच्चे ननिहाल में पलते बढ़ते थे। वैसे भी सारे युवा दम्पति अपनी पूरी क्षमता से परिवार व भारत की जनसंख्या बढ़ाने के पुनीत काम में लगे हुए थे। इसलिये खुद के बच्चों की सेना में भानजे भानजियों का और जुड़ जाना कोई बड़ी घटना या बोझ नहीं लगता था। वही परम्परा लादूरामजी दादाजी ने भी परिवार में स्थापित की। भुवाजी के बेटेबेटी, बहनों के बेटेबेटी, बेटियों के बेटेबेटी हमारे घर में रहे पले, पढ़े। वे न केवल पले बल्कि उनको काम में भी लगाया गया।

● दादाजी के बाद भाईजी ने इस परम्परा को पूरी तरह निभाया बढ़ाया। बहन बहनोई भानजे भानजियों को, भुवा के बेटे बेटियों को सालों तक परिवार में ही रखा और उनको काम काज में भी लगाया। आज वे बच्चे और उनके बच्चे अपने पांवों पर खड़े हैं और बहुत सम्पन्न है पर ननिहाल की मधुर यादें वे आज भी संजोये हैं और खुद को तापड़िया परिवार का ही सदस्य मानते हैं।

- पिताजी पढ़े लिखे नहीं थे इसलिये अपने सारे भाइयों के, बहनों के, बेटों बेटियों के, पोते पोतियों तक के विवाह में भाईजी ही केन्द्रबिन्दु थे। सम्बन्ध ढूंढने से लेकर विवाह सम्पन्न कराने तक भाईजी आकण्ठ काम में डूब जाते थे। उनका मानना था कि सम्बन्ध करने में बच्चे बच्ची के अलावा परिवार की संस्कृति, खानपान, मातापिता के विचार स्वभाव अच्छी तरह से मालूम करना बहुत जरूरी है। उससे उनके बच्चे में क्या गुण आज हैं या आगे जाकर दीखेंगे यह मालूम पड़ेगा। एक दूसरे के घर जाने, भोजन करने में परिवार की संस्कृति महसूस होती है। दोनों परिवारों की संस्कृति मेल खाती या नहीं। होटल में मिलने में वह जानकारी नहीं मिल सकती। उसके लिये भाईजी गहरी तहकीकात करते थे। ऐसे व्यक्तियों को ढूंढते थे जिसने सामने वाले परिवार के लोगों को सालों से नजदीक से देखा है। हो सके तो एक से अधिक व्यक्ति ढूंढते थे। समाजकार्य में लगे रहने के कारण उनको हर शहर में ऐसे भरोसे वाले लोग मिल जाते थे।
- नेतृत्व की उनकी स्टाइल यही थी कि खुद काम में लग जाओ और सब को लगा लो।
- छोटे बच्चे भाईजी के लिये वीआइपी थे। उनकी मांगें पूरी करना सर्वोपरि था। भले ही गली में ले जाकर कुछ खरीदना हो या उनके नाटक का पात्र बनना पड़े। घर में बच्चों के साथ भाईजी बच्चे बन जाते थे। उनकी जो इच्छायें और कहीं पूरी नहीं होती थीं वे सर्वमान्य पापाजी के पास पूरी होती थीं। यदि घर पर कोई बड़ी गम्भीर मीटिंग चल रही हो तो अचानक एक नन्हा बच्चा उनकी अंगुली खींचकर उनको बाहर ले जा सकता था और मीटिंग कुछ देर स्थगित हो सकती थी। बहुत पुराने समय में वे विदेश से ८ एम एम का प्रोजेक्टर ले कर आये थे जिसपर चार्ली चैपलिन, लॉरेल हार्डी आदि कॉमिक फिल्में हम सब घरेलू थियेटर में बैठकर देखते ओर हंस हंस कर लोटपोट होते थे। एक बार बच्चों ने उनको सान्ताक्लॉज बना कर परेड करवाई।
- बड़े परिवार में कभी न कभी विपत्ति आती ही है। हर विपत्ति का हर्ता भाईजी थे। व्यक्तिगत गोपनीय समस्यायें कितनी आयीं, कितनी हल हुईं, इसका लेखाजोखा तो भाईजी अपने साथ ही ले गये। बहुतों की आर्थिक समस्या में उन्होंने स्वयं अपना योगदान किसी को बिना बताये दिया।
- भोजन सादा स्वास्थ्यकर तो रहे ही, पर वह स्वादिष्ट भी हो, यह बहुत जरूरी था।

- घर व ऑफिस में काम करने वाले सभी छोटे कर्मचारी से लेकर बड़े अफसरों तक भाईजी उनके व्यक्तिगत व पारिवारिक जीवन की व उनके गांव की पूछताछ करते थे। आवश्यकतानुसार सलाह व मदद भी करते थे। इस प्रकार हर व्यक्ति के दिल में भाईजी के प्रति एक पिता समान गहरे आदर का भाव बन जाता था।
- भाईजी और उनके सगे और चचेरे भाइयों ने अपने हमउम्र काकाओं के साथ आमोदप्रमोद का, पिकनिक, ताश, पिक्चर आदि का पूरा आनन्द लिया जिससे आपसी सम्बन्ध अटूट बन गये।
- किसी ने भाईजी को बताया कि वडाला में सुप्रीम इंडस्ट्रीज नामकी एक फैक्टरी बिकाऊ है। लादूरामजी परिवार में काम काफी बढ़ा हुआ था इसलिये भाईजी को लगा कि यह फैक्टरी छोटे दादाजी सूरजमलजी के परिवार को दिलाना सही होगा। उन्होंने बजरंगलालजी महावीरप्रसादजी काकाजी को इस फैक्टरी को खरीदने का आग्रह किया। यह भी कहा कि यदि रुपयों की कमी लग रही हो तो उसका हल सोचा जा सकता है। फैक्टरी ले ली गयी और काकाजी के अथक प्रयास व सूझबूझ से प्रगति होते होते आज सुप्रीम इंडस्ट्रीज प्लास्टिक में अग्रणी कम्पनी बन चुकी है पर काकाजी आज भी भाईजी की उस छोटी सी पहल का बखान करते नहीं थकते।
- उद्योग , सामाजिक कार्य और सीसीआइ क्लब के जरिये भाईजी की पहचान कई ऊंचे नामी अरबपतियों से हो गयी थी। पर उन्होंने सोचसमझकर उनसे सीमित मित्रता ही रखी। उनसे अधिक घनिष्टता अनिष्ट का कारण बन सकती है, यह उन्होंने देख समझ लिया था।

बृहद् तापड़िया परिवार और बाई बेटी जंवाई भानजों के नाम, पते, फोन आदि का संकलन करके एक पुस्तिका भाईजी व काकाजी बजरंगलाल जी ने मिलकर प्रकाशित की जिसको हर परिवार संभालकर उपयोग कर रहा है। उसके समय समय पर कई संस्करण निकाले गये।

भाईजी की दिनचर्या

भाईजी की दिनचर्या इस प्रकार थी। सुबह ८ से १० के बीच बड़ी देरी से तब उठना जब नींद पूरी हो जाये। नींद पूरी करना भाईजी के उत्कृष्ट स्वास्थ्य का एक मुख्य हिस्सा व कारण था।

नित्यकर्म पूरा करने में ११ से १२ बज जाते थे जिसमें आसन प्राणायाम मालिश और नाश्ता भी शामिल थे। फिर शुरू होता था काम का लम्बा सिलसिला। भाईजी का ऑफिस बेडरूम से लग कर था। अत: काम के समय की कोई सीमा नहीं थी, भले ही रात के १-२ बज जायें। भाईजी ने कभी खुद कम्प्यूटर पर काम नहीं किया पर करवा कर लेना आता था। कम्प्यूटर काम के लिये गणेश महतो और अन्य ऑफिस काम के लिये सन्तोष झा। ड्राफ्टिंग में परफेक्शन भाईजी का पैशन था। पहले हाथ से लिखकर देते थे, फिर टाइपिंग की गलती सुधारने का लम्बा सिलसिला। चार पांच बार परिष्कृत करके प्रिन्ट आउट निकालना नॉर्मल था।

भले ही सब कुछ कम्प्यूटर में था पर भाईजी कागज के रिकॉर्ड पर निर्भर रहना पसन्द करते थे। अत: उनका अति विशाल सिस्टेमेटिक फाइलिंग सिस्टम बनाया हुआ था। यह जगप्रसिद्ध था कि यदि कोई पेपर भाईजी के सुमेरु पर्वत रिकॉर्ड में आ गया तो वह निश्चित भाईजी के पास २०-३० साल बाद भी मिल जायेगा।

परिवार का विभाजन

परिवार जैसे जैसे बड़ा होता है वैसे वैसे उनको छोटे भागों में बांटना पड़ता है। यह अलग होने की प्रक्रिया तीन स्तर पर होती है।

१ फाइनेंशियल सेपरेशन अर्थात् कामकाज साथ में, रहना भी साथ में, पर कमाई में हरेक की भागीदारी तय करके सालाना हिसाब करना।

२ घर अलग करना अर्थात् सिर्फ कामकाज साथ में। रहना अलग। कमाई में हरेक की भागीदारी सुनिश्चित।

३ कामकाज अलग करना अर्थात् सभी तरह से अलग।

भाई भाई का अलग होना दुनियां में होता आया है। इस प्रक्रिया से हर परिवार को गुजरना

पड़ता है पर इस नाजुक प्रक्रिया को सही समय पर सही तरह से करने के लिये जो अनुभव और समझ, यानी विज्डम जरूरी है वह अधिकतर नहीं होती। विडम्बना यह है कि मातापिता यह भी नहीं समझते कि जिस तरह की समझ इसके लिये चाहिये, वह मुझमें नहीं है। नतीजा यह होता है कि समय पर इलाज नहीं होता। कैंसर फैल जाता है और फिर जो सर्जरी करनी पड़ती है उसमें काफी खून बहता है, अंग काटते पड़ते हैं और फिर भी जीवन भर घाव रह जाता है।

इस प्रक्रिया की गहरी समझ भाईजी ने अपने बड़ों के अनुभव से, सम्बन्धियों के, समाज के परिवारों को देखकर काफी हासिल कर ली थी। भाईजी ने अपने अनुभवों के आधार पर यह सिद्धान्त निकाला कि यदि अलग होने की जरूरत महसूस होने लगी तो समझ लो कि अलग होने में देर हो चुकी है, यानी अब यह प्रक्रिया कठिन होगी। प्रेम से, शान्ति से नहीं होगी। यू आर टू लेट। वही सेपरेशन सही है जिसकी जरूरत बिलकुल महसूस नहीं हो रही हो। जिसमें अलग होते समय प्रेम के आंसू बहें न कि रिलीफ महसूस हो। हर पिता का महत्वपूर्ण कर्तव्य है कि वह अपनी मौजूदगी में अपने लड़कों को बिना कारण पहले आर्थिक रूप से अलग करे, फिर अलग रहने की व्यवस्था करे और फिर कामकाज में अलग करे। वह सेन्स करे कि अब आगे तनाव शुरू हो सकता है। इस थियरी को भाईजी जहां भी सही माहौल देखते, वहां समझाते थे।

लादूरामजी दादाजी ने पहले अपने तीनों भाइयों को अलग किया। फिर अपने तीनों बेटों के घरों को। पर तीनों का कामकाज साथ ही था। अब हमारे पिताजी व दोनों काकाजी की बारी थी कि वे अपने १५ बेटों के कामकाज को अलग करते। पर यह काम भाईजी ने काकाजी की मदद से किया। इसमें कई साल लगे।

भाईजी ने हम सातों भाइयों के आर्थिक रूप से अलग हो जाने की बात भी तब छेड़ दी जब ऐसा कोई सवाल ही नहीं था। मैं जो सबसे छोटा था वह तो अभी पढ़ाई भी पूरी नहीं कर पाया था और सेपरेशन की एबीसीडी भी नहीं जानता था। मेरे लिये तो यह बालविवाह जैसा था। नाम के लिये सेपरेशन पिताजी ने किया पर सब समझ रहे थे कि यह भाईजी ही करवा रहे हैं। बाहरी परिवार को अलग करने का रोल एक बात है और खुद भी जिसमें एक हिस्सेदार हो उस केस में खुद को निष्पक्ष रखना और सब को निष्पक्ष दीखना बहुत कठिन है। उसमें खुद कहीं कहीं घाटा भी सहन करना पड़ता है और वह भाईजी ने किया।

भाईजी ने अपने खुद के परिवार और सगे सम्बन्धियों के परिवारों में इस प्रक्रिया में कई बार

आगे बढ़कर हिस्सा लिया। आखिर भाईजी स्वयं बिजनेस से रिटायर और आर्थिक रूप से अलग हो गये। उन्होंने यह प्लान कर लिया था कि अब वे अपना पूरा समय माहेश्वरी समाज , जसवन्तगढ़, परिवार की समस्याओं, विपश्यना और दान के काम में लगायेंगे।

पर सेपरेशन की इस थियरी में एक अपवाद भाईजी ने खुद अपने जीवन में किया। आर्थिक रूप से अलग होने के बावजूद भाईजी, श्यामसुन्दर भाईजी व जयप्रकाश यानी हम तीन भाइयों का परिवार आजीवन एक ही घर में साथ साथ रहा।

माहेश्वरी समाज : माहेश्वरी प्रगति मण्डल

बम्बई का मारवाड़ी समाज जो मुख्यत: व्यापारी था, बढ़ते जा रहा था और आवश्यकता महसूस हो रही थी कि वे व्यापार के अलावा समाज के स्तर पर आपस में मिलें जुलें। इसके लिये माहेश्वरी, अग्रवाल, ओसवाल समाज सबने अपनी सामाजिक संस्थायें स्थापित कीं। भाईजी भी आकर्षित हुए और नवस्थापित माहेश्वरी प्रगति मण्डल के सक्रिय सदस्य बने। शीघ्र ही लोगों ने भाईजी की नेतृत्व क्षमता को पहचान लिया और फिर तो मण्डल और भाईजी आजीवन राधामाधव हो गये। भाईजी की सांस सांस में मण्डल बसा था।

हर समाज के सक्रिय लोग इस जुनून को ही लिये रहते हैं कि कोई समाजसेवा की योजना का काम जोरों से हो। वही दिखकर आता है। समाजसेवा का काम भाईजी ने खूब किया भी और खूब प्रोत्साहन भी दिया।

दूरदर्शी, मनीषी वह होता है जो भविष्य के गर्भ को देख पाता है। भाईजी ने पूरे भारत में चल रहे माहेश्वरी समाजों और अन्य संस्थाओं के अन्दर चल रही उठापटक और राजनीति का सूक्ष्मता से अध्ययन किया और उसके मूल कारण व निवारण पर चिन्तन किया। मानवीय कमजोरियों विशेषकर मान अपमान और अहंकार का टकराव कैसे संस्थाओं की ऊर्जा को समाप्त कर देता है, कैसे गुट बन कर एक दूसरे को गिराना प्रथम लक्ष्य बन जाता है, कैसे सज्जन थककर संस्था में निष्क्रिय हो जाते हैं और राजनैतिक मानसिकता वाले लोग संस्था पर हावी हो जाते हैं यह सब देखा समझा। इन सब के निचोड़ के रूप में भाईजी ने कुछ अतिमूल्यवान प्रभावशाली प्रेक्टिकल उपाय / पॉलिसी / सिद्धान्त निकाले।

१. मतभेद होता है यह एक सचाई है। मतभेद की स्थिति में बहुमत के आधार पर संस्था को चलाना , निर्णय लेना कानूनन तो सही है पर वही गुटबाजी का जन्मदाता है।

२. इसलिये संस्था को बहुमत के जोर पर नहीं बल्कि कॉन्सेन्सस के आधार पर चलाना चाहिये। कॉन्सेन्सस का अर्थ है कि हर विरोधी को इस बात के लिये मनाना कि वह स्वीकार करे कि उसका मतभेद कायम कायम रहते हुए भी वह संस्था के हित में बाकी सब के साथ चलने के लिये तैयार है।

३. कॉन्सेन्सस आसान नहीं है। इसके लिये विषय पर बहुत लम्बे समय बिना धैर्य खोये चर्चा करनी होती है। एक दूसरे का प्यार आदर सम्मान कायम रखना होता है। अन्त में मतभेद न मिटा तो जिन इक्के दुक्के व्यक्तियों का विरोध कायम रहता है उसे मनाना पड़ता है कि वे असहमति रखते हुए भी बाकी लोगों के साथ चलें।

४. विरोधी को मनाने के लिये आपसी प्रेम स्नेह आवश्यक है। दिखावे का प्रेम या टेकनीक काम नहीं करती। वह प्रेम भी सच में उमड़ना चाहिये विरोधी के लिये।

५. बहुमत के आधार पर तेजी से की हुई प्रगति काम की नहीं। भले प्रगति कुछ धीमी हो जाय पर सब को साथ लेकर की गयी प्रगति ही काम की है। समाज का सबसे मुख्य उद्देश्य सबका मेलजोल स्नेहप्रेम है। उसकी बलि देकर कोई प्रगति काम की नहीं।

६. ऑर्गनाइजेशन का सिस्टम ऐसा होना चाहिये कि अधिकतम लोगों को कोई जिम्मेदारी, किसी काम का मौका मिले। पर पद में ऊपर उठने का प्रोसेस क्रमशः होना चाहिये। अचानक नये व्यक्ति को ऊपर बिठाना सारी संस्था को डिस्टर्ब करता है।

७. पुराने वरिष्ठ लोगों को सलाहकार गाइड बनाना चाहिये और युवाओं को कार्यकर्ता।

८. इलेक्शन के बजाय सर्वसम्मत सेलेक्शन होना चाहिये। भले ही उसके लिये हर स्तर पर लम्बी मीटिंगें करनी पड़े। सर्वसम्मत न हो सके तो कम से कम कॉन्सेन्सस बने। वोटिंग की जरूरत न रहे। यदि विरोधी पैदा हो गया तो पूरे समय, पूरी शक्ति उस विरोध का मुकाबला करने में लग जायेगी।

९. प्रतिष्ठा, प्रसिद्धि प्रशंसा की बात व्यक्ति को किस तरह शराब के नशे की तरह पीछे पड़ जाती है, यह भाईजी ने समझ लिया था। इसलिये खुद के लिये आये ऐसे हर आग्रह को, हर

दबाव को उन्होंने नम्रतापूर्वक अस्वीकार कर दिया। मण्डल में महीनों सालों तक इस विषय में सहचिन्तन करके ऐसे विस्तृत नियम बनवाये जिसने व्यक्तिप्रशंसा का रास्ता ही बन्द कर दिया।

इन मूलमन्त्रों पर सबका विश्वास जमाने में भाईजी ने सालों मेहनत की। बेसब्री पर ठंडा पानी छिड़का। प्रबल विरोधी को भी कैसे मनाया जा सकता है इसको प्रत्यक्ष कर के दिखाया। तब जाकर पॉलिसी के इन तीन स्तम्भों पर सबका विश्वास बैठा।

१ प्रजातान्त्रिक मूल्य

२ सामूहिक नेतृत्व

३ सर्वानुमति से निर्णय

पॉलिसी के इन तीन स्तम्भों पर खड़ी इस कार्यशैली को आत्मसात करने में मंडल को कुछ दशक लग गये। बीचबीच में फिर भी कार्यकर्ताओं में बेसब्री उभरती रहती थी। आखिर इस लम्बी प्रक्रिया का एक अद्भुत परिणाम, अद्भुत आदर्श सारे भारत के माहेश्वरी समाज को देखने को मिला। वृहद् बम्बई में करीब ६००० सदस्यों की भारत की सबसे बड़ी संस्था होने के बावजूद माहेश्वरी प्रगति मंडल में विरोध की राजनीति नहीं के बराबर रही। यहां तक कि सालों तक इलेक्शन हुआ ही नहीं।

भाईजी ने अगणित कार्यकर्ताओं को सालों तक गाइड करके तैयार किया। इससे मण्डल की एक संस्कृति बन गयी है जिसका स्थायी लाभ समाज को मिल रहा है। समाज सिर्फ समाज ही नहीं बल्कि एक परिवार है जो एक दूसरे के सुख दुख के साथी हैं यह भावना भाईजी ने सालों तक समाज में कूटकूट कर भरी।

श्री रमेशजी मरदा ने

भाईजी की कार्यशैली का वर्णन करने के लिये एक कविता मंच से सुनाईं थी वह यह है:-

कदम मिलाकर चलना होगा।
बाधायें आतीं हैं, आयें, घिरें प्रलय की घोर घटायें,
पावों के नीचे अंगारे, सिर पर बरस रही ज्वालायें
निज हाथों से हंसते हंसते, आग लगाकर जलना होगा।
कदम मिलाकर चलना होगा।
मुक्तहास्य में और रुदन में, तूफानों में बलिदानों में
उद्यानों में वीरानों में, अपमानों में सम्मानों में
उन्नत मस्तक उभरा सीना, पीड़ाओं में पलना होगा
कदम मिलाकर चलना होगा।

गिरगांव भवन

मण्डल को अपने ऑफिस की जरूरत पड़ी तो गिरगांव में एक भवन की पहली मंजिल भाड़े पर ली गयी। गतिविधि बढ़ती जा रही थी। बम्बई पूरे भारत में मेडिकल सुविधा के लिये सर्वोच्च माना जाता है। इसलिये इलाज के लिये बाहर से आने वाले माहेश्वरी बन्धुओं के परिवार की बम्बई जैसे मंहगे शहर में रहने की बड़ी समस्या थी। इसलिये यह तय हुआ कि पूरा भवन खरीद कर रिनोवेशन कर लिया जाय। चन्दा इकट्ठा हो गया और रिनोवेशन की जिम्मेदारी भाईजी को दी

गयी। मण्डल का ऑफिस तात्पुरता तापड़िया परिवार की उसी पुरानी पेढ़ी में स्थानान्तरित कर दिया गया। अब भाईजी दिन रात उस प्रोजेक्ट में लग गये। समाज का हर पैसा किफायत से लगे इसके लिये दुगुनी मेहनत की। पर लोकार्पण की जो तारीख घोषित हो गयी थी उस समय तक काम पूरा होते नहीं लग रहा था। सो भाईजी भाभीजी कुछ सप्ताह के लिये उस निर्माणाधीन भवन में ही रहने आ गये जिससे दिनरात खड़े रह कर काम को बढ़ायें। आखिर निर्धारित दिन श्रीमती राजश्रीजी बिड़ला के हाथों धूमधाम से लोकार्पण हो गया। इस भवन की हर ईंट आज भी गवाही दे रही है, जब भाईजी खानापीना भूलकर साइट पर डटे रहते थे।

अन्धेरी भवन

गिरगांव भवन की सफलता से उत्साहित होकर मण्डल ने बम्बई के उपनगर में भवन की बड़ी कमी को पूरी करने का निश्चय किया जिसमें विवाह जैसे बड़े आयोजन हो सकें। अन्धेरी भवन के इस प्रोजेक्ट में भी भाईजी की मुख्य भूमिका रही।

विधान

मण्डल के विधान को नये सिरे से बनवाना और वह भी सब को साथ लेकर, यह अतिदुष्कर पर अतिमहत्वपूर्ण कार्य भाईजी ने करवाया। इसमें इतनी गहरी सोच, इतनी दूरदर्शिता, इतनी विज्डम से भरा काम किया गया है कि यह बरसों तक संस्था को व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा और राजनीति से बचाकर सही मध्यम मार्ग पर चला पायेगा। समाज के सभी घटकों के हितों का संरक्षण हो और पुरानी पीढ़ी युवा पीढ़ी का तालमेल बैठे ऐसी व्यवस्था इसमें की गयी है।

माहेश्वरी महासभा

बम्बई के माहेश्वरी समाज में जो संस्कृति उपजी वह अखिल भारतीय स्तर पर बिलकुल नहीं थी। माहेश्वरी महासभा में बहुत पहले से ही राजनीति, गुटबाजी प्रतिष्ठा और वैभव प्रदर्षन का अखाड़ा बना हुआ था। आजादी के पहले और बाद में जो सादगी सेवा देशभक्ति का माहौल महामना श्रीकृष्णदास जाजू, विदर्भ केसरी बृजलालजी बियाणी, सेठ गोविन्ददास आदि माहेश्वरी

महापुरुषों ने बनाया और समाज में जो चेतना फूंकी थी वह कब की काफूर हो चुकी थी।

इस अखाड़े में जब भाईजी ने प्रवेश किया तो न केवल बड़े बड़े महारथियों का ध्यान भाईजी की ओर आकर्षित हुआ बल्कि उन सीधे सच्चे कार्यकर्ताओं का भी, जो हाशिये पर थे या कर दिये गये थे। उनको भी पहली बार एक ऐसे व्यक्तित्व का दर्शन हुआ जो सादगी सच्चाई निस्पृहता की प्रतिमूर्ति था, जिसपर वे आंख बन्द कर भरोसा कर सकते थे। शीघ्र ही महासभा में भाईजी को पदाधिकारी बनाने की मांग उठने लगी। पर भाईजी तो राजनीति से कोसों दूर थे। आखिर भाईजी ने महामन्त्री पद स्वीकार किया जिसमें काम अधिक था पर जो कांटों का ताज था। अध्यक्षपद के लिये शक्ति प्रदर्शन या जोड़तोड़ करने का सवाल ही नहीं था।

पर जिस तरह बम्बई में सबने भाईजी के नेतृत्व को स्वीकार कर लिया था, वैसा महासभा में नहीं हो पाया। निर्विरोध चुने जाने की शर्त स्वीकार नहीं हो पायी। इसलिये भाईजी इस रेट रेस से दूर हो गये। आखिर भाईजी को ऐसे पद का प्रस्ताव दिया गया जिसमें इज्जत बहुत थी और जो राजनीति के खिलाड़ियों के लिये निरापद था। भाईजी को चुनाव अधिकारी बनाया गया।

अन्त तक भाईजी महासभा में सक्रिय रहे।

जसवन्तगढ़

अपनी मातृभूमि के प्रति प्रगाढ़ प्रेम स्वाभाविक बात है। भाईजी ने भी गांव के उत्थान के लिये दशकों तक बड़ी सेवा की। जो भी अच्छी योजना सामने आई, चाहे हितकारिणी सभा हो, चाहे गोशाला हो , भाईजी उसमें तनमनधन से जुड़ते ही थे।

दादाजी लादूरामजी के बाद तापड़िया परिवार में गांव वालों की सर्वाधिक श्रद्धा आदर के पात्र काकाजी बजरंगलालजी और भाईजी ही थे। हितकारिणी सभा, श्रीकृष्णगोसेवासदन, आदि गांव के संयुक्त उपक्रमों में भाईजी व काकाजी बजरंगलालजी की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

तापड़िया परिवार के औषधालय व लक्ष्मीजी मन्दिर का पुनर्निमाण, माताजी प्यारीदेवी के नाम पर विद्यालय की स्थापना आदि उपक्रमों में दोनों की प्रमुख भूमिका रही।

जीवन के अन्तकाल तक जसवन्तगढ़ सम्बन्धी हर काम में पूरे तापड़िया परिवार के सभी लोग भाईजी पर ही बोझ डालकर निश्चिन्त होकर बैठे रहते थे और भाईजी उस बोझ को सहर्ष

स्वीकार करते थे।

पर माहेश्वरी प्रगति मंडल में जो संस्कृति भाईजी उपजा पाये, राजनीति से मण्डल को बचा पाये, वह काम जीतोड़ प्रयत्न के बावजूद भाईजी गांव में हासिल नहीं कर पाये। गांव को गुटबाजी व राजनीति से मुक्त नहीं कर पाये, इसका मलाल उनको अन्त तक रहा।

विपश्यना

'एव्री ईवेन्ट इज़ एन अपॉर्चुनिटी' यह कहावत भाईजी के लिये बड़े दिलचस्प तरीके से लागू पड़ी। बिजनेस और समाज कार्य में व्यस्त भाईजी की धर्म या अध्यात्म में न रुचि थी व विश्वास। वे तो कर्मयोगी थे। इसी दौरान भाईजी के साथ सालों से दिनरात काम करने वाले दो-तीन सामाजिक कार्यकर्ताओं की हृदयाघात से अकस्मात मृत्यु हो गयी। इसका भाईजी के दिल पर इतना गहरा आघात पड़ा कि उनको गंभीर डिप्रेशन हो गया। ऐलोपेथी पर ही विश्वास था, इसलिये बम्बई के प्रसिद्ध डॉक्टर का महीनों तक इलाज चला पर फायदा नहीं हुआ। भाईजी महीनों अपने कमरे में बिस्तर पर लेटे रहे। उनको लगता था कि मुझे भी कभी कुछ हो जायेगा।

जब ऐलोपेथी से फायदा नहीं हुआ तो दूसरे इलाजों का दौर शुरू हुआ। एक श्री भाटिया जी ने आसन प्राणायाम कराया जिससे कुछ रिलीफ मिलती थी पर डिप्रेशन मिटा नहीं। इसी दौरान एक मोतीलालजी चौधरी, जो रंगून के भाईजी के पुराने व्यापारी मित्र थे, वे मिलने आये। उन्होंने बड़े प्रेमपूर्वक आग्रह के साथ बताया कि बर्मा से एक सत्यनारायणजी गोयनका आये हैं जो एक १० दिन का विपश्यना नामका साधना शिविर लगाने वाले हैं। जब आप सब प्रयत्न कर चुके हैं तो यह विपश्यना भी करके देखिये तो सही।

भाईजी को उनकी बात पर कोई विश्वास नहीं आया पर वे मित्रता को बहुत मान देते थे। सिर्फ मित्र का मान रखने के लिये वे १० दिन गंवाने के लिये मान गये। वही १० दिन भाईजी के जीवन की दिशा बदलने वाले साबित हुए।

सत्यनारायणजी गोयनका गुरूजी का यह भारत में पहला बहुत कम लोगों का शिविर था जिसमें उनके सम्बन्धी और मित्र ही थे। मरता क्या न करता। भाईजी सिंसियर स्वभाव के तो थे ही। सो पूरे मनोयोग से साधना की। और चमत्कार हुआ!!! महीनों पुराना डिप्रेशन १० दिन में गायब हो गया! मानो नया जीवन मिला!

शायद नियति यही चाहती थी कि भाईजी विपश्यना में लगें जिसके लिये यह सब नाटक हुआ। उसी दिन से भाईजी विपश्यना से आजीवन जुड़ गये। अनगिनत लोगों को उसके लिये प्रेरित किया और उसके प्रचार प्रसार के लिये अनथक प्रयत्न किये। इगतपुरी के सबसे बड़े केन्द्र में अन्त तक सेवा दी। यह भी कह सकते हैं कि आगे के जीवन में भाईजी जो अनेक आंधी तूफानों में अडिग अविचल रहे, हर समस्या के हल में शान्त तटस्थ रहकर सही मध्यम मार्ग पर चलते रहे, उसके पीछे विपश्यना खड़ी थी। तापड़िया परिवार में भी कइयोंने विपश्यना अपनाई उसका मूल प्रेरणास्त्रोत भाईजी ही थे। विपश्यना साधना आज पूरे भारत और विश्व में फैल चुकी है, उसकी शैशवावस्था में जिन्होंने अनथक प्रयत्न किया, उनमें भाईजी एक थे।

डॉ बालाजी ताम्बे

एव्री ईवेन्ट इज़ एन अपॉर्चुनिटी का दूसरा उदाहरण। हमारे सबसे छोटे जंवाई श्री दाऊलालजी मोहता के कम आयु में हृदय रोग हुआ। दो बार विदेश जाकर बाइपास सर्जरी करवा ली। जब तीसरी बार एंजाइना आया तो डॉ ने हाथ खड़े कर दिये। फिर किसी ने डॉ बालाजी ताम्बे का नाम सुझाया। और कोई उपाय था नहीं तो भाईजी जीजाजी को लेकर डॉ बालाजी ताम्बे के पास पहुंच गये। फिर वही हुआ जो होना था। जीजाजी को तो फायदा हुआ ही, भाईजी ने भी बिना हृदय रोग के ताम्बेजी की दवाई शुरू कर दी जो आजीवन चलती रही। फिर तो भाईजी उन सबके पीछे लग गये जिन जिनको हृदय रोग हुआ। सैंकड़ों हृदयरोगी आज भी भाईजी का गुणगान कर रहे हैं, जिनको भाईजी खुद डॉ. ताम्बे के पास लेकर गये।

डॉ धनंजय गुण्डे

कोल्हापुर के ओर्थोपेडिक सर्जन डॉ धनंजय गुण्डे से किसीने भाईजी का परिचय कराया। वे दो दिन का शिविर लेते थे जिसमें आसन प्राणायाम के अलावा जीवन जीने की कला सिखाई जाती थी। उनके शिविर में सैकड़ों लोग भाईजी की प्रेरणा से गये थे।

वे अन्त तक भाईजी के और हमारे परिवार के अटूट मित्र बने रहे।

नीपा शाह

बम्बई की एक फिजियोथेरापिस्ट हैं। भाईजी लम्बे दौर तक फिजियोथेरापी के लिये उनके पास गये। वह फिजियोथेरपी करती थी और भाईजी उसकी स्नेहथेरापी करते थे। उसके व्यक्तिगत जीवन में भाईजी ने कुछ ऐसे टिप्स दिये कि वह हमेशा के लिये भाईजी की बेटी बन गयी।

कुछ प्रेरक घटनायें

पहली :-

एक बार मां ने भाईजी से आग्रह किया कि सभी बहुओं के पास सोने मोती के गहने तो हैं पर हीरे के नहीं है। सो सबके लिये बनवाना है। भाईजी ने अपने परम मित्र पन्नालालजी जवेरी , जो हीरों का काम करते थे, उनकी मदद से हीरे छंटवा कर हीरे के सेट बनवा दिये।जब हर सेट की कीमत आंकी गयी तो सेट सेट में करीब तीन हजार रुपयों का फरक आ रहा था। भाईजी ने तय किया कि सबसे ऊंची कीमत वाला सेट सबसे छोटी बहू को दिया जाय और इसी क्रम से छोटी से बड़ी सब बहुओं को सेट बांटा गया।

दूसरी :-

१ ९ ६ ३ के आसपास भाईजी महासभा के किसी काम से नागपुर गये थे। वहां समाज के किसी बन्धु ने उनकी माहेश्वरी समाज के एक नवयुवक से मुलाकात कराई।

उसने शेयर किया कि उसने अपने जीवन का पहला एक लघु उद्योग स्थापित किया था। उसमें कुछ कारणों से घाटा लग गया, और अब वह उसे बन्द करने का सोच रहा है।

भाईजी ने सारी समस्या को बहुत बारीकी से समझा और उसकी फैक्टरी भी जाकर देखी। फैक्टरी व काम अच्छा लगा। उन्होंने महसूस किया कि नागपुर में इस समय उद्योग लगाने की शुरूआत है। यदि इसने उद्योग बन्द किया तो फिर समाज में किसी और की उद्योग लगाने का हिम्मत नहीं होगी। इसलिये उन्होंने सलाह दी कि मैं तुम्हें नौकरी दे सकता हूं पर मैं चाहता हूं कि तुम काम बन्द मत करो। मैं तुम्हें लोन देता हूं। तुम जब जितना चुका सको, चुका देना पर तुमको

सफल होना है।

सुनकर नवयुवक हक्काबक्का रह गया। एक अजनबी अनुभवहीन नवयुवक और उसका पहला उद्योग! उसे बिना मांगे, बिना गारंटी कोई आर्थिक मदद दे रहा था। वह भी इसलिये कि समाज में लोगों की उद्योग लगाने की हिम्मत न टूटे। ऐसा भी व्यक्ति क्या दुनियां में होता है ?

इसके बावजूद नवयुवक को अपने पारिवारिक कारणों से काम बन्द करना पड़ा। वह फिर भाईजी से मिला और फिर से भाईजी ने उसे सहारा देकर अपनी कम्पनी तापड़िया टूल्स लि में काम पर रख लिया। आज वह नवयुवक समाज का प्रतिष्ठित उद्योगपति व समाजसेवी है। श्री बालकिसनजी मणियार भाईजी को यदि अपने पिता से बढ़कर मानते हैं तो आश्चर्य की बात नहीं।

इस तरह किन किन समस्याग्रस्त व्यक्तियों की मदद भाईजी ने की वह लिस्ट भाईजी अपने साथ ही ले गये। वह भोजाईजी को भी पूरी नहीं मालूम। जहां आजकल दान देकर प्रतिष्ठा खरीदी जाती है वहां चुपचाप मदद करके भूल जाने की बात कोई सतयुग की सी बात लगती है।

तीसरी

भाईजी ने अपने बुआ के बेटे मून्दड़ा भाइयों को बुलाया। उनको पालपोसकर अपने पांव पर खड़ा करने का श्रेय भाईजी को ही था। ८ भाइयों का सुखी परिवार, जिनका आपस में पूरा प्रेम!

भाईजी ने उनको प्यार से समझाया कि यही सही समय है जब तुम सब को अलग हो जाना चाहिये। वे हक्केबक्के रह गये। समझाने पर कुछ कुछ समझ में आया, कुछ समझ में नहीं आया। पर भाईजी कह रहे हैं तो जरूर समझदारी की बात होगी, ऐसा मानकर वे व्यापार में अलग हो गये। उस बात को कई दशक बीत गये पर वे आज तक इस बात को याद करके भाईजी के गुण गाते हैं कि भाईजी की बात मान लेने के कारण ही आज भी उनके परिवार में सभी भाइयों में और उनके बेटों पोतों तक में अगाध प्रेम है।

चौथी :-

हमारे पिताजी हणमानबगसजी को १९७२ में हार्ट अटैक आया। काफी दिन अस्पताल में आइसीयू में रहकर काफी सुधार हो गया और उनको सामान्य कमरे में शिफ्ट कर दिया गया। कुछ

दिन बाद उनको घर लेजाने की पूरी सम्भावना थी।

इस बीच मेरे भतीजे विनोद के विवाह की घड़ी आ गयी। रिसेप्शन में पिताजी को कुछ मिनिट के लिये अस्पताल से लाकर आशीर्वाद दिलाने के लिये विशेष छूट डॉक्टर ने दे दी थी। उनको लाने ले जाने की जिम्मेदारी मुझे सौंपी गयी। रिसेप्शन का आनन्द सभी ले रहे थे और पिताजी को लाने में अभी कुछ देरी थी। इतने में भाईजी तेजी से चलकर मेरे पास आये और फुसफुसाकर बोले ‘‘ बापूजी की तबियत ठीक नहीं है तुम तुरन्त अस्पताल पहुंचो। ‘‘ मैंने स्पष्ट महसूस किया कि जिस हाथ से उन्होंने मेरे हाथ को पकड़ा वह बुरी तरह कांप रहा था। मैं यह भी नहीं समझा कि यदि तबियत ठीक नहीं है तो मैं अकेला वहां क्या कर पाऊंगा। पर मुझे रवाना कर वे विवाह कार्यक्रम को आगे बढ़ाने और मेहमानों के स्वागत में लग गये।

मैं भागकर अस्पताल पहुंचा तो माहौल ही अलग था। कमरे में बापूजी के अलावा कोई नहीं था और बहन बाहर खड़ी सिसक रही थी। तब जाकर समझ में आया कि पिताजी नहीं रहे और यह बात भाईजी तक पहले ही पहुंच चुकी थी।

खबर मालूम पड़ते ही भाईजी ने एमरजेंसी प्लानिंग यह की थी कि जब तक विवाह समापन होकर वर वधू विदा नहीं हो जाते तब तक यह शॉकिंग खबर विवाह स्थल पर और घर पर भी किसी को भी मालूम न पड़े। अस्पताल से कोई खबर बाहर न निकल पाये। यदि भाईजी भागकर अस्पताल चले जाते या अपने अन्य भाइयों को भी बताते तो विनोद के विवाह में विघ्न पड़ना निश्चित था। विवाह पूरा भी होता तो रोने के माहौल में होता। अत: वे दिल के वज्राघात को संभाले चेहरे पर मुस्कुराहट टांगे हुए लोगों की बधाई स्वीकार कर रहे थे। रिसेप्शन, फेरा, विदाई को जल्दी से जल्दी पूरा कराने में लगे थे। वधू प्रवेश के बाद ही पूरे परिवार को सूचना मिली।

दूसरों के दु:ख से द्रवित होने वाला यह मनुष्य ऐसे समय पर लौहपुरुष भी बन सकता है यह मैंने अपनी आंखों से देखा।

पांचवीं :-

समाजसुधार की हवा बह रही थी। बम्बई माहेश्वरी समाज के कर्णधारों ने मिलकर विवाह में हो रही पैसे खर्च करने की होड़ पर रोक लगाने के लिये नियम बनाये। नियम समाज के

पदाधिकारियों पर सबसे पहले लागू पड़ता है, यह घोषणा हो गयी। भाईजी ने भी नियम पालन का व्रत लिया।

१ ९ ७ ० मई में मेरा (जयप्रकाश का) विवाह आयोजित हुआ। नियम था कि ५ ० से ऊपर की बारात न जाये। यदि जाती है तो पदाधिकारी उसमें शामिल न हों। इस नियम की समस्या समझकर ही कुछ सालों से परिवार ने यह पॉलिसी बना ली थी कि हम चाहे लड़के वाले हों या लड़की वाले, हम हमेशा सामने वालों को ही बम्बई बुलायेंगें। बेचारे लड़कीवाले मान लेते थे। बारात की नौबत ही नहीं आती थी।

पर मेरे ससुरजी, जो नासिक के बड़े सामाजिक कार्यकर्ता थे, उन्होंने निवेदन किया कि मेरे परिवार में पहला विवाह है जिसमें हजारों लोकल लोग शामिल होना चाहेंगे। अत: आप ही बारात लेकर नासिक आइये। उनका निवेदन मानना पड़ा।

अब घर में ही घमासान हो गया। इतने बड़े परिवार में ५ ० बारातियों की लिस्ट बनाने में सब फेल हो गये। असुधारवादियों ने नाराज होकर कह दिया कि हम यह ५ ० का नियम नहीं मानेंगे।

अब भाईजी धर्मसंकट में फंस गये । यदि ५ ० की लिस्ट बनायें तो हमारे तो जंवाई ही ५ ० हो जायेंगे। घरवाले कोई नहीं जा पायेंगे। सबकी नाराजी अलग। ५ ० से ऊपर की लिस्ट बने तो प्रतिज्ञा टूटती है। आखिर भाईजी ने कठोर निर्णय लिया कि अपने बेटे समान सबसे लाड़ले, सबसे छोटे भाई की बारात में वे नहीं जायेंगे। मुझे यह बात कुछ देर बाद बात मालूम पडी। तब मैंने भी जिद पकड़ ली कि मैं भाईजी के बिना विवाह नहीं करूंगा।

आखिर बड़ी सुमन भोजाईजी ने मुझे समझाया। कैसे समझाया, कैसे मुझे मनाया मुझे भी याद नहीं। पर परिवार के लिये अपनी इच्छाओं को मारना पड़ता है,यह मैंने उस दिन सीखा।

विवाह बाद नासिक से मैं ट्रेन से लौटा तो भाईजी स्टेशन पर रिसीव करने खुद आये, मानों मेरे घाव पर मरहम लगा रहे थे और मुझे दिलासा दिला रहे थे कि भले ही मैं बारात में नहीं आ पाया पर मैं तुम्हारे साथ ही हूं।

छठी :

इसी तरह मेरे भतीजे भरत के विवाह की बारात सूरत जाने का तय हुआ। भाईजी विवाह के

सारे कार्यक्रमों को सम्भाल रहे थे। वही ५० बाराती की लिमिट की समस्या आई। किसी के बिना कहे उन्होंने ही यह तय कर लिया कि वे बारात में नहीं जायेंगे। शायद इसीलिये वे बारात के प्रस्थान की सारी व्यवस्था दुगुने उत्साह से कर रहे थे। सुबह बहुत जल्दी की ट्रेन थी इसलिये सारी तैयारी रात को ही करनी जरूरी था। बारात के लिये रास्ते में खानेपीने के सामान आदि की पैकिंग भाईजी खुद करवा रहे थे इसलिये सभी लोग साथ में लगे हुए थे। देर रात को एक एक करके सभी पस्त होकर सोने चले गये पर भाईजी और स्टाफ लगे हुए थे। सुबह ट्रेन पकड़ने के लिये सब उठे तो देखते हैं कि सबसे वयोवृद्ध युवा भाईजी अपने स्टाफ की टीम के साथ अभी भी सामान पैक करने में लगे हुए हैं। बारात को रवाना करके ही भाईजी को नींद आई।

सातवीं :-

घर में एक साधना कक्ष बना हुआ था। एक बार एक घायल कबूतर किसी तरह उस साधना कक्ष में शरण लेकर बैठ गया। शरणागतवत्सल भाईजी उस कबूतर की जान बचाने में लग गये। उसका डॉक्टरी इलाज कराया गया और ठीक करके उसे आसमान में छोड़ा गया।

आठवीं :-

भाईजी पेटा संस्था से जुड़े थे जो प्राणियों पर हो रही क्रूरता से बचाने वाली संस्था है। एक बार पेटा की तरफ से श्रीमती सुज्ञा पाटकर का फोन आया। जुहू बीच समुद्रतट पर करीब १५-२० अधमरे ऊंटों को पुलिस ने जब्त करके पेटा के कब्जे में दे दिया था जिनके मालिक उनकी दुर्दशा कर कमाई कर रहे थे। अब उन ऊंटों को राजस्थान ले जाकर ऐसे व्यक्तियों के ताबे में छोड़ना था जो उनके प्राणों की रक्षा करे। जीव दया की याचना भाईजी कैसे अस्वीकार करते ?

पर यह प्रोजेक्ट बहुत भारी पड़ा। पहले तो भरोसे लायक जाटों का मिलना जो उनको आजीवन संभालें। फिर ऐसे ट्रक वाले मिलना जो जीवित ऊंटों को ढोकर ले जायें। फिर ऐसे व्यक्ति का मिलना जो ऊंटों को ट्रक में लोड करने की टेक्नॉलॉजी जानता हो। वह दृश्य देखने लायक था कि ऊंटों को घेर कर ट्रक के पास लाया जा रहा है पर ट्रक के पीछे बने रेम्प पर ऊंट किसी हालत में चढ़ने को तैयार नहीं हैं। अपने पिछले अनुभव के आधार पर वे ऊंट कांप रहे थे कि

अब शायद हमें कत्लखाने में ले जाया जा रहा है। घण्टों की सर्कस के बाद ऊंटों से भरी ट्रकों का काफिला रवाना हो पाया और राजस्थान पहुंचा। रास्ते में २-३ ऊंटों ने दम तोड़ दिया। शायद वे पहले ही मरणासन्न थे, पर हमें तो उनकी मृत्यु का बड़ा दुख हुआ। पर शेष ऊंट सकुशल पहुंच गये। जीवदया के कई उदाहरण मिल जायेंगे पर ऊंटों को इस तरह यातना से मुक्ति दिलाने की यह एक ऐतिहासिक घटना थी।

इस प्रोजेक्ट में जो पेटा की अध्यक्षा सुज्ञा पाटकर थीं, वे भाईजी से मिली तो भाईजी से प्रभावित होकर उनको अपना भाई बना बैठी और यह रिश्ता आज भी निभाया जा रहा है।

नवीं :-

मेरा बेटा शरद अपने दोस्तों के साथ बिल्डिंग के नीचे मौज मस्ती गपशप कर रहा था। दोस्तों के बीच कुछ गन्दे शब्दों का उपयोग होना कोई अनहोनी बात नहीं है। सो शरद ने किसी गन्दे शब्द का उपयोग किया। उसके ध्यान में नहीं आया कि पापाजी उसी समय नीचे उतर कर उसके पास से गुजरे। पापाजी ने कुछ प्रतिक्रिया नहीं की , सिर्फ शरद को कुछ देर घूर कर देखा और फिर आगे निकल गये। वह अजीब तरह से घूरना ही उसके दिल पर बड़ी कचोट बन गया और आगे वैसा न करने का पाठ पक्का हो गया।

दसवीं :-

कई बार बम्बई के माहेश्वरी समाज कार्यकर्ताओं को माहेश्वरी महासभा के किसी आयोजन में भाग लेने के लिये बम्बई के बाहर जाना पड़ता था। यात्रा की प्लानिंग अलग अलग न कर के ग्रुप में करने की रीति भाईजी ने शुरू की। कोई फ्लाइट में जानेवाले, कोई ट्रेन में फर्स्ट क्लास या टू टीयर या थ्री टीयर एसी में और कोई स्लीपर में यात्रा करने वाले लोगों की ग्रुप यात्रा कैसे हो ? भाईजी भोजाईजी अपनी व्यक्तिगत यात्रायें तो टू टीयर एसी में करते थे। तो सबको एक स्तर पर लाने का यही उपाय निकला कि सभी स्लीपर क्लास में ग्रुप बुकिंग करके यात्रा करें। हर बार पूरे ग्रुप के लिये भोजन टिफिन की व्यवस्था की मोनोपॉली भाईजी ने खुद ले रखी थी। हालांकि इस व्यवस्था का भार तो सुमन भोजाईजी पर आता था। ट्रेन में बैठते ही उत्कृष्ट स्वादिष्ट भोजन के साथ

गपशप, यानी व्यक्तिगत हालचाल की पूछताछ और फिर मण्डल के व समाज के मुद्दों पर अनवरत चर्चा। आखिर सब भाईजी को कहते कि अब बहुत हो गया। आप सो जाइये। भाईजी समझ जाते थे कि अब इनको ताश खेलना है।

मण्डल के कुछ खास कार्यकर्ताओं के यहां विवाह आयोजन में भी भाईजी ने अधिकारपूर्वक जिम्मेदारियों को अपने हाथ में ले लिया था।

ग्यारहवीं :- मधुश्री काबरा

यह एक फायरब्राण्ड समाजसेवक थे। आर्थिक विपन्नता के बावजूद नैतिकता सादगी, समाजसुधार के प्रखर हिमायती तो थे ही पर साथ ही सामाजिक कुरीतियों, आडम्बर व दुर्बलताओं पर सीधा प्रचण्ड प्रहार करने वाले बेबाक पत्रकार । भाईजी ने इस हीरे को और उसकी विपन्नता को पहचाना और आर्थिक मदद के हिसाब से उनको अपना स्वीय सहायक नियुक्त कर दिया। मधुश्री काबरा को जीने का सहारा मिल गया और फिर वे अपनी प्रखर लेखनी से माहेश्वरी समाज के तत्कालीन कर्णधारों के मुखौटों पर जबरदस्त वाक्प्रहार करने लगे। भाईजी की स्टाइल से उनकी स्टाइल एकदम उल्टी थी। भाईजी उनको कहते थे कि तुम्हारा मुद्दा सही है पर उसे अभिव्यक्त करने का तरीका गलत है। पर मधु काबरा का लेखनी प्रहार अन्त तक कायम रहा। पर भाईजी ने अपने अधिकार का प्रयोग कर उनकी स्टाइल रोका नहीं। मधुश्री काबरा की पत्रिका समाज प्रवाह में छपे लेखों से इतना हंगामा मचा कि भाईजी पर दबाव डाला गया कि वे मधुश्री काबरा को नौकरी से निकालें। पर भाईजी ने सारा दबाव सहन करके भी मधुश्री काबरा का संरक्षण यह कह कर कायम रखा कि ऑफिस के बाद हर आदमी स्वतन्त्र है कि वह अपने सामाजिक जीवन में क्या करे।

बारहवीं :- मण्डल में इलेक्शन को टालना

मण्डल में इलेक्शन न होकर सर्वमान्य सेलेक्शन की परम्परा सफलतापूर्वक स्थापित हो चुकी थी जिसमें वही नोमिनेशन आते थे जो तय कर लिये जाते थे। हर स्तर पर लम्बी बातचीत की प्रक्रिया होती थी। एक बार यह प्रक्रिया फेल हो गयी। किसी महानुभाव ने जिद पकड़ ली कि मैं नोमिनेशन भरूंगा ही। कई लोगों ने समझाकर देख लिया। आखिर भाईजी उनके घर पर पहुँच गये। किस तरह से क्या बात हुई, मालूम नहीं, पर आखिर वे मान गये और इलेक्शन बच गया।

वसीयत

भाईजी ने अपनी वसीयत बहुत पहले से बना रखी थी उसमें भी उन्होंने एक आदर्श स्तम्भ स्थापित किया। उसके वे कुछ अंश जानने लायक हैं जिसमें भाईजी ने समाज के ऐसे काम के लिये चेरिटेबल कामों के लिये फण्ड दिया जिससे लम्बा स्थायी सुधार हो।

१ विपश्यना साधना के केन्द्रों को आवश्यक आर्थिक मदद के लिये २० लाख रु रख छोड़े।

२ गो नस्ल सुधार के लिये १० लाख रु रख छोड़े। गायों को बचाना हो तो गो नस्ल सुधार ही बचा सकेगा यह भाईजी ने समझ लिया था।

३ समाज को सही दिशा देने, उसके लिये प्रेरणा देने के लिये प्रवचन उद्बोधन कार्यक्रम आयोजित करने के लिये २० लाख रु माहेश्वरी प्रगति मण्डल को कॉर्पस बनाने के लिये रख छोड़े। ये प्रवचन मण्डल हर साल आयोजित करता है जो बहुत प्रभावशाली व लोकप्रिय साबित हुये हैं।

४ गरीब लड़कियों का विवाह और गरीबों को मेडिकल मदद/कैम्प, जसवन्तगढ़ स्कूल में नैतिक शिक्षा / देशभक्ति के लिये १० लाख रु रख छोड़े।

जीवन सन्ध्या

स्वास्थ्य के नियमों के कारण, बालाजी ताम्बे की दवाइयों की बदौलत और कर्मयोग के चलते आयु के ८६ वें वर्ष में भी भाईजी का स्वास्थ्य उत्तम था। पर इम्यूनिटी तो उम्र पाकर कम होती ही है।

भाईजी को किसी पारिवारिक समस्या के कारण से सर्दियों में राजस्थान जाना पड़ा। वापिस आये तो बुखार ले कर आये। कुछ दिन इलाज चला पर फायदा नहीं हुआ तो फेफड़े के विशेषज्ञ डॉ कार्तिक शाह को दिखाया। उनके इलाज से भी फायदा नहीं हुआ तो उन्होंने एंडोस्कॉपी बायोप्सी की। उसमें टीबी निकल आया। फिर जो कई महीनों तक इलाज चला उससे भाईजी पूरे ठीक हो गये। पर इम्यूनिटी तो कम हो ही गयी।

यहीं एक गलती हो गयी जो अतिभारी पड़ी। फिर से किसी पारिवारिक विवाह में भाईजी को पूना जाना पड़ा। वहां दिन भर एसी हॉल में रहना पड़ा। वहां तो मालूम नहीं पड़ा पर आते ही फिर

बुखार ने घेर लिया। फिर कुछ दिन इलाज चला जो कारगर नहीं हुआ तो फिर ४ जुलाई २०१४ को डॉ कार्तिक शाह को दिखाने ले गये। जांच करते ही उनका माथा ठनका। तुरन्त एक्स रे करवाया तो फेफड़े में बहुत बड़ा पैच मिला। उन्होंने तुरन्त हमारे फैमिली फिजिशियन व हमारे जंवाई डॉ माहेश्वरी को फोन किया। उन्होंने बताया कि भाईजी के घर लौट जाने की स्थिति भी नहीं है। वहीं भाटिया अस्पताल में भरती किया गया। एण्टीबायोटिक चालू हो गये। ९ जुलाई तक बीमारी पकड़ में नहीं आई तो फेफड़े की बायोप्सी करने की बात आई। उसके लिये ब्रीचकैंडी अस्पताल शिफ्ट किया गया जहां डॉ कार्तिक शाह और डॉ जरीर उदवाड़िया दोनों का इलाज चालू हुआ। बायोप्सी की गई जिसकी रिपोर्ट ३ दिन बाद मिली। इस बीच एक्स रे रोज हो रहा था और एण्टीबायोटिक के बावजूद फेफड़े का पैच बढ़ते ही जा रहा था। रिपोर्ट मिलते ही डॉ कार्तिक शाह भागे आये। बताया कि भाईजी को जिस बैक्टीरिया ने चंगुल में लिया हुआ है और किसी भी एण्टीबायोटिक का असर नहीं हो रहा है वह नोकार्डिया नामका एक दुर्लभ बैक्टीरिया है जो बहुत कम, पर ऐसे ही लोगों को पकड़ता है जिनकी इम्यूनिटी बहुत कम हो। अब जाकर सही एण्टीबायोटिक का इलाज चालू हुआ पर तब तक काफी देर हो चुकी थी। नोकार्डियोसिस ने फेफड़े को काफी जकड़ लिया था। अब एण्टीबायोटिक और नोकार्डियोसिस का निर्णायक महायुद्ध शुरू हुआ। ऑक्सीजन की नली के बावजूद बचे हुए फेफड़े से सांस लेना दिन पर दिन कठिन हो रहा था। अब एक्स रे में पैच बढ़ना बन्द हो गया था जो कि एक जीत ही मानी जा रही थी। पर पैच कम होने का शुभ समाचार नहीं मिल रहा था।

खबर पूरे परिवार में, सम्बन्धियों में, माहेश्वरी समाज में फैल गई तो अस्पताल में लोगों का तांता बंध गया। रोज की हेल्थ बुलेटिन निकालनी पड़ी। इस बीच भाईजी ने समझ लिया कि अब यह लड़ाई लम्बी नहीं चलेगी। इसलिये उन्होंने कुछ लोगों को बुलाकर अतिआवश्यक बचे हुए कामों के निर्देश देना चालू कर दिया।

ऐसी गम्भीर हालत में भी जिन खास निकट के लोगों को भाईजी से मिलने का मौका मिला उसमें अपनी आदत के अनुसार भाईजी खुद की तबियत से ज्यादा सामनेवाले की कुशल व उनके जीवन की समस्याओं पर बात करते थे।

२० जुलाई की रात आईसीयू में लेटे भाईजी को उल्टी हो गयी जो कमजोरी के कारण फेफड़े में चली गई। अब युद्ध का पासा पलट गया। सांस लेना अतिकठिन हो गया। बोलना भी बन्द

हो गया। कागज पर लिख कर अपनी बात बताना पड़ रहा था। लग रहा था कि आईसीयू वालों ने भी मन में समझ लिया कि अब बाजी हाथ से निकल गई पर वे अपना कर्तव्य करते जा रहे थे। आखिर भाईजी ने अपना निर्णय ले लिया और डॉ माहेश्वरी को बुलाकर लिख कर कहा कि अब मुझे घर जाना है। बाहर खड़े हम सब के सामने यह यक्ष प्रश्न रखा गया। जब तक इलाज चलता है तब तक प्रयत्न नहीं छोड़ना चाहिये यह एक सामान्य मेडिकल नीति होती है। पर भाईजी की सिर्फ इच्छा नहीं थी, आदेश था। इसलिये वस्तुत: यह प्रश्न नहीं था, स्वीकार करने की औपचारिकता थी। सबसे कठिन था सुमनभोजाईजी को इस बारे में पूछना। पर ऐसा लगा कि उन्होंने भी इस क्षण के लिये खुद को कई दिन से तैयार करना शुरू कर दिया था। एक वीर पुरुष और उनकी वीरांगना का यह रूप हम सबने विस्मित श्रद्धावनत होकर देखा।

सबसे बात करके डॉ माहेश्वरी ने फिर अन्दर जाकर भाईजी को जाकर पूछा ‘‘घर जाने का अर्थ आप समझ रहे हैं ना ?‘‘ भाईजी ने दृढ़ता से हां में सिर हिलाया।

२२ जुलाई की दोपहर एम्बुलेंस घर पहुंची। उसके पहले ही कमरे को आइसीयू में बदल दिया गया था। उस समय भाईजी को सांस लेने में बहुत तकलीफ हो रही थी। डॉ छबलानी आइसीयू विशेषज्ञ को बुलाया गया। उन्होंने तुरन्त सक्शन लगाकर बलगम निकाला। निकालते ही सांस का कष्ट मिट गया और वे एकदम शान्ति से गहरी नींद में सो गये। यह देखकर हम सबको भी बहुत रिलीफ मिली कि उनके आखिरी क्षण उनकी इच्छानुसार घर पर बीते और कष्टपूर्ण भी नहीं रहे। अब शरीर के सारे वाइटल पेरामीटर नीचे सरकते जा रहे थे। डॉ छबलानी वहीं रुके रहे। आखिर २२ जुलाई २०१४ शाम ७.१५ बजे उन्होंने सूचित किया कि भाईजी अपने इस जीवन का अन्तिम अध्याय का समापन करके अगली अनन्त यात्रा पर निकल चुके हैं। इन अन्तिम क्षणों में भी भाईजी ने समाज के सामने आदर्श रखा कि कैसे शान से मृत्यु का वरण किया जाता है

हम सबने खुदको भाईजी के लायक बनने के संकल्प को निभाते हुए आंसुओं को पीकर उनको विदाई दी।

अब हमारे सामने महत् कार्य था भाईजी के अन्तिम संस्कार का। भाईजी ने इस विषय पर गहन चिन्तन करके दो पेज का प्रिन्टआउट हमें कई साल पहले दे रखा था। जीवन के इस अन्तिम अध्याय में भी उन्होंने समाज के सामने एक आदर्श स्थापित करने का मौका नहीं छोड़ा। इस पर कुछ लिखने के बजाय इसे ज्यूं का त्यूं शेयर किया जा रहा है।

मैं श्रीराम तापड़िया अपनी आखिरी वसीयत (Will) निम्नानुसार कर रहा हूँ :-

मेरी मृत्यु पर मेरे शव की निम्नानुसार व्यवस्था की जाय :-

१. मेरी मृत्यु जिस गाँव/शहर में हो उसी गाँव/शहर में उसका अन्तिम संस्कार कर दिया जाय जो इस प्रकार हो कि शरीर के जो जो अंग प्रत्यारोपण अथवा अनुसंधान हेतु काम में आ सकते हों उनको स्थानीय या नजदीक के अस्पताल को उपयोग में लेने के लिये दे दिये जांय एवं शेष शरीर का दाह-संस्कार कर दिया जाय। यदि उस गाँव/शहर में बिजली की दाहक्रिया व्यवस्था हो तो उसमें अन्यथा प्रचलित लकड़ी आदि से दाह-क्रिया सम्पन्न की जाय। दाह संस्कार के लिये दूर से आनेवाले भाई-बन्धु का इन्तजार आवश्यक नहीं समझा जाय।

२. मृत्यु पश्चात् शव का स्नान-मंडन आदि कुछ भी नहीं किया जाय। मुँह यदि विकृत अवस्था में हो तो पूरे शव को ढ़क दिया जाय।

३. शव को Ambulance या अन्य वाहन द्वारा श्मशान ले जाया जाय। कन्धों पर शव-यात्रा ले जाने की विधि न अपनाई जाय। पिण्डदान आदि कुछ भी नहीं किया जाय।

४. कपाल क्रिया नहीं की जाय। कपाल को अच्छी तरह जलाने के लिये आवश्यक हो यह कर दिया जाय।

५. अस्थि-संचय नहीं की जाय। जो राख व अस्थियां दाहक्रिया के पश्चात् शेष रहें, उन्हें एक साथ उस शहर/गाँव में या आस-पास बहने वाली नदी/समुद्र में प्रवाहित उसी दिन अथवा यथाशीघ्र कर दी जांय।

६. हरिद्वार या अन्य किसी तीर्थ स्थान में अस्थि व राख को विसर्जित करने नहीं भेजा जाय।

७. मृत्यु पर विलाप व दुख प्रकट करने की आवश्यकता नहीं है, अपितु अनावश्यक व अनुचित है।

८. शान्ति का वातावरण बनाने व बनाये रखने के लिये भजन/कीर्तन, सुभाषितों का वाचन आदि क्रिया जा सकता है।

९. मृत्यु के अवसर अथवा पश्चात् भी किसी भी व्यक्ति द्वारा मुण्डन क्रिया नहीं की जाय।

१०. क्रिया-कर्म-कर्ता कोई नहीं बने, क्योंकि किसी भी प्रकार का क्रिया-कर्म/कर्म-काण्ड करना ही नहीं है।

११. बैठक जैसा स्वरूप बनाया ही नहीं जाय। घर में सामान्य Drawing-room की व्यवस्था कायम रखी जाय। मिलने आनेवालों से सामान्य रूप से ही मिलें।

१२. मृत्यु का सूचना-पत्र बिना Border का व Blue/Black स्याही का ही भेजा जा सकता है व अखबार में बिना काली Border के ही सूचना दी जा सकती है, परन्तु लेख में खेद या दुख शब्दों का प्रयोग नहीं हो। स्वर्गवासी अथवा वैकुण्ठवासी संज्ञा लगाना गलत होगा। निधन, देहावसान जैसे शब्दों का सम्बोधन ही उचित होगा। बाहरगाँव व दूर से सगे, सम्बन्धी व मित्रों को मिलने के लिये आने से रोका जाय। ये पत्र व फोन द्वारा अपनी अभिव्यक्ति कर सकते हैं।

१३. मेरी मृत्यु किसी भी प्रकार से शोक या दुख का विषय नहीं है। व्यापारिक कामकाज एवं मांगलिक कार्य व त्योहार रोके नहीं जांय व निर्धारित तिथियों के अनुसार निश्चित कार्यक्रम संपादित करते रहें एवं महिलाएँ शोक स्वरूप जरी नहीं पहनने के रिवाज को नहीं रखें। उसी दिन व अगले दिनों के काम-काज या कार्यक्रम निर्धारण के अनुसार सम्पन्न कर लिये जांय। १२ दिन या सवा महीने का शोक नहीं रखा जाय। कार्यालय, कारखाना आदि कुछ भी बन्द नहीं किये जांय।

१४. मेरी मृत्यु होने पर सुमन (गोदावरी देवी) को शोक स्वरूप कपड़े, गहने, टीकी आदि त्यागने की

कृ.पृ.उ.

आवश्यकता नहीं है।

१५. मृत्यु पश्चात् दैनिक तर्पण, तीये की बैठक, उठावणा, १०वें दिन का दसगात्र, ११वें दिन की नारायणबली व बारहवें दिन की सपिण्डी, सुखसेज, पगड़ी आदि किसी भी प्रकार का किसी भी दिन का कर्मकाण्ड नहीं किया जाय।

१६. गरुड़पुराण अथवा अन्य किसी भी प्रकार का कथा-वाचन नहीं हो। भजन, कीर्तन, विपश्यना साधना किये जा सकते हैं।

१७. मृत्यु उपलक्ष में ब्राह्मण-भोजन, अन्नदान, बरतनदान अथवा द्रव्यदान नहीं हो। बिरादरी अथवा किसी भी प्रकार का सामाजिक अथवा पारिवारिक भोज भी नहीं हो। घर में दैनिक खानापीना सामान्य ही रहे। विशेष भोजन व पकवान बनाने का रिवाज न रखा जाय। काक बलि/ गौग्रास नहीं निकाले जांय।

१८. मृत्यु पश्चात् दैनिक, पाक्षिक, मासिक, वार्षिक श्राद्ध व प्रतिवर्ष की बरसी नहीं की जाय।

१९. बिमारी, अंगछेदन, शव-वाहन, दाह-क्रिया आदि मृत्युपूर्व अथवा पश्चात् के खर्च मेरी सम्पत्ति से ही वहन किये जांय।

२०. मृत्यु सन्निकट हो तब अस्पताल ले जाकर उपचार कराने की आवश्यकता नहीं है। घर घर ही जो आवश्यक हो वह उपचार किया जाय। मृत्यु शान्ति से एवं शान्त वातावरण में हो, इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुये उपचार किया जाय।

इस लिखावट की भावना के अनुरूप सारा कार्य व्यवस्थित हो गया। पूरे समय सभी परिजनों ने असीम धैर्य का परिचय दिया और घर का वातावरण पूर्णत: शान्त व आध्यात्मिक रहा। पुरानी रूढिवादी रस्में छोड़कर प्रतीकात्मक व भावनात्मक रस्में ही पूरी की गयीं।

शव यात्रा में अपेक्षा से काफी अधिक परिवारजन, सम्बन्धी व माहेश्वरी समाज के लोग उपस्थित थे। प्रार्थना सभा में भी बड़ी भारी उपस्थिति थी। यह उपस्थिति महज औपचारिकता की नहीं थी। यह उन लोगों की थी जिनके दिलों के किसी कोने में भाईजी बैठे थे। तापड़िया परिवार व मुम्बई माहेश्वरी समाज के युगपुरुष को सभी ने हृदय से श्रद्धांजलि दी।

भाईजी मोक्ष नहीं चाहते थे। वे ऐसे कर्मयोगी थे जो स्वयं की मुक्ति को लात मारकर मानवमात्र की सेवा के लिये जन्मजन्मान्तर तक संसार के आवागमन के चक्र को सहर्ष स्वीकार करने की इच्छा रखते हैं। हम खुद को अति सौभाग्यशाली मानते हैं कि हमें ऐसे भाईजी का आजन्म सानिध्य मिला।

यह गाथा एक व्यक्ति की नहीं बल्कि एक वटवृक्ष की है जिसने जीवनभर अनगिनत प्राणियों को स्नेह दिया, शरण दी और पाला पोसा। एक निष्काम कर्मयोगी की, जिसने जहर के घूँट पिये, प्रसिद्धि को नकारा और परिवार व समाज के लिये जीवन उत्सर्ग कर दिया।

भाईजी का विचारप्रवाह

भाईजी के लिखे लेख

भाईजी को पूरी गहराई तक समझना हो तो उनकी जीवनी से भी अधिक उनके लेखों से उनके व्यक्तित्व और उनके विचारों की गहराई का दर्शन होता है। विशेषकर यह उभर कर आता है कि समाज जिस दिशा की तरफ बढ़ रहा है, विशेषकर नई पीढ़ी जिस मानसिकता को अपना रही है और अंतर्जातीय विवाह के कारण माहेश्वरी समाज के अस्तित्व के ही मिट जाने का जो खतरा उनको दीख रहा था, वह स्थितप्रज्ञ दीखने वाले भाईजी को भी कितनी चिन्ता, कितनी टीस दे रहा था? माहेश्वरी समाज के हर सम्मलेन में वे समाज को इन खतरों के प्रति आगाह करने का मौका नहीं छोड़ते थे। ३० वर्षो के लम्बे कालखंड में उनके लिखे व मंच पर प्रस्तुत किये गए ढेर सारे लेखों को प्रस्तुत करना न संभव है, न पाठक इतना पढ़ पाएंगे। इसलिए उन लेखों में से कांट छांट कर अलग अलग विषय के मुद्दों को उनके शब्दों में संकलित करने का प्रयास किया गया है।

क्रमांक	विषय	पृष्ठसंख्या
१	भाईजी की डायरी	५१
२	माहेश्वरी समाज का इतिहास , संस्कृति, नैतिक मूल्य व मान्यताएं	५३
३	संस्कृति व नैतिक मूल्यों में ह्रास	५९
४	सामाजिक समस्याएं	६४
५	पीढ़ियों में असामंजस्य (Generation Gap)	६६
६	बच्चों की परवरिश , पढ़ाई व परिवार सुख	६७
७	आज के युग में यौन आकर्षण व दुष्परिणाम	७८
८	लड़कियों का कैरियर	९५
९	नववधू का ससुराल में समरस होना / विवाह विच्छेद	९९
१०	अंतर्जातीय विवाह	१०७
११	भ्रूण हत्या	१११
१२	वृद्ध परिवार जनों Senior Citizen की समस्याएं	११२
१३	गाँव निवासी लड़कों के विवाह की समस्या	११४

भाईजी की डायरी में से एक पृष्ठ - स्वास्थ्य संकल्प

(युवावस्था में भाईजी ने कुछ समय तक डायरी लिखी। बड़ी दिलचस्प हो सकती थी पर वह मिल नहीं पायी। उसके दो पृष्ठ बचे मिले जो प्रस्तुत हैं।)

ता. २३-५-४९

कल रात को ही मैंने निश्चय कर लिया था कि सवेरे घूमने जाऊँगा। इसलिये मैंने भोर में उठने के लिये एलार्म लगा दी थी। आज सवेरे ४।। बजे उठा और नहा-धोकर घूमने चला गया। रास्ते में जीवन सम्बन्धी प्रश्नों पर विचार करने लग गया। यों तो जबसे दर्शनशास्त्र में कुछ अधिक लगाव हुआ है तभी से इस विषय में सोचता रहता हूँ। फिर भी मैंने सब बातों के कार्य में लाने का विचार B.A. की परीक्षा समाप्त होने पर किया था। घूमते-घूमते सोचने लगा कि मेरे जीवन का उद्देश्य क्या होना चाहिये और उस उद्देश्य को पूर्ण करने के लिये मुझे क्या करना चाहिये। मैंने सर्वप्रथम अपने स्वास्थ्य को सुधारने का निश्चय किया। उसके लिये मैंने निश्चय किया कि मैं मिठाई नहीं खाऊँगा और हलका भोजन करुँगा और वह भी समय पर। कुछ फल भी खाने का निश्चय किया जिनसे पेट साफ रहे। इसके लिये मैंने यह नियम बनाया कि सवेरे दूध, मट्ठा या फल खाऊँगा। ९।। बजे भोजन करना, दोपहर में कुछ फल खाना। सायं का भोजन ६ बजे करना। ९ बजे दूध पीना या कुछ भी न खाना। खाने-पीने के बारे में तो यह निश्चित किया। स्वास्थ्य के लिये व्यायाम भी करना जरूरी है। इसके लिये रोज घूमना और कसरत करना। तेल मालिश भी कभी कभी कर लेना। तैरना सीखने के लिये भी विचार किया। पर पूरा कार्यक्रम धीरे धीरे बढ़ाने की जँची। शारीरिक स्वास्थ्य के अतिरिक्त मानसिक स्वास्थ्य भी मैंने आवश्यक समझा। मुझे आत्मबल की बहुत आवश्यकता है। आत्मबल योग से ही आ सकता है। इसलिये मैंने कुछ व्रत या नियम पालने का निश्चय किया। इस प्रकार इन व्रतों का पूर्ण पालन करने से कुछ आत्मबल बढ़ जायेगा। तो मैंने उनको सर्वप्रथम चुना जो आवश्यक भी हो और सुगम हो। प्रथम व्रत तो मैंने सप्ताह में एक दिन निराहार करने का किया। इससे स्वास्थ्य को भी लाभ होगा और आत्मबल भी बढ़ेगा। इसके लिये मैंने शनिवार का दिन निश्चित किया है। इस दिन शिवाय तरल और सुपच्य पदार्थों के दूसरी वस्तु न खाऊँगा। तरल में जैसे डाब, जल, मोसमी, कमला इत्यादि। मानसिक त्याग में मैंने सर्वप्रथम रेशमी वस्त्र न पहनने का निश्चय

किया। रेशमी वस्त्र पहनना बहुत अधिक आवश्यक नहीं है। सिर्फ दूसरों की तड़क भड़क देखकर खुद को भी पहनने की इच्छा हो जाती है। इस व्रत से उस इच्छा को प्रबल न होने की सहायता मिलेगी। व्यय में भी मैंने यह निश्चित किया कि धनी होने के नाते मैं उस वस्तु में ही पैसा व्यय करूँगा जिसमें आत्मा और परमात्मा दोनों का भला होगा। इसका अर्थ यह है कि मैं अर्थ का व्यय उसी के लिये करूँगा जो सर्वजन ग्राह्य हो पर केवल वही ग्रहण कर सकते हो जिनके पास जरूरत है। यह व्रत जहाँ तक हो सके वहाँ तक करने का निश्चय किया। प्रारम्भ में पूर्ण रूप से न हो तो विशेष दु:ख की बात नहीं है। अभ्यास से, आशा है, सब ठीक हो जायेगा। एक दूसरा प्रश्न जो मेरे सामने आया था वह यह था कि मुझे अभी व्यापार में लगना है। यह पारिवारिक बन्धनों के कारण और कुछ आत्मबल को बढ़ाने के लिये आवश्यक है। आत्मबल के लिये मनुष्य को आत्मोपजीवी होना चाहिये। परोपजीवी कभी भी आत्मबल वाला नहीं हो सकता। यह प्रश्न सब तरह की प्रगति में, उठकर एक बाधा खड़ी कर देता है। पर व्यापार में आत्मा के विरुद्ध सिद्धान्तों पर चलना पड़ता है। इसतरह एक दुविधा है। पर मैं व्यापार में जरूर आऊँगा। मुझे आत्मोपजीवी निश्चय रूप से होना है। इसलिये जहाँ तक हो सके, मैं आत्मा के घातक सिद्धान्तों पर नहीं चलूंगा, पर इस विषय में अधिक सफलता मुझे दिखाई नहीं देती और न मैं इसतरह अधिक सफलता की कोशिश ही करूँगा। पर जब मैं आत्मोपजीवी हो जाऊँगा तब मैं इसी बात की चेष्टा करूँगा कि आत्मा के घातक सिद्धान्त न पालन किया जाय। इतना विचारते विचारते अन्त में वापस घूम कर आ गया। आज प्रो. चक्रवर्ती, दत्त, रायचौधरी और आदीबाबू को चायपार्टी देने की बात थी। मेरा इरादा उस पार्टी में न खाने का ही था पर जब रायचौधरी और आदीबाबू नहीं आये तो मेरा बैठना जरूरी हो गया और मैंने मिठाई भी खाई और चाय भी पी। भविष्य में ऐसा अतिक्रम न होगा, ऐसा सोच कर मैंने अपने को सांत्वना दी। शाम को मैंने भोजन नहीं किया। दस बजे मैं सोने का उपक्रम करने लगा।

माहेश्वरी समाज का इतिहास, संस्कृति,
नैतिक मूल्य व मान्यताएं

भौगोलिक स्थिति के कारण राजस्थान के लोग अधिक उद्यमी, परिश्रमी, ईमानदार, साहसी एवं कठिनाइयों से जूझने में सबल हैं। उनकी व्यापार बुद्धि प्रबल है। जहाँ भी वे गये, उन्होंने अपने लिये स्थान बनाया।

माहेश्वरी समाज का स्थान विशिष्ट है। भगवान महेश के आशीर्वाद से संगठन, सेवाभाव, एवं सात्विकता उनमें अधिक प्रमाण में हैं। मुम्बई में ही देखें तो अनेक व्यापार व उद्योग में माहेश्वरी समाज ने अपना स्थान बनाया है। Profession के क्षेत्र में भी समाज के डॉक्टर एवं Chartered Accountant बड़ी संख्या में कार्यरत हैं। मुम्बई के ५००० परिवार एक सूत्र में संगठित हैं एवं प्रतिवर्ष सेवा के करीब एक करोड़ लागत से १५० कार्यक्रम करते हैं। भारत की जनसंख्या के अनुपात से माहेश्वरी समाज की जनसंख्या मात्र १५ लाख के अन्दर है, जो जनगणना की मात्र ०.०१ प्रतिशत है। माहेश्वरी समाज का अनेक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण स्थान है। विशिष्टताओं के बिना यह सम्भव नहीं होता। मुम्बई Stock Exchange के तीन President माहेश्वरी समाज के रहे हैं। समाज के रमेशचन्द्रजी लाहोटी उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश रहे हैं।

माहेश्वरी समाज भारत के सभी प्रदेशों में निवास करता है। छोटा समाज होते हुये भी समाज अखिल भारतीय स्तर तक संगठित है। जहाँ भी निवास करता है, वहाँ स्थानीय सभा अथवा मण्डल है एवं कड़ीबद्ध जिला, प्रदेश एवं महासभा से सम्बद्ध है। समाज के संगठित एवं कड़ीबद्ध भारतीय स्तर तक सम्बद्ध होने से सुविधा है कि किसी भी स्थान का व्यक्ति किसी भी अन्य स्थान के व्यक्ति के बारे में आवश्यक व उपयोगी जानकारी घर बैठे प्राप्त कर सकता है। जरूरत पड़ने पर व्यक्तियों अथवा संघटन से सुझाव व मदद मिल सकती है। सम्बन्धों में इस सुविधा का बड़ा उपयोग है। जैसे कि मुम्बई बैठे हुये आसाम के शहर या छोटे कसबे में स्थित भाई के बारे में व्यापारिक व पारिवारिक जानकारी प्राप्त हो सकती है। विवाह आयोजन के समय आसाम स्थित समाज के भाइयों से सहयोग प्राप्त कर सकता है। विवाह पश्चात् किसी समस्या एवं आवश्यकता हेतु समाज के व्यक्तियों एवं संघटन से समाधान प्राप्त कर सकता है।

आज Information Technology में भारतीयों की विशिष्टता को पश्चिम एवं पूर्व के सभी देश स्वीकार कर रहे हैं। भारतवर्ष के आर्थिक विकास में राजस्थानी समाज के वर्चस्व को हम देख रहे हैं। इसी प्रकार संस्कारों एवं नैतिक मूल्यों की दृष्टि से माहेश्वरी समाज अन्य समाजों से विशिष्ट है, हम देख रहे हैं। इन विशिष्ट गुणों का विवेचन हम अब करेंगे।

a) माहेश्वरी समाज शाकाहारी, प्याज एवं लहसुन को त्याज्य मानने वाला समाज रहा है। कहावत है- जैसा खाये अन्न वैसा होवे मन'।

b) माहेश्वरी समाज 'एक पत्नी एक पति' संस्कार को मानने वाला समाज है। विवाह के पूर्व अथवा पश्चात् अन्यत्र यौन संबंध त्याज्य एवं हेय माना जाता है।

c) विधवा, भुवा, बहिन व बहू का संरक्षण परिवार का कर्त्तव्य समझा जाता है।

d) सम्मिलित परिवार जीवन का आदर्श था। कुछ भाई कमाई के लिए परदेश जाते तो कुछ भाई गांव में माता-पिता, भुवा-भाभी, एवं बहू की सेवा-सुरक्षा व संरक्षण करते थे। सभी भाईयों के बच्चे परिवार के बच्चे होते थे। एक भाई की पत्नी सभी बच्चों का एक प्रकार का काम संभाल लेती थी। दूसरे भाई की पत्नी उन सभी बच्चों के बाकी के काम संभाल लेती थी। बच्चों के लालन-पालन में समानता व परिवार में समरसता रहती थी।

e) सभी भाईयों के लड़के व लड़कियों के विवाह सम्मिलित परिवार द्वारा एकरूपता से होते थे।

f) अति पढ़लिखा भाई चाहे वह डॉक्टर या इंजीनियर, कम या अधिक अर्थोपार्जन करनेवाला हो, पूरी कमाई परिवार की मानता हुआ अपने पिता या बड़े भाई को सौंप देता था। प्रत्येक की कमाई पूरे परिवार की कमाई समझी जाती थी एवं पूरे परिवार की आवश्यकता की पूर्ति करती थी।

g) धार्मिक भावना, धर्म व भगवान का अनुशासन सर्वोपरि होता था। पाप एवं पुण्य का अनुशासन जबरदस्त था। पाप का डर स्वअनुशासन द्वारा होता था।

h) परिवार के बड़ों, बुजुर्गों एवं समाज व गांव के बुजुर्गों व गुरुओं का आदर व अंकुश सशक्त होता था। कोई भी व्यक्ति अनुचित काम या बात करने की हिम्मत नहीं

करता था। अपवादस्वरूप कोई व्यक्ति अनुचित करता तो उसे दण्ड दिया जाता अथवा अन्य लोगों द्वारा समझाया व मनाया जाता था।

i) बेटी, बहिन, भुवा के धन को पवित्र व अग्राह्म समझा जाता था। किसी की हिम्मत नहीं होती थी कि कोई बहिन-बेटी का धन खा जाय।

j) अपवादस्वरूप यदि बाप-बेटे या भाई-भाई में अनबन व विचार/व्यवहार भिन्नता होती तो सामाजिक व नैतिक आदर्शों की रक्षा करते हुए न्यायपूर्वक बंटवारा, हिसाब-किताब कर दिया जाता था। किसी भाई का हक हड़प लेने व विवाद बढ़ाकर दूसरे भाई को बरबाद करने नहीं दिया जाता था। ये सभी काम पंच-पंचायत व घरेलू वातावरण व तंत्र द्वारा हो जाते थे। कोर्ट-कचहरी नहीं होने दिया जाता था।

k) व्यापार व रोजगार/नौकरी में ईमानदारी व साहूकारी का व्यवहार होता था।

l) मितव्ययिता (कमखर्च करना) जन्मघुट्टी की तरह एक गुण था। बड़ा परिवार, पारिवारिक आवश्यकता की पूर्ति, आमदनी के सीमित साधन इस गुण को बनाये रखने में सहायक होते थे।

m) धन प्राप्त होने पर प्रथम विचार धार्मिक कार्यों में धन के उपयोग का होता था। कुआं बनवाना, बावड़ी खुदवाना, मंदिर/धर्मशाला बनवाना, स्कूल व चिकित्सालय बनवाना आदि।

n) धर्मादे यानि Charity के लिए कमाई का निर्धारित प्रतिशत चेरिटी खाते जमा किया जाता था। गौरक्षा हेतु गौशाला का डिब्बा रखा जाता था।

माहेश्वरी समाज में उपर्युक्त विशिष्ठ गुणों को स्थापित होने व संवर्धन में निम्नानुसार राजस्थान की भौगोलिक, सामाजिक य धार्मिक संरचना व चेतना का मुख्य योगदान है :-

a) राजस्थान एक मरुभूमि था जहाँ पानी की कमी थी एवं फसल बहुत कम होती थी।

b) व्यापार व रोजगार/नौकरी के साधन नहीं थे।

c) स्कूल/कॉलेज की शिक्षा का अभाव था।

d) सड़कें नहीं थी। रेल मार्ग दूर था। यातायात के साधन बैल एवं ऊंट थे।

e) अधिकांश वर्षों में अकाल की स्थिति रहती थी।

f) बाजरा-मोठ का प्रधान खान-पान था। गेहूँ मंहगा था एवं पंजाब से आता था। चावल देहरादून से आता था और मंहगा था। चीनी आयात होती थी एवं कम मिलती थी। घी-दूध का अभाव था। गुड़-शक्कर-तेल का ही रिवाज था। होली दिवाली मेहमान आने पर गेहूँ-चावल घी का उपयोग किया जाता था।

g) पानी दूर-दूर से सर पर घड़ों द्वारा स्त्रियां तालाब या कुओं से लाती थी। कई गांवों में २-४ किलोमीटर से लाना पड़ता था।

h) डाकुओं का डर रहता था इसलिए संगठित रहकर खुद व परिवार का संरक्षण करते थे।

i) मोटा खाना, मोटा पहिनना, बचाकर रखना, धर्म व भगवान से डरना, संगठित रहना। परिवार के कुछ भाई कमाई के लिए दिसावर जाते व बाकी परिवार की सेवा व संरक्षण करने के लिए गांव में रहते थे।

j) दिसावर जाने में भी ३-४ महिने लग जाते थे क्योंकि रास्ते में नदी, जंगल, डाकू व जानवरों का डर होता था। मुसाफिरी १-२ साल से लेकर १०-१२ साल की लोग करते थे।

k) बड़ी बीमारी प्लेग, मलेरिया, T.B. जैसी होती रहती थी। इलाज के साधन नहीं थे। मृत्यु संख्या खास तौर से स्त्रियों व बच्चों की अधिक होती थी।

इन सब परिस्थितियों के कारण हमारा समाज धर्म भीरू, समाज व परिवार की सेवा, संवर्धन, नैतिक मूल्यों का पालनकर्त्ता, कर्मठ, एक-दूसरे को सहायता व सहयोग देने की भावना व प्रवृत्ति बनानेवाला रहा है। इन परिस्थितियों ने ही हमारे समाज को कर्मठ, होशियार, मेहनती व ईमानदार बनाया है। हिलमिल कर मेल-जोल रखना सिखाया है। समाज के इन विशिष्ठ गुणों की धरोहर को हमारे बुजुर्गों व मनीषियों ने अक्षुण्ण रखा एवं संवर्धन किया है।

आराध्य देव भगवान महेश की असीम अनुकम्पा से प्रादुर्भूत माहेश्वरी समाज,

देश के संगठित समाजों में न केवल अग्रणी है बल्कि अपनी विशिष्टताओं से इसे सभी समाजों में एक उत्कृष्ट स्थान प्राप्त है । जहाँ ईश्वर ने सृष्टि को सुचारू रुप से चलाने के लिए एक सुव्यवस्थित ब्रह्माण्ड का निर्माण किया है वहीं हमारे देश में संस्कारी समाज निर्माण हेतु हमारे मनीषियों ने समाज व्यवस्था की रचना की है। इस व्यवस्थित समाज रचना में माहेश्वरी समाज का स्थान अति विशिष्ट है। भगवान महेश के वंशज होने मात्र से हमारे समाज में वे सभी गुण परिलक्षित है जो हमको मानवीय उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिये आवश्यक होते हैं जैसे कि संतोषवृत्ति व समाधान भाव एवं मिलनसारिता का स्वभाव। भौतिकवाद के इस आधुनिक युग में दूसरों के प्रति प्रेम और आदर, श्रद्धा और विश्वास तथा दूसरों के सुख दुख में संवेदनशील व सहयोगी हो कर सामंजस्य और सद्‌भावना से सामूहिक जीवन निर्वाह कर सुख और शांति का अनुभव करने की जो भावना हमारे समाज मे व्याप्त है वह अपने आप मे एक अनूठा उदाहरण है। सात्विक आहार, सदाचारी व्यवहार, संस्कारिक आचार विचार एवं धार्मिक मान्यताएं, समान व सरल रीति रिवाज एवं संस्कार उन्मुख तीज त्योहारों के प्रभाव से ही हमारे समाज पर उन सब विकृतियों एवं अपराधवृत्ति का नगण्य असर है जिससे आज सारा मानव समाज व अन्य भारतीय समाज त्रस्त हैं।

उस जमाने में स्कूलें नहीं थी, कॉलेज नहीं थे, सिर्फ गणित की शिक्षा देसी प्रणाली से सीख कर हिसाब- किताब में निपुण हो जाते थे।

आज पारिवारिक, सामाजिक, शैक्षणिक, एवं व्यापार व उद्योग का चित्र बिलकुल बदल गया है। साधन हो गये हैं। पूरा परिवार साथ रहता है। माहेश्वरी समाज का संगठन भी पिछले सवा सौ वर्ष से सक्रिय रहा है। आज पूरे भारतवर्ष में देखें तो ऐसा कोई गांव या शहर नहीं जहां माहेश्वरी समाज का संगठन नहीं हो।

महासभा ने स्थानीय संगठनों को तहसील, जिला, प्रदेश, व अखिल भारतीय स्तर पर श्रृंखलाबद्ध संगठनों से जोड़ा है एवं समाज को एक सूत्र में बांध दिया है। माहेश्वरी समाज का महिला संगठन भी इसी प्रकार श्रृंखलाबद्ध कार्य कर रहा है। आप सब युवाओं का भी अखिल भारतीय संगठन गांवों से अखिल भारतवर्षीय स्तर तक श्रृंखलाबद्ध जुड़ा हुआ है। शैक्षणिक दृष्टि से हमारे समाज ने भी अच्छी उन्नति की है।

उच्च शिक्षा, तकनीकी, वाणिज्य व अन्य विधा में समाज ने भी अच्छी प्रगति की है।

ऐसा कोई व्यापार व उद्योग नहीं जिसमें हमारे समाज ने अपना स्थान नहीं बनाया है। यह खुशी की बात है कि समाज का स्तर रहन-सहन, खान-पान, शिक्षा एवं व्यापार व उद्योग में उच्च श्रेणी में पहुँचा हुआ है।

हमारे पूर्वजों ने राजस्थान की कठिन परिस्थितियों के उपरान्त सुदूर बंगाल-आसाम, महाराष्ट्र-मुंबई , आन्ध्र-तामिलनाडू जाकर अपनी संस्कृति एवं नैतिक मूल्यों की रक्षा करते हुये व्यापार एवम् नौकरी द्वारा पारिवारिक सुख समृद्धि में योगदान किया है । अपने रीति रिवाज, धार्मिक मान्यताएं, त्यौहार एवम विवाह सम्बन्ध पूर्व मान्यताओं के अनुसार ही करते थे।

संस्कृति व नैतिक मूल्यों में ऱ्हास

हम कहाँ जा रहे है ?

देश को आजाद हुए ४० वर्ष पूरे हो गये हैं । इन ४० वर्षों में देश में सुख सुविधा व्यापार, उद्योग और दैनिक आवश्यकताओं की आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध कराने में देश ने बड़ी तरक्की की है। खाने को पूरा अनाज पैदा होता है, पहनने को पूरा कपड़ा सूती, रेशमी, ऊनी एवम सिंथेंटिक सभी प्रकार का उपलब्ध, है, बल्कि हम आज संपन्न देशों को सभी तरह का कपड़ा निर्यात भी कर रहे हैं। आधुनिक आवश्यकताओं में टी.वी. भी आज गांवों तक पहुंच गया है। सड़क, रेल और हवाई मार्ग का आवागमन अत्यंत सुलभ हो गया है । एस टी डी से बात शीघ्र एवं लंबी दूरी से भी हो जाती है। कम्प्यूटर से गहरी व गहन जानकारी, प्रश्नों के हल और भविष्य की योजनाएँ शीघ्र व अधिक तथ्यों पर बनाई जा सकती है । देश जब तक २१वीं सदी में पदार्पण करेगा, तब तक सुख सुविधाएं, आराम व साधन और भी अधिक सुलभ हो जाएंगे। परन्तु मेरा प्रश्न है कि क्या हम सुखी हैं ? क्या हमारा परिवार सुख शांति से अपना घर संसार चला रहा है ? पति-पत्नी, पिता-माता और बेटे -बेटियों के बीच प्यार व सम्मान क्या यथेच्छ है ? क्या ससुराल में सास- ससुर व ननद के साथ बहू उस परिवार का अभिन्न अंग बनी हुई है ? मेरी दृष्टि में आज परिवार और ससुराल में माता-पिता और बच्चों के बीच, सास-ससुर और बहू के बीच, पति व पत्नी के बीच अधिक तनाव है, अधिक अलगाव है। नशीले द्रवों के सेवन के कारण लड़के व लड़कियाँ स्वछन्दता के वातावरण के कारण, युवक व युवतियाँ शराब व मांसाहार के प्रचलन के कारण, छोटे और बड़े, स्त्री व पुरुष सभी तनावग्रस्त हैं, सभी अलगाव से जीवन को धकेल रहे है।

नई पीढ़ी के विचारों में, उनके जीवनमूल्यों में, अपने से बड़ों के प्रति सम्मान में ह्रास हुआ हैं। उनमें भी तनाव व अलगाव अधिक है। समरसता कम है। प्रेम व सद्भाव भी कम होते जा रहे हैं। साथ ही लाचारी की अवस्था मातापिता, सास ससुर व पति पत्नी महसूस करते जा रहे हैं। विवाह के पश्चात प्रथम ५ वर्ष पति पत्नी के बीच, सास ससुर व बहू के बीच सम्बन्ध अक्सर तनावपूर्ण रहने लगे हैं। कभी कभी तो आपसी अनबन के फलस्वरूप अलगाव, हत्या व आत्महत्या की स्थिति तक उत्पन्न होने लगी है।

यह विडम्बना है कि स्वतंत्रता के ४० वर्ष पश्चात जबकि शिक्षा बढ़ी है, लड़के लड़कियां, सास व बहुएं पहले की अपेक्षा अधिक शिक्षित है। बी.ए., अथवा एम.ए. की शिक्षा भी होती है। गांधीजी ने कहा था कि जब पुरुष शिक्षित होता है तो सिर्फ एक व्यक्ति शिक्षित होता है, परंतु जब नारी शिक्षित होती है तो पूरा परिवार शिक्षित होता है और इस प्रकार पूरा समाज व देश शिक्षित हो जाता है। उन्होंने नारी शिक्षा पर काफी बल दिया था। आज नारी-शिक्षा बढ़ी है। शहरों में अधिकांश लड़कियां ग्रेजुएट होती है, फिर भी यह क्यों है कि शहरों में पति पत्नी और सास बहू में अधिक अनबन होती है? उनका पारिवारिक जीवन सुखी क्यों नहीं है। अलगाव, हत्या व आत्महत्या के प्रकरण शहरों में क्यों बढ़ रहे हैं?

हम कहाँ भटक गये?

हमें जानना होगा कि वे क्या कारण है जिनसे जीवनमूल्यों का ऱ्हास एवं परिवार की समरसता में कमी हो रही है। यह स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व हमारा देश अधिकांश गांवों में ही सिमटा था। लोग गरीब थे। पढ़ाई के साधन भी कम थे। अखबार व रेडियो का प्रसार कम था और पत्र पत्रिकाएं भी कम उपलब्ध थीं। उस समय सिने जगत भी अच्छे व शिक्षाप्रद चलचित्र निकालता था। टेलिविजन तो था ही नहीं, साथ ही विदेश भ्रमण और विदेशी संस्कृति का प्रभाव व प्रमाण देश में कम था। यातायात के साधन कमजोर थे एवं भ्रमण के लिए सुविधाएं भी कम थी।

आज देश के राजनैतिक जीवन में भी जीवनमूल्यों की गिरावट आई है। देश का व्यापारिक, व औद्योगिक समुदाय भी सिर्फ येनकेन प्रकारेण पैसा कमाने व व्यापार व उद्योगवृद्धि में ही लगा हुआ है। देश व समाज में जीवनमूल्यों की स्थापना हो, उद्योग व व्यापार समाज व देश का हितसाधन करें, कर्मचारी व व्यवस्थापन के बीच आदर व सहयोग की भावना बढ़े; आज इस प्रकार का मानस नहीं दिखता है। आवागमन, रेडियो, टेलीविजन, पत्र-पत्रिकाएं, तार, टेलेक्स, टेलीफोन आदि की जो सुविधाएं बढ़ी है और सिने जगत का जो प्रभाव बढ़ा है, उन सब कारणों से देश तो क्या पूरा विश्व छोटा हो गया है। विदेशों की खबर व जानकारी कहीं की भी हो सचित्र शीघ्र मिल जाती है। विदेशी संस्कृति भी आवागमन, पत्र-पत्रिकाएं, सिनेमा और टी वी के माध्यम से देश के हर छोटे बड़े खासतौर से विद्यार्थियों पर बड़ा असर ला रही है।

इसी वर्ष प्रसारित एक शोध के अनुसार पूना के डॉक्टर प्रमोद जोग ने बताया है कि प्रति सप्ताह प्राथमिक विद्यालय का विद्यार्थी २१ घण्टा टेलीविजय देखता है। ऐसे विद्यार्थी की औसत आयु ९ से १२ वर्ष की है। इस प्रकार वर्षभर में यह विद्यार्थी ११०० घण्टे टी.वी. देखता है और करीब इतना ही समय उसका विद्यालय के शिक्षाक्रम का होता है। टी.वी. देखते रहने का प्रभाव यह पड़ा है कि यदि टी.वी. का कार्यक्रम बंद कर दिया जाय और विद्यार्थी को न देखने का आग्रह किया जाय तो ३० प्रतिशत छात्र नाराज व चिड़चिड़ापन प्रदर्शित करते है। ५० प्रतिशत जब तक टी.वी. का कार्यक्रम चलता है तब तक घर का काम (होमवर्क) करने से इन्कार करते हैं और जब टी.वी. बंद कर दिया जाता है तो छात्र पढ़ने से इन्कार भी कर देते हैं। रात को देर तक टी.वी. देखने के कारण छात्र देर से उठते हैं और उठने के बाद भी उनकी आंखे अलसाई रहतीं हैं और वे स्कूल में नींद भरे रहते हैं और पढ़ाई में ध्यान नहीं दे पाते। टी.वी. के कारण अच्छी किताबें पढ़नी, आर्ट व क्राफ्ट आदि हॉबी, आराम, कसरत, सामाजिक गतिविधि और रविवार की पिकनिक आदि में रुचि कम हुई है और ये सब कार्यक्रम शनैः शनैः कम हुए हैं। विज्ञापन के तौर तरीकों से छात्रों को चोरी और निशानेबाजी की शिक्षा अनायास मिल जाती है। फलों के रस के बदले सॉफ्ट ड्रिंक बच्चे अधिक पसंद करने लगे है और मातापिता के प्रेम को सॉफ्ट ड्रिंक के साथ जोड़ने लगे है। नर्सरी गीतों में गांधीजी के बदले 'लाजोजी' का नाम बोलते हैं। टी.वी. के कार्यक्रमों में यौन व हिंसा के कार्यक्रम व चित्र प्रदर्शित होते हैं जिनके कारण बच्चों की प्रवृत्तियां व मानसिकता में आक्रामक व यौन भावना कम उम्र में ही विकसित हुई है। अमेरिका के एक शोध में डॉक्टर मेरियन होवार्ड बताते हैं कि १९८६ के ग्रीष्मकाल के सर्वोच्च ५० गीतों में ४७ गीत यौन संकेत से युक्त थे। अधिकांश चलचित्रों, किताबों व पत्रिकाओं में यौन संकेत की सामग्री प्रचुर मात्रा में रहती है। विज्ञापनों में सिने सितारों द्वारा अपने प्रेमी प्रेमिकाओं की व विवाहेतर उत्पन्न बच्चों की चर्चा रहती है और हम जानते है कि सिने सितारे युवाओं के आदर्श होते हैं। जनसाधारण में यौन संकेतों के प्रति आकर्षण बढ़ा। लोग अपनी मोटरकार के बम्पर पर, टी शर्ट पर, टोपियों पर यौन संकेत रखते हैं। बिक्री बढ़ाने के लिए उत्पादनकर्ता विज्ञापनों में बहुधा यौन संकेतों का इस्तेमाल करते हैं। शोध के अनुसार जब तक एक विद्यार्थी स्नातक परीक्षा पास करता है तब तक वह यौन संकेतों के ५ लाख से अधिक

विज्ञापन देख चुका होता है। परफ्यूम व जीन निर्माता विज्ञापनों में सटीक यौन संकेतों का उपयोग करते हैं। विज्ञापन निर्माण करने वालों का कहना है कि यौन सम्बंध के साधारण संकेतों से अब विज्ञापन प्रभावशाली नहीं बनता। नग्नता और खुला यौन प्रदर्शन ध्यानाकर्षण व लोगों को स्तब्ध करने के लिए उपयोगी होता है ताकि लोग विज्ञापित की जाने वाली वस्तुओं को याद रख सकें। इस प्रकार के यौन संकेतयुक्त विज्ञापन सभी उम्र के बच्चे देखते हैं और इन कारणों से बच्चों की मानसिकता व भावना यौन प्रमुख बनने लगी है। टी.वी. में भी दर्शकों का ध्यान आकर्षित करने के लिए यौन संकेतों का खूब इस्तेमाल होता है। जब तक एक विद्यार्थी स्नातक परीक्षा पास करता है तब तक वह टी.वी. देखने में १८००० घण्टे व्यतीत करता है, जबकि स्कूल व कॉलेज की पढ़ाई में सिर्फ ११००० घण्टे ही व्यतीत करता है। टी.वी. पर भी यौन संकेतों की मात्रा विभिन्न विज्ञापनों में इतनी अधिक बढ़ गई है कि एक सर्वेक्षण के अनुसार ६ महीनों के विज्ञापनों में ८ तलाक, २ द्विपत्नी विवाह, ४ अलगाव और ६ तलाकों की तैयारी के दृश्य थे। साथ ही २१ सजीव यौन सम्बन्ध दिखाए गये, जिनमें एक भागीदार विवाह के अतिरिक्त कोई दूसरा था। दो औरतें दिखाईं गईं जिनके एक से अधिक प्रेमी थे। शंकास्पद पितृत्व वाले अनेक बच्चों को भी दिखाया गया था। टी.वी. पर विवाहित व्यक्तियों को विवाहेतर यौन सम्बन्धों के साथ अक्सर दिखाया जाता है।

जो अमेरिका में सिनेमा, टी.वी., पुस्तके व पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से दिखाया जा रहा है, वह भारतवर्ष में भी कल हो सकता है। और जैसे संकेत मिल रहे हैं विज्ञापनदाता व विज्ञापन निर्माता ऐसा धीरे धीरे शुरु करा देंगे। इस आधार पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि आज हमारे देश में युवकों के लिए और बच्चों के लिए वातावरण अच्छे संस्कारों के पनपने के अनुकूल नहीं है।

मांसाहार व शराब का प्रसार भी हमारे व्यक्तिगत, पारिवारिक व सामाजिक संस्कृति व नैतिक मूल्यों की गिरावट का कारण है। हमारी धार्मिक व सांस्कृतिक मान्यताओं में मांसाहार व शराब को वर्ज्य एवं हेय माना गया है। यह दुर्भाग्य की बात है कि संपन्नता के साथ साथ प्रौढ़ों में भी मांसाहार व शराब के प्रति आकर्षण बढ़ा है। शहरों में ही नहीं बल्कि गांवों में भी मांसाहार व शराब का प्रचलन तेजी से बढ़ रहा है। हमारे मनीषियों ने शोध द्वारा सिद्ध किया है कि शराब हमारे मन और मस्तिष्क को विकृत

करती है, उसे चंचल व विषयानुरक्त भी बनाती है। शराब पीने वाला व्यक्ति कभी भी अधिक शराब पीने वाला बन सकता है। अधिक शराब से स्वास्थ्य का नुकसान होता है और पेट की कई क्रियाएं नष्ट हो जाती है जिनके कारण कम उम्र में ही मृत्यु हो सकती है। शराब के अवगुण के साथ मांसाहार का अवगुण आ ही जाता है। ऐसा कहा भी जाता है कि शराब मांसाहार का आह्वान करता है। मांसाहार भी हमारे मन मस्तिष्क को उत्तेजक व आक्रामक बनाता है। यह भी दुर्भाग्य की बात है कि शराब व मांसाहार में हमारे समाज की महिलाएं भी शनैः शनैः रंग रही है। जब परिवार के मुखिया व मुख्य सदस्य शराब व मांसाहार करते हों तब उनके परिवार में बच्चे और युवक मांसाहार व शराब से अलिप्त कैसे रह सकते हैं? शराब व मांसाहार के संस्कार तो बच्चों को जन्म से या घर के वातावरण से ही प्राप्त हो जाते हैं और इस प्रकार शराबी और मांसाहारी के बच्चे भी शराबी व मांसाहारी बन ही जाते हैं। जो माता पिता स्वयं मांसाहारी हैं व शराब पीते है और झूठा आदर्श बताने के लिए अपने बच्चों को मांसाहार व शराब पीने से मना करते है, वे अपने इस प्रयास में कभी सफल नहीं हो सकते; क्योंकि उपदेश व आदर्श उसी का प्रभावशाली हो सकता है जो उपदेश देने वाले के निजी जीवन में उतरा हुआ हो। अपने बच्चों से छिप कर खाने पीने से भी यह दोष मिटता नहीं व छूटता भी नहीं, क्योंकि शराबी व मांसाहारी व्यक्ति के शरीर व मन से निकलने वाली लहरों में मादकता व आक्रामकता के संस्कार रहते है, जो चारों तरफ वातावरण में फैलते है। हमारे समाज में एक पुरानी मान्यता यह भी है कि जो व्यक्ति मांसाहारी होगा वह शराबी भी धीरे धीरे बन जाएगा और जो व्यक्ति शराबी व मांसाहारी होगा वह धीरे धीरे व्यभिचारी भी हो जाएगा, क्योंकि इन तीनों का एक दूसरे से गहरा सम्बन्ध है। एक अवगुण अन्य अवगुणों को आकर्षित करता रहता है। इसलिए आवश्यक है कि हमारे समाज के अभिभावक अपने निजी व परिवार के हित के लिए शराब, मांसाहार व व्यभिचार की घिनौनी व अधोपतन को ले जाने वाली आदतों से बचें।

सामाजिक समस्यायें

१. लड़के / लड़कियों के Matching सम्बन्धी ध्यान देने योग्य सूत्र।

२. लड़के / लड़कियों को Matching के लिए आपसी संवाद / Chatting की आवश्यकता / संवाद / Chatting एक नया आयाम होने से समाज में उपस्थित होनेवाले प्रश्नों का समाधान।

३. लड़कियों को घरेलू व संस्कार व सामाजिक सामान्य जानकारी / योग्यता प्रदान करने हेतु माता-पिता को उद्‌बोधन।

४. लड़कियाँ मात्र Career ही नहीं बल्कि घर संभालने व अर्थोपार्जन दोनों का सामंजस्य करे इस हेतु वार्तालाप / शंका समाधान / दिशा बोध।

५. ६ घण्टे अथवा घर पर कर सकने योग्य अर्थोपार्जन के साधनों की सूची बनाना व प्रसारित करना। यदि पूर्णकालिक काम ही करने की रुचि व आवश्यकता हो तो सास-बहू / जेठानी-देराणी / दो सहेली मिलकर ६-६ घण्टे काम संभालने की योजना बनानी चाहिए।

६. विवाह की उम्र लड़कियों की २१ एवं लड़कों की २३ ही योग्य है। लड़कियों की उच्चशिक्षा विवाह पश्चात् पति के घर में हो, इसकी समाज में स्वीकृति व लड़के के परिवार को मनाना। इस विचारधारा से उत्पन्न कठिनाइयों व तकलीफों का समाधान। अन्यथा कौमार्य भंग (Virginity-loss) की स्थिति बनती जा रही है जिसके खतरनाक परिणाम होंगे। जैसे Unfaithful after marriage : साधारण मतभेद की अवस्था में पूर्व प्रेमी / प्रेमिका की ओर आकर्षण / मानसिकता। Aids-abortion की संभावना / स्थिति। विवाह पश्चात् पूर्व प्रेमी / प्रेमिका की जानकारी व लगाव की शंका बन जाना।

७. सन्तान करने की योग्य उम्र २१ से २८ की होती है जिस समय माँ व सन्तान दोनों को खतरा व कठिनाई नहीं होती। बाद की उम्र में कठिनाई व खतरा दोनों की संभावना / खतरा।

८. सन्तान हो जाने से विवाहित जीवन सरस एवं पति / पत्नी के सम्बन्धों में मधुरता व गहराई आती है। इसलिए सन्तान पैदा करने की मानसिकता रखनी चाहिए। सिर्फ एक सन्तान उस सन्तान के लिए, साथ ही माता-पिता के लिए भी ठीक नहीं होती। भाई को बहिन व बहिन को भाई, व बड़े भाई को छोटे भाई की एवं बड़ी बहिन को छोटी बहिन की आवश्यकता व उपयोगिता होती है। शिक्षा शीघ्र एवं स्वतः बड़े से

छोटे व छोटे से बड़े की होती हे। Sharing/Discipline/Reasonableness आदि अनेक उपलब्धियाँ होती हैं। माँ / बाप भी Discipline एवं समानता (Equality) आदि गुणों को ग्रहण कर सकते हैं।

९. माहेश्वरी समाज एक प्रबुद्ध, संस्कारी व व्यापारी समाज है। ऐसे समाज को तीन सन्तान का लक्ष्य बनाना चाहिए। माहेश्वरी समाज एक छोटा सा समाज हे। भारत भर में मात्र २ लाख परिवार अथवा १० लाख व्यक्ति होंगे। लड़कों की संख्या लड़कियों की संख्या से कम है। अनुमानतः १०० लड़कियों के सामने ७० लड़के ही होंगे। मुकेश अम्बानी एवं कुमारमंगलम बिरला के तीन सन्तानें हैं। वर्तमान स्थिति से ८० वर्ष पश्चात् माहेश्वरी समाज ही नहीं रहेगा।

१०. अन्तर्जातीय विवाह माहेश्वरी समाज जैसे उच्च आदर्श, संस्कार-धनी समाज की अपूरणीय क्षति है। Research कहती है कि उच्च आदर्शवाले समाज का लड़का कम आदर्शवाली लड़की से विवाह करे तो सन्तान साधारण आदर्शवाली बनेगी। England व Germany के वंशों में गिरावट हुई यह Research से ज्ञात हुआ है।

११. विवाहपूर्व लड़के व लड़की दोनों परिवारों का कर्त्तव्य है कि बायोडाटा प्राप्त करने के पश्चात् जानकारी निकालें कि क्या यह सम्बन्ध हमारे लड़के / लड़की व दोनों परिवारों के अनुकूल है ? साथ ही क्या लड़के / लड़की की आपस की Matching ठीक होगी ? अन्य जानकारी प्राप्त कर ही सम्बन्ध करना चाहिए ताकि परिवारिक व लड़के / लड़की के आपसी जीवन में सुख-शान्ति में विघ्न न हो एवं सम्बन्ध-विच्छेद की स्थिति न बने।

१२. सामाजिक कार्यकर्त्ताओं का कर्त्तव्य है कि अपने पड़ोस व मित्रों के परिवार में अप्रिय स्थिति की भनक (आभास) हो तो पहलकर आपसी मेलजोल / सुख-शान्ति का वातावरण शीघ्र बनायें। आवश्यकतानुसार समाज के वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं से मार्गदर्शन / सहयोग ले सकते हैं।

१३. अप्रिय स्थिति के सामान्य होने की सम्भावना न रहती हो तो प्रेम-पूर्वक सम्बन्ध-विच्छेद की व्यवस्था कराना भी एक सामाजिक कार्य व दायित्व समझना चाहिए।

१४. विधवा-विवाह व Divorce के बाद के विवाह में मदद करना भी सामाजिक कार्य / कर्त्तव्य है।

१५. Generation Gap की समस्या।

१६. Senior Citizen की समस्या।

पीढ़ियों में असामंजस्य Generation Gap

Generation Gap का मुख्य कारण है, माता-पिता अपनी सन्तान को मार्गदर्शन हेतु व साथ जीवन जीने के लिए आवश्यक समय नहीं देते। माता-पिता समझ रहे हैं कि हमें हमारे माता-पिता ने मार्गदर्शन व साथ जीवन जीने का कार्य नहीं किया तो इसकी आवश्यकता नहीं है। पुराने जमाने में हमलोग गाँवों में रहते थे। चारों तरफ वातावरण, रहन-सहन, खान-पान, सामान्य, घरेलू व शान्त था। आज हम शहरों में रहते हैं। रहन-सहन में बदलाव है। चारों तरफ पास-पड़ोसी भिन्न संस्कृति व संस्कार के हैं। वातावरण व्यवसायिक व स्वकेन्द्रित है। विदेशी संस्कृति का आक्रामक प्रभाव है। खान-पान भी बदल गया है। मांसाहार व शराब का प्रचलन है। टीवी, अखबार आदि भी हमारी संस्कृति पर आक्रामक समाचार व दृश्य प्रसारित करते हैं। इन सबको हम न तो दूर कर सकते हैं एवं न रोक सकते हैं। माता-पिता को बच्चों को समय देना ही होगा एवं अपने बच्चों को संभालना होगा। उनमें संस्कार डालना ही होगा। सामाजिक एवं पारिवारिक संस्कृति / रीतरिवाज में बच्चों को सम्मिलित करते हुए उन्हें प्रबुद्ध करना होगा। स्कूल / कॉलेज से अवकाश लेकर सम्मिलित करना चाहिए। गलत साथियों व आदतों से समझाकर उन्हें बचाना होगा। आज का युग 'क्यों' एवं 'क्यों नहीं' का है, इसलिए बच्चों को समाधानकारक व सन्तोष-जनक उत्तर देना होगा। जो उत्तर माता-पिता नहीं जानते हैं, अथवा जिस उत्तर से बच्चों को सन्तोष नहीं होता है, उसका उत्तर Experts व जानकार लोगों से प्राप्त करना चाहिए। यदि माता-पिता बच्चों को समय देंगे एवं साथ जीवन जीते हुए समाधानकारक व सन्तोष-जनक वार्तालाप आपस में होता रहेगा तो Generation Gap नहीं रहेगा। पुराने जमाने में तो तीन पीढ़ी साथ रहती थी, शहर, नौकरी व व्यवसाय हेतु शहरों में भी रहते थे। फिर भी Generation Gap नहीं होता था तो अब दो पीढ़ी में Gap क्यों रहेगा?

बच्चों की परवरिश, पढ़ाई व परिवार सुख

विश्व-एकीकरण (Globalisation) एवं उदारीकरण (liberalisation) के युग में सारा संसार एक हो गया है।आने जाने एवं Internet के कारण सम्पर्क सुलभ व त्वरित हो गया है। व्यापार एवं उद्योग साथ ही आयात एवं निर्यात में नयी दिशाएं प्राप्त हो रही हैं एवं पुराने व्यापार कम हो रहे हैं। Knowledge Worker का युग प्रारम्भ हुआ है एवं Information Technology ने भारतवर्ष के लिये सम्भावनाओं के शिखर द्वार खोल दिये हैं। यह युग युवाओं का ही युग होगा। हमारे समाज के युवा वर्ग को उसका भरपूर लाभ लेना चाहिये। व्यावसायिक उच्च शिक्षा प्राप्त करना यह लक्ष्य प्रत्येक युवा का होना चाहिये। साथ ही समाज एवं संगठन का कर्त्तव्य है कि उच्च शिक्षा हेतु मार्गदर्शन एवं आर्थिक सहयोग उपलब्ध कराये।

विश्व एकीकरण (globalization) एवं उदारीकरण (Liberalization) की परिस्थिति में हमारे पुश्तैनी व्यापार का भविष्य उज्ज्वल नहीं दिखाई देता है। इस लिये हमें अपने लड़को को उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा देनी चाहिए। उन्हें C.A., Engineer, Doctor, MBA, अथवा सरकारी प्रबन्धन की शिक्षा जैसे कि IAS, IFS, IPS आदि में विशिष्ट योग्यता प्राप्त करनी होगी। Information Technology का भविष्य भी बहुत उज्ज्वल है। इसलिये समाज का प्रत्येक लड़का धनाभाव से उपर्युक्त उच्च शिक्षा से वंचित न रहे, इसे हमें अपना सामाजिक दायित्व समझना चाहिए। साथ ही समाज के होनहार लड़कों के लिये इसे दिशा निर्देश समझना चाहिए।

लड़कियों की शिक्षा के बारे में मेरा विचार है कि उन्हे अपना मुख्य लक्ष्य परिवार का संरक्षण, सामाजिक एवं पारिवारिक सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों के संवर्धन एवं भावी पीढ़ी को शैक्षणिक योग्यता एवं संस्कारों से पूर्ण करने की विशिष्ट जिम्मेदारी समझनी चाहिए।

सामान्यतया अर्थोपार्जन की जिम्मेदारी पुरुषों की ही होनी चाहिए एवं इस हेतु पति एवं पुत्र को ही अर्थोपार्जन की जिम्मेदारी लेनी चाहिए। परन्तु बदलती हुई परिस्थितियों में एवं अनहोनी घटनाओं के संदर्भ में स्त्री अर्थाभाव एवं अर्थोपार्जन की योग्यता न होने पर लाचारी की स्थिति में न आये, पति अथवा पुत्र द्वारा अनुचित दबाव में न रहे, दुर्घटना

की स्थिति में अपना एवं अपने बच्चों के भरण पोषण व शिक्षा की जिम्मेदारी सहजता से निभा सके, इस लिये आवश्यक है कि अर्थोपार्जन की योग्यता वाली शिक्षा व अनुभव उसे शिक्षाकाल एवं विवाहोपरान्त ससुराल परिवार में भी प्राप्त होते रहें। माता-पिता, पति, एवं सास श्वसुर का कर्तव्य होना चाहिए कि लड़की / बहू को अर्थोपार्जन की शिक्षा देकर दैनिक ५ / ६ घंटे उसे अर्थोपार्जन के कार्य में लगाने की प्रेरणा व सहयोग देते रहें एवं शेष समय ही परिवार के सामान्य कार्य एवं बच्चों के संवर्धन की जिम्मेदारी में लगाये। आज लड़कियों को लड़कों के समान व्यवसाय, नौकरी आदि के लिये शिक्षा दी जा रही है जिससे वे पुरुषों की तरह कार्यालय अथवा कारखानों में पूर्णकालिक कार्य करती हैं एवं करना चाहतीं हैं। साथ ही उनकी मानसिकता बन रही है कि वे अर्थोपार्जन द्वारा स्वतन्त्र हों। अर्थोपार्जन द्वारा career व आत्मनिर्भरता उनकी प्रथम आवश्यकता व दिशा हो रही है। इस हेतु विवाह देर से करना, अथवा नहीं करना एवं विवाह पश्चात सन्तान पैदा न करना अथवा देर से करना आदि की उनकी मानसिकता बन रही है। इस मानसिकता के दुष्परिणाम बड़े हैं । इससे पारिवारिक रचना एवं पारिवारिक जीवन में संतुलन बिगड़ेगा, जो लड़की, परिवार एवं समाज किसी के भी हित की बात नहीं होगी । सभा में उपस्थित भाई-बहिन एवं लड़के / लड़कियां यह न समझें कि लड़कियों की शिक्षा के विपक्ष में मैं बोल रहा हूँ। मैं उनकी शिक्षा की दिशा एवं लड़की के जीवन के प्राथमिक कर्तव्यों एवं दिशा की ओर विचार दे रहा हूँ। आज के भाषण में अधिक समय नहीं है । वार्तालाप द्वारा आपसी विचार स्पष्ट किये जा सकते हैं ।

संयुक्त परिवार टूट रहे हैं। खाने पीने व रहन सहन की जागरूकता बढ़ी है एवं स्तर भी उन्नत हुआ है। फिर भी गंभीर बीमारियाँ एवं दुर्घटनायें व्यक्ति एवं परिवार की चिन्ता के बड़े कारण बनते जा रहे हैं। मधुमेह, रक्तचाप, हृदय विकार, केन्सर एवं गुर्दे की बीमारियाँ असमय में व्यक्ति एवम् परिवार की चिंता के विषय बनते जा रहे हैं। सड़क दुर्घटनाओं से परिवार संकट में आ जाता है। ४० से ५० वर्ष की उम्र तक परिवार में बच्चों की शिक्षा पूर्ण नहीं होती। पत्नी की उम्र ३५ से ४५ वर्ष की ही होती है । इस प्रकार पूरा परिवार संकटग्रस्त हो जाता है । इन सब का मुख्य कारण है कि व्यक्ति तनावपूर्ण जीवन जी रहे हैं। भाग दौड़, स्पर्धा एवं उच्च आकांक्षा बढ़ी हैं। लोगों का खान पान बिगड़ा है। सभी तरह की सुविधाओं के उपरान्त असमय में लोग मारक रोगों से ग्रस्त हो रहे हैं।

इलाजों में भारी खर्च होने लगा है। मारक रोगों के कारण पारिवारिक व व्यापारिक जीवन चिन्तायुक्त बनता जा रहा है। आने वाले समय में स्वास्थ्य सर्वोपरि आवश्यकता होगी। साधनों एवं जागरूकता के कारण हम स्वस्थ रह सकते हैं। पुश्तैनी बिमारियों के असर को भी कम किया जा सकता है। प्रत्येक व्यक्ति को समझना चाहिये कि उसके स्वास्थ्य से पूरे परिवार का भविष्य जुड़ा हुआ है। स्वस्थ रहना आसान है। स्वस्थ रहने में खर्च कम है। स्वस्थ रहने में ही स्वतः की एवं परिवार की सुख शांति है। स्वस्थ रहने से दीर्घकाल तक व्यापार व परिवार का सुख भोग सकते हैं। अपने खान पान एवं दिनचर्या पर नियन्त्रण द्वारा स्वास्थ्य की रक्षा की जा सकती है। अपने स्वास्थ्य की रक्षा परिवार की सुरक्षा से जुड़ी हुई है। सड़क दुर्घटनाओं के विश्लेषण से तथ्य यही सामने आते हैं कि तेज रफ्तार, देर रात का सफर, नींद की झपकी आने से अधिकांश दुर्घटनाएं गम्भीर होतीं हैं। जो युवा हैं उन्हें समझना चाहिये कि जीवन में उन्हें अनेक महत्वपूर्ण कार्य करने हैं एवं तेज रफ्तार उनके जीवन को संकट ग्रस्त कर सकती है । जो विवाहित एवं जीवन व व्यापार के मुखिया हैं, उन्हें समझना चाहिये कि उनपर जिम्मेदारी व्यापार एवं परिवार की भारी है। इसलिये सभी के हित में यही उचित है कि परिवार का प्रत्येक सदस्य स्वास्थ्य के नियमों के अनुसार ही खानपान, रहन सहन एवं कार्य शैली व अपने विचारों को बनाये रखे एवं समझे कि दुर्घटनाओं से बचना जरूरी है।

I.T. के जमाने में हमारे समाज के प्रत्येक युवा को उच्च शिक्षा प्राप्त करनी ही होगी। चाहे तकनीकी अथवा वाणिज्य हो, इंजीनियरिंग, चार्टर्ड एकाउण्टेंसी जैसी प्रोफेशनल शिक्षा हमारे समाज के प्रत्येक युवा को मिलनी ही चाहिए। MBA भी प्रत्येक युवा को होना ही चाहिए। शिक्षा का खर्च बढ़ गया है। इसे सुलभ करने का साधन ऋण छात्रवृति व बैंक ऋण आदि की व्यवस्था समाज को ही करनी चाहिए।

आज लड़कियाँ लड़कों जैसी ही शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। वे भी इंजीनियर, सी.ए. एमबीए हो रही हैं। वे पूर्णकालिक काम-काजी बन रही हैं। लड़कियों की मानसिकता भी कैरियर बनाने की हो रही है। कुछ लड़कियां विवाह नहीं करना चाहती क्योंकि विवाह कैरियर में बाधक है। लड़किया संतान भी नहीं करना चाहती क्योंकि संतान भी कैरियर में बाधक है। इस मानसिकता के भयानक परिणाम आने वाले हैं। समाज में लड़कियों की संख्या वर्तमान में ही कम है। यदि लड़कियाँ विवाह नहीं करेगी या देर से करेगी एवं

संतान नहीं करेंगी अथवा देर से विवाह के कारण संतान कम होगी (काम-काजी लड़कियों के संतान कम ही होती है) तो समाज की रचना ही बिगड़ जाएगी। मैं लड़कियों की शिक्षा के विरूद्ध में नहीं हूं। प्रत्येक लड़की को शिक्षित होना चाहिए। मैं तो लड़कियों की शिक्षा की दिशा क्या होनी चाहिए इस पर विचार व्यक्त कर रहा हूं। मेरे विचार से प्रत्येक लड़की को ऐसे शिक्षा क्रम में पढ़ाना चाहिये जिससे वह दैनिक जीवन में पाँच से छह घण्टे अर्थोपार्जन में लगा सके। घरेलू जीवन में जितनी सुविधा विज्ञान के विकास से उपलब्ध हो गई है, घरेलू काम-काज में अधिक समय नहीं लगता। परन्तु सास-ससुर, पति एवं संतान के लिए समय व शक्ति सुरक्षित रखनी ही चाहिए। यदि लड़की के जीवन में दुर्घटना के कारण अथवा आर्थिक परिस्थिति के कारण आवश्यकता पड़े तो पूर्णकालिक अर्थोपार्जन में समय भी लगाया जा सकता है। परन्तु सामान्यतः अर्थोपार्जन की मुख्य जिम्मेदारी पुरुष की ही होनी चाहिए।

बन्धुओं! हम सब का दैनिक जीवन तनाव ग्रस्त होता जा रहा है। खान-पान, जीवन शैली, काम-काज की समस्या व स्पर्धा का स्वास्थ्य पर असर हो रहा है। ४० से ५० वर्ष की उम्र में ही मधुमेह, रक्तचाप, एवं हृदयाघात का प्रमाण बढ़ता जा रहा है। एक तरफ स्वास्थ के प्रति जागरूकता, निदान एवं उपचार के उच्च कोटि के साधन व विशेषज्ञ डॉ. की संख्या बढ़ी हैं। दूसरी तरफ खान-पान एवं रहन-सहन बिगड़ रहा है। परिवार छोटा होता जा रहा है। ऐसी परिस्थिति में ४० से ५० वर्ष की उम्र में बड़ी बीमारियाँ हो जाना, उनमें लगने वाला बड़ा खर्च एवं जीवन का खतरा भी बढ़ रहा है। इस उम्र तक पत्नी की उम्र छोटी ही रहती है। संतान की शिक्षा ही पूर्ण नहीं हो सकती। इस लिए स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता एवं रहन-सहन, जीवन शैली व खान-पान में संयम अत्यंत आवश्यक है।

शहरों में रहन-सहन स्थानीय जनता के साथ रहने से उनकी संस्कृति का असर भी पड़ा है। शहरों में शिक्षा का प्रसार बढ़ा है, देश की शिक्षा नीति के अनुसार विविध विषय और उनका अध्ययन तो प्रमुख हुआ है, परन्तु नैतिक शिक्षा, देश व समाज के प्रति कर्तव्य का बोध और जीवनोपयोगी विषयों पर शिक्षाक्रम में कोई स्थान नहीं है। विद्यार्थी अपने विद्यार्थी-जीवन में पाठ्यक्रम, विद्यालय व कॉलेज की समयसारिणी के अनुसार अपने परिवार से कटा हुआ रहता है। कहीं कहीं पर पिता को और अधिकांश

अवस्था में माता की शिक्षा अब तक तो साधारण रही है। शिक्षा की सुविधाएं बढ़ने के कारण कम शिक्षित या अर्ध शिक्षित माता-पिता अपने बच्चों को आधुनिक शिक्षा व उच्च शिक्षा के हेतु विद्यालय व कॉलेज की शिक्षा और साथ ही तकनीकी शिक्षा में भी पढ़ाने लगे है। तकनीकी शिक्षा में अवश्यमेव और कहीं-कहीं कॉलेज की शिक्षा के लिए भी लड़के लड़कियों को घर से दूर दूसरे शहर अथवा दूसरे राज्य के शहर के होस्टलों में रखना पड़ता है। विद्यालय व कॉलेज का शिक्षाक्रम व शिक्षा के अतिरिक्त अनेक प्रवृत्तियां, विद्यार्थियों को अपनी शिक्षा एवं प्रवृत्तियों में ही व्यस्त रखते हैं, जिस कारण विद्यार्थी जीवन में लड़के लड़कियों का संपर्क दैनिक जीवन की आवश्यकताओं, समस्याओं व वस्तुस्थिति से कम रहता है। जहाँ लड़के लड़कियों को होस्टल में जाकर पढ़ना पड़ता है, वहां तो मातापिता का संपर्क टूट ही जाता है। कुल मिलाकर माहौल ऐसा बनता है कि विद्यार्थी जीवन में माता-पिता के विचार उनके जीवनमूल्य व रीति रिवाज से लड़के लड़की दूर हो जाते हैं। शहरी, व्यापारिक व औद्योगिक जीवन में जिन कठिनाइयों से मातापिता को जूझना पड़ता है, उस कारण मातापिता को अपने बच्चों को देने के लिए समय कम मिलता है। कम पढ़ी लिखी माताओं को उच्च व अंग्रेजी शिक्षा लेने वाले लड़के व लड़कियों के साथ वार्तालाप व विचार-विनिमय में भी कठिनाई व झिझक रहती है। आजादी के बाद हमारे देश की नीति धर्म निरपेक्ष की नीति बन गई है। धर्मनिरपेक्ष के साथ नैतिक शिक्षा का सम्बन्ध रह सकता था और रहना चाहिए था, परंतु इस ओर हमारे शिक्षाक्रम में कहीं स्थान नहीं है। विद्यालय, कॉलेज व विश्वविद्यालय की शिक्षाक्रमों में जीवन से छूने वाली समस्याओं व आवश्यकताओं का दिग्दर्शन व उपयोगी नीतियों का नितांत अभाव है। एक लड़की को अच्छी गृहिणी, अच्छी पत्नी व अच्छी माता बनने की शिक्षा विद्यालय व कॉलेज के पाठ्यक्रमों में नहीं है। इसी प्रकार एक लड़के को योग्य पालक, पति, पिता व नागरिक बनने की शिक्षा भी पाठ्यक्रमों में नहीं है। विद्यालयों व कॉलेजों का आज वातावरण जिसमें अध्यापकों व प्राध्यापकों की मानसिकता भी सम्मिलित है, विद्यार्थियों में देश, समाज व परिवार हेतु कर्तव्य, निष्ठा व समर्पण की भावना बनाने व विकसित करने के लिए यथेष्ट ज्ञान एवं अनुभव नहीं है।

तो हम क्या करें

प्रत्येक माता-पिता का कर्तव्य है कि देश व समाज में गिरती हुई नैतिकता व

जीवनमूल्य पाश्चात्त्य संस्कृति के आकर्षण, सिनेमा, टी.वी., पुस्तके व पत्र-पत्रिकाओं की आक्रमक व यौन भावनाएं विकसित करने वाली सामग्री से अपने बच्चों की रक्षा करें और उन्हें योग्य पुत्र-पुत्री तथा भविष्य में योग्य पति-पत्नी, माता-पिता व नागरिक बनाने की नैतिक शिक्षा दें। हमारी संस्कृति, शास्त्र-ग्रंथों द्वारा बच्चों में अच्छे संस्कार डालें। जिस प्रकार एक छोटे पौधे को अच्छा माली समय पर धूप व पानी देता है और कोई बकरी अथवा जानवर उसे चर न जाय इस हेतु बाड़ लगाता है, उसी प्रकार वातावरण में अनैतिक, असांस्कृतिक और जीवन को बिगाड़ने वाली प्रवृत्तियों से सुरक्षा करने की जिम्मेदारी भी मां बाप को निभानी होगी। चारों तरफ के आक्रामक वातावरण को नष्ट करने या बंद करने की क्षमता एक व्यक्ति या परिवार में नहीं हो सकती, परंतु प्रत्येक माता-पिता अपने बच्चों के साथ दैनिक संपर्क, वार्तालाप, विचारों के आदान-प्रदान, शंका समाधान व अच्छी पुस्तकों के पठन-पाठन द्वारा अपने बच्चों को गलत आदतों में फंसने व अपनाने से बचा सकते है। यह माना गया है कि बच्चों के प्रथम ५ या ७ वर्ष अच्छे या बुरे संस्कारों के निर्माण में प्रभावशाली होते हैं। यदि माता-पिता अपने अपने बच्चों को ७ वर्ष की उम्र तक अच्छे संस्कार देने के लिए प्रतिबद्ध रहे, बच्चे विद्यालय, घर व पड़ोस में क्या करते हैं, उनकी विचारधारा क्या बन रही है, इसका अध्ययन करते रहे, बच्चों के साथ वार्तालाप करते रहे, उन पर पड़ने वाले संस्कारों को आवश्यक सलाह व शंका समाधान करते रहे तो निश्चयपूर्वक वे अपने बच्चों में अच्छे संस्कार निर्माण करने में सफल हो सकते हैं। आज से २५ अथवा ४० वर्ष पूर्व वातावरण आक्रामक व दूषित नहीं था। ज्ञान व संपर्क की गति भी साधारण थी इसलिए हमारे पूर्वजों को हमें लालन-पालन व अच्छे संस्कार डालने के लिए अधिक मेहनत या ध्यान देना आवश्यक नहीं था। परन्तु आज के आक्रामक व गिरते नैतिक मूल्यों के वातावरण में बच्चों में अच्छे संस्कार डालने व खराब संस्कारों से बचाने के लिए उनको पर्याप्त समय व मार्गदर्शन और संपर्क व संरक्षण आवश्यक है। साथ ही यह भी आवश्यक है कि १४ वर्ष से २५ वर्ष की उम्र, जो वयस्क उम्र कही जाती है, उस समय बच्चों का अधिक संरक्षण, मार्गदर्शन, वार्तालाप व शंका समाधान व संपर्क होना चाहिए। आज का युग विज्ञान का युग है, प्रत्येक छोटी बड़ी चीज अथवा घटना का कारण पूछना बच्चों का स्वाभाविक है। उनका सही उत्तर दे सकना आवश्यक हो गया है। प्रत्येक मातापिता को

अपना निजी ज्ञान समृद्ध करना होगा ताकि वे अपने बच्चों द्वारा पूछे गये प्रश्नों का समुचित व समाधानकारक उत्तर दे सकें। आवश्यकतानुसार विद्यालय, महाविद्यालय से सहयोग व सहायता ले सकते हैं और समाज के चिन्तकों का व्यक्तिगत व विचारगोष्ठियों के माध्यम से सामूहिक सहयोग ले सकते हैं। पुराने जमाने में लड़के व लड़कियां दैनिक कार्यों में अपने मां बाप का हाथ बंटाते थे। सांस्कृतिक व सामाजिक पर्व घटनाएं एवं आयोजनों में पूरी तौर से सम्मिलित होते थे। परिवार व पड़ोस का इतना नजदीकी व गहरा सम्बन्ध होता था कि प्रत्येक घटना की चर्चा बच्चों के कानों में भी पड़ती रहती थी। आज वातावरण बदला हुआ है, विद्यालय व महाविद्यालय की शिक्षा व माता-पिता का दैनिक जीवन समस्याओं के कारण आपसी समरसता स्वाभाविक गति से नहीं आ सकती। विशेष प्रयत्नों द्वारा ही हम बच्चों में अच्छे संस्कार दे सकेंगे।

आज योग्य पति या पत्नी होने के लिए किसी प्रकार की शिक्षा पाठ्यक्रमों में उपलब्ध नहीं है। प्रत्येक लड़का-लड़की बड़े होकर पति पत्नी की भूमिका में आयेंगे ही, इसलिए प्रत्येक लड़के-लड़की को पति पत्नी के कर्तव्यों के प्रति सजग करना और विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति व समस्याओं के निराकरण हेतु मार्गदर्शन व शिक्षा आवश्यक है। यह भी आवश्यक है कि प्रत्येक लड़की को इस प्रकार की शिक्षा दी जाय या हुनर सिखाया जाय जिसके द्वारा वह अपने ही प्रयत्नों से आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो सके। इस प्रकार की शिक्षा से ही एक लड़की में आत्मविश्वास जागृत होगा। आवश्यकतानुसार वह अपने पति को अपने हुनर व योग्यता से आर्थिक मदद भी कर सकती है और जीवन में दुर्घटना हो, या तलाक अथवा वैधव्य की स्थिति किसी की हो भी जाती है तो अपनी शिक्षा, हुनर व कला के आधार पर अपना जीवन यापन अपने ही कौशल पर व्यतीत कर सकती है। अपने मातापिता, भाई अथवा सास-ससुर के ऊपर बोझ नहीं बनेगी। तलाक या वैधव्य की अवस्था में अपने आपको असहाय व अकेली अनुभव नहीं करेगी। अपने विवाह के प्रारंभिक वर्षों में अनबन व समरस न होने की अवस्था में आत्महत्या जैसी अवांछनीय मानसिकता का शिकार भी नहीं बनेगी।

मेरे विचार से एक लड़की का मुख्य कार्यक्षेत्र उसका घर ही होना चाहिए। अपने पति के घर को संभाले रखना, पति व परिवार की सुख-सुविधाओं का ख्याल रखना और अपने बच्चों की अच्छी परवरिश करना, उसका कार्यक्षेत्र होना चाहिए। आजकल बच्चों

को आया के भरोसे छोड़कर नौकरी पर चले जाने अथवा व्यापार पर चले जाने की प्रवृत्ति बनी है। छोटे बच्चों या वयस्क अवस्था में मां बाप का प्यार, खाने-पीने की उचित व्यवस्था व संभाल माता के निजी हाथों से ही हो सकती है। वयस्क अवस्था में जो समस्याएं उम्र के हिसाब से बच्चों में निर्माण होती हैं उनका समाधान भी मां बाप निजी तौर पर ही निकाल सकते है। इसलिए इस प्राथमिक जिम्मेदारी को निभाते हुए ही प्रत्येक स्त्री को आर्थिक दृष्टि से आत्म-निर्भर या संपूरक बनना चाहिए। ऐसे अनेक शिक्षाक्रम या कला आदि को सोचा जा सकता है, जो अपने घर में रहते हुए अर्थोपार्जन के साधन बन सकते है : जैसे कि सिलाई, छोटे बच्चों को पढ़ाना, नृत्य, संगीत, चित्रकला, टेक्सटाइल डिजाइनिंग, इन्टीरियर डेकोरेशन। जहां उपर्युक्त व इसी प्रकार के शिक्षाक्रम व कला की शिक्षा प्राप्त करना संभव नहीं हो वहां दूसरी शिक्षा प्राप्त करना भी गलत नहीं होगा, जिस शिक्षा के माध्यम से घर के बाहर जाकर भी आर्थिक स्वावलंबन अथवा आर्थिक सहयोग संभव हो। आने वाले जमाने में पति पत्नी के आपसी विचारों के न मिलने, अनबन या तलाक के प्रकरण बढ़ सकते हैं। ऐसी अवस्था में कोई भी लड़की अपना मनोबल न खोए और परिवार के सदस्यों पर ही आधारित नहीं हो, यह नितांत आवश्यक है।

अर्थोपार्जन की शिक्षा के अतिरिक्त यह शिक्षा भी लड़कियों के लिए आवश्यक है कि उसे पत्नी बनकर अपने पिता के घर से दूर अपने पति के साथ उसके परिवार वालों से समरस होकर रहना है। भारतीय संस्कृति के आधार पर और हमारे समाज के आज की मान्यता के अनुसार प्रत्येक लड़की के लिए विवाह होकर अपने पति के घर जाना अनिवार्य ही है। पुराने जमाने में इस उद्‌बोधन की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि उनका विवाह ८ से १२ वर्ष की उम्र अथवा २० वर्ष पूर्व १५/१६ वर्ष की उम्र तक हो जाता था। उस उम्र में लड़कियों को अपने विचारों को बदलने व ढालने और अपने पति के परिवार में समरस होने तथा उनके विचारों को स्वीकार करने में कठिनाई नहीं होती थी। अब समय बदल गया है, आज २० से २२ वर्ष की उम्र में लड़कियों का विवाह होने लगा है, तब तक वे बी.ए. या एम.ए. की शिक्षा प्राप्त कर लेती है। उनके विचार परिपक्व हो जाते है। पुराने जमाने में पति व पत्नी की उम्र में करीब ५ वर्ष का अंतर रहता था। पांच वर्ष के अंतर के कारण बुद्धि के विकास, अनुभव, योग्यता सभी में पति-पत्नी में अंतर रहता

था। इसलिए कुल मिलाकर पत्नी अपने पति व पति के परिवार के सदस्यों के विचारों को स्वीकार कर लेती थी और अपना लेती थी।

आज परिस्थिति बदल रही है। पति पत्नी को उम्र का फर्क अधिक से अधिक साल डेढ़ साल का होता है, कहीं-कहीं तो कुछ महीनों का ही होता है। पति-पत्नी दोनों ही समान शिक्षा प्राप्त होते हैं। २१ वर्ष की उम्र प्राप्त कर लेने से लड़की का मानसिक विकास और अनुभव लड़के के बराबर व कहीं-कहीं अधिक भी होता है। विवाह पूर्व अपने विचारों को परिपक्व कर लेने के कारण पति व ससुराल परिवार के विचारों को शीघ्र स्वीकार करना अक्सर नववधू के लिए सरल नहीं होता। हमउम्र व समान योग्यता के कारण पति भी अपनी पत्नी को अधिकार पूर्वक नहीं कह सकता। क्योंकि अभी भी हमारा समाज पुरुष प्रधान समाज है, इसलिए पति व पति के परिवार वालों के विचार नववधू को मानने पड़ते हैं। इसलिए मैं तो नववधू की ही जिम्मेदारी समझता हूँ कि वह अपने विचार विवाह के पूर्व फ्लेक्सिबल रखे। समाज की वर्तमान पुरुष प्रधान परिस्थिति एकाएक बदली नहीं जा सकती। विवाह के ५ वर्ष तक यदि लड़की अपने को ससुराल में समरस बनाने में सफल हो जाती है तो भविष्य के पति व पति के परिवार के विचारों को बदलने में उसे सरलता हो जाती है। लड़की के मातापिता का भी कर्तव्य है कि वे अपनी लड़की को इस प्रकार की शिक्षा दें व उसकी मानसिकता बनाते रहे ताकि वह पति परिवार में समरस हो सके एवं अपना वैवाहिक जीवन सुखी बना सके।

पुराने जमाने में बच्चों का लालन-पालन एक ढर्रे के अनुसार अनुभव पर आधारित बड़े बूढ़ों के संरक्षण व सलाह के अनुसार होता रहता था। आज प्रत्येक विषय के ऊपर शोध हुए है और विज्ञान के आधार पर नई जानकारियां भी उपलब्ध हुई है। यौन शिक्षा की आवश्यकता सारे संसार में मानी जाने लगी है। यौन शिक्षा प्राप्त न करने के कारण अनेक प्रकार की भ्रांतियों में लड़के व लड़कियां अपने जीवन को कष्टमय व चिंताग्रस्त बना लेते है। गलतियां भी करते हैं। गर्भाधान से लेकर बच्चों की परवरिश के सम्बन्ध में भी विज्ञान के आधार पर जानकारी लेनी आवश्यक व उपयोगी है। होने वाली मां का क्या कर्तव्य है और होने वाले पिता के क्या कर्तव्य है, एक दूसरे से किस प्रकार का सहयोग आवश्यक है, यह जानकारी भी शिक्षा से ही प्राप्त हो सकती है। खाना-पीना सिर्फ पेट भरने या मुंह के स्वाद को पूरा करना मात्र नहीं है। खाद्य विज्ञान में भी

अनुसंधान हुआ है। हमारे शरीर को स्वस्थ रखने के लिए और बच्चों का स्वास्थ्य अच्छा रहे, उनका संवर्धन अच्छी रीति से हो, इस हेतु न्यूट्रीशन विज्ञान की सेवाएं भी आज उपलब्ध है। प्रत्येक लड़की को न्यूट्रीशन की शिक्षा लेनी आवश्यक व उपयोगी होगी ताकि वह अपने परिवार के स्वास्थ्य का अच्छा ख्याल रख सके।

शरीर विज्ञान के विशेषज्ञों ने शोध किया है कि वयस्क अवस्था १४ से २५ वर्ष उम्र की होती है और इस अवस्था में शरीर व मन में अद्‌भुत परिवर्तन आते है, जो वयस्क अवस्था के पूर्व बच्चों की अवस्था से बहुत भिन्न होती है। पिछले २५ वर्षों में जनरेशन गैप व हिप्पी समुदाय के पनपने का मुख्य कारण यही था कि बच्चे जैसे ही वयस्क अवस्था को प्राप्त हुए और उनमें शारीरिक व मानसिक परिवर्तन हुए, उनको अभिभावक समझ नहीं सके, उन परिवर्तनों के फलस्वरूप वयस्कों के साथ किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए, वे नहीं जाने और इस कारण माता-पिता और वयस्कों के बीच दरार खड़ी हुई जिससे जनरेशन गैप हुआ और हिप्पी समुदाय पनपा। मां बाप का कहना नहीं मानना, अपने मित्र का कहना मानना वयस्क उम्र का स्वाभाविक गुण धर्म होता है। वयस्क लड़के का लड़की के प्रति और वयस्क लड़की का लड़के के प्रति आकर्षण भी इस उम्र में स्वाभाविक होता है। हमारे समाज में पिछले कुछ वर्षों से विवाह के पूर्व प्रेम सम्बन्धों की समस्या जागृत हुई है। इस समस्या का मुख्य कारण तो वयस्क अवस्था में उत्पन्न लड़की में लड़के के प्रति आकर्षण तो है ही, साथ ही हमारे वर्तमान परिवार संगठन में समस्याओं को आंकने व कर्तव्यों के प्रति आवश्यक ज्ञान न होने से यह समस्या बढ़ी है। बड़े शहरों में फ्लैट सिस्टम में परिवार रहते हैं। लिफ्ट या दादरों से आते जाते समय, स्कूल या कॉलेज में एक साथ पढ़ने के कारण अपनी ही बिल्डिंग में सांस्कृतिक व सामाजिक उत्सवों में एकत्र मिलने के कारण, लड़के-लड़कियों का आपस में मिलना जुलना और किसी लड़के लड़की के बीच निकटता का विशेष आकर्षण उत्पन्न होना स्वाभाविक है। कहीं-कहीं एक लड़की को पढ़ाने वाला शिक्षक भी इस आकर्षण का केन्द्र बन जाता है। लड़के या लड़की के मां-बाप का ही कर्तव्य है कि वे अपने बच्चों की वयस्क अवस्था प्राप्त होने पर उनकी विभिन्न गतिविधियों पर ध्यान दें। यौन शिक्षा की सहायता व सहयोग से अपने परिवार व समाज के आदर्शों को समझाते हुए अनावश्यक आकर्षण या अति आकर्षण से लड़के लड़कियों को सजग रखा जा

सकता है। विभिन्न सामूहिक उत्सवों में स्वच्छन्द छूट के बदले नियंत्रित छूट से इस समस्या से बचा जा सकता है। कोई भी आकर्षण एकाएक बड़ा नहीं होता। धीरे-धीरे ही बीज से वृक्ष का रूप होता है। यदि मां-बाप अपने लड़के व लड़कियों के दैनिक कार्यक्रमों के प्रति सजग रहें तो उन्हें अनावश्यक ऐसे आकर्षण का समय रहते ही पता पाना मुश्किल नहीं होता। अधिकतर देखा गया है कि लड़कियों के बारे में तो मातापिता बिल्कुल बेफिक्र होते हैं और जानने की कोशिश नहीं करते कि क्या उनकी लड़की किसी आकर्षण के चक्र में फंसी है या फंस रही है। यदि कोई उनका हितैषी उन्हें किसी आकर्षक के प्रति सजग रहने का प्रयास करता है तो वे हंसकर या टालकर भूल जाते है। कोई कोई माता-पिता सचेतक को ही प्रताड़ित करते हैं कि अनावश्यक अफवाह वे उनकी लड़की के बारे में उड़ा रहे हैं। लड़के के प्रति हमारी वर्तमान समाज रचना का भी हाथ है। वह यह है कि यदि कहीं लड़का गलती भी कर लेगा तो क्या नुकसान होगा? पारिवारिक सुख एवं लड़के के सुखद भविष्य के लिए आवश्यक है कि मां बाप अपने ऐसे विचारों के प्रति सावधान हों। वयस्क उम्र का लड़का या लड़की अपने भले या बुरे का गहरा चिंतन स्वयं नहीं कर सकता। आकर्षण में बह जाने के कारण क्या नुकसान हो सकता है, इसका उसे ज्ञान नहीं होता। यह ज्ञान तो मां बाप ही बच्चों को दे सकते हैं। हमारे समाज की वर्तमान रचना के परिवेश में लड़के लड़कियों के स्वच्छन्द प्रेम न हो, इस हेतु माता पिता को अधिक सजग रहने की आवश्यकता है। स्वच्छन्द प्रेम से उत्पन्न विभिन्न स्थितियों के कारण लड़की का जीवन अधिक कष्टमय हो सकता है, साथ ही मातापिता को भी अपमानित एवं चिंताग्रस्त होना पड़ सकता है।

आज के युग में यौन आकर्षण व दुष्परिणाम

कुछ समय से लड़के लड़कियों का आपस में मेल जोल बढ़ रहा है । खासतौर से शहरों में एवं कॉलेज जाने वाले लड़के-लड़कियों में मेलजोल बहुत ही बढ़ रहा है । कुछ स्थानों में जिसमें छोटे-मोटे शहर भी शामिल हैं, वहाँ सहशिक्षा होती है एवं लड़के लड़कियाँ १० से १२ वर्ष तक ३ वर्ष की उम्र से १६ वर्ष की उम्र तक साथ पढ़ा करते हैं ।

आज देश भर में वातावरण उत्तेजनात्मक बना हुआ है जिसमें अनेक बातें सहायक हो रही हैं, जैसे सहशिक्षा, चाहे वह स्कूल में हो अथवा कॉलेज में। चाहे वे एक ही सोसायटी की बिल्डिंग में रहते हो अथवा एक ही कॉलोनी में रहते हों। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी वे साथ-साथ भाग लेते हैं और २०/२१ वर्ष की उम्र तक अविवाहित एवं कॉलेज की शिक्षा प्राप्त करते हैं। टी.वी., पाश्चात्य संगीत व नृत्य , विज्ञापन जो कि टी.वी. व अखबारों में एवं मैगजीन में आते हैं। यौन साहित्य अधिक मात्रा में उपलब्ध है और लड़के- लड़कियाँ उनको गुपचुप पढ़ा करते हैं अथवा देखते हैं। बम्बई जैसे शहर में डांडिया नृत्य का आयोजन मेलजोल में बहुत अधिक सहायक हो रहा है। हमारी लड़कियां अपने मित्र लड़कियों को घर पर बुलाती है, इस प्रकार उन लड़कियों से हमारे लड़कों की जान पहचान बनती है । हमारे लड़के अपने मित्र लड़के के घर पर जाते हैं, वहां पर उनकी बहिनों से हमारे लड़कों की जान पहचान होती है आदि। अनेक कारण हमारे समाज में आज बन रहे हैं, जिनके कारण लड़के लड़कियों का मेलजोल बढ़ रहा है।

शारीरिक विज्ञान का यह तथ्य है कि १४ वर्ष की उम्र में लड़के लड़कियों में यौन आकर्षण जागृत हो जाता है। जब हम लोग गांव में रहते थे, चारों तरफ का वातावरण इतना आक्रामक नहीं था। तब हो सकता था कि यह यौन आकर्षण इतना आक्रामक नहीं होता था। परन्तु आज तो जो वातावरण प्रत्येक परिवार व घर के अंदर है और जो उपर्युक्त बातें बाहर की बताई गई हैं, उनसे लड़के लड़कियों में यौन आकर्षण आक्रामक रूप में १४ से २४ वर्ष की उम्र में पनपने लगा है। आज के मां-बाप अपने बच्चों को अत्यधिक प्यार करते हैं। वे अपने बच्चों पर अत्यधिक खर्च भी करते हैं । इस प्रकार आज के मां-बाप की मानसिक स्थिति अपने बच्चों की हर जायज- नाज़ायज इच्छाओं को पूरी करने की बनती जा रही है। सच पूछा जाय तो आज के मां-बाप का प्रेम मोह-आसक्ति वाला प्रेम होता जा रहा है। इस मोह व आसक्ति के कारण मां बाप अपने बच्चों

के हित-अहित का ज्ञान भी नहीं रख पा रहे हैं एवं वे बच्चों को छूट उन बातों की उस हद तक देने लगे हैं, जो कि समय पाकर दोषपूर्ण हो जाते हैं। यह भी प्रायः देखा गया है कि आज के जमाने के मां-बाप तर्क में तेज होते हैं। आधुनिकता के नाम पर अपने मोह के कारण गलत छूट देने की बात को ठीक मानते हैं; उनका पक्ष लेते हैं एवं जो उनको ठीक नहीं मानते, उन मां-बाप को वे पुरातनवादी मानते हैं।

मैं लड़के व लड़कियों को उच्च शिक्षा एवं सांस्कृतिक और स्वास्थ्य सम्बंधी प्रगति हेतु अधिक से अधिक शिक्षा व प्रशिक्षा के पक्ष में हूँ, परन्तु मेरी व्यक्तिगत मान्यता यह है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में ५ सदाचार के नियम रहने चाहिए एवं अपने परिवार में उन ५ सदाचारों को महत्व देते हुए अपने परिवार के बच्चों में पांचों सदाचारों के आधार पर वातावरण रखना चाहिए। ये पांच सदाचार हैं :- १-झूठ न बोलना, २- चोरी न करना, ३- नशीले द्रव्यों का सेवन न करना, ४ - हिंसा न करना, एवं ५- व्यभिचार न करना।

ये सभी सदाचार एक दूसरों पर आधारित हैं। एक दूसरों की मदद करने वाले हैं। साथ ही एक के टूटने से अन्य सदाचारों के भी टूटने की शंका हो जाती है ।

हम राजस्थानी समाज के व्यक्ति हैं। हमारे समाज का एक विशिष्ट स्थान है। उसमें हमारे परिवार का भी एक विशिष्ट स्थान है, जिनकी मान्यता है कि -

१ - हम मांसाहारी नहीं हैं, २- हम शराब आदि नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करते, ३ - हमारे परिवार के पुरुष व महिलाओं में परपुरूष अथवा परस्त्री के साथ गलत सम्बंध नहीं हैं। ४ - अहिंसा का पालन तो हम लोग करते ही हैं। यदि आज के जमाने में मक्खी-मच्छर आदि की बातें एक बार न भी करें तो मोटे तौर पर हम लोग हिंसा को भी खराब व पाप मानते हैं। ५- झूठ के बारे में कुछ परिवर्तन व्यापारी समाज में जरूर आया है। फिर भी मोटे तौर पर देखा जाय तो झूठ को आज सभी व्यक्ति खराब गिनते हैं, गलत गिनते हैं एवं झूठ को यदि व्यापक रूप में देखें तो किसी को गलत तौलना, कम नापना अथवा मिलावट करना अथवा किसी को धोखा देना या किसी की कोई चीज अथवा रूपया हड़प लेना- ये सभी बातें झूठ के ही विभिन्न प्रकार के स्वरूप हैं , जिन्हें मोटे तौर पर हमारा समाज व परिवार ठीक नहीं मानता । इनकम टैक्स सम्बंधी अथवा सरकारी अन्य सम्बंधी बातों को एक बार हम अलग कर दें क्योंकि मानवीय नियमों में टैक्स की बात नहीं थी। मैं सदाचार में मानवीय नियमों के आधार पर ही

महत्व दे रहा हूँ।

बच्चों की दृष्टि से पांचों सदाचार महत्वपूर्ण हैं। बच्चों को सदाचार की बात कहने का हक तभी माता-पिता को हो सकता है, जबकि वे स्वयं सदाचार का पालन करें । यह भी स्पष्ट है कि यदि मातापिता अपने जीवन में सदाचार का पालन नहीं करते एवं वे बच्चों को सदाचार की बात कहते भी हैं, तो उसका असर बच्चों पर नहीं होता एवं बच्चे सदाचार के नियमों को तोड़ने में लग जाते हैं । इसलिए यह आवश्यक व उपयोगी है कि अपने परिवार के लंबे भविष्य के लिए अपने बच्चों में संस्कार अच्छे आयें - इसके लिए मां-बाप उपर्युक्त ५ सदाचारों को अपने जीवन में लायें एवं इन्हें उचित महत्व दें ।

आज के पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव वाले वातावरण में इन ३ बातों की रक्षा आज के मातापिता के लिए बहुत ही आवश्यक हो गई है। जैसे कि आज लड़के लड़कियां मांसाहारी बनते जा रहे हैं, उनमें मादक पदार्थों के सेवन की रुचि होती जा रही है, साथ ही आपसी मेलजोल में व्यभिचार के रास्ते बच्चे पड़ ही जाते हैं । विदेशों में लड़के लड़कियों के बीच यौन सम्बंध व्यापक रूप में होने लगे हैं। फलस्वरूप विवाह पश्चात् भी बड़े प्रमाण में स्त्री पुरुष, परपुरुष या परस्त्री के साथ सम्बन्ध रखने लगे हैं। अमेरिका में ३७ प्रतिशत पुरुषों एवं २९% स्त्रियों के विवाहेतर 'यौन' सम्बन्ध हैं। भारतवर्ष भी अब पाश्चात्य सभ्यता का शिकार होता जा रहा है। भारतवर्ष में भी लड़के लड़कियों में मांसाहार व शराब के प्रचलन के साथ यौन सम्बंध होने लगे हैं । इन सबके आंकड़े मैंने लड़के लड़कियों को एक अलग प्रपत्र में बताया है। यदि और अधिक आंकड़े जानने के आप लोग उत्सुक हैं तो मेरे पास से वे उपलब्ध होंगे ।

भारतवर्ष में भी लड़के -लड़कियों में मेल-जोल के कारण वातावरण खराब होता जा रहा है - इस सम्बंध में भी अनेक लेख सामग्री मेरे पास उपलब्ध हैं। जिन्हें जितनी रुचि हो - उन्हें मैं उतनी सामग्री पढ़ने के लिए दे सकता हूँ। इस पत्र का तात्पर्य यह है कि बच्चों को गलत रास्ते जाने से उन्हें रोकने का आज ही समय है। हम और हमारे बच्चे एक ऐसे चौराहे पर खड़े हैं जहाँ से एक तो पाश्चात्य सभ्यता का रास्ता है- जिस रास्ते पड़कर हमारे लड़के लड़कियां भी पाश्चात्य लड़के लड़कियों की तरह मांसाहारी, शराब पीने वाले एवं यौन सम्बंध रखने वाले बन सकते हैं ,बल्कि मेरे विचारों से वे ऐसा बनेंगे ही। यदि हम ऐसा निश्चय करें और ऐसे कदम उठाएं तो ही हम हमारे बच्चों को इन तीनों

ही दोषों से बचा सकते हैं।

मेरा यह भी मानना है कि यदि हमने हमारे बच्चों को इस १४ से २४ उम्र में मांसाहारी व शराब पीने वाला, एवं व्यभिचार- रहित बना लिया तो ये बच्चे जब बड़े होंगे तब ये अपने बच्चों को भी इसी प्रकार बचाने में सक्षम होंगे अन्यथा ये तीनों अवगुण जो कि अन्योन्याश्रित हैं- हमारे बच्चों में आयेंगे और आने वालो पीढ़ियों में ये अवगुण होंगे एवं हमारा परिवार पाश्चात्य देशों की संस्कृति वाला होगा। इस प्रकार हमारे देश, हमारे समाज एवं हमारे परिवार में लोगों के साथ ही समाप्त हो जाएगी।

हमारे बच्चे आज मांग कर रहे हैं कि लड़के लड़कियों को आपस में मिलने जुलने की छूट देनी चाहिए। उनकी आवश्यकता व उपयोगिता के बारे में भी उनके अपने तर्क हैं। मैंने उन सभी तर्कों व आवश्यकताओं के बारे में समझाने का प्रयास किया है कि किस प्रकार यह गलत है एवं किस प्रकार इस छूट को देने से वक्त पर लड़के लड़कियां एक दूसरे के प्रेम के शिकार एवं यौन सम्बन्ध रखने वाले बन जाएंगे। मैंने समझाने का प्रपत्र में प्रयास किया है। मेरी एक मान्यता और है कि जो लड़के लड़कियां विवाह पूर्व आपस में मेलजोल, प्रेम सम्बंध एवं यौन सम्बंध रखते हैं, उनके वैवाहिक जीवन में भी परस्त्री या पर-पुरुष के साथ सम्बंध रखने में कोई हिचक नहीं होगी । जैसा कि ऊपर बताया गया है कि विदेशों में हो रहा है, उसी प्रकार भारत में भी विवाह के पश्चात् परस्त्री व परपुरुष का सम्बंध व्यापक रूप में हो जाएगा । कुछ प्रमाण में एक सर्वेक्षण के अनुसार यह प्रारम्भ हो गया है । लड़के लड़कियों का आपस में न मिलना एक ब्रेक है, एक लक्ष्मण रेखा है, जिस कारण से वे विवाह पूर्व के जीवन में एवं विवाह पश्चात् के जीवन में भी व्यभिचार से बचे रहेंगे ।

मेरे विचारों से यह भी स्पष्ट है कि यदि लड़के लड़कियां इस उम्र में आपस में मिलने की छूट ले लेते हैं एवं मां बाप यह छूट दे देते हैं तो स्वाभाविक तौर पर जो होना है वह होकर रहेगा, फिर परिणामों के बारे में भी हमें समझ लेना चाहिए कि वे अवश्यंभावी हैं, जो होकर रहेंगे। यदि हमारे आज के पौध के बिगड़ने का प्रमाण १० से २५ प्रतिशत ही हो तो यह भी हमें समझ लेना होगा कि अन्य परिवारों में एवं साथ ही आने वाले १०/२० वर्षों में यह प्रमाण हमारे ही परिवार में पल रहे छोटे बच्चों में २५ मे ५० प्रतिशत (प्रमाण) होगा ।

हमारे माहेश्वरी समाज में पिछले कुछ समय में लड़के लड़कियों के आपसी मेलजोल के कारण जो घटनाएं हुई हैं, उनकी जानकारी देना भी ठीक होगा । सभी को जानकारी होगी ही कि हमारे सम्बंधी की लड़की को एक शिक्षक पढ़ाने आता था। उस लड़की का उस शिक्षक के साथ प्यार हो गया एवं उस लड़की ने उस शिक्षक के साथ विवाह कर लिया । यह प्यार स्कूल जाने वाली उम्र में ही हुआ था ।

३/४ वर्ष पूर्व गोरेगांव में तीन मिडिल क्लास फेमिली में हमारे समाज की ३ लड़कियों ने लव-मैरेज करके - एक मुसलमान परिवार में, एक गुजराती परिवार में एवं एक मराठी परिवार में गई हैं । एक लड़की ने १६ वर्ष की उम्र में ही प्यार करना आरंभ कर दिया एवं १८ वर्ष एवं कुछ महीनों के पश्चात उसने घर से भाग कर विवाह कर लिया ।

मेरे एक सामाजिक मित्र की लड़की का अभी अभी सम्बंध तय हुआ है, वह लड़का गुजराती परिवार का है, जो उसके पड़ोस में रहता था। मेरे एक दूसरे सामाजिक मित्र की लड़की मुसलमान परिवार के लड़के के साथ विवाह करना चाहती है । माँ बाप इस बात की स्वीकार करने की स्थिति में नहीं हैं एवं यह मामला काफी टेन्शन का चल रहा है । वह लड़की कहती है कि मुझे कभी भी विवाह न करना मंजूर है परंतु इस लड़के को छोड़कर अन्य किसी लड़के से मुझे विवाह करना नहीं है। इसके पूर्व हमारे सम्बंधी परिवार में एक प्रेमविवाह हो चुका है एवं एक प्रेमविवाह को मंजूरी नहीं दी गई एवं समझाबुझा कर उस लड़के का विवाह दूसरी जगह कर दिया तो बाद में उस लड़के ने आत्महत्या कर ली थी ।

हमारी ही जान पहचान के एक परिवार के लड़के की कॉलेज के समय में अनेक लड़कियों से जान पहचान थी । इस लड़के का एक जगह सम्बंध निश्चित हुआ। लड़की व लड़की के परिवार को जब इसकी जानकारी हुई कि लड़के का अनेक लड़कियों से मेलजोल है तो उन्होंने सम्बंध तोड़ दिया एवं यह बात इस लड़के के सम्बंध होने में अभी भी बाधा दे रही है ।

एक-दो वर्ष पूर्व ही हमारे एक सम्बंधी के घर में उसी मकान में रहने वाले एक लड़के का टेलीफोन करने हेतु आना जाना होता था, इसलिए इस लड़के एवं उनकी लड़की के बीच मेलजोल बढ़कर प्यार हो गया एवं उसका विवाह भी करना पड़ा।

हमारे एक मित्र का लड़का उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका गया। वहाँ पर उसका प्यार एक गुजराती लड़की से हो गया एवं मातापिता को उसका विवाह भी इतर समाज में करना पड़ा ।

इसलिए माता-पिता को ही निश्चय करना हैं कि हम क्या करें। क्या अपने देश, समाज एवं परिवार की संस्कृति को बचाने के लिए लड़के लड़कियों को आपसी मेल-जोल रखने से रोकें एवं उनके प्रेम सम्बंध व साथ ही यौन सम्बंध होने से बचाएं अथवा उनको छूट दें, चाहे खुले रूप में अथवा कई तरह के बंधन लगाकर। भविष्य में हम लाचारी से यह देखेंगे कि बंधन तो टूट गये एवं जो स्वाभाविक रूप से होना था वह हुआ । यदि बच्चों के माता पिता की मानसिकता मेलजोल को रोकने की नहीं है, उसमें गलियां, रास्ते व नियम बताने की मानसिकता है तो समझ लेना चाहिए फि हम भुलावे में हैं। हमने रास्ता तो निकाल दिया परंतु स्वछन्दता का ही रास्ता है, यह मेलजोल उसी अंतिम स्टेशन पर पहुंचेगा जिसे हम प्रेमविवाह अथवा यौन-सम्बंध का स्टेशन कहते हैं। किस समय एवं कौनसी परिस्थिति में नियम टूटेंगे इसकी मीमांसा करना फालतू होगा । जब हम लड़के -लड़कियों को मेलजोल करने की उम्र में नहीं रोक सकते तो आज से २/५ वर्ष के आगे की उम्र में उन्हें रोकने की ताकत हम कहां से लाएंगे। यह तो निश्चित ही समझना चाहिए कि लड़के लड़कियों की हिम्मत आजकी उम्र से २/४ वर्षों में अधिक होगी । इसलिए माता-पिता शांति से परंतु गंभीरता से चिन्तन मनन करें कि वे इस बारे में क्या करना चाहते हैं।

आज का युग स्वतन्त्रता का युग है । प्रत्येक परिवार व प्रत्येक व्यक्ति अपने विचारों में स्वतंत्र है, बल्कि परिवार में भी प्रत्येक सदस्य-यहां तक कि पति-पत्नी, पिता-पुत्र भी अपने विचारों में स्वतन्त्र हैं साथा ही अपने विचारों के अनुसार उन्हें कार्य करने की छूट है ही ।

इसलिए सामूहिक निर्णय की संभावना नहीं देखते हुए मेरा प्रत्येक मातापिता को निवेदन है कि वे अपने बच्चों के हित में स्वतंत्र निर्णय लें कि उन्हें ऐसी छूट बच्चों को देनी है या नहीं। चाहे उनका पड़ोसी या सगा भाई भी छूट देता हो; क्योंकि आज के इस स्वतन्त्रता के माहौल में यही संभव हो सकता है।

कुछ समय पूर्व मैंने एक फिल्म सिनेमा देखा था, जिसका नाम था `Blue Lagoon'। इस फिल्म की कहानी में २ छोटे बच्चे - एक लड़का, एक लड़की - जहाज

की टक्कर के कारण एक निर्जन द्वीप में रहने लगते हैं, वहीं छोटे से बड़े होते हैं। ये अर्धनग्न ही रहते थे क्योंकि उनके पास कोई कपड़ा होने का कारण नहीं था। १८/२० वर्ष की उम्र पहुंचने पर भी यौन आकर्षण उनमे प्रारंभ नहीं हुआ था, परंतु एक घटना हुई - किसी रात को जानवर आया अथवा आंधी-तूफान आया। लड़की डरी एवं लड़के से लिपट गई और तब उन दोनों में यौन आकर्षण प्रारंभ हो गया। लिखने का अर्थ यह है कि जब तक वातावरण मदद नहीं करता तब तक यौन आकर्षण असहनीय एवं गलत दिशा में ले जाने का नहीं बनता । मैं यह कदापि नहीं कहना चाहता कि यौन आकर्षण होता ही नहीं, पनपता ही नहीं, एवं बढ़ता ही नहीं। प्रत्येक जीव की उत्पत्ति यौन क्रिया से होती है, इसलिए यौन आकर्षण अथवा यौन क्रिया की इच्छा जन्मजात प्रत्येक जीव को होती है । अब प्रश्न यह है कि उन इच्छाओं को परिवार व समाज के नियमों तथा आदर्शों की रक्षा करते हुए कैसे रोका व संभाला जाय। पशु पक्षियों एवं कीट पतंगीं में भी यौन आकर्षण एवं यौन क्रियाओं की प्रेरणा होती है । प्रकृति ने उनको मनुष्य की तरह अक्ल नहीं दी है, परंतु सुरक्षा के लिए प्रकृति ने उनके जीवन में नियमों को भर दिया है , जिन नियमों के अनुसार वे स्वाभाविक तौर पर कार्य करते रहते हैं। बिना उचित उम्र में उनका यौन आकर्षण जागृत नहीं होता, उनको गलत वातावरण मिलता नहीं, उनका गलत खानपान भी होता नहीं, साथ ही सामाजिक नियम व पारिवारिक नियम उनके होते नहीं। उनके लिए कोई भी कीड़ा, कोई भी जंतु, कोई भी पशु पक्षी नर-मादा आपसी यौन आकर्षण में हो जाते हैं और क्रिया कर लेते हैं ।

मनुष्य को क्या खाना चाहिए, इसके बारे में विज्ञान है, वैज्ञानिक शोध है, परंतु दुर्भाग्य से विज्ञापनों व स्वाद आदि के चक्कर में मनुष्य अपना विवेक छोड़ कर गलत खानपान करता है । इतना ही नहीं यदि उसे डॉक्टर समझाए तो भी अपने गलत खाने-पीने की आदत को नहीं छोड़ता । इस उदाहरण से मैं स्पष्ट करना चाहता हूँ कि आकर्षण कैसे गलत ढंग से बढ़ता है एवं उसे क्यों लगाम देने की आवश्यकता होती है ।

मेरा विचार है कि आज के समय में जो आकर्षण लड़कों में लड़कियों के प्रति एवं लड़कियों में लड़कों के प्रति हो रहा है - उनके कारण निम्नानुसार हैं :-

१. हम लोग शहरों में रहने लगे हैं व शहरों में सभी जाति के लोग रहते हैं-जिनका व्यक्तिगत जीवन अलग-अलग विचार-धाराओं का होता है। देशी विदेशी,

क्रिश्चियन पारसी सभी संस्कृतियों के लोग शहरों में रहते हैं ।

२. शहरों में दैनिक जीवन में मां बाप ,काका-काकी एवं विवाहित भाई-भाभी उतना संयम नहीं रखते जितना संयम परिवार के वरिष्ठ सदस्यों को रखना चाहिए, जिनको बच्चे लोग उदाहरण स्वरुप अपने जीवम में प्रेरणा लें ।

३. स्कूल व कॉलेज में सहशिक्षा होती है एवं आज स्कूल व कॉलेज का वातावरण स्वच्छन्द हो गया है। लड़के व लड़कियां अपने को आकर्षक बनाने, आपसी मेलजोल बढ़ाने व शिक्षा का स्तर गिरने के कारण कॉलेज की क्लासेज अटेन्ड नहीं करना, आपस में गपशप करना आदि आकर्षण को बढ़ाने में मदद करते हैं ।

४. टीवी, सिनेमा, किताबें, मेगजिन, अंग्रेजी सिनेमा एण्ड रॉक म्यूजिक व नृत्य आदि का प्रभाव यौन आकर्षण बढ़ाने वाला हो गया है। व्यापारियों की विज्ञापन नीति भी इस आकर्षण को बढ़ाने में लगी हुई है ।

५. हमारा खानपान सात्विक नहीं होकर तामसी व राजसी हो गया है। तला हुआ, मांसाहार , शराब, बीयर आदि सभी का प्रभाव हमारे शरीर एवं हमारे विचारों पर पड़ता है,जो हमारे मन व शरीर में उत्पन्न होने वाले यौन आकर्षण को उत्तेजना देता है।

६. गरबा व डांडिया नृत्य में लड़के लड़कियाँ सम्मिलित रूप से नृत्य करते हैं। नृत्य के समय लड़कियों का आकर्षण और बढ़ता है एवं जब लड़का लड़की के साथ नृत्य करता है तो वह आकर्षण एक दूसरे तक पहुंचता है और लड़की के आकर्षण को और भी बढ़ावा देता है।

७. लड़कियों की उम्र १९ ते २० वर्ष की विवाह के पूर्व हो जाती है, क्योंकि उन्हें उच्च शिक्षा प्राप्त करनी है, उसी प्रकार लड़कों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने से २५ वर्ष तक की उम्र हो जाती है। स्वाभाविक यौन आकर्षण के साथ उपर्युक्त बातें वातावरण में उत्तेजना बढ़ाती हैं जिस कारण लड़के व लड़कियां आकर्षण के वेग को रोक नहीं पाते एवं उस वेग में बहने लगते हैं और उस आकर्षण को इस प्रकार और अधिक उत्तेजना मिलती है ।

८. आपस में बातचीत करना, खासतौर से वन- टु- वन बात करना, फोन पर लंबी व

प्रायः बात करना भी इस आकर्षण को बढ़ाता है।

९. हाथ मिलाना, हाथ मिलाकर रहना व लंबे समय तक साथ साथ घूमना भी आकर्षण को बढ़ाते हैं ।

१०. पेटिंग, नेकिंग, चुम्बन, आलिंगन आदि क्रियाओं के शिकार भी आधुनिक लड़के लड़कियां होते जा रहे हैं। जिस धारा में हम चल रहे हैं, उस धारा पर ये स्टेशन आने वाले ही हैं। इन सब से यौन आकर्षण पूरा बढ़ जाता है, जिसकी परिणति लड़के लडकियों के बीच यौन सम्बंध, विवाह पूर्व संतान, आपसी प्रेम, इसलिए प्रेमविवाह आदि की घटनाएं होने लगी हैं ।

२. यह आज के इस उम्र का सामाजिक स्तर बन गया है :

सामाजिक स्तर का अर्थ होता है कि यह बात समाज में स्वीकार्य है एवं इस मुताबिक काम समाज में हो रहा है एवं अधिकांश लोग कर रहे हैं। लड़के लड़कियों के मेलजोल की बात वास्तव में अभी तक तो भारतवर्ष में स्वीकार्य नहीं हुई है । सभी माता पिता लड़के लड़कियों के दुराग्रह व जोरजबरदस्ती के कारण लाचार हैं । इस लाचारी में मां बाप का लड़के लड़कियों के प्रति मोह है जो उनके द्वारा उचित शिक्षा व मार्गदर्शन के आवश्यक कड़े कदम उठाने की हिम्मत नहीं देता। फलस्वरूप मातापिता चिंतित व दुखी होते हैं । आपस में व अपने ही सर्किल में चर्चा करते हैं । जहाँ तक लड़के लड़कियों की आपसी सोशियल सर्कल की बात की जाय तो वह कहां है ? उसका क्या स्टेटस है ? यदि एक लड़का किसी लड़की के आकर्षण में आ जाता है जिसे हम साधारण भाषा में आपसी प्रेम कहते हैं तो उसके बारे में कानाफूसी होती है- यही चर्चा होती है कि आजकल इस लड़के और उस लड़की का चक्कर चल रहा है। दूसरे लड़के व लड़कियाँ उन दोनों को इंगित करके बोलने लगते हैं। समाज में भी जब ये बातें आती हैं तो उसे एक अच्छी नजर से नहीं देखा जाता।

३. लड़कियों के साथ जान पहचान व मेल जोल - उनके सोशियल होने का मापदण्ड है।

सोशियल होने का मापदण्ड किस सर्कल में है, यह समझने की आवश्यकता है। यदि अपने ही उम्र की लड़कियों - लडकों में है तो उनका कोई मूल्य नहीं है । जहां

तक समाज की बात की जाय, समाज उसको गलत समझता है ।

अभी ताजा घटना है कि एक लड़का अपने कॉलिज जीवन में अनेक लड़कियों के साथ जान पहचान व मेलजोल रखता था । उस लड़के की सगाई हुई तब उसने अपनी होने वाली पत्नी को अपने सोशियल होने के प्रमाण में कई लड़कियों से जानपहचान व मेलजोल की बात बताई। लड़की ने अपने मां बाप को यह बात बताई एवं मां बाप ने वह रिश्ता तोड़ दिया। उस रिश्ते को तोड़ने के बाद अब तक डेढ़ दो साल बाद भी उस लड़के का सम्बंध नहीं हो रहा है। जहां कहीं भी बात चलती है, यह खबर पीछा नहीं छोड़ती कि लड़के का कॉलेज जीवन में अनेक लड़कियों के साथ मेलजोल था । इस सम्बंध में यह भी समझ लेना चाहिए कि अनेक लड़कियों के साथ मेलजोल करते समय किसी दिन किसी लड़के का एक लड़की के साथ प्रेम का चक्कर होने वाला ही है। मेलजोल का प्रेम में परिणत होना स्वाभाविक व अगली स्टेशन है जिसे न लड़का रोक सकता है, न लड़की रोक सकती है एवं न समाज रोक सकता है। जो स्वाभाविक होता है वह होकर रहता है। यदि १०/२०/३ ० या ४ ० प्रतिशत में आज के दिन कुछ लड़के लड़कियों में प्रेम न हो तो ६० प्रतिशत में बिगाड़ भी बहुत होता है एवं यही ६० प्रतिशत आने वाले ५/१० वर्षों में ८० प्रतिशत हो जाएगा ।

आज विदेशों की स्थिति यही है कि वहां पर १८ वर्ष की उम्र की वर्षगांठ की तरह प्रथम डेटिंग की तारीख को महत्वपूर्ण मानते हैं। इस डेटिंग में उसे वहां के मातापिता भी सहयोग देते हैं। ५० प्रतिशत लड़कियाँ एवं ८० प्रतिशत लड़के विवाह के पूर्व यौन सम्बंध करने लगते हैं।

अमेरिका में निरोध के साधन काम में लेनेवाले कॉलेज के लड़के लड़कियां भी हैं एवं उन्हें स्कूल वाले मुफ्त में कंडोम देते हैं क्योंकि ७५ प्रतिशत लड़के लड़कियां यौन सम्बंध करते हैं। भारतवर्ष में भी रायपुर युनिवर्सिटी के एक विभाग ने सर्वेक्षण किया है एवं पता लगाया है कि भारत में भी लड़के लड़कियों का आपसी यौन सम्बन्ध व आकर्षण कुछ में आरंभ हो गया हैं। १८ प्रतिशत यौन सम्बन्ध करते हैं एवं ३२% लड़कियां लड़कों की गर्लफ्रेण्ड है। हमारे सामाजिक संगठनों में विवाह पूर्व यौनसम्बन्ध व उनके कारण सम्बंध टूटने या सम्बंध न होने की

घटनाएं नजर में आने लग गई हैं। एक लड़की का विवाह बम्बई में रिसेप्शन के ३ घण्टे पहले कैंसिल हो गया क्योंकि लड़के वालों को किसी अज्ञात व्यक्ति का फोन व पत्र आया कि उसका सम्बंध उस लड़की के साथ पहले हो चुका है ।

आज के जमाने में लड़के लड़कियों को अपने घर की कार उपलब्ध हो जाती है। कार तो घर जैसी ही है। कार में क्या नहीं हो सकता एवं क्या नहीं होता। हम नित्य टॅक्सी में होने वाले दृश्यों से अवगत ही हैं। इस प्रकार की घटनाएं लड़के लड़कियों के बीच में भी होने की पूरी संभावना है।

४ **जब लड़कियों के साथ घूमते हैं तो लड़कों के मन में बड़े (Superior) होने की भावना जागृत होती है ।**

इस भावना का कोई अर्थ नहीं है, यह भावना खोखली है। जीवन का अनुभव यह कहता है कि विवाह होने के बाद आधुनिक लड़कियां लड़कों पर शासन करती हैं। लड़कियां लड़कों से अधिक संख्या में ज्यादा होशियार देखी जा रही हैं। लड़कियों के मार्क्स परीक्षा में लडकों की अपेक्षा अधिक आ रहे हैं, इसका कारण यह है कि वर्तमान में लड़कियां बाहरी आकर्षण में कम हैं, लड़के अधिक हैं। लड़के अपना समय व शक्ति शिक्षा के अलावा अधिक बिगाड़ रहे हैं। लड़कियां इतना समय नहीं बिगाड़ती। लड़कियों की उम्र विवाह के समय, लड़कों से एक डेढ़ वर्ष ही कम होती है । लड़कियां लड़कों से ३ ते ५ वर्ष पहले परिपक्व होती हैं। इस प्रकार विवाह के बाद लड़कियां लड़कों पर शासन करती हुई देखी जा रही है। यदि लड़के अपने आपको बड़े समझने की मानसिकता में हों तो यह उनकी भूल है, ऐसा उन्हें समझ लेना चाहिए ।

५ **बच्चों के भावी जीवन के बारे में मातापिता चिन्तित हैं।**

मातापिता को यह दिखााई दे रहा है कि यौन आकर्षण के चक्कर में लड़के लड़कियां अपनी शिक्षा को कम महत्व देते हैं। कुछ लड़के बिल्कुल महत्व नहीं दे रहे हैं और यह शंका भी है कि जो लड़के आज महत्व दे रहे हैं उनका भी लड़कियों के साथ आकर्षण बढ़ेगा तो बढ़े हुए आकर्षण के साथ उनका ध्यान पढ़ाई में और कम हो जाएगा ।

६ आज पूरा संसार एक बड़ी स्पर्धा में बढ़ रहा है। भारत की जनसंख्या बहुत अधिक

है पर सुविधाएं कम हैं। यदि किसी अच्छे स्कूल में ऐडमिशन लेना है तो बहुत अच्छे मार्क्स होंगे अथवा बहुत बड़ा अनुदान होगा तभी अच्छे स्कूल में उन्हें एडमिशन मिलेगा। उसी प्रकार जब बहुत अच्छे मार्क्स होंगे अथवा बहुत बड़ा अनुदान होगा तब कालिज में एडमिशन मिलेगा। परंतु अब इस बहुत अधिक मार्क्स की भी लिमिट नहीं रही है। इतनी बड़ी जनसंख्या में अनेक लड़के लड़कियाँ अच्छे मार्क्स ला रहे हैं। इसलिए रुपयों के आधार पर एडमिशन लेने की बात ही शेष रह जाती है।

७ यह कौन से लड़के व लड़कियों के इज्जत की बात है कि उनको जीवन की सभी सुविधाएं मातापिता दे रहे हैं, उनको अच्छी शिक्षा के लिए अच्छे स्कूल, एक्स्ट्रा कोचिंग का भी प्रबंध हो रहा है फिर भी वे लड़के व लड़कियां बहुत ऊँचे मार्क्स नहीं ला रहे हैं । खासतौर से दुख तब होता है जब लड़के लड़कियां अपना समय, अपनी शक्ति, शिक्षा के अलावा मौज मस्ती, घूमने फिरने में ही अधिक लगाते हैं। क्या इस मौज मस्ती के लिए मातापिता अपना समय, अपनी शक्ति व अपना पैसा खर्च कर रहे हैं? इस मौज मस्ती का अंतिम लक्ष्य क्या है? क्या बिना अच्छे नम्बरों से पास किया हुआ लड़का होशियार होगा, समझदार होगा? क्या वह व्यापार व उद्योग को सम्भाल सकेगा? बच्चों को समझने की आवश्यकता है कि व्यापार व उद्योग में भी बड़ी स्पर्धा चल रही है। उद्योग अधिकांश तकनीकी बनते जा रहे हैं। उद्योग में बहुत अधिक पढ़े लिखे व होशियार मैनेजर होते हैं। उन पढ़े लिखे व अच्छे होशियार मैनेजर को मार्गदर्शन देने की क्षमता, उनसे अधिक जानने की योग्यता यदि लड़कों में नहीं होगी तो वे उन मैनेजरों के उपर मैनेजिंग डाइरेक्टर नहीं बन सकेंगे। यदि ऐसे लड़के किसी कारण मैनेजिंग डाईरेक्टर बन भी गये तो ये होशियार मैनेजर उनकी इज्जत नहीं करेंगे। धीरे धीरे उन मैनेजरों को घुटन महसूस होने लगेगी और हो सकता है कि वे कंपनी छोड़कर किसी दूसरे अच्छे प्रतिष्ठान में चले जाएंगे । इसका एक बड़ा नुकसान यह होगा कि होशियार मैनेजर के जाने से कंपनी में कमजोरी आयेगी और कंपनी धीरे धीरे और कमजोर होकर नुकसान करेगी अथवा कम मुनाफा करेगी और कम प्रगति करेगी । और यह भी संभावना है कि जो लड़का योग्य नहीं होगा उसे बड़ी

पोस्ट नहीं दी जा सकेगी । उसी लड़के को बड़ी पोस्ट दी जाएगी जो योग्य होगा। यदि कोई भी लड़का योग्य नहीं होगा तो उसके लिए दूसरा इंतजाम करना होगा व उन लड़कों के लिए उनकी योग्यता के अनुसार छोटा मोटा काम दिया जाएगा जिसका अर्थ यह है कि ये लड़के अपनी साधारण होशियारी से साधारण कामकाज करेंगे ।

८ व्यापार के दृष्टिकोण के अतिरिक्त माँ बाप को इस बात की भी चिंता है कि मेल जोल से प्रारंभ करके लड़के लड़कियां प्रेम के चक्कर में पड़ेंगे। फिर प्रेम विवाह का आग्रह करेंगे। इस बीच यौन सम्बन्ध व अन्य क्रियाओं के भी लड़के शिकार होंगे एवं ये सभी बातें लड़के लड़कियों के भविष्य के जीवन में बाधक होंगी; यहाँ तक कि उनके विवाह सम्बंध में भी बाधाएं आयेंगी। मेरा ऐसा भी मानना है कि जो लड़के लड़कियां विवाह के पूर्व लड़के लड़कियों से मेलजोल रखते हैं एवं थोड़ा बहुत प्रेम होता है, ये सभी घटनाएं विवाह के बाद उनके जीवन में विष घोलने का काम कर सकती हैं। विवाह के बाद भी उन लड़के लड़कियों के मेलजोल कायम रह सकते हैं। उस मेलजोल को इन लड़के लड़कियों के पति व पत्नी उन्हें शंका से देखने लगेंगे और उनका वैवाहिक जीवन इस प्रकार शंकाओं के चक्कर में गिर जाएगा। यदि इन लड़के या लड़कियों के होने वाले पति या पत्नी इसी प्रकार पुराने प्रेम सम्बंध में से गुजरे हों तब तो पूरा का पूरा परिवार निरंतर शंकाओं में ही रहेगा । सिनेमा में देखा गया होगा कि शंका वाले पति व पत्नी किस प्रकार अपने पति या पत्नी का छुप कर पता लगाने की कोशिश करते हैं । घर पर फोन करके या ऑफिस में फोन करके पता लगाते हैं कि क्या उसके पति या पत्नी घर पर ही हैं या ऑफिस में अथवा अन्य कहीं। जाने वाले स्थानों में भी एक दूसरे का पीछा करते हैं । इस प्रकार उनका जीवन शंकामय व दुखमय हो जाता है। हो सकता है कि इसी प्रकार के चक्कर में उनका आपसी तलाक भी हो जाय।

९ मातापिता को इस बात की भी चिंता है कि लड़के व लड़कियां प्रेम सम्बंधों में पड़कर किसी भी दिन माता पिता के सामने यह बात प्रस्तुत कर देंगे कि मैं तो इस लड़की अथवा इस लड़के से प्रेम करता या करती हूँ एवं मैं तो इसके साथ विवाह करूंगा या करूंगी । जैसा कि उपर बताया गया है कि प्रेम तो अंधा होता है, खासतौर से इस उम्र का प्रेम तो बहुत ही अंधा होता है । विवाह जीवन भर का

बंधन होता है। प्रेम करना एक वस्तु है, जीवन भर निभाना दूसरी वस्तु होती है। प्रेम करने वाले जीवन भर निभा लें बिल्कुल ही जरूरी नहीं है । यह बात समझ लेनी चाहिए कि यह प्रेम शारीरिक आकर्षण के आधार पर होता है जो थोड़े समय के लिए कायम रहता है। जिस प्रकार अच्छी से अच्छी खुशबू २/५ मिनट तक ही हमको महसूस होती है, उसके बाद में वह खुशबू रहे तब भी महसूस नहीं होती उसी प्रकार किसी लड़के या लड़की का सौंदर्य, उसके हावभाव, उसकी बोली अथवा आकर्षण के अन्य चिन्ह थोड़े से समय के लिए अच्छे लगते हैं एवं समय बीतने के बाद वे सभी अच्छी व बड़ी बातें सामान्य हो जाती हैं। रोज का स्वभाव व व्यवहार ही सुखद या दुःखद रह जाता है। स्वभाव व व्यवहार के बारे में पूर्व जानकारी लड़के लड़कियां नहीं कर पाते, इसलिए वह आकर्षण समाप्त होते ही एक दूसरे के स्वभाव आकर्षण होते हुए भी आपस में टकराने लाते हैं। प्रेम जाति, धर्म, संपन्नता, सोशियल स्टेटस, रीति रिवाज व साथ ही स्वभाव आदि को नही देखता। वह किसीसे हो जाता है। ऐसी अवस्था में जिन मातापिता का धर्म भिन्नता, जाति भिन्नता, बोली भिन्नता, रीति रिवाज भिन्नता एवं इसी प्रकार अन्य भिन्नता की स्थिति आयेगी तो माता पिता असमंजस में पड़ेंगे एवं उन्हें प्रेम सम्बंध स्वीकार करने में कठिनाईयाँ होंगी। यदि वे स्वीकार नहीं करते तो उनका लड़का या लड़की नाराज होते हैं, दुखी होते हैं, घर से चले जाने की धमकी देते हैं। यहां तक कि आत्महत्या करने तक की भी धमकी देते हैं। इस स्थिति में मां बाप क्या करें, यह भी एक कठिनाई है। कुछ मातापिता सामना करके 'ना' करते हैं एवं अधिकांश मातापिता लाचारी में बच्चों के प्रस्ताव को स्वीकार करते हैं। वे तो दोनों ही अवस्था में दुखी होते हैं। उन्हें समझ में नहीं आता कि उनके बच्चे को क्या हो गया है। इस प्रकार वह मातापिता की ममता, उनकी शिक्षा, उनकी संस्कृति एवं उनके संस्कारों को भूल कर अपनी मनमानी कर पत्नी लाना चाहता है एवं उनके सामाजिक स्तर , उनके पारिवारिक संगठन एवं उनके अपने अब तक के संजोए हुए सपनों को खण्डित करता है।

कुछ वर्षों पूर्व बम्बई में Nana Chudasama द्वारा कराये गये सर्वेक्षण के आंकड़े समस्याओं की गंभीरता का इस प्रकार वर्णन कर रहे हैं :-

★ बम्बई के कॉलेजों में पढ़ने वाले १००० विद्यार्थी (५०० लड़के एवं ५०० लड़कियों) को प्रश्न किये गये । कुछ उत्तर महत्वपूर्ण हैं :- ५३.२९% लड़कियों एवम ८६.६% लड़को के यौन सम्बन्ध हो चुके हैं। ६६.२८% लड़कों का प्रथम यौन सम्बन्ध १६ वर्ष की उम्र में एवं ७८ .४५% लड़कियों का १७ वर्ष उम्र में हो जाता है । ९३.८% लड़के एवं ६७.४% लड़कियां इस प्रकार के यौन सम्बन्धों को ठीक मानते हैं। ७८.२९% लड़के एवं ९२.११% लड़कियां कंडोम का इस्तेमाल करते हैं ।

★ Times of India बम्बई के १५ अगस्त १९९८ के अंक में प्रकाशित एक दूसरे सर्वेक्षण के अनुसार समस्याओं की गंभीरता की दूसरी कहानी इस प्रकार है :- हमारी संस्कृति को खतरा किससे कितना है :-

a. सिनेमा एवं धारावाहिकों में प्रदर्शित यौन सम्बन्धों से	७९%
b. डिस्को, गरबा आदि से	४६%
c. M.T.V. एवम् V.Channel से	३८%
d. विदेशी पत्रिकाओं से	३०%
e. सौंदर्य प्रतियोगिताओं से	२५%

अपने समाज से बाहर विवाह सम्बन्ध की मानसिकता किस शहर में कितनी: -

बम्बई	दिल्ली	कलकत्ता	मद्रास
६२.५%	४७ .५%	५६%	५४ .५%
हैदराबाद	बैंगलोर	लखनऊ	पटना
४६ .५%	४९%	३७%	३४.४%
अहमदाबाद	कोची	अखिल भारतवर्षीय	
५६ .५%	५४%	४९ .९%	

यह सर्वेक्षण सभी समाजों के मिश्र का है। परन्तु जो अन्य समाजों में हो रहा है कुछ प्रतिशतों में हमारे समाज में भी हो रहा है, ऐसा समझना ही चाहिए । पूरा संसार एक हो रहा है, इसलिए शहर, गांव, बम्बई, अन्यत्र एक जैसा ही वातावरण बन रहा है एवं एक जैसी मानसिकता भी बन रही है। इसलिए इस खतरे को हमारे समाज का

उतना ही गंभीर खतरा समझना चाहिये।

तो हमें क्या करना चाहिए :-

क्योंकि समस्या गंभीर है, साथ ही नाजुक है इसलिए इसकी रोकथाम के उपाय सशक्त एवं सूझबूझ वाले होने चाहिए। ऊपर मार्गदर्शन तो दिया ही गया है कि हमें कौन कौन से कार्य रोक थाम हेतु करने होंगे। उन सब में निम्नानुसार कार्य बहुत ही महत्वपूर्ण हैं :-

सर्वप्रथम प्रत्येक माता पिता का कर्तव्य है कि अपने बच्चों को संभाले। व्यापार का संभालना तो हम जानते हैं, परन्तु बदलते परिवेश में बच्चों का संभालना कठिन हो गया है। हम बच्चों की शिक्षा पर ध्यान देते है, खर्च करते हैं एवं उच्च शिक्षा हेतु आग्रह एवं उत्साह भी बढ़ाते रहते हैं, परन्तु हमारे बच्चों के साथियों का वातावरण कैसा है, वे घर में टी. वी. पर क्या देखते हैं, किताबें/पत्रिकाएं कौन सी पढ़ते हैं, किनसे कैसी बाते करते हैं, उनके दोस्त कौन है, किसके घर जाते हैं, इन सब को भी जानना जरूरी है । बच्चों की दुनिया को जानना, समझना, उनको समुचित मार्गदर्शन देना, उनके प्रश्नों का समुचित उत्तर देना आवश्यक है । जानने के अत्तिरिक्त बच्चों को एवं माता-पिता को दैनिक जीवन घुल मिलकर जीना जरूरी है । पिता व्यापार में अति व्यस्त हो गया है । माता कम पढ़ी लिखी होने से लड़के / लड़कियों को शासन नहीं कर सकती अथवा समझा नहीं सकती । पढ़ी लिखी माताएं टी.वी. कार्यक्रम, Kitty पार्टी एवम् सामाजिक कार्यों में व्यस्त हो गई हैं। कुल मिलाकर बच्चों के साथ संवाद व एक साथ रहने का वातावरण नही है। आवश्यकता है कि रोज वार्तालाप, साथ में भोजन, साथ में खेलना, घूमने जाना ऐसे सभी कार्य आवश्यक है जिससे बच्चों की एवं मां बाप की दुनिया एक हो। कई लड़कियाँ दूसरे लड़को से प्रेम के चक्कर में इसलिये पड़ जाती हैं कि उन्हें घर में भाई का अथवा पिता का प्यार नही मिला। भाई व पिता के प्यार की भूख को शान्त करने के लिये किसी लड़के के साथ वार्तालाप द्वारा पिता व भाई के प्यार की पूर्ति करती है। फिर बह उससे प्रेम करने लग जाती है। इसी प्रकार किसी लड़के को मां का प्यार नही मिलता तो किसी लड़की में वह लड़का मातृत्व देखता है, आकर्षित होता है और आगे चलकर वह उस लड़की से प्रेम करने लग जाता है ।

दूसरा महत्वपूर्ण कदम है कि घर के वातावरण को आध्यात्मिक, धार्मिक, नैतिक एवं संस्कार युक्त बनाना ही होगा। आप सेक्सी सिनेमा देखने जायेंगे, घर में भी ऐसे सिनेमा व सीरियल या कार्यक्रम देखेंगे चाहे आप अपने कमरे मे देखें तो बच्चे आपसे नजर बचाकर घर में देखेंगे ही। अपने मित्रों के साथ बाहर भी देखेंगे। हमें समझना होगा कि जो हमारे बच्चों के लिये ठीक नही है वह हमारे लिये भी ठीक नहीं है। सभी सिनेमा, टी.वी. कार्यक्रम साथ में देखें । स्वस्थ कार्यक्रम ही आपके लिये एवं बच्चों के लिये हितकारी है। हम खुद मांसाहार व मद्यपान करेंगे तो बच्चों को कैसे रोकेंगे। आपके शरीर एवं मन से निकलनेवाली शराब एवं मांसाहार की लहरिया बच्चों को व पूरे घर को प्रभावित करती हैं, चाहे आप घर के बाहर खा-पीकर आयें। साथ संगीत एवं भजन का कार्यक्रम भी घर के वातावरण को एकरस एवं सात्विक बनाने में सहयोगी हो सकता है।

तीसरा महत्वपूर्ण कदम है कि बहू व बेटी के भेद को मिटायें । व्यवहार में बेटी व बहू की बोल बतलाव व आदर अक्षुण्ण रखते हुये भी बेटी को कुछ भी करने व पहनने की छूट हो - चाहे सलवार कुर्ती हो व जीन्स एवं टी शर्ट का टॉप हो - यह अनुचित है । जब आपकी लड़की देखती है कि मारवाड़ी घरों में बहुओं को बहुत वर्जनाएं हैं, बोलने, हंसने, नाचने एवं पहनने में भेदभाव है, जब लड़की को मालूम होता है कि उसकी बड़ी बहिन अथवा पड़ोस की सहेली के ससुराल में बहुत वर्जनाएं हैं तो उसे अपने समाज में विवाह के प्रति विद्रोह निर्माण होता है । वह किसी दूसरी जाति के घर जाना चाहती है जहाँ इन सब बातों की स्वतन्त्रता व सुविधा रहती है ।

आखिरी बात यह है कि १४ से २४ वर्ष की उम्र में लड़के एवं लड़कियों के शरीर एवं मन में यौन भावना प्रकृति की देन स्वरूप पैदा होती है। यह उम्र का धर्म है। आज के खान पान, खुला वातावरण एवम् आक्रामक टी.वी व विदेशी संस्कृति का प्रवेश इस यौन भावना को पोषण व उत्तेजना देता है। ऐसे वातावरण में यौन भावना को गलत रास्ते नहीं जाने देने, समाज एवं परिवार की मर्यादाओं का मान देने के लिये यथाशीघ्र विवाह करना आवश्यक है। लड़के लड़कियाँ गलत रास्ते न जायें, समाज व परिवार की मर्यादाओं को मान दें, इस हेतु seminars द्वारा समुचित मार्गदर्शन लड़के / लडकियों को दिलाना चाहिए । साथ ही जैसे ही मालूम हो कि मेरी लड़की या लड़का किसी प्रेम प्रकरण में फंस रहा है, माता पिता का कर्तव्य है कि शीघ्रातिशीघ्र Counsellor से मार्गदर्शन दिलायें ताकि प्रेम प्रकरण गहरा व गंभीर बनने के पहले ही इसका निराकरण हो सके ।

लड़कियों का कैरियर (Career)

लड़कियां कैरियर मानसिकता की होती जा रहीं हैं। मां-बाप ही असली दोषी हैं जो लड़कियों को कैरियर की शिक्षा देने की पहल करते हैं एवं कैरियर में जाने के लिए प्रेरणा भी देते हैं। आज कैरियर की महत्ता लड़कियों में इतनी बढ़ रही है कि कुछ लड़कियां विवाह ही नहीं करना चाहती क्योंकि उनका मानना है कि पति उनके कैरियर में अवरोध है। यदि लड़कियां कैरियर करती हुईं विवाह कर लेती हैं तो संतान नहीं चाहती, क्योंकि संतान कैरियर में और अधिक अवरोध पैदा करती है। कैरियर में जानेवाली लड़कियों को संतान हो जाय तो वे आवश्यक समय नहीं दे पाती क्योंकि कैरियर की मांग रहती है कि वह अपना पूरा समय एवं शक्ति कैरियर में लगाए। वे २००० से ५००० रुपये की आया या मेट्रोन रखने को इकोनोमिक समझती हैं। ऐसी संतान मां बाप के प्यार, दुलार एवं मार्गदर्शन से वंचित रहती है। ऐसी संतान स्वस्थ व्यक्तित्व विकास में अपूर्ण हो जाती है। आजकल कैरियर को सफल करने के लिए प्रतिदिन १२ घंटे लगाना पड़ता है एवं पूरी क्षमता लगानी पड़ती है। ऐसी स्थिति में उनकी शारीरिक एवं मानसिक अवस्था माता-एवं पत्नी का कर्तव्य नहीं निभा सकती, हमें समझना चाहिए। देखा जा रहा है कि कैरियर का दबाव कितना अधिक हो रहा है कि पत्नी एक शहर में एवं पति दूसरे शहर में काम करने के लिए बाध्य हैं। ऐसी अवस्था में आपसी ताल-मेल कितने दिन रह सकता है, हम विचार करें। यह चित्र भारतवर्ष का बता रहा हूँ। कुछ वर्षों में यह चित्र माहेश्वरी समाज का हो सकता है, हमें समझ लेना चाहिए।

मेरे विचार से प्रत्येक लड़की को उद्यमी होना ही चाहिए एवं जीवन भर बने रहना चाहिए। समय आ गया है एवं परिस्थितियां बदली हैं, उसमें शिक्षा एवं हुनर के आधार पर लड़की उद्यम कर सकती है। प्रत्येक लड़की को उद्यमी बनने की शिक्षा एवं दीक्षा लेनी ही चाहिए। परन्तु आवश्यक है कि उद्यम एवं परिवार की सार सम्भाल दोनों का सामंजस्य हो। इस हेतु प्रत्येक लड़की आधा समय अर्थात् ६ घंटे उद्यम में एवं बाकी समय परिवार को सम्भालने में लगाये। हमें ऐसे शिक्षाक्रम एवं उद्यम की खोज व जानकारी लेनी चाहिए जो आधे समय में किये जा सकें। यदि किसी उद्यम की आवश्यकता पूरे समय की हो तो सास-बहू, देराणी- जेठानी, दो सहेली मिल उस उद्यम

को करें, जिसमें सबेरे एवं सायंकाल का समय बांटा जा सके।

गंभीरता से विचार करना चाहिए कि विवाह की उम्र लड़कियों की १८ से १९ वर्ष एवं लड़कों की २२ से २३ वर्ष कैसे सम्भव हो। ऐसा होता है तो विवाह पूर्व शारीरिक सम्बन्धों की समस्या हल हो सकती है तथा तलाक, पति-पत्नी अथवा सास-बहू के ताल-मेल की समस्या भी बड़े प्रमाण में हल हो सकती है। इस उम्र तक लड़के एवं लड़कियों की शिक्षा पूर्ण नहीं हो सकती। हमें अभियान चलाना चाहिए कि लड़कियों को ही नहीं, बहुओं को भी पढ़ाना है। जब लड़के एवं लड़कियां विवाह के पूर्व आपस के मेल-जोल, टेलीफोन, SMS एवं Email में अपना समय लगाते हैं व सम्पर्क करते हैं। प्रेम प्रकरण में भी फंसते हैं तो विवाह पश्चात् पति-पत्नी रूप में रहते हुए शिक्षा अग्रसर क्यों नहीं की जा सकती। इस व्यवस्था से समाज एवं परिवार की अनेक समस्याओं का समाधान हो सकता है।

लड़के-लड़कियों के स्वच्छंद एवं कैरियर मानसिकता व माता-पिता द्वारा संतान को समय देने में जो कमी है उसमें एक कारण यह भी है कि बच्चों व खासतौर से उच्चशिक्षा प्राप्त करनेवाले बच्चों को समुचित मार्गदर्शन की क्षमता में माता-पिता की कमजोरी है। कहीं-कहीं तो संतान के प्रति अत्यधिक मोह भी कारण है। बच्चों को समुचित समय देने की आवश्यकता को माता-पिता को समझना व मानना ही होगा। साथ ही बच्चों को मार्गदर्शन की क्षमता के लिए विशेषज्ञों व अनुभवी लोगों से ज्ञान बढ़ाना चाहिए।

लड़कियों में कैरियर मानसिकता का एक कारण परिवारों व समाज में व्याप्त बेटी-बहू के प्रति सोच व व्यवहार में विषमता भी है। लड़कियों एवं बहुओं के प्रति व्यवहार में भेद-भाव रहता है। अनुचित व्यवहार भी कारण होता है। इसलिए आवश्यक है कि समाज के संगठन, खासतौर से महिला संगठन घर-घर में यह संदेश दें कि किसी भी प्रकार का लड़की एवं बहू में भेद-भाव एवं बहुओं के प्रति गलत व्यवहार न हो।

लड़कियों के लिए मेरे विचार से शिक्षा की दिशा लड़कों से भिन्न होनी चाहिए। प्रत्येक लड़की धन उपार्जन की शिक्षा ले एवं उपार्जन के कार्य का अभ्यास भी करती रहे। परन्तु ऐसा धन उपार्जन का कार्य, जिससे व्यापार अथवा Job एवं घर की जिम्मेदारी दोनों को संभाला जा सकें व दोनों जिम्मेदारी में समन्वय रखा जा सके, ऐसी

व्यवस्था रहनी चाहिए। यदि किसी कार्य में दिन भर कार्य करना आवश्यक हो तो सास / बहू, दो बहुएं अथवा दो सहेली मिलकर करे पर आधा समय घर के लिए सुरक्षित व आधा धनोपार्जन में लगाना चाहिए। यदि लड़की पूरे दिन भर नौकरी या व्यापार / उद्योग में समय व शक्ति लगायेगी तो घर-बच्चों-पति-सास-ससुर को कौन संभालेंगे ?

ऐसा देखा जा रहा है कि लड़कियां Career को अधिक महत्व दे रही हैं। वे विवाह नहीं करना चाहती व बच्चे पैदा भी नहीं करना चाहतीं क्योंकि ये Career में बाधक हैं। यह स्थिति न तो उस लड़की के लिए एवं न परिवार व समाज के लिए ठीक है। विवाह बगैरह लड़की का जीवन असुरक्षित है। विवाह एवं बच्चों के बिना जीवन अपूर्ण व कोमल भावनाओं से शून्य होगा। एक लड़की को अपने पैरों पर सम्पूर्ण खड़े होने की आवश्यकता नहीं है। सामान्यतया उसे धनोपार्जन हेतु आधा समय ही लगाना चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर पूरा समय धनोपार्जन में लगाया जा सकता है।

आधा समय घर एवं आधा व्यापार में लगाना संभव है। घर में काम कम हो गया है। परिवार छोटा व कार्य में सहायक Tools/Instruments हो गए हैं। एक या डेढ़ घण्टे में रसोई का काम हो जाता है। बाकी के छोटे काम के लिए Part-time नौकर / आया मिल जाती है। बाकी का आधा समय बच्चों व सास-ससुर व घरेलू अन्य कार्य में लगाना पर्याप्त होगा। बाकी आधा समय अर्थोपार्जन में एक लड़की का लगाना ही चाहिए।

परिवार में कम से कम दो व Desirable तीन संतान होनी चाहिए। एक ही संतान से, उस बच्चे व माता-पिता दोनों का अपूर्ण विकास होता है व बच्चा गलत शिक्षा प्राप्त करता है। बच्चा Share करना नहीं सीखता। उसको खेलने के लिए एक साथी चाहिए जो नहीं मिलता। School पड़ोस के बच्चों की भिन्न व गलत संस्कृति के साथ उसका विकास होता है। मां व पिता का प्यार भी एक बच्चा होने से अमर्यादित हो जाता है जो उसकी आदत को बिगाड़ने की स्थिति लाता है।

अच्छे संस्कार घर से व माता पिता से ही प्राप्त हो सकते हैं। School/College में नहीं मिलते। इसलिए प्रत्येक माता पिता व परिवार को संस्कारी बनना ही चाहिए। इसी से बच्चों का Development संस्कारयुक्त व अच्छा होगा व माता-पिता को भी बच्चों से सुख मिलेगा। यदि मां बाप बच्चों को प्यार व समय नहीं देंगे तो बड़े होने पर बच्चे मां बाप को प्यार व समय कैसे देंगे।

लड़कियों में कैरियर की मानसिकता जागृत करने में माता-पिता एवं लड़कियों का जो मानस है उसमें हमारे परिवार व समाज में अभी भी व्याप्त विषमता भी एक कारण है। खास-तौर से लड़कियों एवं बहुओं में भेद-भाव बड़ा कारण है। कहीं कहीं तो सास एवं ननदों का बहू के प्रति अनुचित व्यवहार भी कारण होता है। मां-बाप की दूसरी संतान के बारे में एवं उस बहू की सहेली व छोटी बहिन में भी यह भाव जागृत होता है कि मैं विवाह नहीं करूँ, अन्तर्जातीय अपनी इच्छा का विवाह करूँ एवं अपने कैरियर से अपने व्यक्तित्व को विकसित करूँ। इसलिए आवश्यक है कि महिला संगठन घर-घर में यह संदेश दें कि किसी भी प्रकार का भेद-भाव एवं बहुओं के प्रति गलत व्यवहार न हो और जिस घर में होता हो उस गांव, शहर एवं उस घर के नजदीक रहने वाली कार्यकर्त्ता बहिनें ऐसे सास-श्वसुर को अपने व्यवहार में सुधार लाने के लिए आग्रह करें।

नववधू का ससुराल में समरस होना / विवाह विच्छेद

(१) पढ़ी लिखी लड़कियाँ पीहर जैसा स्वच्छन्द वातावरण ससुराल में अपेक्षा करती हैं।

(२) लड़कियों को विवाह के पश्चात् ससुराल जाना है। सास, ससुर, जेठ, जेठानी, देवर, देवरानी, ननद एवं पति के साथ adjust होना है। पति परिवार में establish होना है, ऐसी सीख, advice माता पिता नहीं देते।

(३) पुराने जमाने में संयुक्त परिवार में रहना होता था। आपस में काका, बाबा, भुवा, बहनों, भाइयों में बाँटकर या बड़ों के शासन के अनुसार संस्कार बनते थे। अब अकेला परिवार रहता है। एक या दो बच्चे होते हैं। उनको स्वतन्त्र सुविधा दी जाती है।

(४) बड़ी उम्र में विवाह होता है। विचार पक जाते हैं। अपेक्षाएँ बन जाती है। अपनी बराबरी के व्यवहार की अपेक्षा रहती है। पुराने जमाने में छोटी उम्र में विवाह होता था। कोमल मन सब बातों को सहजता से स्वीकार कर लेता था।

(५) लड़की लड़के की उम्र में ४/५ वर्षों का अन्तर होता था। पति का शासन मान लिया जाता था। शिक्षा में भारी अन्तर होता था। आज समान उम्र, समान शिक्षा होती है।

(६) गाँवों के वातावरण के बदले शहर का वातावरण टीवी के आवागमन की सुलभता से विदेशी स्वतन्त्र वातावरण का बड़ा असर हो गया है।

(७) भारत अभी भी पुरुष प्रधान देश है। शासन पुरुषों का सर्वोपरि होता है। जबकि लड़कियों में स्वतंत्र वातावरण व शिक्षा के कारण समानता की अपेक्षा रहती है। परन्तु पुरुषों में स्वतंत्रता देने की उतनी खुली मानसिकता नहीं बनी है।

(८) सास ससुर एवं पति आज्ञाकारी बहू की अपेक्षा करते हैं। जबकि बहू पीहर जैसा खुला व मनोनुकूल कतावरण की अपेक्षा करती है।

(९) लड़की को विवाह पश्चात् बहू पत्नी-माता के कर्त्तव्यों की शिक्षा न तो स्कूल/कॉलेज के पाठ्यक्रमों में मिलती है। न माता पिता घर में सीख/शिक्षा देते हैं। जबकि पुराने जमाने में गाँवों में जीवन से शिक्षा/सीख मिलती रहती थी।

माँ/दादी भी सीख देते रहते थे। साथ ही छोटी उम्र के कारण भी ससुराल का शासन स्वीकार हो जाता था।

(१०) माता - पिता का मोह लड़कियों के प्रति बढ़ा है। ससुराल में लड़की से छोटी मोटी बातों की जानकारी लेना। उसके मनमाफिक बातें नहीं होने पर ससुराल वालों को शिकायत करना अधिक हो गया है। टेलीफोन पत्र ब आवागमन व एक ही शहर में होने से interference ज़्यादा होने लगा है। जो ससुराल परिवार में अखरता है व उस प्रकार आपसी तनाव बढ़ने लगता है।

(११) अपनी लड़की के योग्य ही वर व ससुराल परिवार खोजना व स्वीकार करना चाहिये। घरेलू, कामकाजी, Professional, गरम, नरम, लड़की-लड़के या परिवार के सदस्यों का स्वभाव, गाँव व शहर के वातावरण का फरक, ऐसी कई बातों को ध्यान में रखकर ही वर व घर देखना चाहिये। समान आमदनी का ही घर देखना चाहिये।

(१२) प्रथम पाँच वर्ष लड़की को ससुराल परिवार में स्थापित होना है। ससुराल परिवार के सदस्यों के स्वभाव को समझना है, ऐसी मानसिकता लड़की में व शिक्षा व सीख माता पिता से मिलनी चाहिये।

(१३) सास ससुर का भी कर्त्तव्य है कि आधुनिक युग में आज्ञाकरिता की अपेक्षा प्रेमपूर्वक छूट का तथा समझाने का वातावरण रखे। बहू को बेटी समझते हुए क्षमाभाव समझाने की प्रवृत्ति रखनी चाहिये।

(१४) पति का भी कर्त्तव्य है कि आधुनिक युग में पढ़ी लिखी सम उम्र की पत्नी के साथ व्यवहार समानता का हो। अपने परिवार को छोड़कर आनेवाली पत्नी को समरस होने की सुविधा व वातावरण देना व दिलाना चाहिये। ज्यादती की परिस्थिति में अपने माता पिता को समझाने का भी कर्त्तव्य उसी का है। मुख्यरूप से निम्न बिन्दुओं पर विचार विमर्श करना उचित होगा :

(अ) पत्नी-बहू-माँ की भूमिका समुचित निभाने के लिए क्या एवं कैसे लड़की को प्रबुद्ध किया जाये।

(ब) क्या विवाह की उम्र लड़की को १८/१९ रखने से समरस होने में सहजता आयेगी एवं लड़की को उच्च शिक्षा के लक्ष्य के बदले बहू को उच्च शिक्षा देने की

विचार धारा बनायी जाये ?

(स) वर व घर ढूंढ़ने में सावधानी व लड़की की अनुरूपता रखने की बात कितनी महत्वपूर्ण है ? क्या व्यावहारिक है ?

(द) सास-ससुर एवं पति की भूमिका पत्नी/बहू को समरस करने में क्या होनी चाहिये ?

सम्बन्ध निर्धारण के पूर्व निम्नानुसार महत्वपूर्ण बातों पर माता-पिता एवं लड़के-लड़कियों को ध्यान देना आवश्यक व उपयोगी है।

१. Bio-data एवं परिचय तो जानकारी मात्र है। यह जानकारी महत्वपूर्ण एवं उपयोगी जरूर है परन्तु जानकारी को मात्र जानकारी ही समझना चाहिए।

२. माता-पिता एयं लड़के व लड़की को Bio-data से अपने मन में यह प्रश्न करना चाहिए कि क्या यह लड़का व लड़की एक दूसरे के लिए योग्य पात्र हैं जैसे- उम्र, ऊँचाई, शिक्षा, Hobbies क्या आपस में मेल खाते हैं ? आखिर लड़के व लड़की का आपसी मेल तो महत्वपूर्ण ही है।

३. लड़की व लड़की के घरवालों को इस जानकारी की नोंध लेनी चाहिए कि लड़का जहां कामकाज करेगा व रहेगा, वह गांव-शहर लड़की को स्वीकार्य है या नहीं।

४. अनेक लड़कियाँ शिक्षा के बाद कामकाजी यानी Career करना चाहती हैं। क्या यह लड़के व लड़के के माता-पिता के विचारों व भावनाओं के अनुकूल है ?

५. लड़के व लड़की का निजी स्वभाव अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। लड़के व लड़की के स्वभाव में माता-पिता के स्वभाव का महत्वपूर्ण योगदान होता ही है, जिसकी जानकारी भी लेना उपयोगी होगा।

६. सम्बन्ध में दोनों परिवारों के Status की समानता उपयोगी होती है। असमान Status आपसी व्यवहार में तकलीफें ला सकता है।

७. जिन परिवारों को कुण्डली मिलाने की आवश्यकता हो, उन्हें सम्बन्ध की बात आगे बढ़ाने के पूर्व ही मिला लेनी चाहिए।

८. उपरोक्त सभी जानकारी अपने सम्बन्धियों व सामाजिक कार्यकर्त्ताओं / मित्रों के

माध्यम से प्राप्त की जा सकतीं हैं।

९. लड़के / लड़कियों के स्वभाव की जानकारी थोड़ी कठिन जरूर होती है परन्तु प्रयत्न करने से, साथ पढ़नेवाले अन्य लड़के / लड़की व उसी बिल्डिंग या पड़ोस में रहनेवालों से जानकारी निकाली जा सकती है।

१०. उपरोक्त प्रत्येक जानकारी का अपना-अपना महत्व है। कौनसी जानकारी को कम महत्व देना या नहीं देना इसका निर्णय लड़के व लड़की को अपने परिवार सदस्यों व हितैषियों के साथ चर्चा द्वारा ही करना चाहिए। सम्बन्ध तय करने में जल्दीबाजी नहीं करनी चाहिए।

११. संयुक्त परिवार टूटते जा रहे हैं। इसलिए लड़के का आर्थिक स्वावलम्बन एक अत्यन्त महत्वपूर्ण मुद्दा समझना चाहिए।

१२. लड़के या लड़की को देखने का कार्य लड़के एवं लड़की के घर पर ही करना चाहिए। होटल, क्लब, मन्दिर व गार्डन में देखने की प्रथा गलत है। लड़का देखने जाना है तो लड़का व माता-पिता जहाँ रहते हैं वह घर देखना आवश्यक है। घर पर देखने से घर की स्थिति एवं नास्ता / खाने की सर्विस से रहन-सहन, खान-पान को समझा जा सकता है जो लड़की के भविष्य से जुड़ा हुआ होता है। लड़के के माता-पिता व परिवार के अन्य सदस्यों की बोल-चाल, वातावरण से घरवालों की संस्कृति की जानकारी भी मिलती है। उसी प्रकार लड़की के घर, परिवार, संस्कृति की जानकारी मिल सकती है।

१३. लड़की की भावी पति एवं पति परिवार के साथ निभाने (Adjustment) की मानसिकता होनी अत्यन्त ही महत्वपूर्ण मुद्दा समझना चाहिए।

१४. उपरोक्त व अन्य आवश्यक जानकारी प्राप्त होने के पश्चात् कहीं Compromise करना हो तो समझ-सोचकर कर लेना चाहिए। दोनों पक्षों के परियार व लड़के-लड़की द्वारा समझ-सोचकर किये हुए Compromise से भावी जीवन में आपस में निभाना सरल हो जाता है। Compromise करने की मानसिकता रखना दोनों पक्षों के माता-पिता एवं लड़के-लड़की के सुखी जीवनयात्रा में सहायक होती है। समझ-सोचकर किया हुआ Compromise आपसी सम्बन्ध बनाये रखने में भी सहायक होता है।

बढ़ती हुई सम्बन्ध विच्छेद की घटनाओं में परिवार का दायित्व एवं सामाजिक संगठन की भूमिका

१. देश भर में पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण में भारी बदलाव आ गया है।

२. हमलोग गांव के वातावरण से शहर ही नहीं मुम्बई जैसे महानगर के वातावरण में रहने लगे हैं।

३. परिवार के सभी सदस्य पढ़े-लिखे एवं प्रबुद्ध हैं। कुछ उच्च शिक्षा प्राप्त हैं।

४. टीवी, Internet, एवं पाश्चात्य सभ्यता का भारी प्रभाव समाज पर पड़ रहा है।

५. उच्च शिक्षा हेतु विवाह की उम्र बढ़ गई है।

६. लड़कियों एवं उनके माता-पिता की मानसिकता उच्चशिक्षा प्राप्त कर Career बनाने की बन गई है।

७. लड़कियों को C.A., Engineer एवं Doctor जैसी उच्चशिक्षा साथ ही M.B.A. की शिक्षा दिलाई जा रही है जिससे विवाह की उम्र २८ वर्ष व अधिक हो रही है।

८. लड़की को घरेलू व सामाजिक शिक्षा बिलकुल नहीं मिलती।

९. लड़की की सुरक्षा बचपन में माता-पिता के घर एवं विवाह पश्चात् पति के घर में ही अच्छी हो सकती है। अविवाहित कामकाजी लड़कियों का जीवन सुरक्षित नहीं होता।

१०. लड़की को पत्नी, माँ एवं बहू बनना उसके जीवन की सार्थकता है एवं परिणति है। लड़की व परिवार का जीवन परिपूर्ण व सुखद तभी होता है जब वह विवाह पश्चात् माँ बनती है।

११. माता-पिता का दायित्व है कि वे लड़की की मानसिकता घरेलू बनने व बने रहने की बनाते रहें एवं छोटी-मोटी सभी घरेलू व सामाजिक आवश्यकताओं की जानकारी व शिक्षा उसे देते रहें। C.A./Engineer/Doctor बनने के लिए जितनी पढ़ाई करनी जरूरी है, उतनी ही आवश्यक व उपयोगी घरेलू व सामाजिक बनने की है। घरेलू बनने की शिक्षा स्कूल / कॉलेज में नहीं मिल सकती। माता-पिता यदि यह शिक्षा नहीं देंगे तो लड़की घरेलू कैसे बनेगी ? पुराने जमाने में गाँव का वातावरण ही लड़की को घरेलू बनाता था। कम शिक्षा एवं कम उम्र में विवाह के कारण ससुराल

में भी घरेलू शिक्षा प्राप्त हो जाती थी।

१२. विवाह की उम्र २१ वर्ष की उचित माननी चाहिए जब लड़की Graduate हो जाती है। आगे की शिक्षा आवश्यकतानुसार विवाह के पश्चात् ससुराल में करनी चाहिए। ससुराल में लड़की का पढ़ना व ससुराल वालों द्वारा बहू को पढ़ाना दोनों बातों का वातावरण बनाना आवश्यक है। जितना diversion विवाह पश्चात् लड़के-लड़की का शिक्षा हेतु हो जाता है उससे अधिक diversion ही unmarried लड़कियों में College Life में रहता है।

१३. मेरा आशय व अभिप्राय यह नहीं है कि लड़की उच्चशिक्षा प्राप्त न करे या मात्र Graduate शिक्षा ही प्राप्त करे। मेरा आशय है कि लड़की Career minded न बने। धन कमाने की मुख्य जिम्मेदारी पति की है। घर संचालन की जिम्मेदारी पत्नी की है। परन्तु लड़की पति व पति परिवार पर आर्थिक क्षमता हेतु पूर्ण आधारित हो यह समयोचित नहीं है। एक लड़की को भी कमाने की विद्या व हुनर सीखना व सिखाना चाहिए। सीखी हुई विद्या व हुनर का नियमित उपयोग करते हुए कमाते रहना चाहिए परन्तु कमाई पारिवारिक सम्पत्ति माननी चाहिए। इस हेतु आधा दिन अर्थात् ६ घण्टे समय का ही उपयोग अर्थोपार्जन में करना चाहिए। यदि किसी विद्या व हुनर की आवश्यकता पूरे समय के लिए काम करने की हो तो सास-बहू / देराणी-जेठाणी। दो सहेली मिलकर ऐसे काम को संभाला जाय। आधुनिक साधनों के फलस्वरूप घर का कार्य १ या २ घण्टे में पूर्ण हो जाता है। अन्य घरेलू जिम्मेदारी को निभाने के लिए अतिरिक्त ४ घण्टे सुरक्षित हों एवं दिन के बाकी ६ घण्टे कामकाज में लगाया जाना चाहिए। जीवन में आवश्यकता उत्पन्न हो तो पूरा समय भी कामकाज में लगाया जा सकता है। आधे दिन में करने लायक कामकाज की सूची बनानी चाहिए ताकि विचार अधिक स्पष्ट हो जांय।

१४. परिवार में सुख तभी तक रहता है जब तक पति-पत्नी घरेलू व आपसी आवश्यकताओं को मिलकर पूरी करने की मानसिकता रखेंगे। घर का मुखिया तो एक ही हो सकता है। घर का मुखिया पति हो या पत्नी, यह आपसी समझ व सोच से प्रेम-पूर्वक निर्णय हो सकता है। वर्तमान में अनेक देशों की प्रधानमंत्री व राष्ट्रपति महिला हो रही हैं। पहले भी होती रही हैं फिर घर में क्यों नहीं ? आजकल तो बड़ी-

बड़ी कम्पनियों की Chairperson, Managing Director व CEO भारत में भी महिला हो रहीं हैं। पति-पत्नी के बीच आपसी संवाद निरन्तर होते रहना चाहिए। Ego चाहे पति का हो, चाहे पत्नी का, Ego तो तकलीफ व कठिनाइयाँ ही पैदा करता है। Ego से उचित निर्णय करने में कठिनाई ही होती है।

१५. माँ बनना पारिवारिक जीवन की आवश्यकता है। विवाहित जीवन की यह महत्वपूर्ण आवश्यकता है। बच्चों से पारिवारिक जीवन में सरसता आती है। पति-पत्नी दोनों में कोमल भावों को पोषण मिलता है। पति-पत्नी के सम्बन्ध मधुर बनते हैं व आपसी Bonding में गहराई आ जाती है।

१६. शान्ति व समझदारी से आपसी विचार-विमर्श व व्यवहार नियमित किया जाय तो पति-पत्नी के आपसी झगड़े का कारण ही नहीं रहता। आवश्यकताएँ व समस्याएँ पति-पत्नी दोनों की सम्मिलित जिम्मेदारी होती हैं। यदि किसी समय व किसी विषय में आपसी विचारों में भिन्नता हो तो उस विषय पर Sleep-over करना चाहिए अर्थात् कुछ समय के लिए उस विषय पर विचार-विमर्श स्थगित रखना चाहिए।

१७. Tension पति-पत्नी के आपसी झगड़ों का एक अनावश्यक परन्तु महत्वपूर्ण कारण है। आधुनिक कामकाज में Tension बढ़े हैं। पति हो या पत्नी दोनों को, निजी Tension को स्वतः ही दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए। परिवार में बड़ों से सलाह ली जा सकती है अथवा हितैषी व्यक्तियों से सलाह ली जा सकती है। आजकल तो Professional सलाहकार भी उपलब्ध हैं। Tension घरेलू जीवन में अनावश्यक बाधाएँ उत्पन्न करते हैं। यदि पत्नी कामकाजी अर्थात् Career में हो तो दोनों को ही Tension होने की संभावना बढ़ जाती है।

१८. विवाह सम्बन्ध निश्चित करने के पूर्व लड़के व लड़की के विचारों में सामंजस्य है अथवा नहीं, यह माता-पिता व लड़के-लड़की दोनों को समझ लेना जरूरी है। दोनों ही पक्ष के घरों के वातावरण में भी सामंजस्य है या नहीं, यह भी समझ लेना चाहिए। होनेवाली सास का स्वभाव प्रेम से समझाने व परोटने के स्वभाव वाला है या नहीं, समझना चाहिए। अमेल सम्बन्ध नहीं करना चाहिए। परिवार के वरिष्ठ सदस्यों का कर्त्तव्य है कि होनेवाले समधी व बहू/ जँवाई के विचारों में सामंजस्य व पारिवारिक समानता का दृष्टिकोण देखना नहीं भूलें। प्रेम विवाहों में इन बातों को

देखने की संभावना नहीं होती, जिसे लड़के व लड़की को गंभीरता से लेनी चाहिए।

१९. सामाजिक संगठनों की भूमिका वर्तमान परिस्थिति में महत्वपूर्ण व उपयोगी है। संगठन के कार्यकर्त्ता अपने पड़ोसी व मित्रों के परिवारों पर नज़र रखें कि कहीं पति-पत्नी व सास-बहू के बीच विचार भिन्नता का वातावरण तो नहीं बन रहा है। विचार भिन्नता की प्रारम्भिक अवस्था में ही समझ स्थापित की जा सकती है। सामाजिक कार्यकर्त्ता को इसे दूसरों के घरों में हस्तक्षेप नहीं समझना चाहिए। हमारा पड़ोसी व दोस्ती धर्म मात्र साथ चाय पीने व Ice-cream खाने तक नहीं होता। हमारे पड़ोसी व दोस्त के घर में समझ-फरक कहीं विवाद का रूप न ले, यह देखना / समझना हमारी वास्तविक दोस्ती / सामाजिक फर्ज है। ऐसी स्थिति को अपने ही घर की स्थिति समझकर समाधान लाने के प्रयास करने चाहिए। इस विषय में संगठन के कार्यकर्त्ता आवश्यकतानुसार वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं से मार्गदर्शन व सहयोग ले सकते हैं।

अंतर्जातीय विवाह

पिछले कुछ वर्षों से विजातीय अथवा अन्तर्जातीय विवाह की समस्या माहेश्वरी समाज के लिए एक समस्या बन रही है, एवं धीरे धीरे विकराल रूप भी ले रही है। समाज के चिंतको के अनुसार इस समस्या से समाज के अस्तित्व का ही प्रश्न खड़ा हो गया है । २५ वर्षों के पश्चात समाज का क्या स्वरूप रहेगा यह विचारणीय विषय है । जब घरघर में इतर समाज की लड़कियां पहले पत्नी, फिर माता व घर की मालकिन की जिम्मेदारी वहन करेगी तो सर्व प्रथम हमारी माहेश्वरी होने की भावना कमजोर होगी । धीरे धीरे दूसरी जाति व धर्म के रीति रिवाज, त्यौहार, खान पान आदि का मिश्रण होगा एवं माहेश्वरी समाज की विशिष्टता धीरे धीरे नष्ट हो जायेगी ।

अन्तर्जातीय विवाह होने के कुछ महत्वपूर्ण कारण :

विजातीय/अन्तर्जातीय विवाह के अनेक कारणों में निम्न परिस्थितियां मुख्य रूप से पोषण देती है अथवा समस्या को गंभीर व समाधान के परे बनाती हैं-

(अ) बड़ी उम्र में लड़के-/लड़की का विवाह एवं विवाह पूर्व आपसी प्रेम होने की बढ़ी हुई संभावनाएं,

(आ) माता-पिता की व्यस्तता, जिस कारण बच्चों व वयस्कों को माता-पिता के सानिध्य एवं मार्गदर्शन का अभाव व रोकथाम की संभावना में कमी।

(इ) परिवार में स्वच्छन्द अथवा अति आधुनिक जीवन शैली का वातावरण।

(ई) परिवार में धार्मिक व सांस्कृतिक संस्कारों व वातावरण की कमी।

(उ) फिल्म, टी.वी. का परिवार में, पारिवारिक जीवन में स्वच्छन्द उपभोग।

(ऊ) वयस्क लड़के/लड़कियों को अकेले मित्रों की पिकनिक, वर्षगांठ पार्टी, गरबा नृत्य जैसे आयोजन में सम्मिलित होने की खुली छूट।

(ए) दहेज एवं उससे संबंधित रीति रिवाज तथा बहू हेतु समय बाह्य कठोर व प्रताड़ना का वातावरण जिससे लड़कियां एवं उनके माता-पिता का अपने समाज में विवाह संबंध से घबराना।

(ऐ) सामाजिक संस्थाओं एवं कार्यकर्ताओं की उपरोक्त वातावरण के संबंध में उदासीनता व तटस्थता।

(ओ) सामाजिक संगठनों की अपने घटकों पर अनुशासन कर सकने में असमर्थता एवं स्पष्ट नीति अथवा दिशाबोध देने में संकोच।

(औ) सह शिक्षा एवं लड़के/लड़कियों का आपसी मेल-जोल का स्वच्छन्द वातावरण।

(अं) माहेश्वरी समाज के मूल्यों, विशेषता एवं मान्यताओं की तथा आज की परिस्थितियों में इनकी सार्थकता की जानकारी व समझ (Appreciation) का अभाव।

(अः) माता-पिता का अपनी लड़की/लड़के के लिए एवं लड़के/लड़की का भी संबंध ढूंढते समय छोटी-छोटी बातों के लिए भी समझौता/समाधान (Compromise) करने की मानसिकता नहीं रहती है जिससे विवाह-संबंध स्थापित होने/ढूंढ़ने में कभी-कभी कई वर्ष लग जाते हैं। इससे न केवल माता-पिता अधीर होने लगते हैं बल्कि लड़के-लड़कियों के मन में भी बैचेनी/निराशा होने लगती है। ऐसी परिस्थिति के कारण भी माता-पिता या लड़के-लड़कियों के मन में अन्तर्जातीय विवाह करने के विचार बनते हैं एवं संभावनाएं बढ़ जाती हैं जो धीरे-धीरे निर्णय के रूप में परिवर्तित हो जाती हैं।

अन्तर्जातीय विवाह से समाज में होनेवाले कुछ दुष्परिणाम :

(अ) लड़का/लड़की के अलग-अलग परिवार में प्राप्त संस्कार, रीति-रिवाज, खान-पान, धार्मिक मान्यताओं में विभिन्नता से वैचारिक मतभेद एवं मन भेद, परिवार में असन्तोष, टकराव एवं बिखराव। धीरे-धीरे पारिवारिक स्थापित रीति रिवाज व धार्मिक मान्यता का लोप एवं खान-पान में बदलाव। साथ ही तलाक की संभावना।

(आ) माहेश्वरी समाज के लम्बे समय से चलते आ रहे रीति-रिवाज, धार्मिक मान्यता, आचार-विचार, खान-पान, तीज-त्योहारों का जिससे समाज एकरूप बना हुआ है, अन्तर्जातीय विवाहों के कारण धीरे-धीरे लोप एवं सामाजिक संगठन के बेमाने एवं समाज के अस्तित्व की ही समस्या।

(इ) विवाह में प्रेम की प्रमुखता से जीवन की ओर देखने के दृष्टिकोण में परिवर्तन, सुख व मोह की महत्ता एवं व्यक्तिवाद की प्रभुता जिससे परिवार में असंतुलन एवं बिखराव।

(ई) पारिवारिक अनुशासनहीनता को मान्यता व स्वीकारोक्ति जिस कारण आने वाली पीढ़ी अनुशासनहीनता की शिक्षा अपने पारिवारिक व राष्ट्रीय जीवन में प्रारम्भ में ही प्राप्त कर लेती है।

(उ) लड़के एवं लड़की की अलग-अलग जीवन पद्धति होने के कारण वैवाहिक बन्धन पश्चात् विवाहोत्तर जीवन पद्धति एवं संस्कारों में समरसता व एक रूप होने में कठिनाई एवं अन्ततः माहेश्वरी समाज के प्रचलित संस्कारों का ह्रास।

(ऊ) अन्तर्जातीय विवाहित लड़के/लड़की का परस्पर पारिवारिक प्रसंगों में परिजनों की एवं सांस्कृतिक एकरूपता का अभाव तथा उनकी सन्तानों का ननिहाल परिवार से अलग व कटे रहने की समस्या।

अन्तर्जातीय विवाह की रोकथाम हेतु कुछ सुझाव :

(अ) विवाह हेतु लड़की की उम्र १८ से १९ एवं लड़के की २२ से २३ ही योग्य है। लड़की को स्नातक या अधिक शिक्षा पूर्ण कराने का दायित्व विवाह पश्चात् ससुराल पक्ष को लेना चाहिए। विवाह पश्चात् शिक्षा का क्रम चालू रखने में पति व ससुराल परिवार को सहयोग देने का आग्रह करना चाहिए लड़के एवं लड़की में चार-पाँच वर्ष का अन्तर समरसता एवं सुखी पारिवारिक जीवन हेतु पोषक है। बेटी को पढ़ाना या बहू को पढ़ाना समान है। विवाह पश्चात् बहू की शिक्षा चालू रखना संभव है। लड़के/लड़की विवाह पश्चात् दो/चार वर्षों के लिए परिवार नियोजन पालन कर सकते हैं। लड़की के विवाह की उम्र १८/१९ वर्ष करने से विवाह पूर्व प्रेम, प्रेम विवाह व अन्तर्जातीय विवाह की संभावनाएं बहुत कम हो जायेंगी।

(आ) माता-पिता एवं अभिभावकों को अपने बच्चों एवं वयस्कों के लिए नियमित समय देकर उनके विचार एवं भावनाओं से सदैव अवगत रहना चाहिए तथा पारिवारिक व सामाजिक मान्यताओं की जानकारी देना व जिज्ञासाओं का समाधान करना चाहिए। इस प्रकार प्रेम की समस्या में उलझने की प्रारंभिक अवस्था में ही बच्चों को सचेत किया जा सकता है।

(इ) घर में आध्यात्मिक, धार्मिक, नैतिक एवं संस्कारयुक्त वातावरण बनाये रखना चाहिए। बच्चों एवं वयस्कों को घरेलू वार्तालाप में सम्मिलित व सहभागी करना

चाहिए जिससे आपसी विचार स्पष्ट करने व आपस में एकमत होने में सुविधा होगी।

(ई) विवाह संबंध में शत-प्रतिशत मन के अनुसार सभी बातें कभी भी नहीं मिल सकती एवं समझौता जीवन में करना ही पड़ता है। अपनी लड़की/लड़के का विवाह संबंध अच्छा मिले यह अवश्य लक्ष्य हो किन्तु जीवन में छोटी-मोटी कम महत्व की बातों पर समझौता करने की तैयारी माता-पिता/ लड़के-लड़की की प्रारंभ से ही होनी चाहिए।

(उ) माता-पिता एवं अभिभावकों को अपने वयस्क लड़के/लड़कियों का मानसिक झुकाव (Orientation) इस ढंग से विकसित करना चाहिए कि उनमें बढ़ती उम्र की आधुनिक विकृतियां प्रवेश न हों एवं प्रेम विवाह या अन्तर्जातीय विवाह की संभावनाओं व सोच से वे दूर रहें।

(ऊ) सामाजिक संगठनों को चाहिए कि समयानुसार दहेज, बेटी/बहू के प्रति व्यवहार में अन्तर जैसे रूढ़िवादी रीति रिवाजों में आवश्यकतानुसार सुधार की पहल करें।

(ए) संगठन के माध्यम से माहेश्वरी समाज की विशिष्टता एवं अन्तर्जातीय विवाह के दुष्परिणामों को समाज एवं विशेषतः युवा पीढ़ी को प्रभावी एवं व्यापक रूप से लेख, परिपत्र, चर्चा, सम्मेलन, नाटक व निबन्ध प्रतियोगिता आदि सभी प्रकार के कार्यक्रमों के माध्यम से अवगत कराना चाहिए।

(ऐ) माता-पिता एवं अभिभावकों को चाहिए कि आपसी प्रेम की घटना की जैसे ही आशंका हो तो शीघ्र संबंधित लड़के/लड़की तथा उनके निकटतम साथियों से सम्पर्क कर उन्हें उचित मार्गदर्शन देकर इसे टालने का प्रयास करें। आवश्यकतानुसार इस हेतु विशेषज्ञों (Counsellors) से भी मार्गदर्शन लेना चाहिए।

भ्रूण हत्या

यह एक अभिशाप एवं कलंक हमारे समाज एवं परिवार के लिए है। इसे तत्काल रोकना ही चाहिए। उपस्थित भाईयों एवं बहिनों को मेरा सुझाव है कि उन्हें आज ही शपथ लेनी चाहिए कि हम अपने परिवार में भ्रूणहत्या नहीं होने देंगे। मेरे विचार से यह एक मिथ्या कल्पना है कि लड़का हमारा वंश चलायेगा व हमारे व्यापार एवं परिवार को सम्बल देगा। आधुनिक अनुभव तो यह बता रहा है कि माता-पिता का प्रेम लड़कियों के प्रति अधिक होता जा रहा है एवं लड़को एवं बहुओं के साथ समस्याएं हैं। आज के समय में बहुओं को सम्भालना कठिन है। आवश्यकता इस बात की है कि प्रत्येक परिवार में तीन संतानें हों। हमारा समाज एक संस्कारी व व्यापारी समाज है एवं हमारा समाज एक प्रबुद्ध समाज है जिसमें तेजस्वी व्यक्तित्व के धनी लड़के / लड़कियां ही पैदा होती हैं। तीन सन्तान से हमारे देश व समाज की भी अधिक उन्नति होगी। आप सभी को मालूम ही है कि पूरे भारतवर्ष में एवं कुछ प्रांतों में लड़कियों की संख्या लड़कों की अपेक्षा कम है। माहेश्वरी समाज में तो आज से १५-२० वर्ष पहले के आंकड़े ही बताते थे कि १०० लड़कों के पीछे मात्र ६० लड़कियां ही उपलब्ध हैं। इसलिए भी समाज में लड़के कुंवारे रहने अवश्यंभावी हैं।

वृद्ध परिवारजनों Senior Citizens की समस्याएं

Senior citizens की समस्या

Senior Citizens की समस्या एक नई उभरती समस्या है। व्यापार / उद्योग Management के तरीके में भारी बदलाव आया है एवं और अधिक आ रहा है। इसलिये Senior citizens को नौकरी एवं व्यापार दोनों से जल्दी Retire होना पड़ रहा है। व्यापार में यदि व्यक्ति खुद Retire नहीं होता तो उसका लड़का उसको Retire होने की सलाह देगा क्योंकि व्यापार व हिसाब करने के तरीके में भारी बदलाव आ रहा है। ऐसी अवस्था में Senior Citizens क्या करें? घर में बेटे-बहू से ताल-मेल के प्रश्न उपस्थित हो रहे हैं। Senior Citizens के रहने के तरीके आधुनिक बहुओं को presentable नहीं लगते। यदि Senior Citizens दिनभर घर में रहें तो आधुनिक बहुओं को privacy नहीं मिलती। अपनी सहेलियों को घर नहीं बुला सकती। कुछ बहुओं को बच्चों के साथ Senior Citizens का व्यवहार व वार्तालाप अच्छा नहीं लगता। दूसरी तरफ अधिकांश Senior Citizens के पास अपना पैसा नहीं होता। इसलिये बेटे-बहुओं पर निर्भर होना पड़ता है। जैसी उनकी स्वीकृति व राय मिलती है वैसा ही लेना-देना, खर्च, दवा, दान कर सकते हैं। समय काटना सवेरे से शाम तक भारी होता है। अकेला पुरुष अथवा स्त्री हो तो boredom होती है। मुम्बई जैसे बड़े शहरों में Flat छोटे होते हैं, इसलिए रहने के लिए अलग कमरा भी नहीं हो सकता। उच्च-शिक्षा प्राप्त लड़के job के लिए दूसरे शहरों में जाने को बाध्य होते हैं तो गाँव में उन्हें अकेलापन निभाना पड़ता है। शहरों में अकेला रहना भारी भी होता है एवं मुम्बई जैसे शहर में खतरा भी होता है। इन सब मानसिक समस्याओं के कारण depression व आत्म-हत्या की स्थिति बनती है अथवा बन सकती है।

इन सब समस्याओं का समाधान खोजना व्यक्तिगत, बेटे-बहू एवं सामाजिक संगठन सभी की जिम्मेदारी है। सर्वप्रथम व्यक्ति को प्रारम्भ से चिन्तन करना चाहिए। व्यक्ति को savings प्रारम्भ से वृद्धावस्था के लिए करनी चाहिए। आवश्यक धन वृद्धावस्था में मिले इस प्रकार savings व investment करते रहना चाहिए। वृद्धावस्था तो प्रत्येक व्यक्ति को अवश्यम्भावी है। Planning प्रारम्भ से करने से ही भविष्य सुरक्षित व सुविधाजनक होगा। प्रत्येक व्यक्ति को अपने प्रारम्भिक जीवन काल

से कुछ hobby एवं धार्मिक व सामाजिक गतिविधियों में रुचि लेनी चाहिए। जीवन के प्रारम्भिक काल में समय कम मिलता है इसलिए शनिवार, रविवार व छुट्टियों के दिनों में ऐसे कार्यक्रमों से जुड़ सकते हैं। ऐसी गतिविधियाँ कम समय से पूर्णकाल के लिए की जा सकती हैं। इन गतिविधियों से कभी Retirement नहीं लेना पड़ता। बल्कि ऐसी गतिविधियों में व्यक्तियों की कमी रहती है। जो ऐसी गतिविधियों में समय देते हैं, उनकी इज्जत की जाती है। कोई व्यक्ति Retire होने के बाद ऐसी गतिविधियों में लगना चाहे तो Post खाली नहीं मिलती, साथही वे Fit भी उसमें नहीं होते। unwanted होते हैं।

Senior Citizens को अन्य Senior Citizens से सम्पर्क करते हुए सुबह-शाम साथ में एकत्र होना, आपसी वार्त्तालाप करना, मन्दिर दर्शन व भजन कार्यक्रमों में सहभागी होना चाहिए। साथ ही मन्दिर आदि के लिए आवश्यक सुविधाओं हेतु धन-संग्रह व व्यवस्था में अपना समय लगा सकते हैं। तीर्थ-यात्रा हेतु भी उनके साथ कार्यक्रम बना सकते हैं। वृद्धावस्था में बीमार न हों इसलिए स्वास्थ्य पर ध्यान बचपन से ही देना जरूरी हे। बीमारी एवं खासतौर से बड़ी बीमारी जैसे, दमा, Diabeties, Heart, Blood-pressure से बचने व सावधान रहने व Control करने पर ध्यान देना चाहिए क्योंकि वृद्धावस्था में बीमारी अधिक तकलीफ देती है। हाथ से सेवा करने का जमाना खतम हो गया है। अशक्त आदमी क्या करे? सेवा करनेवाली दैया / नौकर मिलते नहीं। Hospital महंगे होते हैं। इन सब तकलीफों, समस्याओं व असुविधा के कारण वृद्धाश्रम बनाने व वहां Senior Citizens को भेजने / रहने की, सलाह / मानसिकता बन रही है। यह स्थिति दुखद भी है एवं उचित भी नहीं लगती। परन्तु ऐसा लगता है कि यही रास्ता अपनाना होगा।

Senior Citizens परिवार की धरोहर हैं। उन्हें आदर सहित संभालने की जरूरत है। परिवार छोटे होते जा रहे हैं। घर में अनुभवी व्यक्ति की जरूरत होती है। पति-पत्नी में मनमुटाव को मिटाने में भी सहयोग मिलता है। पति-पत्नी को घर से बाहर जाना हो तो बच्चों व घर की संभाल होती है। गाँव के बाहर पीहर / भ्रमण में जाने पर भी बच्चों व घर की संभाल होती है। छोटे बच्चों पर अधिकांश माँ-बाप का अनुशासन व Home work का ही आग्रह रहता है। दादा-दादी से छोटे बच्चों को प्यार मिलता है। दादा-दादी की शुभकामनाएँ परिवार की सुख-शान्ति में योगदान करती हैं।

गाँव निवासी लड़कों के विवाह की समस्या

गांव में ३० या अधिक उम्र वाले लड़कों की विवाह की जो समस्या है वह कम लड़कियों के कारण तो है ही। बड़ा कारण तो यह है कि गांव की लड़कियां भी गांव में विवाह करना नहीं चाहती। मुझे यह बात कठिन लगती है कि लड़कियों को समझाया जाय कि वे गांव के लड़कों के साथ विवाह करने के लिए तैयार हों। मेरा व्यक्तिगत सुझाव है कि इस तात्कालिक समस्या का तत्काल समाधान कराना

आवश्यक है। यदि बढ़ी हुए उम्र के हमारे लड़कों का विवाह नहीं हुआ तो वे भटकेंगे, गलत रास्ते जाएंगे, कोई बड़े हादसे में फंसेंगे और इससे उनके एवं अन्यों की पारिवारिक सुख-शांति में विघ्न होगा। मेरे विचार से माहेश्वरी समाज से नजदीकी विचारधारा, संस्कृति, खान-पान रखने वाले इतर समाज से विवाह सम्बन्ध करने की हमारे संगठन को छूट देनी चाहिए। यदि समाज आज अन्तर्जातीय विवाह स्वीकार करता है तो इस तरह के विवाह को स्वीकृति क्यों नहीं दी जा सकती ? इस संदर्भ में आप याद करें कि महाभारत काल में ऐसी ही समस्या के समाधान हेतु नियोग जैसी प्रक्रिया अपनाई गई थी।

भाईजी के प्रति विविध मनोगत

मेरा सानिध्य परिवार के सदस्यों में पूज्य दादाजी लाधूरामजी से प्रारंभ हुआ,-- उनका जीवन, न केवल प्रेरणा दायक रहा था , बल्कि आज भी है -- मैं ५०-६० वर्षों के उपरांत भी अपने बच्चों के साथ उनके जीवन मूल्यों की चर्चा करता हूँ

२. जीवन मूल्यों में भाईजी श्रीरामजी ने दादाजी के पद चिन्हों पर चलते हुए शांत एवं बड़प्पन का जीवन व्यतीत किया

३. ठीक दादाजी लाधूरामजी की तरह निःस्वार्थ भाव रखते हुए , स्वयं को पीढ़ी का अग्रज , वरिष्ठ सदस्य , मानते हुए , दिन प्रति दिन आने वाली आवश्यकताओं को शांत चित्त से समाधान करते रहे

उनके किसी भी कदम में कभी भी ऐसा देखने में नहीं आया कि यह कार्य उन्होंने निजी स्वार्थ के लिए किया था

४. परिवार की परिभाषा उनके शब्द कोष में संकुचित कुछ लोगों तक सीमित नहीं थी -- वे सर्वदा वृहद् परिवार की बात करते थे

५. समस्या या विषय गांव का हो , चाहे समाज का हो, अपना पूर्ण योगदान, यथाशक्ति तन, मन, धन से करने में कभी नहीं रुकते थे

६. आभार व्यक्ति के लिए कहूं तो महसूस ही की जा सकती है , भाषा में कहने , लिखने के लिए शब्द व्यक्त नहीं कर पाएंगे

७. वृहद् परिवार के अलावा, विशेषतया बृहन्मुंबई का माहेश्वरी समाज एवं गांव जसवंतगढ़, भाईजी श्रीरामजी की निस्वार्थ सेवाओं के लिए सदा ऋणी रहेगा

लक्ष्मीनारायण तापड़िया

श्री जयकृष्णजी तापड़िया द्वारा जसवन्तगढ़ गांव में आयोजित सभा में श्रद्धांजलि उद्‌गार

आज मैं भाईजी श्रीरामजी को याद करते हुये, श्रद्धांजलि के रूप में, श्रीराम भाईजी के साथ के अपने कुछ अनुभव बता रहा हूँ। लादूरामजी दादाजी के बाद यदि किसीने परिवार का नाम ऊँचा उठाया तो वे श्रीराम भाईजी ही थे। उनकी विशेषताओं का वर्णन करना सूरज को दीपक दिखाना जैसा होगा। ऐसी अनेक घटनाओं का उल्लेख, किया जा सकता है जो उनकी महानता को दर्शाता है।

हर बड़े–छोटे गाँवों–शहरों में माहेश्वरियों की एक से अधिक संस्थाएँ हैं। किन्तु भाईजी के प्रभावशाली अनूठे, व्यक्तित्त्व के कारण आज भी इस महानगर में 'माहेश्वरी प्रगति मण्डल' एक ही संस्था है। मण्डल के एक पदाधिकारी के मुँह से सुना है कि 'हमारी ट्रेन के हमलोग तो डिब्बे हैं, इंजिन तो श्रीरामजी ही हैं।'

उन्होंने मुम्बई में 'माहेश्वरी प्रगति मण्डल' में विविध विषयों में ऐसी अनूठे व्यवस्था की कि पूरे भारत की सभी संस्थाएँ मुम्बई मॉडल को अपनाना चाहती हैं।

उन्होंने समाजसेवी मधुश्री काबराजी को सहयोग के रूप में कामपर लगाया, किन्तु उनकी लेखनीपर अंकुश नहीं लगाया। मुझे यह सोच अनूठी लगी।

वृहद् तापड़िया परिवार को एक दृढ़ बन्धन में बांधकर रखने में भाईजी का बहुत बड़ा योगदान रहा है। उनका संकल्प था कि हमारा वृहद् तापड़िया परिवार एकजूट रहे– दृढ़ बंधन में बंधे रहे। इस सोच के आगे वे कुछ भी कुर्बानी करने के लिये तत्पर रहते थे। इस अपार सम्पदा का जितना मोल किया जाय उतना कम है।

मेरे एक भांजे ने, अपनी मां से कहा 'मां तुम इसलिये विशेष हो क्योंकि मामाजी श्रीरामजी की, तुम बहन हो'। मेरी भुवाजी के परिवार के मेरे कई भाई अनेकों बार, अनेक शब्दों में श्रीराम भाईजी के अनूठे व्यक्तित्व की, सराहना करते रहे हैं।

भाईजी 'जिन्दा–दिल' थे। संगीत में भी उन्हें गहरी रुचि थी। स्वतः गीत गाना भी बहुत पसंद था। वे स्वयं को अपने पोते के 'ओबीडियन्ट' दादाजी मानते थे।

भाईजी बड़े सुलझे हुये विचार के और शिक्षा प्रेमी भी थे। 'हिन्दी विद्या भवन' स्कूल के सेक्रेटरी थे। राजस्थान में भी अपने गांव में, गहरी रुचि के साथ माता व पिता के नाम पर, विद्यालय चला रहे हैं।

अपनी मातृभूमि जसवन्तगढ़ गांव से बेहद लगाव था। इस मातृभूमि में शिक्षा प्रसार–प्रचार में इतनी गहरी रुचि थी कि उसे मैं उनका अनुज ही समझ सका हूं। विद्यालय भवन उनकी इस गहरी रुचि का एक छोटा–सा नमूना ही है।

गांव की गौशाला के प्रति वे समर्पित थे। मुम्बई से जसवन्तगढ़ की दूरी के वावजूद और अपनी ढ़लती उम्र और मध्यम स्वास्थ्य के बावजूद उन्होंने गौशाला का अध्यक्ष पद संभाला।

वैसे तो आप सब पूज्य भाईजी को श्रद्धांजलि देने यहां एकत्र हुए हैं, पर एक सूचना आपको इस मौके पर देना गलत नहीं होगा। भाईजी जब मृत्यु शैयापर थे और सांस लेने में भी तकलीफ हो रही थी, उस स्थिति में भी जसवन्तगढ़ को वे भूले नहीं और काग़ज पर लिखकर अपनी एक इच्छा व्यक्त की। वह इच्छा क्या थी? वह इच्छा यह थी कि जसवन्तगढ़ की गौशाला को उनकी तरफ से 15 लाख रुपये का अनुदान दिया जाय। गौशाला के प्रति उनका इतना गहरा अनुराग था।

आपने सत्युग के श्रीरामजी की कथा सुनी है, किन्तु इस कलियुग में भी मैंने श्रीरामजी को देखा है और आज उनकी कथा सुनाई है।

२७ जुलाई २०१४

उपस्थित सभी गुरुजनों माताओं बन्धु भगिनी को मेरा प्रणाम

श्रीरामभाईजी के बारे में जितनी कुछ भावनायें व्यक्त की गईं और उससे कई गुनी जो समयाभाव के कारण व्यक्त नहीं की जा सकी, उसके बाद मेरा भाईजी के बारे में कुछ कहने का क्या औचित्य है यह पूछें तो उत्तर यही है कि वे तो एक अथाह सागर थे। महावैज्ञानिक न्यूटन के शब्दों में हम सब तो भाईजी रूपी सागर के किनारे खड़े चन्द सीप मोती चुग रहे हैं। मैं कछ ऐसे मोती आपके सामने रखना चाहूंगा जो भाईजी के सामाजिक स्वरूप से अलग उनका स्वरूप है।

गत २४ जुलाई को जो श्रद्धांजलि सभा हुई उसका पहला ही भजन था वैष्णव जन तो तेने रे कहिये जे पीड़ पराई जाणे रे। मैं एक एक लाइन को टेली कर रहा था कि भाईजी पर वे सारी बातें फिट हो रहीं थीं। परदु:खउपकारी, निरभिमानी, समदृष्टि, तृष्णात्यागी, सत्यवादी, परधन न छूने वाला, सबकी वन्दना करने वाला, निन्दा न करने वाला, वाणी काया मन से निश्छल, मोहमाया से दूर, वैराग्यवान, निर्लोभी कपटरहित आदि आदि सच्चे वैष्णव के सारे ही तो लक्षण उनमें मौजूद थे। भाईंजी का सबसे बड़ा गुण यह था कि उनसे मिलने वाला हर व्यक्ति उनका अपना था। अपनेपन का दायरा जो आज में और मेरे बच्चे तक सिमट कर रह गया है वह भाईंजी के लिये परिवार, बृहद परिवार, समाज व देश की सीमाओं को लांघता हुआ वसुधेव कुटुम्बकम् तक पहुंचा हुआ था। निरीह प्राणियों के प्रति भी इतनी करुणा थी कि एक बार करीब २० घायल ऊंटों को बम्बई से राजस्थान तक ट्रकों में पहुंचाने का बड़ा खर्च वहन किया।

भाईजी का सबसे विराट स्वरूप तब दीखता था जब कोई पहाड़ सी बड़ी विपत्ति आ पड़ती थी जिसका हल नज़र नहीं आता था। उनके आत्मविश्वास के सुमेरु पर्वत के सामने और कन्धे पर उनके वरद हस्त के सामने वह विपत्ति बौनी हो जाती थी। विपदिधेर्यमथाभ्युदये क्षमा वाली सूक्ति उनपर पूरी लागू होती थी। दुनिया भर की पारिवारिक सामाजिक आर्थिक विवाद व समस्यायें उनके पास तब पहुंचती थीं जब सारे दिग्गज हार चुके होते और एक कशल सेनानायक की तरह वे उससे ऐसे जूझ पड़ते कि समस्या घुटने टेक देती। उन्होंने कितने लोगों की समस्याओं को सुलझाया यह रिकॉर्ड तो उनके साथ ही चला गया। उसके ५ प्रतिशत से अधिक हममें से किसी को भी नहीं मालूम। इसी तरह आर्थिक विपन्नता में कितने लोगों के आंसू उन्होंने चुपचाप पोंछे यह भी कोई नहीं जानता।

विपश्यना की जो गंगा भारत से लुप्त हो गईं थी उसे वापिस भारत में लाकर उसका विश्व स्तर पर प्रसार करने का भगीरथ कार्य तो पूज्य गुरूजी गोयनकाजी ने किया पर उसमें जिन लोगों ने मुख्य सहायक की भूमिका निभाई थी उनमें भाईजी एक थे।

आधुनिक मीडिया यानी फिल्में टीवी अखबार पत्रिकायें होर्डिंग जो दिन पर दिन अश्लीलता की होड़ सी कर रहे हैं उसके दुष्परिणाम के बारे में भाईजी बहुत व्यथित रहते थे। उसपर लगाम लगाने के लिये उनकी ही प्रेरणा से हमारी संस्कृति नामकी संस्था बनी जिसपर भाईजी का पूरा वरद हस्त रहा।

समाज सुधार के दौर में उन्होंने भी इस प्रतिज्ञा को धारण किया कि ५० से अधिक की बारात न ले जायेंगे न उसमें शामिल होंगे। इसके लिये मेरे विवाह के मुख्य कर्ताधर्ता होने के बावजूद वे मेरी बारात में नहीं गये और फिर भी मुझे परिवार की एकता का वास्ता देकर बारात में जाने के लिये मनाया।

स्वास्थ्य के प्रति उनकी जागरूकता अनुकरणीय थी। वे हमसब से अधिक स्वस्थ थे और सभी को स्वास्थ्य के बारे में प्रेरणा देते रहते थे।

हमारे घर पर पोते पोतियों के वे सर्वाधिक प्रिय बड़ेदादा थे क्योंकि भाईजी उनके सर्वाधिक आज्ञाकारी थे।

हम परिवारजनों ने कितने पुण्य किये होंगे कि हमें उनकी छत्रछाया मिली। जो कुछ मार्गदर्शन व मदद उनसे हम सबने ली उसके अलावा कितना कुछ हम सबने उनसे अव्यक्त रूप में ग्रहण किया!

आज पूरे माहेश्वरी समाज में तापड़िया परिवार की जो प्रतिष्ठा है उसमें काफी बड़ा श्रेय भाईजी को है। इस कमाई की कीमत कौन आंक सकता है ? हां, हमें आज यह जरूर एहसास हो रहा है कि हम उनकी इस कमाई को अर्थात् तापड़िया परिवार की इस प्रतिष्ठा को कैसे उसी ऊंचाई पर रख पायेंगे।

२४ ऑक्टोबर १९८८ पर उनकी ६०वीं वर्षगांठ पर हम सबने बड़ा आग्रह किया कि हम इसका उत्सव मनाना चाहते हैं पर उन्होंने दृढ़तापूर्वक इसे अस्वीकार कर दिया। इसके पीछे की उनकी फिलॉसोफी आप सब जानते हैं।

समाज के कई बन्धुओं का यह अनुभव रहा कि धुआंधार बहस के बाद भी जब कभी किसी विषय में भाईजी का मत औरों से अलग होता था तब आगे चल कर भाईजी ही सही साबित होते थे। यह उन्होंने अपने अन्त समय में भी सिद्ध कर दिया। जब बीमारी में एक्स रे में काफी दिन बाद सुधार दीखा तो हम सब उछल पड़े। पर भाईजी ने कह दिया कि तुम सब व डॉक्टर कुछ भी कहो, मेरे पास अब सिर्फ ५ दिन बचे हैं और मेरी पूरी तैयारी है। मुझे घर ले चलो। आखिर वे ही सही साबित हुए।

भाईजी हमें छोड़कर नहीं गये, नहीं जा सकते। हम परिवार वाले ही नहीं, यहां बैठे इतने लोगों के दिल में वे हमेशा हमेशा मौजूद रहेंगे और मार्गदर्शन देते रहेंगे। आज हम सब जो यहां श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये एकत्र हुए हैं वह भाईजी के पास अवश्य पहुंचेगी यदि मण्डल अपनी एकता को अक्षुण्ण रख प्रगति पथ पर कदम बढ़ाता रहेगा।

अन्त में पूरे तापड़िया परिवार की ओर से यह कहना चाहूंगा कि आपने हमें आमन्त्रित कर जिन भावपूर्ण शब्दों में भाईजी के प्रति अपना अगाध प्रेम दर्शाया उसके लिये कृतज्ञता कैसे व्यक्त करूं ? मेरे पास शब्द नहीं हैं।

जयप्रकाश तापड़िया

हम बड़े भाईजी से क्या क्या बातें बहुत कम सीख पाये

✧ मैं बचपन में पूज्य लादूरामजी दादाजी के सम्पर्क में बहुत थोड़ा सा आया था पर उनके विशाल व्यक्तित्व के बारे में जानकारी बहुत बाद में मिली। आन मैं महसूस करता हूं कि लादूरामजी दादाजी के व्यक्तित्व के महान पहलुओं को परिवार के सभी बड़ों ने कम ज्यादा आत्मसात जरुर किया है पर सबसे अधिक यदि किसी ने आत्मसात किया है वो वे बड़े भाईजी हैं।

✧ भाईजी की पहली विशेषता है बड़ा दिल या उदार दिल । जीवन भर उन्होंने दिया ही दिया है। मदद मांगने वाले को धन दिया है, समय दिया है, दिलासा दिया है, स्नेह दिया है। मदद लेने वाला भले थक जाय, पर भाईजी देते नहीं थकते।

✧ भाईजी की दूसरी विशेषता है सच्चाई का मार्ग। सच्चाई के रास्ते पर कई बार आर्थिक नुकसान होता है। थोड़ा या झूठ बोलकर काफी समस्याओं से बचा जा सकता है पर भाईजी सच्चाई को पकड़े रहने से आई तकलीफ या नुकसान को सहन कर लेते हैं।

✧ भाईजी की तीसरी विशेषता है झगड़े से दूर रहना और दूर रहने की सलाह देना । बड़ा नुकसान या अन्याय सहन कर के भी झगड़े को बचाना। अधिकार की खींचतान या भावताव में भाईजी दबने, अन्याय को सहन करने, बड़ी कीमत चुका कर भी सुलह कर लेने में जीत मानते हैं।

✧ भाईजी की चौथी विशेषता है पद व प्रसिद्धि के प्रति अनासक्ति । बड़े बडे दानी भी प्रसिद्धि के स्वाद को छोड नहीं पाते। भाईजी के दान की जानकारी कोई लेनेवाला बता दे तो ही मालूम पड़ती है बाकी नेकी कर कुएं में डाल दी जाती है।

✧ भाईजी की पांचवीं विशेषता है स्वास्थ्य की जागरुकता और स्वास्थ्य की सलाह देते रहना। यह भाईजी की हॉबी है। ८७ वर्ष की उम्र में उन्होंने खुद का स्वास्थ्य जो कायम रखा है वह दांतों तले अंगुली दबा लेने काबिल है।

✧ भाईजी की छठी विशेषता है सबके प्रति समभाव । किसी के अति दूरी और किसी के प्रति गलत नजदीकी यह भाईजी के स्वभाव में नहीं है। इसीलिये तो लोग पूरे विश्वास के साथ अपने झगड़े निपटाने उनके पास आते रहते हैं।

✧ भाईजी की सातवीं विशेषता है प्यार व अपनापन का विशाल दायरा। पूरा तापड़िया परिवार तो उनका अपना है ही, सभी भुवाओं का, बहनों का, बेटियों का पोतियों का परिवार भी उनका अपना है। पूरा जसवन्तगढ़ उनका अपना है। बम्बई का माहेश्वरी समाज तो उनका अपना है ही, पूरे भारत का माहेश्वरी समाज भी उनका अपना ही है निसके लिये वे अपनी सुविधा असुविधा का खयाल न करके आधी रात को भी उनके सुख दुख में शरीक होने के लिये तैयार हैं। इसी का नतीजा है कि सभी उन्हें अपना पापाजी ही मानते हैं। प्यार के आवेग में भावुक होकर गला रुंधने व आंखें भर आने का दृश्य कई बार हम सबने देखा ही है।

विशेषताओं की लिस्ट तो बहुत लम्बी है पर चूंकि भाईजी अपनी बड़ाई सुनना पसन्द नहीं करते इसलिये अधिक साहस नहीं कर यहीं हमारी वाणी को विराम दे रहे हैं।

श्री राम भाईजी के बारे मे मेरे अनुभव

श्री राम भाईजी सही मार्ग दर्शक सर्व हितकारी व अपार अनुभवो के धनी थे। उनके साथ जुड़ी हुई दो घटनाओ का मैं उल्लेख करना चाहूंगा।

१) मैं इण्टर साइंस (उस समय के हिसाब से बाहरवीं कक्षा) पास करने के बाद बम्बई में आया । मैंने श्री राम भाईजी से आगे बी.एस सी करने की इच्छा जाहिर की तो उन्होंने कहा कि तुम व्यापारिक घराने से हो तथा बी.एस सी करके क्या कोई टीचर बनोगे या आगे एम.एस.सी भी करलोगे तो ज्यादा से ज्यादा प्रोफ़ेसर बन जाओगे। यह तुम्हारे योग्य नहीं है। तुम्हे कॉमर्स पढ़ना चाहिए और उनके परामर्श के अनुसार मैंने बी.कॉम किया। मुझे अपने व्यवसाई जीवन में बी.कॉम की अकाउंट की पढ़ाई अपार उपयोगी सिद्ध हुई। बाद में श्रीमद्भागवत् गीताजी से भी सीखा कि प्रत्येक मनुष्य को अपने धर्म के अनुकूल ही आचरण करना चाहिए। श्रीराम भाईजी के विचार गीताजी की शिक्षा के पूर्णरूप से अनुकूल थे व यह शिक्षा प्रत्येक के लिए आचरण योग्य है।

२) मेरा दूसरा अनुभव भी व्यापार सम्बन्धी है। यह सन १९६०-६१ के आसपास की बात है। उस समय हम लोग पावरलूम से कपड़ा बनवा करके बेचते थे। उस वर्ष कपड़े में पड़ता बहुत अच्छी थी और मैं चाहता था कि ज्यादा से ज्यादा कपड़ा बन सके। परन्तु संयोगवश जिस मिल का ताना (वार्प) ख़रीदा था उस मिल ने वार्प पर साइज़िंग ज्यादा कर दी थी इस कारण धागे कड़क हो गए और लूमों पर कपडा बनाते समय धागे टूट जाते थे। इस कारण कोई भी कारीगर हमारे लिए कपडा बनाने को तैयार नहीं था। मैंने इसका दोष आढ़तिया का समझा कि वे हमारा कपड़ा नहीं बना करके दूसरे का कपड़ा बना रहे है। उस कमाई के समय को हाथ से जाते देख कर मैंने किसी दूसरे आढ़तिया की तलाश की। कुछ लोगों से पूछने पर एक दूसरे आढ़तिये का नाम सामने आया। उनकी बाजार में एक बड़ी दुकान भी थी अत: मैंने अपने काम को उन्हें देने के बारे में उनसे बात की। उनसे हर खर्चे का लिखित में खुलासा भी कर लिया परन्तु उनको धागे सप्ताई नहीं किये। उनसे कहा कि बम्बई जाने के बाद में फ़ाइनल करूंगा। इस बीच में मालेगाँव के अन्य परिचित लोगो से नये आढ़तिये के बारे में चर्चा की तो कुछ लोगों ने बताया कि अगर आप उनसे धन्धा करते है तो संभल करके कीजिये। इसके पश्चात् जब मैं बम्बई आया तो श्रीराम भाईजी से इसके बारे में पूछा तो उन्होंने मुझसे कहा कि जब कुछ लोगों ने नये आढ़तिये से व्यापार करने पर सावधान रहने के लिए कहा है तो तुमको इसका मतलब समझना चाहिए। उन्होंने बताया कि तुमने सब चीज़ो का भले ही स्पष्टीकरण कर लिया होवे परन्तु अगर तुमने उनको यार्न दे दिया और उन्होंने कपडा या यार्न लौटाया ही नहीं तो तुम क्या करोगे। उन्होंने बताया कि कोई स्पष्ट रूप से किसी दूसरे की निंदा क्यों करेगा। श्रीराम भाईजी ने बताया कि ख़राब का मतलब ख़राब ही होता है और एक बार तुम उनसे सम्पर्क कर

लोगे तो तुम्हारे लाख समझौते होने पर भी आखिर तुम्हे धोखा ही होगा। यह चीज़ जीवन के हर क्षेत्र में लागू होती है । प्रत्येक मनुष्य को सिर्फ अच्छे आदमियों से ही व्यवहार करना चाहिए तथा निन्दित हर व्यक्ति से लेनदेन की बात तो दूर बातचीत का व्यवहार भी नहीं रखना चाहिए।

- लक्ष्मीनारायणजी मून्दड़ा

२००२ मे जब अचानक मुझे सम्भालना पड़ा कि मुझे प्रोस्टेट कॅन्सर है, तो मालूम होते ही जीजाजी से बात की तो उन्होंने कहा कि तुरन्त बम्बई आ जाओ । बम्बई आने के बाद उन्होंने तीन-चार डॉक्टरों को दिखाया व सभी जगह साथ गये। वो बोन स्कॅनिंग, जसलोक हॉस्पिटल के अन्दर, हम लोग एकदम घबराये हुए थे, लेकिन इतनी अच्छी तरह से, शान्ति से उन्होंने टेस्ट करवाये । जसलोक में स्कॅनिंग करके पता चला कि बाहर नहीं निकला हुआ है । उसके बाद भी दो-तीन डॉक्टरों से मिले बिना उन्होंने कोई निर्णय नहीं लिया। उन डॉक्टरों से बात की । फिर डॉ. कुलकर्णी को फायनल किया कि उनसे ऑपरेशन करवायेंगे । हम लोग इतने परेशानी में और इतने चिन्तित थे लेकिन उन्होंने शान्ति से परिस्थिति को अपने हाथ में लेकर हमें चिन्तामुक्त कर दिया।

- मदन मूँदड़ा

" FUFAJI "

The day I cannot forget, lost someone close to my heart......"FUFAJI "...... He was like a father figure not only for me but for everyone he knew. Someone who if not more equally concerned about others as much as his own family, for him all of us are the same.... Need to learn this from him. Learned family values, socialising, to hide worries and tensions behind that everlasting smiling face and loved his free away attitude. He was a guiding star in his own way. Feels very good when someone still asks me " Shreeram ji tumhare own FUFAJI they" and I proudly say YES.

I still remember whenever any proposal came for me and in the biodata his name was mentioned, the other side would not enquire more.... That was his name, fame and pride. I went through a lot in my life but always stood strong and faced boldly was just because of FUFAJI 's inspiration and encouragement he showered on me.

He stayed with pride and left us with pride......... You are missed always !

FUFAJI..... Love you from the core of my heart !

Dolly (Preeti Gilra, cuttack)

We all know Shreeramji was a great man,
I analyze him how he was little above human.
He had the in-built quality of 'YOU ATTITUDE',
That made him reach that altitude.
People came to him for consultation,
He would go all out to give solution.
Be it business, Mandal, Social or School,
He took decision while remaining cool.
He was one of the pioneer for uniting family,
However he was icon of multifamily.
People called him Bhaiji or Papaji,
But he is the one and only my Babaji.

Anup and Seema

पूज्य फूफाजी सदा ही मेरे लिये स्नेह व प्रेरणा के स्त्रोत रहेंगे। उनकी तीक्ष्ण बुद्धि, दूरदर्शिता, व समभाव, ऐसे सद्गुण थे कि किसी भी विपरीत परिस्थिति में उनकी सलाह लिये बगैर मन पूर्ण रूप से आश्वस्त नहीं होता था।

उनकी अनुपस्थिति से जो शून्य निर्मित हुआ है, उसकी क्षतिपूर्ति करने वाला, मुझे तो दूर-दूर तक कोई नज़र नहीं आता।

स्वयं को भुला कर, तन-मन-धन से सदैव दूसरों की मदद के लिये तत्पर रहने वाली उस दिव्य आत्मा को मेरा शत्-शत् प्रणाम।

- सुषमा मोहता

पूज्य जीजाजी (श्रीरामजी तापड़िया) के बारे में कुछ लिखना ऐसा ही होगा जैसे सूरज को दीपक दिखाना ! फिर भी मन के संतोष के लिए इतना ही कहना है कि उनके व्यक्तित्व में एक विशेष आकर्षण था। सामने वाला गलत है, बुराई भी करता है तो भी मुस्कराते हुए सकारात्मक सोच के साथ बात को विराम लगा देते ! सामने वाला सही है, अच्छी सोच वाला है तो उसका धन्यवाद करते ! और सकारात्मक सोच को निर्णायक अंजाम देते ! हाँ एक बात और, मैत्री करूणा को जीवन व्यवहार में उतारते रहते थे , सभी के लिए मंगल मैत्री का भाव रखते थे !! मन सदैव उनकी आत्मीयता से श्रद्धा विभोर रहता है ! यही मेरी उनके प्रति श्रद्धांजलि है !!

श्यामसुंदर मूँदड़ा .

श्री

आदरणीय भाईजी के बारे में जितना भी लिखा जाये वह थोड़ा ही होगा। उन्होंने समाज के लिए इतना कार्य किया है कि लोगों कि स्मृति में हमेशा उनकी यादें बनी रहेगी। उन्होंने अपने दादाजी लादूरामजी व माँ रामप्यारी देवी की तरह पूरे परिवार को स्नेह-सूत्र में बांधने का कार्य किया।

मेरे लिए तो वे अपने माता-पिता की तरह ही थे। मेरे तीन माता-पिता थे। एक ने मुझे जन्म दिया, भाईजी-भौजाइजी ने मुझे संस्कार, शिष्टाचार व रिश्तों का महत्व समझाया। मेरे सासूजी-सुसराजी ने मुझे प्यार दिया जिसे कम ही लोगों को प्राप्त होता है।

ये तो मेरे ननिहाल वालों की खूबी है कि अपने जीवन के ६७ वर्ष व्यतीत होने पर भी मुझे अभी तक तापड़िया परिवार से अत्यधिक प्यार मिल रहा है, उसमें भाईजी-भौजाईजी का योगदान बहुत बड़ा है। वे जब भी मुझसे मिलते या फ़ोन से बात होती तो मैं प्रसन्नता से भर जाती। मैं हूँ तो उनकी भुआजी की लड़की कितु उन्होंने मुझे पुत्री जैसा प्यार दिया। मैं उनके पास ही पली, बढ़ी व शिक्षा पूर्ण की। मेरी ११ वीं में तो वे स्वयं पढाई की ओर ध्यान देते व परीक्षा देकर आने के बाद पेपर के बारेमें पूछताछ करते थे।

केवल मुझे ही नहीं, मेरी माँ व हमारे परिवार को भी उन्होंने बहुत स्नेह दिया। भौजाईजी व बाकी का परिवार भी अभी तक इतना ही प्रेम बनाए रखे हैं। आज के ज़माने में उनके जैसा प्यार व संबंध बनाये रखना मुश्किल है। मुझे जो अपनत्व, घर जैसा माहौल व प्यार ननिहाल में मिला वैसा ही ससुराल में शिक्षा के लिए रहने आये बच्चों को देने के लिए मैं प्रेरित हुई।

मैं अपनी ज़िन्दगी के उनके साथ बिताये हुए अविस्मरणीय अनुभवों को आपसे बांटना चाहती हूँ -

मेरी सगाई होने तक मुझे रसोई का ज्यादा ज्ञान नहीं था। उन्होंने मुझसे रोज दो सब्जी बनवाकर स्वयं की थाली में परोसने के लिए प्रेरित किया जिससे मुझे ससुराल जाने पर रसोई बनाने में सुविधा हो। उन्होंने मुझे पुत्री जैसे सब तरह से मार्गदर्शन दिया।

भोजाइजी ने भी सब तरह के शिष्टाचार सिखाए। मुझे पुरसगारी, मेहमानों की आवभगत व छोटी-छोटी बातें सिखाई।

मेरी बड़ी ननद जो मुझसे उम्र में काफी बड़ी हैं, भौजाइजी ने मुझे समझाया कि उनके साथ आपको अच्छा व्यवहार व प्रेम बनाए रखना है जिससे आपसी सम्बन्ध सुद्धढ़ हो।

मेरे सुसराजी (हनुमानबक्षजी मूंधड़ा) जब शांत हुए तब मैं बहुत भावुक हो गयी थी तब भाईजी व भौजाईजी खास मेरे लिए ठाणे आये। उन्होंने मेरे साथ दो घंटे बिताए व मुझे सब तरह से समझाया व सांत्वना प्रदान की। ऐसा एक बार नहीं अनेकों बार मुझे अनुभव हुआ।

भाईजी के लिए रिश्तों का महत्व बहुत ज्यादा था जिसे निभाने के लिए उन्होंने मुझे व मेरे पति को भी प्रेरित किया। मेरा छोटा पुत्र अजय (हाँगकाँग) में रहता है। उसके पास जाने के लिए मेरे पति ने आना-कानी की तब भाईजी ने पति को समझाया कि अजय की दोनों पुत्रियों के पास जाकर रहोगे तभी पोतियों का आपसे प्रेम व लगाव बढ़ेगा। राजीव व अजय मेरे पुत्रो को भी उन्होंने मार्गदर्शन दिया जिसे बच्चों ने हमेशा याद रखा।

जब जब मुझे मानसिक उलझनों का सामना करना पड़ा तब तब भाईजी व भौजाईजी से बहुत मार्गदर्शन प्राप्त हुआ भौजाईजी तो अब भाईजी की भी कमी पूरी कर रही हैं। उनसे मुझे ज़िन्दगी में इसी तरह प्यार व संबल प्रदान होता रहे। ऐसी कई समृद्ध यादें हैं जो हमेशा मेरे स्मृति-पटल पर अंकित रहेगी।

त्रिवेणी मूंधड़ा, ठाणे

श्री श्रीरामजी तापड़िया

आदरणीय श्री श्रीरामजी तापड़िया से मेरा परिचय माहेश्वरी प्रगति मण्डल के माध्यम से हुआ और मुझे उनके सानिध्य का आनन्द मिला।

मैंने जो विशेषताएं उनमें देखी उनमें मुख्यतया आपकी विनम्रता, शालीनता एवं आपसी विचार विमर्श द्वारा बातो को समझाना आपकी दूरदर्शिता का परिचायक थी !

मण्डल की बैठको में सभी की बात सुनना एवं अपनी बात रखकर सभी को विश्वास में लेते थे !

हर साधारण कार्यकर्ता से लेकर उच्चश्रेणी के कार्यकर्ता के साथ परिवार के सदस्य के रूप में व्यवहार करते थे !

मण्डल भवन के नवीनीकरण का कार्य हो अथवा देश में अकाल, वाढ़ जैसी विपदाओ में आपका हमेशा सहयोग एवं मार्गदर्शन रहता था।

सादाजीवन, उच्चविचार का व्यक्तित्व आपमें था !

सामजिक चिन्तन आपका मुख्य विषय था !

अर्न्तजातीय विवाह, मृत्युभोज, स्वास्थ्य आदि पर आपके विचार स्पष्ट थे !

शादी विवाह का प्रसंग हो अथवा मृत्यु का, आप हर जगह उपस्थित रहते थे !

व्यवसाय में भी बडी दक्षता के साथ संचालन करते थे !

अनुशासन, समयकी पाबंदी, स्पष्टवादिता, कार्यक्षमता, सहनशीलता आदि आपके गुण थे !

मैं समझता हूँ कि समाज उनका सदैव ऋणी रहेगा !

ऐसे उच्च स्तर के ऐसे व्यक्तित्व की क्षतिपूर्ति करना असम्भव है !

आनन्द राठी

लोअर परेल, मुंबई - ४०० ०१३ .

SHRI SRIRAMJI TAPARIA

I have had the good fortune of having met Respected Shri Shriramji Sahab on a number of occasions and more particularly during my working with the Election Committee for the Maheshwari Mahasabha.

Sri Tapariaji was really a man of sound principles, and who ever worked with him really learnt a lot from him. He was an ideal social worker keeping always the interests of the Mahasabha primarily in view. His sincerity was always well recognized. I saw him to be extremely meticulous and systematic in his workings. He was a great leader and kept his team together. I am aware that he contributed a lot to the progress and development of the Maheshwari Samaj not only in Mumbai but also at the National level for a long long time.

I am happy that on the occasion of his second Death Anniversary a book is being released dedicated to his memories and I am sure this publication will work as an inspiration to all in the future.

On this occasion, I express my respect and gratitude for his affection and guidance and wish the publication, all success.

RAMA SHANKAR JHAWAR

दूरदृष्टा भाईजी

श्री श्रीरामजी तापड़िया बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। उनकी विशेषताओंकी लंबी सूची बन सकती है। परंतु उनको प्रभावशाली रूपसे प्रस्तुत करना मेरे बस की बात नही है। उनके व्यक्तित्व का एक पहलू उल्लेखनीय है - ''उनकी दूरगामी सोच।'' उनकी यह विशेषता कार्यकर्ताओंके साथ वार्तालाप में सदा दृष्टिगोचर होती थी। जो भी बात हो उसका दूरगामी परिणाम क्या हो सकता है इसका आकलन करके ही वे सार्थ उनके को कार्य करने की सलाह देते थे। मण्डल की कार्य पद्धति, परिपाटियाँ, नियम उन दूरगामी सोच के जीते जागते सबूत हैं।

सामाजिक कुरीतियोंका निवारण हुये बिना समाज देश की मुख्य धारा से नहीं जुड़ सकता, ऐसी उनकी मान्यता थी। समाज बंधुओंको अपनी सोच बदलने की बात के साथ वे उन्हे संस्कार, संस्कृति को अक्षुण्ण रखने की बात भी कहते थे।

सामाजिक सोच

एक अत्यंत प्रेरणादायी प्रसंग का उल्लेख कर रहा हूँ। १९६७ में भाईजी अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के महामंत्री चुने गये थे। उसी वर्ष किसी कारण से वे नागपुर आये थे। समाज के कुछ लोगों के साथ वे चर्चा कर रहे थे कि नागपुर माहेश्वरी समाजबन्धुओं को मात्र Trading मे नही रहकर Industrial activity में जाना चाहिए। उस दौरान उन्हे बताया गया कि नागपुर में एक माहेश्वरी Engineer युवक ने Factory लगाई है परंतु वह बंद होने कगार पर है। उन्होने उस युवक को बुलाया, उसके unit का निरीक्षण किया एवं आवश्यक सलाह भी दी। Unit अपेक्षाकृत ठीक चल सके इस हेतु भविष्य में सभी सहयोग देनेकी बात भी कही। उन्होने खुलासा किया कि मुझे Unit के Profit/Loss में अधिक रुचि नहीं है परंतु Unit यदि बन्द हो जाता है तो नागपुर माहेश्वरी समाज पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। इस घटना से भाईजी की समाज के प्रति सोच और उनकी आत्मीयता कैसी थी यह स्पष्ट होता है। किन्हीं अन्य कारणोंसे वह युवक Unit को चालू रख नही पाया। वह युवक दूसरा कोई नही था बल्कि मैं खुद ही था। मण्डल की गतिविधियोंमें समाज के संगठन पर आंच आये ऐसा कोई भी निर्णय नही लेने की सलाह देते थे। उनका मानना था कि संगठन सर्वोपरि है।

मृत्यु उपरांत रीति रिवाजोंमें समयानुकुल सुधार किया जाना चाहिए, ऐसा उनका मत था। उसी के चलते मण्डल ने इस विषयपर एक मार्गदर्शिका भी पारित की थी जिसको समाज बंधुओंने काफी सराहा था।

स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता

सन १९८६ की बात है। एक दिन भाईजी ने मुझे बुलाया और मेरे स्वास्थ्य के बारे में जानकारी ली। इस समय मेरा Blood Pressure High कुछ चलता था। उस समय नागपुर में मेरे दो औद्योगिक प्रतिष्ठान थे।

१) राज पाइप्स प्राइव्हेट लिमिटेड जिसमें श्री दामोदरजी लड्ढा मेरे पार्टनर थे।

२) हरिविष्णु पेकेजिंग लिमिटेड जिसमें श्री विष्णुदयालजी सारडा एवं शरदजी शर्मा मेरे पार्टनर थे।

उपरोक्त साथियों के अतिरिक्त मेरे पारिवारिक सदस्य गोविन्द, राधेश्याम बृजकिशोर आदि भी कार्यरत थे।

भाईजी ने मुझसे कहा ''भगवान ना करे पर यदि तुमको कुछ हो गया तो पूरे ग्रुप का भविष्य ही खतरे में पड़ जाएगा। तुझे इतनी समझ होनी चाहिए कि तेरे शरीर का मालिक तू अकेला नही, बल्कि तेरे परिवार वाले और तेरे Partner भी हैं। सेहत ठीक रखना अति आवश्यक है। ''पेलो सुख निरोगी काया''। कितना सही और मौलिक विचार था ?

- बालकिसन मनियार

।। श्री गणेशाय नमः ।।

।। श्री लिखाषण माता नमः ।।

श्री जयप्रकाशजी,

सस्नेह वंदे।

आदरणीय भाईजी श्री श्रीरामजी की स्मृति में एक संस्मरण पुस्तिका प्रकाशित करने का आप के परिवार ने निश्चय किया है यह उपयुक्त एवं अति उत्तम विचार है।

यह मेरा सौभाग्य रहा कि पूज्य भाईजी का सान्निध्य मुझे करीब चार दशक तक मिला।

भाईजी की कार्यशैली एवं समाज के प्रति निष्ठा, कार्यकर्ताओं को जोड़ कर रखना व उनके व्यक्तित्त्व से मैं काफी प्रभावित हुआ। भाईजी का जीवन हम सब के लिए प्रेरणादायक रहा। एक महान संगठन में सबको साथ लेकर चलना। मैंने मण्डल की सभाओं में पाया है कि जब तक सर्व सम्मति ना हो जाय तब तक विचार विमर्श करते रहना और सर्व सम्मति से आगे बढ़ना भाईजी का हमेशा लक्ष्य रहा है।

भाईजी समाज के महान चिन्तक व मार्गदर्शक रहे हैं। भगवान महेश हम सभी को उनके आदर्श जीवन से प्रेरणा लेकर जीवन में आगे बढ़ने की शक्ति प्रदान करें।

पूज्य भाईजी अपने आदर्श व कर्मठ विचारों के साथ भी हमासे मध्य उपस्थित हैं, ऐसा अनुभव लगातार होता है।

- बालकृष्ण रा. लखोटिया

पू. भाईजी के कार्यपद्धति का स्मरणीय अनुभव

१ अपने जीवन के अन्तिम ४/५ वर्षों में पू. भाईजी ने माहेश्वरी प्रगति मण्डल के अन्तर्गत उच्च शिक्षा हेतु भवन निर्माण करने के अथक प्रयास किए।

२ इन प्रयासों में उनका लक्ष्य केन्द्रित हुआ चेम्बूर स्थित एक न्यास (Public charitable Trust) के प्राप्त प्रस्तावपर। प्राप्त प्रस्ताव के अनुसार मुख्यत: चेम्बूर न्याय की जमीन पर उस न्यास द्वारा संचालित विद्यालय के पुराने भवन का नया भवन देना एवम् वर्तमान नियमों के अनुसार available balance FSI का उपयोग मण्डल के शैक्षणिक कार्यों हेतु उपयोग करना।

३ चेम्बूर न्यास से प्राप्त प्रस्ताव पर, भाईजी उच्च शिक्षा हेतु भवन निर्माण के project की feasibility पर चिन्तन मनन एवम् कार्यकर्ताओं के साथ विचार-विमर्श करते रहे। उनके चिन्तन के मुख्य बिन्दु :

३.१ महाविद्यालय में पढ़ाई projection पर विचार। इस हेतु इस field में specialised व्यक्तियों से राय करना एवम् प्राप्त राय पर चिन्तन।

३.२ भवनों के निर्माण हेतु budget एवम् धनसंग्रह पर चिन्तन। संभावित अनुदान दाताओं की सूची पर कार्यकर्ताओं से चर्चा एवम् यह दायित्व निभानेवाले कार्यकर्ता पर विचार विमर्श।

३.३ इस project हेतु नया न्यास बनाने अथवा वर्तमान न्यास के अन्तर्गत ही कार्य करें इस पर सोच विचार।

३.४ नए भवन के plans बनवाने का चिन्तन एवम् उस अनुसार planning करना।

३.५ आवश्यक बिन्दुओं पर कानूनन राय लेना।

३.६ इस प्रकार के सभी विषयों पर कार्यकर्ताओं के साथ निरंतर चर्चा एवम् विचार-विमर्श।

४ चर्चा, मार्गदर्शन एवम् निर्णय हेतु इस विषय को न्यास में प्रस्तुत किया गया। प्रस्ताव पर न्यास में गहरा चिन्तन हुआ। न्यास में विचार आये कि मुम्बई में महाविद्यालयों की उपलब्धता पर्याप्त है। महाविद्यालयों का व्यवस्थापन कार्य भी जटिल है। मुम्बई में समाज के छात्र/छात्राओं के लिए मण्डल का छात्रावास नहीं है। मुम्बई में नोकरी पेशा हेतु आनेवाली लड़कियों के निवास के लिए भी कोई व्यवस्था नहीं है।

५ भाईजी का सदैव चिन्तन रहा कि मण्डल के कार्य collective wisdom इस सिद्धान्त पर होते हैं एवम् होने भी चाहिए। अत: न्यास में आये सर्वमान्य विचारों में सहभागी होते हुये छात्रावास निर्माण का चिन्तन एवम् उस दिशा में कार्य प्रारंभ किया। चेम्बूर के proposal में यह संभव नहीं था। उनका यह प्रयास अधूरा रहा।

६ मेरा सुखद अनुभव रहा कि भाईजी के इन प्रयासों में मैंने उनके निकटतम सहयोगी के रूप में कार्य किया।

७ भाईजी के इन विचारों एवम् कार्यपद्धति ने हमें संगठित रखा है।

९ भाईजी के पत्रों में से संगठन के संकलित सूत्र :

९.१ प्रजातांत्रिक कार्यपद्धति, सामूहिक विचार-विमर्श एवम् सर्वानुमति से निर्णय हमारी कार्यपद्धति की महत्वपूर्ण कड़ियाँ हैं।

९.२ संगठन को एकजुट रखने में समन्वय व compromise की भावना व तैयारी आवश्यक है। वे कहते थे -

"Compromising does not mean that I am wrong and you are right. It means that I value our relationship much more than my views."

९.३ दूसरों की सोच व विचार को जानने, सुनने व समझने का मन रखना।

९.४ साथी कार्यकर्ता की भाषा एवम् बोलने की style हमें पसंद न हो तो भी हमें उस कार्यकर्ता को पूरा मान देते हुए सहृदय उसकी बात सुननी चाहिए।

९.५ आपसी वार्तालाप में कभी-कभी किसी कार्यकर्ता का स्वर व बातों में उत्तेजना आ जाती है। कार्यकर्ताओं को स्वयं धैर्य रखते हुए, समझाकर वार्तालाप को सामान्य बनाना।

९.६ बहस नहीं बल्कि संवाद करते रहना।

१० भाईजी की ये यादें कार्यकर्ताओं को सदैव मार्गदर्शन करतीं रहेगीं।

- भागीरथ लड्डा

आदरणीय श्री श्रीरामजी तापड़िया, जिन्हें माहेश्वरी प्रगति मण्डल के सभी कार्यकर्ता स्नेह एवम् आदर से 'भाईजी' कहते थे, माहेश्वरी प्रगति मण्डल को लगभग ५० वर्षों तक अपनी सेवाएं दी। उनकी देखरेख में दो भवन बने। बोरीवली में भी प्लॉट लिया गया लेकिन इनसे भी ज्यादा महत्वपूर्ण था उनकी कार्यशैली एवं उनके द्वारा कार्यकर्ताओं का समूह तैयार करना। कार्यकर्ताओं को प्रेरित करना। उन्हें समझाना कि स्वयंप्रसिद्धि एवं पद की लालसा नहीं रखनी चाहिए। स्वयंप्रसिद्धि एवं सम्मान कार्यकर्ता न लें। मण्डल के स्वर्ण महोत्सव समारोह में मण्डल के निवेदन को (भाईजी के सम्मान का प्रस्ताव था) नकार दिया था।

अनेक विशेषताओं में एक जो दुर्लभ है :- सामने वाले की बात बिना थके पूरी सुनना, उसका यथासंभव समाधान करना - सभी कार्यकर्ता बिना संकोच उन्हें किसी भी विषय पर सम्पर्क कर सकते थे।

दूसरी :- बिना थके प्रयास करते रहना। अगर बात ठीक है तो उसे बीच में ही थक कर नहीं छोड़ना। उनका यह वाक्य अनेकानेक बार याद आजाता है '' भाई, Batesman किसी Ball पर out हुसी मालूम थोड़ो ही हैं'' - यह वाक्य कितना संदेश दे रहा है!

इस स्मरणिका में अनेक साथियों ने लिखा है - अत: मैं उपरोक्त पंक्तियों में थोड़ा लिखकर अपनी श्रद्धांजलि भाईजी को समर्पित कर रहा हूं।

- विष्णुदयाल सारड़ा

यादों का सफर नामा

दीपक की भाँति जलता है कोई कोई, वृक्षों की भाँति फलता है कोई कोई ।

आदर्शो की बात तो सभी करते है, इस मार्ग पर चलता है कोई कोई ।।

मै सन् १९७९-८० में जयपुर से शिक्षा पूर्ण करके अपने पारिवारिक व्यापार में संलग्न होने हेतु मुम्बई आया। विश्वविद्यालय शिक्षा के दौरान मेरी सामाजिक कार्यों में रुचि उत्पन्न हुई । मुम्बई में आते ही संयोगवश माहेश्वरी प्रगति मण्डल की रजत जयंती समारोह में शामिल होने का अवसर मिला और मैं मण्डल की गतिविधियों में सक्रिय होने लगा।

कुछ ही दिनों की सक्रियता में पू. भाईजी श्री श्रीरामजी तापड़िया का सानिध्य प्राप्त हुवा और कुछ ही महीनों में उनके प्रति श्रद्धा व उनका मेरे प्रति स्नेह स्पष्ट होने लगा । सेवा, सम्पर्क, साधन, अनुभव व उम्र का हमारे मध्य बहुत बड़ा अन्तर था । लेकिन भाईजी ने इसे इतना सहज बना दिया कि मैं उनके प्रति पूर्ण सम्मान रखते हुये मित्रवत भाव से अपने युवा विचारों को खुलकर उनके सामने रखने लगा और भाईजी मुझे सुनने लगे, समझने लगे या यूँ कहूँ, मुझे समाज कार्यों के अनुरूप तराशने लगे ।

माहेश्वरी प्रगति मण्डल, मुम्बई के साथ ही अ.भा. माहेश्वरी महासभा में भी भाईजी के मार्गदर्शन में मेरी सक्रियता बढ़ने लगी अतएव अब लगातार भाईजी से सम्पर्क के अवसर मिलने लगे । मुम्बई में फोन पर निरन्तर वार्तालाप, अनेक बैठकों व कार्यक्रमों में सहभागिता व महासभा के कार्यक्रमों हेतु मुम्बई से बाहर प्रवास के अनेक प्रसंग आने लगे।

समय अपनी गति से चलता रहा और मैं भाईजी के सानिध्य में उनकी सामाजिक विचारधारा को आत्मसात करते हुए मुम्बई व महासभा में गतिमान होकर कार्य करने लगा । मेरे जीवन के अति महत्वपूर्ण करीब ३०-३२ वर्ष भाईजी के पितृतुल्य आशीर्वाद के साथ पूर्ण हुए। भाईजी के व्यक्तित्व की कुछ वो बातें जो सदैव मुझे स्मरण रहेगी।

- पू. भाईजी सदैव मन, वचन और कर्म से समाज के प्रति समर्पित थे। उनकी कथनी और करनी में कतई अन्तर नही था ।
- भाईजी श्रीमंत और सर्वजन में कोई फर्क नहीं करते थे । दोनों के प्रति उनके एक समान भाव रहते थे ।
- माहेश्वरी महासभा में भाईजी के विचारों और कार्यों का बड़ा मान सम्मान था ।
- माहेश्वरी प्रगति मण्डल मुम्बई भाईजी की सामाजिक कर्मभूमि रही । इस संस्था के सिद्धान्तों, कार्यों और विचारों में आपके सामाजिक चिन्तन की पूरी छाप दिखाई देती है।
- प्रजातांत्रिक पद्धति में भी बहुमत के स्थान पर सर्वानुमति बनाना, विरोधी विचारों को मान देना, प्रशंसा और सम्मान से परे रहना, चुनाव के स्थान पर चयन पद्धति, कार्यकर्ताओं को सदैव आगे बढ़ाना, मण्डल के सभी पूर्व अध्यक्षों को सक्रियता से चिन्तन की धारा में जोड़े रखना, कार्यकर्ता के लिये मण्डल में सिर्फ Entry है, यहां Exit नही है, का भाव उत्पन्न करना आदि विचार भाईजी के चिन्तन की ही देन हैं।

- भाईजी के चिन्तन की यह फलश्रुति है कि आज मुम्बई जैसे अति व्यस्त शहर में माहेश्वरी प्रगति मण्डल पिछले ६० बरसों से करीब ५०० कार्यकर्ता और ७५०० सदस्यों के साथ प्रति वर्ष २०० से अधिक कार्यक्रम करता है ।
- मुम्बई शहर में २ विशाल भवनों का निर्माण गिरगांव व अन्धेरी में हुआ है। गिरगांव भवन के उद्घाटन की तिथियाँ निश्चित हो गई । प्रमुख अतिथियों के नाम सहित सूचनाएं प्रकाशित हो गई और ऐसा लगने लगा, भवन का कार्य अपूर्ण ही रहेगा। भाईजी ने कार्य पूर्ण करने का निश्चय लेते हुए मण्डल के निर्माणाधीन भवन में अपना अस्थाई निवास बना लिया और दिन रात कार्यो को गति देते हुए समय पर निर्माण पूर्ण करवा दिया । भाईजी के इस प्रेरणादायी कार्य के आगे पूरा समाज श्रद्धावनत हो गया ।
- सामाजिक सन्दर्भ में अनेक बैठकें भाईजी के निवास स्थान पर होती थी । भाईजी एवम सुमन भाभीजी कार्यकर्ता साथियों के खान-पान का बहुत ही सुरुचिपूर्ण ध्यान रखते थे ।
- भाईजी को गीत संगीत में गहरी रुचि थी। विशेषत: मारवाड़ी गीत - भजन का पूरा आनन्द लेते थे । जब भी कार्यकर्ताओं के साथ रेल यात्रा या प्रवास में साथ होते तो अक्सर कहते थे, ''रमेशजी के गले को ध्यान रखो भाई, आं की आवाज ठीक रहनी चाहे, आं स मारवाड़ी गीत भी तो सुनणा है ।''
- भाईजी समाज की प्रगति व सामाजिक समस्याओं के प्रति गहरा चिन्तन करते थे । इस सन्दर्भ में किसी भी समाचार पत्र, पत्रिका में कोई लेख या समाचार देखते तो उसकी फोटो कापी बना कर साथी कार्यकर्ता को भेज देते थे और समयानुसार उस पर चर्चा भी करते थे ।
- माहेश्वरी भवन में आयोजित अधिकांश बैठकों के बाद भाईजी मुझे अपनी कार से मेरे घर तक छोड़ने आते थे । पूरे रास्ते आज बैठक में चर्चा किस रूप में हुई यही हमारे चिन्तन का विषय रहता था ।
- इतने लम्बे सानिध्य के बाद भी मुझे याद नही कि भाईजी ने कभी व्यक्ति विशेष की बात की हो । भाईजी सदैव सामाजिक चिन्तन व कार्यो पर ही चर्चा करते थे । प्रसंगवस किसी कार्यकर्ता की चर्चा भी होती तो कार्य के सन्दर्भ में ही रहती थी ।

भाईजी के अनेक कार्य, विचार व आदर्श न सिर्फ स्मरण रहेंगे बल्कि जीवन दर्शन की तरह उज्ज्वलता भी बनाए रखेंगे। यादों का सफरनामा शब्दों में बंया करना मुश्किल है । इसे तो आत्मिक अनुभूति की साथ ही महसूस किया जा सकता है ।

पू. भाईजी की आदर्शमय स्मृतियों को वंदन के साथ ।

रमेश मरदा, मुम्बई

भाईजी - एक वैचारिक तत्व

आदरणीय भाईजी स्व. श्री. श्रीरामजी तापड़िया के सानिध्य में मैंने माहेश्वरी प्रगति मण्डल मुंबई में लगभग ३२ वर्ष तक एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप मे कार्य किया । इस कार्यकाल के दौरान के भाईजी के अनेकों संस्मरण मेरे मन मस्तिष्क में संजोये हुए है । मुझे लगता है भाईजी श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा उपदेशित एक सच्चे ''कर्मयोगी'' ही थे क्योंकि उनकी समस्त सोच और रुझान केवल और केवल मात्र माहेश्वरी प्रगति मण्डल मुंबई (मण्डल) के माध्यम से समाज के निमित्त और समाज के लिये ही थी । भाईजी केवल समाज के लिये जिये और समाज में ही विलीन होकर हम सबके मन-मानस में बस गये । भाईजी के वैकुण्ठवास के ८ वर्ष बाद भी, एक पल के लिये भी हम भाई जी को विस्मृत नहीं कर पाये क्यों कि आज भी मण्डल में सामाजिक निर्णयों में दुविधा होने पर, हमें केवल एक ही सोच आती है कि यदि इस समय भाईजी होते तो क्या निर्णय लेते, और हमें अनायास ही सही निर्णय का मार्ग मिल जाता ।

जब भाईजी की याद आती है, तो भाईजी के संस्मरणों की अनेक यादें मन-मानस में एक छोर से दूसरे छोर तक समुद्रीय ज्वार भाटे की तरह टकराने लगती है । समस्त यादों का संकलन संभवत पुस्तक के एक खण्ड (Volume) में भी नहीं समा पाये, अत:कतिपय संस्मरण यहाँ यादगार के रूप में लिखने का प्रयास कर रहा हूँ ।

१. **निर्णयों में ''सर्वसम्मतता'' - समाज को भाईजी की देन**

प्रजातांत्रिक कार्यपद्धति के पालक होते हुए भी, समाज और मण्डल के कार्य की प्रत्येक इकाई में, भाईजी, निर्णयों में सर्वसम्मतता चाहते थे । मेरे दृष्टिकोण से ''सर्वसम्मतता'' मुंबई कार्यकर्ताओं को भाईजी की ही देन है जिसे आज भी हम निभाते आ रहे हैं । एक दृष्टान्त याद आता है वर्ष २००७-०८ का, जब मण्डल विधान संशोधन का प्रस्ताव चल रहा था । मैं विधान संशोधन समिति का संयोजक था । विधान संशोधन के अनेक प्रस्ताव थे, उनमें से एक प्रस्ताव था बोरीवली क्षेत्रीय समिति का पुनर्गठन कर, मालाड और कांदिवली क्षेत्र की अलग समिति, ''मालाड क्षेत्रीय समिति'' के गठन का । बोरीवली क्षेत्र, परिवारों और क्षेत्र की दृष्टि से बहुत विशाल हो गया था और कई स्थानीय कार्यकर्ताओं की भी यही राय थी । कतिपय कार्यकर्ताओं का विरोध था कि यह बोरीवली समिति को टुकड़े करके बाँटने का प्रयास है । जबकि क्षेत्र की विशालता के मद्देनजर यह एक प्राकृतिक प्रक्रिया है । हालाँकि यह व्यवस्थापिका सभा में पास होने के साथ ही AGM में भी २/३ बहुमत से ही पास होनेवाला विषय था, और विरोध करने वाले कार्यकर्ता भी अल्पमत में थे, तथापि भाईजी का मत था कि इस प्रस्ताव को पारित करने के लिये सर्वसम्मतता का प्रयास होना चाहिये । हमने अनेकों मीटिंग उन कार्यकर्ताओं के साथ की परन्तु वे नहीं माने । क्षेत्रों में भी मीटिंग की, सर्वसम्मतता नहीं बन पाई । फिर भी भाईजी ने, अपना प्रयास जारी रखा । और अन्तमें, सभी विरोध करने वाले कार्यकर्ताओं ने भी इस पुनर्गठन के प्रस्ताव मे विवेक देखा और इसकी

आवश्यकता समझी, और इसे मान लिया । परन्तु कुछ व्यक्तिगत कारणों से उनका मत था कि इस प्रस्ताव को एक वर्ष पश्चात् क्रियान्वयन में लाया जाय जिसमें मण्डल को कोई तात्विक दोष नहीं दिखा। अन्तत: मण्डल की दि. १४ जून, २००८ की इजीएम (Extraordinary General Meeting) में ६८४ सदस्यों की भारी ऐतिहासिक उपस्थिति में यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया । ज्ञातव्य रहे कि साधारणतया AGM में ५१ सदस्यों के उपस्थिति के कोरम को भी हमें अनेक सदस्यों को फोन करके बुलाकर पूरा करना पड़ता है ।

२. विरोधी विचारों को मान्यता और स्वीकार्यता

भाईजी का एक बड़ा बड़प्पन था कि उनके सामाजिक विचारों के विपरीत भी कार्यकर्ताओं का मत रहता था तो उसे भी ध्यान से सुनते थे, मनन करते थे, समझते थे, मान देते थे और यथासम्भव स्वीकार करते भी थे । ऐसी एक घटना मेरे साथ भी हुई । भाई जी लड़कियों की नॉर्मल शिक्षा के अलावा उच्च शिक्षा जैसे पोस्ट ग्रेजुएशन या प्रोफेशनल कोर्सेज के मत में नहीं थे । क्योंकि लड़कियों को घर गृहस्थी संभालना होता है और विवाहों में देर होना यथोचित मैचमेकिंग और स्वस्थ संतानोत्पति के लिये भी उचित नही है। जब कि मेरा मत था कि आज के परिवेश में लड़कियों को भी उच्चतम शिक्षा मिलनी चाहिए। एक दृष्टि से दोनों ही विचार अपने अपने तर्क से सही है । परन्तु भाई जी ने स्वयं के विचार मुझ पर थोपने के बजाय, मेरे विचारों को यथोचित मान देते हुए उन्हें न केवल स्वीकारा अपितु मण्डल की २००२ वर्ष में प्रकाशित ''अन्तर्जातीय विवाह - एक समस्या: कारण, दुष्परिणाम एवं समाधान'' पुस्तिका में यथोचित रूप से बुना भी और प्रकाशित भी किया । व्यक्तिगत और मण्डल की नीतियों और कार्यपद्धति को लेकर कार्यकर्ताओं के विरोध के कई पत्र भाईजी के पास आते थे । उन पर भाईजी की प्रतिक्रिया एक विलक्षण प्रकार की होती थी । भाईजी, पत्र लिखने का समय निकालने को भी अमुक कार्यकर्ता द्वारा उसके सामाजिक चिन्तन का ही भाग मानते थे । वाह रे ! मण्डल के ''महात्मा गाँधी'', तुझे शत शत नमन '।

३. भाईजी - एक वैचारिक तत्व

भाईजी का सामाजिक और सामाजिक विषयों पर चिन्तन गहरा था और यह चिन्तन मण्डल के हम कार्यकर्ताओं को निरन्तर प्रवाहित होता रहता था । भाईजी कभी भी हमको विचार शून्य नहीं रखते थे, चिन्तन हेतु विषय पर विषय देते रहते थे। भाई जी जब भी कोई नया लेख लिखते थे, या नया विचार आता था या नया उद्बोधन लिखते थे तो हमें शेयर करते रहते थे । महासभा के लिये उनके लेख हो या नवभारत टाइम्स की कोई अच्छे लेख की कटिंग हो, या ''विवाह संस्था'' पर श्रद्धेय पाण्डुरंग जी शास्त्री के प्रवचनों से प्रकाशित पुस्तक, ''संस्कृति चिन्तन'' से उद्धरण, आदि हो, हमें भेजते रहते थे मानों वे हम लोगों में भी सामाजिक चिन्तन का बीज डालना चाहते हों या हम लोगों में भी सामाजिक चिन्तन की प्रवत्ति विकसित करना चाहते हों।

२०११ में भाईजी ने अमेरिका में रहने वाले उनके साले की १८ वर्षीय अमेरिका में ही पली-बढ़ी

दोयती का ''एरेन्ज्ड मेरीज'' पर एक चार पृष्ठीय लेख भेजा जो उस उम्र के अनुसार गहरी सोच के साथ ही सारगर्भित भी था । उस लड़की का मत था कि अमेरिका के मुकाबले भारत में तलाक का प्रतिशत अत्यन्त कम है क्योंकि भारत में अधिकतर एरेन्ज्ड मेरीज होती है, अमेरिका की तरह लव मेरीज नहीं । यहाँ तक कि मुझे याद है, एक बार तो उन्होने, वर्ष २००४ में हमें एक पत्र लिखकर सन् १९२१ में प्रकाशित ''नागौरवाटी प्रान्तिक माहेश्वरी सभा, रोल मारवाड'' का कार्य विवरण'' यह अध्ययन करने और जानकारी के लिये भेजा कि हम जानें कि राजस्थान में रहने वाला माहेश्वरी समाज भी सामाजिक समस्याओं व संगठन के विषय में ८३ वर्ष पूर्व भी कितना जागरूक था और कैसा चिन्तन होता था । इस कार्य विवरण'' में सभा में पारित २५ सूत्रों का प्रस्ताव था जिसमें विवाह के रीति रिवाज में सुधार से सम्बन्धित कई प्रस्ताव थे ।

प्रकाशन में सदस्यों के निमन्त्रण पत्र की 'नकल' भी थी जिसका आरम्भ अत्यन्त ही रोचक था । जो यहाँ पर उद्धरित करने योग्य है -

''सिद्ध श्री .... सुभस्थान सर्वोपमा सकल गुण निधान सज्जन सिरोमणी समस्त माहेश्वरी सरदारां योग्य लिखी रोल से सर्व माहेश्वरी पंचा की जैगोपालजी की बंचावसी । अपरंच म्हे अठारा माहेश्वरी पंच मूंडवा इत्यादि रा माहेश्वरी सरदारां सूं सलाह करनें ओ निश्चय करयो है कि ....

मेरा यह निश्चित मत है कि भाईजी केवल सामाजिक कार्यकर्ता ही नहीं अपितु एक ''सामाजिक वैचारिक तत्व'' हैं जो आज भी हमारे मनमानस को झकझोरता रहता है ।

यही नहीं, यह केवल भाई जी का बोया हुआ बीज है कि हमारे सामाजिक विचारों में व्यावहारिकता भी है और परिपक्वता भी ।

४. **सिद्धान्तों में गरमाई, व्यवहारिकता में नरमाई**

भाई जी, सिद्धान्त के अनुपालन में जितने कठोर / सख्त दिखते थे, कार्यकर्ताओं के साथ व्यवहार में उतने ही नरम थे । सच में वे फर्मनेस (firmness) और फ्लेक्सिबिलिटी (flexibility) के समन्वय थे । मण्डल के सभी स्तर के कार्यकर्ताओं से उन्हें बेहद लगाव था । वे सबसे गले में हाथ डालकर बात करते थे और हर कार्यकर्ता को विश्वास था कि भाईजी उसकी पहुँच में है । भाईजी मण्डल के प्रकाशन में फोटो छापने के विरोधी थे क्योंकि उनका मत था कि फोटो छापने की वृत्ति से कार्यकर्ताओं में स्वयंप्रसिध्दि और अभिमान का भाव पनपता है। परन्तु एक बार जब बोरीवली क्षेत्रीय समिति के रजत जयन्ती वर्ष की स्मारिका के प्रकाशन हेतु वहाँ के कार्यकर्ताओं ने फोटो छापने की आज्ञा माँगी तो वहाँ के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के सैद्धान्तिक विरोध के बावजूद भी, भाईजी ने कतिपय विशिष्ट फोटो के प्रकाशन की मंजूरी दे दी जिससे कार्यकर्ताओं में अत्यन्त प्रसन्नता छा गई । यह उनका व्यवहारिक लचीलापन था । इसके विपरीत वहाँ के आनन्द मेले में सटटेबाजी के गेम्स की उन्होने कत्तई मंजूरी नहीं दी । यह उनकी सैद्धान्तिक दृढ़ता थी ।

५. **भाई जी की 'उत्कृष्टता' (Excellence) की सीख**

भाईजी ने मुझे और मेरे माध्यम से अति उत्कृष्टता क्या है, इसकी जीवनोपयोगी व बहुत ही दीर्घकालीन सीख दी है । सत्र २००१-०३ में मेरे मण्डल के मंत्रीपद के कार्यभार का निर्वाह करने के तुरंत बाद अगले सत्र २००३-०५ के लिये मुझे अध्यक्षपद का प्रस्ताव देते हुए भाई जी ने मेरी राय जाननी चाही । मैंने कहा, भाई जी, मंत्री पद का कार्यभार भारी था, मैंने बहुत समय भी दिया और काम भी बहुत किया, मुझे अच्छा लगा और संतोष भी है । परन्तु अध्यक्ष पद के दायित्व के लिये मुझे २ वर्ष की छूट (moratorium) चाहिये क्योंकि मेरे स्वभाव से मुझे प्रत्येक कार्य में अति उत्कृष्टता चाहिये । भाई जी ने बहुत सुन्दर उत्तर दिया । उन्होंने कहा कि एक तो मण्डल मे छूट की परम्परा नहीं है । दूसरा, जहाँ तक उत्कृष्टता (Excellence) का सवाल है, उत्कृष्टता एक परस्पर संबंधित शब्दावली (relative terminology) है । यदि आप (यानि में) अकेले हैं तो आपकी अकेले की उत्कृष्टता एक मापदण्ड है। परन्तु जब आपकी शादी हो गई तो आपकी और आप की सहचारिणी की जो संयुक्त उत्कृष्टता है वो आपकी उत्कृष्टता हुई । बच्चे होने पर बच्चों के सहित जो उत्कृष्टता है वह आपके परिवार की उत्कृष्टता का मापदण्ड है । मण्डल के परिपेक्ष में आपके नेतृत्व में सभी पदाधिकारियों की या कार्यकर्ताओं की जो संयुक्त उत्कृष्टता है, वही आपकी ही उत्कृष्टता है । भाईजी की यह सीख मैंने जीवन भर के लिए गाँठ बांधकर संजो ली । और यही संयुक्त उत्कृष्टता मूलत: मण्डल संगठन का मूल मंत्र है।

६. **आखिर, वह 'अगस्त' आया ही नहीं**

भाई जी की एक यह विशेषता थी कि मण्डल के निर्णयों में कभी भी उनकी कठोरता या सख्तता (rigidity) नहीं रही । यदि किसी विषय पर कोई नया पहलू सामने आता है तो चिन्तन और पुनर्चिन्तन के लिए भाईजी की सदा सहमति रहती थी । इससे निर्णय तो परिष्कृत होते ही थे परन्तु कार्यकर्ताओं की भी सकारात्मक सहभागिता रहती थी । माहेश्वरी प्रगति मण्डल मुंबई में २०१२-१४ के दौरान, केन्द्रीय युवा समिति की आवश्यकता और गठन को लेकर पदाधिकारियों में मत-मतान्तर हो गया । मेरा मत केन्द्रीय युवा समिति को गठित रखते हुए इसे निरन्तर जीवन्त रखने का था । परन्तु, पूर्व अध्यक्षों सहित २० सदस्यों की पदाधिकारियों की बैठक में, मेरे अतिरिक्त एक और पूर्व अध्यक्ष (भाई श्री गोपालजी छापरवाल) को छोड़कर १८ पदाधिकारियों की राय गठन के पक्ष में नहीं थी। उस सत्र से के.यु.स.गठित नहीं करने का प्रस्ताव पारित हो गया ।

यह बात मेरे गले कतई नहीं उतर रही थी । मैंने भाई जी से व्यक्तिगत तौर पर मिलकर कहा, ''भाई जी, के.यु.स. का गठन नहीं करने का निर्णय मेरे को बिल्कुल नही समझ में बैठ रहा है और इसे मैं मण्डल में बहुत बड़ी दुर्घटना के रूप में देख रहा हूँ, में आपसे इस बारे में मिलना चाहता हूँ।'' भाई जी ने मेरी बात ध्यान से सुनी । विषय की गंभीरता आँकी और तुरंत कहा, ''सामरिया जी, व्यस्तता के कारण शायद मिलना संभव नहीं हो, परन्तु आप मुझे बिंदु स्वरूप आपके विचार भेजिये।'' इतना

काफी था । मैंने मेरे २३ जून, २०१४ के पत्र के साथ एक १६ बिंदुओं का प्रपत्र भाई जी को भेजा और जून में ही मिलने का निवेदन किया क्योंकि जुलाई (२०१४) में, मैं बाहर ही बाहर रहने वाला था । भाईजी ने मात्र ३ दिन बाद तुरन्त २६ जून, २०१४ को मुझे e-mail से सूचित किया कि ३० जून तक मेरा मिलना डॉक्टरों ने बंद कर रखा है और जुलाई में अन्य साथी पदाधिकारीगण घूमने गये हैं और आप (मैं) भी नहीं है, अत: अपने अगस्त (२०१४) माह में यथाशीघ्र चुनाव (मण्डल की व्यवस्थापिका सभा का सत्र २०१४-१६ के चुनाव) के पहले इस विषय पर (के.यु.स. के गठन सम्बन्धी) शान्ति से मिलकर पुनर्चिन्तन कर लेंगे । विधि की विडम्बना है । भाई जी का वैकुण्ठवास २२.०७.२०१४ को मुंबई में हो गया। अत: संयोग से भाई जी वाला 'अगस्त' भाई जी के साथ पुनर्चिन्तन हेतु, भाई जी के जीवन काल में आया ही नहीं । में सोचता हूँ कि किसी भी सामाजिक विषय पर भाईजी का यह पत्र अन्तिम या अन्तिम में से एक है । मुझे यह भी संतोष है कि भाईजी ने एक सामाजिक विषय पर अन्तिम संवाद के लिये मुझे चुना । मैंने भाईजी को १६ बिंदुओं का जो पत्र लिखा और उनके २६ जून के जवाब का पत्र, दोनों ही मेरे २०१७ में प्रकाशित पुस्तक, ''समाज एवम् युवा, में प्रकाशित है।

मैंने मण्डल के तत्कालीन अध्यक्ष महोदय को ये दोनों पत्र भेजकर उन्हे केन्द्रीय युवा समिति के गठन के निर्णय पर, भाईजी की भावना के अनुसार, पदाधिकारियों की बैठक बुलाकर पुनर्चिन्तन का निवेदन किया । पदाधिकारियों की यह पुनर्चिन्तन बैठक अगस्त (२०१४) में ही हुई ।और सबको यह जानकर आश्चर्य होगा कि उस पुनर्चिन्तन बैठक में २० सदस्यों की उपस्थिति में पूर्व में लिये गये निर्णय को बदलते हुए सर्वसम्मति से केन्द्रीय युवा समिति के गठन का निर्णय लिया गया और आज भी केन्द्रीय युवा समिति प्रत्येक २ वर्ष के लिये गठित की जा रही है और कार्यरत है । भाई जी द्वारा मुंबई मण्डल को दिये गये ''चिन्तन-पुनर्चिन्तन'' की कार्यपद्धति का ही यह सकारात्मक परिणाम है, ऐसी मेरी सोच है।

७. भाई जी से हम व्यक्तिगत और पारिवारिक विषयों पर भी समय समय पर बात करते रहते थे उससे भी हमें काफी सही रास्ता मिलता रहता था । भाई जी के निवास पर भी अनेकों बार मिलते थे । भाई जी से एक बार के व्यक्तिगत रूप से वन टु वन वार्तालाप के दौरान, मुझे भाई जी के निवास पर रात ८ बजे से १२.३० बजे तक कतिपय विषयों को लेकर बैठने का अवसर मिला। समय कब निकल गया, मालूम ही नहीं पड़ा । १२.३० बजे भी इसलिये उठना पड़ा कि चर्चगेट से मालाड के लिये लास्ट ट्रेन १.०० बजे चलती थी । भाईजी मन के साफ थे, कई बातें खुलकर बोलते थे । भाईजी आध्यात्मिक थे परन्तु मूर्ति पूजा के पक्षघर नहीं थे । मण्डल के कई वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के बारे मे भी अपने ''मन की बात'' खुलकर मुझे बताई जो शायद उनकी सर्व-विदित राय से मेल नहीं खाती थी । मैं उन दिनों मण्डल का अध्यक्ष था । पूरे विश्वास और आत्मीयता से मुझसे बात करते थे । अंधेरी माहेश्वरी भवन के लोकार्पण वर्ष २००४ में पूजन के समय भाईजी (ट्रस्ट बोर्ड के अध्यक्ष)

और आ. सुमन भाभी और मैं (मण्डल अध्यक्ष) और मेरी धर्मपत्नी गीता जी साथ साथ पूजा में बैठते थे लगातार ९ दिन तक । उन दोनों में हम दोनों की प्रति अत्यंत ही अपनापन और सम्मान की भावना थी । भाई जी की स्फूर्ति और सक्रियता देखते ही बनती थी । अंधेरी भवन के लोकार्पण मे भवन की छत पर चारों तरफ सूत का धागा बाँधकर ''दिशा बंधन'' की परम्परा की होती है जिसमें मण्डल द्वारा दसों दिशाओं के दस दिग्पालों को जागृत कर यह प्रार्थना की जाती है कि, इस भवन पर दसों दिशाओं से कोई भी कुदृष्टि नहीं पड़े। हम सब छत पर चढ़ने के बारे में विचार विमर्श कर ही रहे थे कि भाई जी अगले ही पल तुरन्त सूत की कूकड़ी लेकर छत की दीवार पर चढ़ गये और धागा बाँधना प्रारम्भ कर दिया । भय और संतोष के वातावरण में भाई जी की मण्डल और भवनों के प्रति समर्पितता ने हम सब को भाव-विभोर कर दिया । सच में आँका जाए तो मुंबई माहेश्वरी समाज को दोनों भवनों की केवल और केवल मात्र भाईजी की ही देन है ।

कई व्यक्तिगत प्रसंग भी मेरे संस्मरण में है । मेरी पूज्य माताजी (स्व. रामचंद्रीबाई) का वैकुण्ठवास १९९५ के दशहरा (मंगलवार, ३ ऑक्टोबर) के दिन हुआ। तीसरे दिन मेरे निवास मालाड पर बैठक थी । भाई जी स्वयं व्यक्तिगत तौर पर आये, मेरे समीप बैठकर मुझे सांत्वना बँधाई और यह कहते हुए उठे कि ''आप जल्दी से इस शोक से बाहर आओ, अगले सत्र में, आपको मण्डल उपाध्यक्ष पद के भार का निर्वाह करना है।'' मानों वे एक साथ दो संदेश दे रहे थे । भाई जी का व्यक्तिगत लगाव देखते ही बनता था ।

भाई जी उन दिनों पुरानी एम्बेसिडर कार रखते थे । एक दिन मैंने भाईजी से पूछ ही लिया । ''भाईजी, आजकल इतनी नई नई कारें चलन में है और आप अभी तक भी पुरानी एम्बेसिडर रखे हुए है । भाई जी ने बहुत ही पारिवारिक और परिपक्व उत्तर दिया । भाई जी ने कहा, ''सामरिया जी, परिवार के सभी सदस्यों को साथ में लेकर चलना पड़ता है।'' मुझे भाईजी के नेतृत्व में मण्डल परिवार की एकजुटता का उत्तर मिल गया ।

भाई जी के संस्मरणों का अथाह सागर हम सब कार्यकर्ताओं के मन में हिलोर ले रहा है । जितना लिखो उतना ही कम है । कहीं तो विराम देना ही होगा, विश्राम लेना ही होगा । भाई जी को क्या कहूँ - कर्मयोगी ? सामाजिक संत ? या कि वैचारिक तत्व ? जो कहूँ वह उनके लिये कम पड़ता है। परन्तु मेरी एक दृढ मान्यता है कि मेरे सामाजिक जीवन में जिन सामाजिक महापुरुषों का प्रभाव रहा, उनमें भाई जी और भाई जी की सामाजिक सोच और सामाजिक सोच की गहराई सदा-सर्वदा अग्रणी है और रहेंगे ।

- सीए. रामस्वरूप सामरिया, मुंबई

श्री श्रीरामजी तापड़िया

जसवन्तगढ़ (नागौर जिला राजस्थानी के १२००० बस्ती के एक छोटे से गाँव के निवासी, अग्रगण्य व्यापारी एवं समाजसेवी स्व. सेठ श्री लादूराम जी तापड़िया के पौत्र श्री श्रीराम जी तापड़िया का जन्म दिनांक २४ अक्टूबर १९२८ को कलकत्ता में हुआ। जसवन्तगढ़ का तापड़िया परिवार प्रारम्भ से ही समाजसेवा व धार्मिक प्रवृत्तियों में संलग्न रहा है और इनके परिवार द्वारा समाज को सदैव अच्छा योगदान मिलता रहा है। तापड़िया परिवार द्वारा स्थापित लड़कों व लड़कियों के प्राथमिक एवं उच्च माध्यमिक चार विद्यालय एवं दो दातव्य आयुर्वेदीय व होमियोपेथिक चिकित्सालय जसवन्तगढ़ में संचालित है।

श्री श्रीरामजी तापड़िया ने अपना बी. ए. तक का अध्ययन सन १९४८ में सम्पूर्ण किया और व्यापार संभालते हुए सन् १९५६ में एल. एल. बी. की परीक्षा मुम्बई में पास की। आपने बी. ए. ऑनर्स फिलोसोफी या दर्शनशास्त्र एवं संस्कृत विषय से किया। सन् १९४९ में आप मुम्बई आये और अपने पैत्रिक कपड़े के व्यापार में सम्मिलित हुए। आपने अपनी कुशाग्र बुद्धि से कपड़े के निर्यात का काम भी प्रारम्भ करके व्यापार को विस्तृत किया। आपके मार्गदर्शन एवं निर्देशन में परिवार द्वारा बड़ी पॉवरलूम फैक्टरी, विशाल कंलेण्डरिंग कारखाना, चुम्बक बनाने की दो उद्योग इकाई (परमानेन्ट मेग्नेट लि), हाथ के औजार निर्माण का बड़ा कारखाना (तापड़िया टूल्स लि) एवं कॉपर टी गर्भनिरोधक बनाने का कारखाना (फेमीकेयर प्रेग्ना इन्टरनेशनल) स्थापित हुआ।

समाज सेवा में आपकी विशेष रुचि रही और १९६२ से ही ३४ वर्ष की उम्र से पूरे उत्साह से सामाजिक क्षेत्र में कार्य करने लगे। आपने सामाजिक क्षेत्र में मुम्बई एवं अखिल भारतीय स्तर पर काम किया। समाज की उभरती हुई समस्याओं पर आपका विशिष्ट अध्ययन था। सर्व प्रथम आप माहेश्वरी प्रगति मण्डल, मुम्बई में मन्त्री चुने गये। सन् १९६२ से १९६५ तक मन्त्री, फिर उपाध्यक्ष और सन् १९६६ से पांच वर्ष तक लगातार संस्था के अध्यक्ष रहे। आपके कार्यकाल में माहेश्वरी प्रगति मण्डल ने विविध क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की ओर समाज सेवा के क्षेत्र में अपना विशिष्ट स्थान बनाया। पदाधिकारी न होते हुये आप मण्डल के दिशानिर्देशक एवं संगठक की भूमिका निभाते रहे । मण्डल के दो विशाल भवनों का नवनिर्माण और समाज के छोटे-बड़े ५०० सक्रिय कार्यकर्ताओं का समूह तैयार करना आपकी विशाल संगठन शक्ति का परिचायक है।

राजस्थान रिलीफ सोसायटी मुम्बई के आप मैनेजिंग ट्रस्टी थे। इस संस्था द्वारा राजस्थान के दुष्काल ग्रस्त क्षेत्र जैसलमेर, जोधपुर, बाड़मेर, नागौर व उदयपुर जिलों में १९६८ / १९६९ में कुल मिलाकर ६० लाख रुपयों का राहत कार्य किया गया था। माहेश्वरी समाज की अखिल भारतीय संस्था ''माहेश्वरी महासभा के आप सन् १९६७ से १९७२ तक प्रधानमंत्री रहे। श्री श्रीकृष्णदास जाजू स्मारक ट्रस्ट के सन् १९६७ से १९९६ तक आप न्यासी रहे। जाजू ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष १८,००,००० रु. की छात्रवृति और असहाय भाई / बहिनों को सहायता दी जा रही है। महासभा के चुनावों में आपकी मुख्य चुनाव अधिकारी की भूमिका निष्पक्ष एवं पारदर्शी मानी जाती थी। मुम्बई के शैक्षणिक क्षेत्र में नर्सरी से एम.एस.सी. तक की पढ़ाई के लिए हिन्दी विद्या भवन विद्यालय के आप उपाध्यक्ष रहे। मारवाड़ी सम्मेलन, मुम्बई एवं महाराष्ट्र चेम्बर ऑफ कॉमर्स मुम्बई की व्यवस्थापिका सभा के आप सदस्य रहे थे। विद्यार्थियों को प्रति माह ''विपश्यना साधना'' का सघन प्रशिक्षण देने वाला विपश्यना विश्व विद्यापीठ ''सयाजी ऊ बा खिन मेमोरियल ट्रस्ट'' द्वारा इगतपुरी (महाराष्ट्र) में संचालित है, उसके आप प्रथम अध्यक्ष रहे थे। इस विद्यापीठ के सहयोग से संसार के लगभग ६५ देशों के ५०,००० नागरिक प्रतिवर्ष विपश्यना साधना का प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। आपको राजस्थानी साहित्य एवं गीत-भजन में विशेष रुचि

थी। राजस्थानी रंगभूमि की उन्नति में भी आप दिलचस्पी लेते थे।

मालिक एवं कर्मचारियों के बीच अच्छे सम्बन्ध एवं संस्था संगठनों में कार्यकर्ताओं के बीच समन्वय विषय में आप अनुभवसिद्ध मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण रखते थे। आपने अपना उत्तरकालीन सम्पूर्ण समय समाज सेवा व सामाजिक कार्यकर्ताओं को प्रदान किया और संगठन व कार्यकर्ताओं के बीच कड़ी बने रहे । स्वास्थ्य के प्रति उनकी जागरूकता अनुकरणीय थी। सभी छोटों बड़ों को स्वास्थ्य के महत्व को वे समझाते थे। ८६ वर्ष की आयु में भी वे १२ घण्टे तक प्रतिदिन कार्य करते थे। गत १० जून २०१४ को उन्हें कुछ अस्वस्थता महसूस हुई। सभी तरह के इलाज किये गये लेकिन फेफड़े का रोग बढता गया। ५ दिन पूर्व उन्हें भावी का आभास हो चुका था और एक वीरपुरुष की तरह उसकी तैयारी उन्होंने प्रकट कर दी थी और अस्पताल से घर ले आने का स्पष्ट निर्देश दिया। २२ जुलाई २०१४ को दोपहर वे घर आ गये और सायं ७.३० बजे अत्यन्त शान्त मुद्रा में उन्होंने महाप्रयाण किया। दिखावा आडम्बर से दूर रहने वाले और समाज सुधार के अग्रगामी श्रीरामजी ने अपनी मृत्यु को और अपने अन्त्यविधि संस्कार को भी लिखित आदेश द्वारा रूढि अन्धविश्वासरहित एक अनुकरणीय आदर्श बनाया।

माहेश्वरी जगत के युगपुरुष के चरणों में शत-शत प्रणाम !!

- एक माहेश्वरी पत्रिका

आदरणीय श्री श्रीरामजी तापड़िया के प्रति आदरांजलि

सर्वप्रथम मैं मुम्बई माहेश्वरी समाज के महानुभावों को को नमन करते हुए उनका आभार प्रकट करता हूँ जो आपने आदरणीय श्री श्रीरामजी तापड़िया के स्मरणार्थ एक स्मारिका प्रकाशित करने का निर्णय लेकर मुझे भी उनके लिए अपनी भावना व्यक्त करने के लिए आग्रह किया। यह मेरा सौभाग्य है।

मेरा श्रीरामजी साहब से काफी वर्षो तक महासभा की मीटिंगों, चुनावों व अन्य विवाद सुलझाने वाली मीटिंगों आदि में उनसे सम्पर्क हुआ। उनमें सदैव समाज व उसके संगठन के प्रति विचार-चिन्तन जारी रहा। उन्होंने माहेश्वरी महासभा के महामंत्री के दायित्व का सुचारू रूप से निर्वाह भी किया था किन्तु मुम्बई की माहेश्वरी समाज बन्धुओं में उनका काफी आदर व सम्मान था। सदैव वहाँ वे मार्गदर्शन व नेतृत्व प्रदान करते थे। वे अत्यन्त विनम्र, अपने विचार के प्रति दृढ़ थे। उनमें अच्छी सोच वाले महान व्यक्तित्व की ऐसी विशेषता थी जो बहुत कम लोगों में मिलती है।

श्रीरामजी साहब जब भी अपने विचार महासभा में या 'माहेश्वरी के माध्यम से रखते थे समाज बन्धु भी उनके विचारों से सहमत होते थे। मैंने कभी भी उनके मुँह से बिना सार वाली बात नहीं सुनी।

एक बार की बात मुझे स्मरण आती है कि स्व. श्री मधुश्री जी काबरा जिन्होंने तापड़ियाजी के अधीनस्थ काम भी किया था समाज के लिए एक 'समाज प्रवाह' नाम से पत्रिका का प्रकाशन करते थे। एक बार महासभा के सभापति स्व. श्री मुच्छालजी के प्रति अपनी पत्रिका में कुछ कटु लिख दिया था तब मैंने भी श्रीरामजी से जिक्र किया तो उन्होंने कहा कि यह मधु के अपने विचार हो सकते हैं, किन्तु फिर भी मधुश्री जी को उनकी पत्रिका के लिए एक शब्द भी कहना उचित नहीं समझा। मधुश्रीजी को आसानी से कह भी सकते थे किन्तु यह उनकी उदारता एवं किसी के विचारों में हस्तक्षेप न करने की भावना को दर्शाता है।

ऐसे स्पष्ट विचारों वाले, समाज हित एवं समाज के संगठन को सर्वोपरि मानने वाले, उचित सलाह व मार्गदर्शन प्रदान करने वाले बिरले ही व्यक्ति थे जो समाज बन्धुओं की स्मृति पटल में सदैव रहेंगे एवं उनके विचारों से प्रेरणा लेते रहेंगे।

- बनवारीलाल जाजू, इन्दौर

संस्मरण

तारीख :१५-१६ नवंबर १९९७, स्थान : त्र्यंबकेश्वर, प्रयोजन : बंबई प्रदेश, महाराष्ट्र प्रदेश, विदर्भ प्रदेश के प्रमुख कार्यकर्ताओंका सम्मिलित प्रशिक्षण शिबिर तथा गणमान्य सभी वरिष्ठ जनोके साथ पूरे २ दिन का, आदरणीय श्री श्रीरामजी तापड़ियाजी की गरिमामय, सादगीपूर्ण उपस्थिति व मुझे उनके सानिध्य में रहने का, उन्हे महसूस करने का सुनहरा अवसर। सामाजिक जीवन की उच्चतम अनुभूति के रूप में मैने इन्हे संजोये रखा है।

आदरणीय विष्णुदासजी दरक, रमेशजी मर्दा, नारायणदासजी जाजू, श्यामजी सोनी आदि सभीने दो दिवसीय शिबिर में कई सामाजिक समस्याओं पर निराकरण हेतु गहन चिंतन तथा मार्गदर्शन किया। आदरणीय भाईजी के बोल मुझे अभी भी याद है 'कुंडली लड़के से नहीं उसकी माँ से मिलानी चाहिये'। वैवाहिक समस्या पर आजका लोकप्रिय नारा 'बेटी जल्दी ब्याहो, बहूको खूब पढ़ाओ' वास्तव में १९९७ के त्र्यंबकेश्वर शिबिर में आदरणीय भाईजी ने दिया हुआ है। वे सचमुच दूरदृष्टा रहे।

नासिक के राठी परिवार के कार्यों मे वे अक्सर आते, याद से मिलने बुलाते, समय रहा तो घर पे मिलने आते। सामाजिक बैठको में, कार्यक्रमो में वे जब भी मिलते, हाथ कंधेपर रखकर ही पूछते- कैसे हो भाई अशोक। उम्र में वे पितृतुल्य थे, लेकिन इतनी सहजता से बातचीत शुरू होती कि मेरे जैसा सामान्य कार्यकर्ता भी मनकी बात बेहिचक कर जाता।

संस्कार-क्षति, सामाजिक शुचिता, रिश्तो में तनाव इ.अहम सामाजिक विषयोंपर उनका चिंतन तथा भविष्य की आहट लेती नजर मुझे हमेशा प्रभावित करती रही। उनके हर सांस मे, खून की हर बूंद मे, हर चिंतन मे, हमेशा समाज ही रहा।

कार्यकर्ता निर्माण, उनका प्रोत्साहन तथा उन्हें साथ लेते हुए दिशादर्शन करते हुए अनेकों विशाल कार्यों को अंजाम हम बंबई प्रगति मंडल के तहत दृश्य स्वरूप में आज देख रहे हैं। वे हमेशा प्रसिद्धि से विमुख रहे तथा प्रगति मंडल के कार्यकर्ताओं को भी उनकी यही नसीहत रही। यही कारण है कि, सरसवाणी मे कभी किसीकी फोटो नही छपती। उन्होने सब को अहम्भाव से परे रखा। मेरे सामाजिक जीवन की नींव भी बंबई प्रगति मंडल की पूरी व्यवस्था तथा सामाजिक मापदंड ही रही। प्रगति मंडल मेरे लिये Role model है तथा मंडल के इस स्वरूप निर्माण का अधिकतम श्रेय आदरणीय श्रीरामजी को जाता है। आदरणीय भाईजी, विष्णुदासजी दरक, रामेश्वरलालजी काबरा, नारायणलालजी मानधना, रमेशजी मर्दा, स्व.यादवजी झंवर इत्यादि वरिष्ठों के साथ विचार गोष्ठी, कार्य करना हमेशा एक विशिष्ट अनुभव रहा।

मै कोई बड़ा कार्यकर्ता नही हूँ। मेरी क्षमता भी नहीं है कि मैं आदरणीय भाईजी के बारे में कुछ अंकित करूँ। मेरे लिये तो उनके संस्मरण, उनके आदर्श वह धरोहर है जिसके सहारे मै आज भी कार्यरत हूँ।

अभी भी किसी बैठक के समय पीछे से कोई कंधेपर हाथ रखता है तो अनायास लगता है आवाज आयेगी- 'कैसे हो भाई अशोक'।

- अशोक बंग

आदरणीय श्री दरक जी एवम तापड़िया जी

सादर वंदे

अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा के लोहपुरुष मृदुलभाषी धार्मिक एवम् संगठन को एक सूत्र में बांध कर रखने वाले तथा मुंबई के समाज को संगठित करने एवं माहेश्वरी प्रगति मण्डल के माध्यम से ५ दशकों तक श्री राम जी तापड़िया ने समाज को संगठित रखने में तथा राष्ट्रीय स्तर पर उनका बहुत बड़ा योगदान रहा है।

श्री तापड़िया जी ने देश के छोटे से बड़े पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं से उनका जीवित जन संपर्क बनाये रखा। राष्ट्रीय त्योहारों एवं धार्मिक त्योहारों पर उनके द्वारा प्रकाशित पुस्तकें भी हर समाज बंधु को पहुंचाने की कोशिश करते रहे।

महासभा की बैठकों में अपने साथियों सहित जाते रहे हैं। उन्होंने कई कार्यकर्ताओं को राष्ट्रीय स्तर का नेता भी बनाया उसमें प्रमुख मधु श्री काबरा आदि थे।

मैं करीब ३० साल से उनके संपर्क में रहा। महासभा की बैठकों में जाकर कई विषयों पर बोलने के लिए उनसे सलाह भी करता रहा। अखिल भारतीय महासभा के कानपुर अधिवेशन में मेरे कुछ मित्रों ने सभापति हेतु भी तैयार किया। महासभा के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने मेरा आश्चर्य व्यक्त किया। मैंने श्री तापड़ियाजी से मिलकर उनसे सलाह ली कि मुझे क्या करना है। तापड़िया जी ने कहा चूँकि आपने फॉर्म भर ही दिया है तो अड़े रहो, देखा जायेगा। ऐसे कई स्मरण उनके साथ रहे। वे मुझे महासभा में जोड़ने की बड़ी प्रेरणा देते रहे। यही कारण है कि महासभा में मैंने अपनी पहचान बनाई। आपको एवं जगदीश तापड़िया जी को सादर वंदे।

- बंसीलाल भूतड़ा (किरण)

पूर्व प्रदेशाध्यक्ष एवं कार्यसमिति सदस्य

अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा (इंदौर)

समाज सेवा के समर्पित साधक
'श्री श्रीरामजी तापड़िया'

गौरव का विषय है उत्कृष्ट व्यक्तित्व के धनी गौलोकवासी श्री श्रीरामजी तापड़िया के जीवन पर विशेषांक निकलने जा रहा है। श्रद्धेय तापड़िया जी अपने आप में एक संस्था थे। सामाजिक विषयों पर गहन चिंतन व उल्लेख आपकी दिनचर्या में शामिल था। आज की बिगड़ती हुई पारिवारिक व्यवस्थाओं को लेकर आपके मन में गहरी वेदना रहती थी। जिनका आभास आपके प्रवचनों से होता था।

साबू व तापड़िया परिवार के हमारे पारिवारिक संबंध तो है ही, लेकिन मेरे प्रति आपका संगठनात्मक तौर से काफी स्नेह रहा व आपका मार्गदर्शन सदैव मिलता रहा। आपकी सहृदयता का संस्मरण याद आता है। सन् २००७ में अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन के नेतृत्व का भार मैंने सम्हाला हुआ था तब मुंबई में प्रथम बार महिला संगठन राष्ट्रीय कार्यकारी मंडल की बैठक-अधिवेशन हुआ जिसमें करीब ६०० बहनें पूरे भारतवर्ष से मुंबई आई। श्रीरामजी तापड़िया साहब ने मुंबई के अन्य गणमान्य समाज के महानुभावों के साथ बैठक की। पूरी व्यवस्थाएं सम्हालने में सहयोग दिया व ३ दिन लगातार अंधेरी माहेश्वरी भवन में उपस्थित रहे। आपकी भावना यही रही कि समाज की बहनों के कोई तकलीफ न होवे व कार्य अच्छी तरह सम्पन्न होवे।

समाज के प्रति ऐसे समर्पित 'साधक' की कमी तो सदैव ही रहेगी, यदि उनके चिन्तन व विचारों को समय-समय पर मंथन होता रहे तो उनके प्रति हम आत्मीय श्रद्धांजलि दे पायेंगे। पुन: अविस्मरणीय व्यक्तित्व को नमन।

- विमलादेवी साबू, सूरत

श्री श्रीरामजी तापड़िया - एक महान समाज सेवक

श्रीयमजी तापड़िया भारत के एक विख्यात उद्योगपति परिवार के सदस्य थे। प्रारम्भ से ही संयुक्त हिन्दू परिवार में रहने का उनका संयोग हमेशा ही बना रहा। उनके चार दादाजी,तीन पिताजी के भाई एवम् सात भाइयों का संयुक्त परिवार आज भी वास्तविक रुप से संयुक्त ही चल रहा है। उनके स्वयं के कोई बच्चे नहीं थे लेकिन भाइयों के परिवार के बच्चों का सम्बन्ध भी उन्होंने ही खोज खोज कर संयुक्त परिवारों में ही करवाया। उनके सबसे बड़े दादाजी स्व. लादूरामजी तापड़िया भारत के विशिष्ट ज्योतिष विद्या के विद्वान थे। संसद की स्थापना में जिन ग्यारह ज्योतिषियों को स्थान मिला था उनमें आ. लादूराम जी साहब भी एक ये। लेखक के परिवार से उनके नजदीकी सम्बन्ध थे। तापड़िया परिवार के बहुत से उद्योग भी थे। इन्होंने कोटा साड़ियों की तर्ज पर पावरलूम पर कोटा डोरिया साड़ियों का उत्पादन प्रारम्भ किया। हमारा खुद का कपड़ा एवं कोटा डोरिया का व्यापार था। अत: तापड़िया जी द्वारा निर्मित कोटा साड़ियों के वितरण का कार्य भी वृहद रुप में किया। मेरा उनका सानिध्य वैसे तो छोटी उम्र में ही हो गया था पर सामाजिक एवं संगठनात्मक परिचय अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के बीकानेर अधिवेशन में १९७२ में हुआ। जहाँ मैं एक सामाजिक प्रतिनिधि के रुप में सम्मिलित हुआ था और आप का निर्वाचन महामन्त्री (तब प्रधानमंत्री) के रूप में हुआ था। समय की गति के साथ साथ मेरा संबंध उनके साथ प्रगाढ़ होता चला गया। उन जीवन से मैंने तनमनधन से संगठन के कार्य करने की प्रेरणा ली। उन्होंने कई बार महासभा के इतिहास, माहेश्वरी समाज के इतिहास,एवं माहेश्वरी समाज के विशिष्ट विभूतियों के जीवन चरित्र पर शोध कर पुस्तकें प्रकाशित करने की मुझे प्रेरणा एवं सम्पूर्ण मार्गदर्शन के साथ-साथ भरपूर सहयोग दिया। माहेश्वरी समाज के इतिहास के बारे में आ. रामगोपालजी माहेश्वरी, श्री रघुनाथदास जी सोमानी, श्री राधेश्यामजी धूत एवं श्री तापड़ियाजी के साथ-साथ मैंने भी कई वर्षो तक अथक परिश्रम एवम प्रयास किया परन्तु पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं हो सकी। माहेश्वरी महासभा के इतिहास के बारे में बहुत परिश्रम के पश्चात् अमृत वल्लरी के प्रथम भाग का विमोचन इन्दौर अधिवेशन में श्री कृष्ण कुमार जी बिड़ला के कर कमलों द्वारा१ ९८५ में सम्पन्न हुआ एवं द्वितीय भाग १९०८ तक का भी प्रकाशन सम्पन्न हुआ।

श्री श्रीरामजी साहब की निरन्तर प्रेरणा रही कि माहेश्वरी समाज के महापुरुषों का जीवन चरित्र निश्चित रूप से छपना ही चाहिये। उनकी प्रेरणा से समाज के विभिन्न शीर्ष एवं विशिष्ट ५-५ महापुरुषों की जीवनी की ३ पुस्तकें प्रकाशित हुईं। अभी तक १५ महापुरुषों की जीवनी प्रकाशित हुई है। मेरा प्रयास रहेगा कि यह श्रृंखला चालू रहे। आ. तापड़िया जी विगत ५० वर्षों से मुम्बई में एक प्रमुख संगठनकर्ता के रूप से विख्यात थे। माहेश्वरी प्रगति मण्डल के तत्वावधान में उन्होंने चृहद संगठन का वृक्ष लगाया। उन्होंने गिरगांव,गोरेगाँव,बोरीवली,अंधेरी आदि अनेक स्थानों पर माहेश्वरी भवन का निर्माण सम्पन्न करवाया एवं समाज की सेवा निरन्तर करते रहे।

आ. श्रीरामजी साहब में एक विलक्षण लोकतांत्रिक परम्परा का पालन करने की अद्‌भुत शक्ति थी।

किसी भी प्रस्ताव का, जिसमें उनकी अभिरुचि नहीं थी, उसका विरोध करते थे परन्तु प्रस्ताव पारित होने के पश्चात् उसका अनुपालन पूर्ण रूप से करने की उनकी विशेषता थी। इस कारण उन्हें पूर्ण सांसदीय परम्परा का पालन करने वाला मानते थे। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा में वे कई बार चुनाव अधिकारी एवम् विभिन्न जांच समितियों के संयोजक के रुप में सत्य एवं सही निर्णय लेने के सिद्धान्त पर हमेशा कायम रहे। उन्होंने कभी भी किसी प्रकार का समझौता नहीं किया। जिसके फलस्वरुप भले ही निरन्तर उन्हें मानसिक सन्ताप की ज्वाला झेलनी पड़ी ।

उद्योग,संगठन एवं परिवार के साथ-साथ आध्यात्मिक क्षेत्र में उनका बहुत बड़ा योगदान था। उनका विपश्यना योग की तरफ पूर्णरूपेण झुकाव था। वो प्रत्येक वर्ष एक माह के लिये इगतपुरी जाकर श्री सत्यनारायण जी गोयनका द्वारा परिचालित विपश्यना शिविर में भाग लेते थे। शिविर एवं संस्थान की विभिन्न गतिविधियों का संचालन स्वयं करते थे।

मुम्बई आने वाले परिचित बन्धुओं का व्यक्तिगत कार्यों में सहयोंग देना उनका प्रमुख कार्य था। बॉम्बे हॉस्पिटल के समीप होने के कारण गिरगाँव माहेश्वरी भवन में अस्पताल में भर्ती मरीज के परिवार के लिये रियायती दरों में व्यवस्था करवाना उनकी इच्छा के अनुरूप ही था।

महासभा में जाँच में दोषी पाये जाने वाले लोगों द्वारा क्षमा मांगने पर ये उन्हें क्षमा करने पर विश्वास रखते थे। परन्तु उन्हें जीवन में इसके विपरीत असर भी हुआ। बिना किसी गलत कार्य के उन्हें सजा दी गई उन्होंने उसे भी झेला परन्तु अपने सेवा कार्य में कोई अवरोध नहीं आने दिया।

महासभा की मेरी सभी गतिविधियों की उनको पूरी जानकारी रहती थी। इसलिये हम लोगों में कार्य योजना बनाने में कभी परेशानी नहीं होती थी। प्रभु ने उस प्रेरणा पुरुष को हम लोगों से दूर कर दिया फिर भी प्रयास रहेगा कि उनके कार्यो एवं आदर्शों का अनुपालन नियमित रुप से किया जाये।

- गोवर्धन लाल झंवर, ज्ञानवापी, वाराणसी

---

24 July 2014

To
Taparia Family
Re Shraddhanjali Sabha
Shri Shreeram Mamaji
A highly energetic person, good singer and wise man.
We will miss him and remember him with fondness for the love and affection he showered whever we met him
Love you Mamaji. Pranam !!!

ईश्वर मामाजी की पुण्य आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

सुस्नेह
अनुपमा बिहानी

HARIKRISHNA JHAVER

"Jhaver Niwas"
No.21, Santhome High Road
Mylapore
Chennai – 600 004

July 2017

I was really fortunate to have been associated with Pujya Sriramji for the past several years. Not only was he tall in stature, but he was also "Tall" in principles as well. In spite of hailing from a very illustrious and wealthy family of Mumbai, Sriramji followed a life of very simple living and devoted it to the welfare of the community.

He always approached a subject in a very logical and positive manner. We used to meet quite often in connection with Mahaswari Mahasabha. In spite of him being very senior in age, he used to discuss with me various subjects – connected to the community, connected to the Mahasabha and topics of general in nature - in a very open and frank manner, as if he was discussing with a friend. He always gave liberty to the other person to express his point of view without any hesitation. Many a times, he would listen to the views, which were contrary to his, very sportingly and with an open mind. These are qualities of great persons and Pujya Sriramji was one among them.

Whenever he came to Chennai, he used to make it a point to meet me and my wife Srikanta at my residence. He insisted that both of us should visit him at his house whenever we come to Mumbai. We did so and enjoyed an excellent hospitality of his family members especially, Smt. Suman Chachiji.

Many are aware that this renowned Taparia family makes thousands of kilos of the famous Ayurvedic tonic – "Chyawanprash", every winter in Jaswantgadh. This is made under the supervision of senior members of the family including Pujya Sriramji. The making of Chywanprash, requires a lot of preparation and skill. This is then distributed to hundreds of their relatives and friends as a gift. Pujya Sriramji had been sending Chywanprash to us for the past many years. He would personally call us from Mumbai before despatching it to Chennai. Such was his affection. Last year, Smt. Suman Chachiji called my wife Srikanta and said that "Our" Chywanprash bottles are ready and that she is sending the same to us. She has a list of friends to whom Sriramji used to send and she continues to do so. Such are noble qualities, the Taparia family possess.

We were really sad when we came to know that Sriramji Saheb is no more. I learnt a lot during my association with him. Pujya Sriramji was a good orator. Whenever he spoke, the audience will listen with attention because the contents of his talk will always be logical and innovative.

Maheswari Community has lost a great thinker, a torchbearer and a well-wisher. He was a person of simple living and high thinking. He had a great sense of humour and always greeted others with smile.

We will all miss him.

- Harikrishna Jhaver, Chennai

तमसो मा ज्योतिर्गमय

परम श्रद्धेय श्री श्रीराम जी तापड़िया

वह दिन मेरे लिये अविस्मरणीय रहेगा जब १ ९ ७ २ में कलकत्ता महाधिवेशन में समाज के चिंतनशील तथा सामाजिक क्षेत्र में नेतृत्व प्रदान करने वाले अग्रणीय विभूतियों के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मन में सामाजिक कार्य करने की भावना जागृत हुई । कहते हैं न, नि:स्वार्थ भाव की चाह को राह भी मिल जाती है, ऐसा ही कुछ हुआ मेरे साथ। १ ९ ७ ६ के नागपुर महाधिवेशन में राष्ट्रीय महिला संगठन का गठन हुआ व ग्वालियर से मुझे कार्यसमिति का सदस्य बनाया गया, किन्तु यह सत्र कार्य के हिसाब से शून्य रहा।

पुनश्च १ ९ ८ २ में अलीगढ़ अधिवेशन में महासभा के नए अध्यक्ष के साथ महिला संगठन के भी पदाधिकारी बदले व श्रीमती ज्ञान कुमारी जी हेडा ने मुझे संगठन के सचिव पद की जिम्मेदारी सौंपी।

वृन्दावन मीटिंग - प्रथम बार महामंत्री की हैसियत से वृन्दावन मीटिंग में गई। सामाजिक चिंतन में विचारशील, मंचासीन, प्रभुता सम्मान वरिष्ठजन सब को नमन के साथ ही ज्ञान कुमारी जी ने मेरा परिचय सबसे कराया। किन्तु प्रथम बार जिस व्यक्तित्व ने मुझे प्रभावित किया, वे थे भाई जी। समाज की कोई एक बहन कुछ समय के लिए दिल्ली से आईं थी (नाम मुझे याद नहीं), भाई जी ने उनसे बात की तो मेरा भी मन हुआ, उनसे बात करूं, परन्तु मन में संकोच था, कैसे बात करूं ? क्या बात करूं ? मैं व ज्ञान कुमारी जी हम दो ही महिला मीटिंग में थे।

मीटिंग के दौरान - क्योंकि उस मीटिंग में महासभा के अध्यक्ष के चयन की प्रक्रिया पर विचार विमर्श हो रहा था, मैंने भी अपने विचार रखे (स्थानीय स्तर पर कई संस्थाओं के साथ लायन्स इन्टरनेशनल से जुड़ी हुई थी)। भोजन सत्र के बाद जब दूसरा सत्र शुरू हुआ, भाई जी सभा भवन में आये तो मैंने उन्हें नमन किया और उन्होंने मुझसे प्रथम बार बात की। मेरा मन श्रद्धा व खुशी से भर गया, फिर हर मीटिंग में उनसे सामाजिक महिला संगठन को कैसे आगे लायें आदि विषयों पर कुछ न कुछ चर्चा ज्ञान कुमारी जी के साथ हो जाती।

सच्चे सामाजिक कार्यकर्ता - नासिक मीटिंग में सभी को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा, नासिक मेरी कर्मभूमि है अत: रात्रिभोज के निमंत्रण को आप स्वीकार करें। भोजन स्थल पर जाकर उनकी सम्पन्नता की अनुभूति हुई और इतनी सम्पन्नता में उनकी विनम्रता तथा समाज प्रेम समरसता की मैं कायल हो गई।

बस द्वारा नासिक से बॉम्बे का सफर :- मेरा छोटा भाई बॉम्बे रहता था, इसलिए हमें बॉम्बे जाना था, डबल डेकर में अपना टिकिट करवा रखा था। जाकर बस में बैठे थे कि कुछ मिनिट बाद देखा, बॉम्बे के सभी भाई बस में चढ़ रहे हैं व साथ में भाईजी भी हैं। मधु काबरा हमारे पूर्व परिचित थे, वे हमारे पास आये। मैंने पूछा मधु जी, भाई जी बस में सफर करेंगे ? जिन्होंने महासभा के सब भाइयों को भोजन स्थल पर ले जाने के लिए कारों की लाइन लगा दी थी, वे बस में सफर करेंगे ? मधु जी ने कहा मनोरमा दीदी, भाईजी अन्य पैसे वाले लोगों की तरह नहीं हैं। वे सदैव ही सब कार्यकर्ताओं के साथ ही सफर करते हैं। तब मुझे उनके व्यक्तित्व के गहराई की अनुभूति हुई व मैंने समझा गहन गम्भीर सागर की गहराई और बरसाती पोखर के इतराने का अन्तर।

सागर से गहन - वे गम्भीर, किन्तु सामाजिक विषयों पर चिंतनशील व्यक्तित्व के धनी थे। बदलते परिवेश में महिलाओं की स्थिति, परिस्थिति पर सदैव चिंतित रहते थे। मनोवैज्ञानिकों, समाजशास्त्रियों के साथ चिंतन-मनन कर, अपने समाज की नारी शक्ति को कैसे पारिवारिक समरसता के साथ आधुनिकता से जोड़कर रखा जा सके, हमारे समाज की शुचिता, संस्कारशीलता कैसे बनी रहे, हमारे सामूहिक परिवार की युवा पीढ़ी कैसे दूर-दराज रहते हुए भी प्रेम की डोर से बंधी रहे, आदि अन्य विषयों पर सदैव चिंतन, लेख. वक्तृत्व विचार-विमर्श करते रहते थे। युवतियों की पढ़ाई के लिए वे जितनी हिमायत करते थे उतने ही परिवार में नारी की अहमियत को महत्ता देते थे। परिवार में नारी की भूमिका व मातृत्व की गरिमा के पक्षधर थे। परिवार को उपेक्षित करके धनार्जन के लिए

महिलाएं नौकरी करें या आधुनिकता के रंग में रंगने के लिए अपने को स्मार्ट साबित करने के लिए महिलाएं नौकरी करें, उसके वे पक्षधर नहीं थे। किन्तु महिलाएं अपनी योग्यता का सदुपयोग करने के लिए पारिवारिक या स्वयं के व्यवसाय में कार्य करें, इसके वे पक्षधर थे। समाज, परिवार, संस्कार, शिक्षा के प्रति उनका दृष्टिकोण बहुत विशाल था। संस्कारों की भूमि पर पैर जमा कर जमाने के साथ चलने के वे पक्षधारी थे।

सूक्ष्म दृष्टिकोण - सत्र १ ९ .... में भाई जी चुनाव अधिकारी बने। उस समिति में मुझे भी सौभाग्य मिला उनके अधीनस्थ कार्य करने का। मैंने देखा, कितना विशाल, कितना सूक्ष्म दृष्टिकोण, छोटी से छोटी बात को बारीकी से लेना, उस पर चिंतन करना, सब की राय लेना, सभी सदस्यों को महत्व देना। अकेली महिला सदस्य थी अत: मेरा विशेष ध्यान रखना। निष्पक्ष चुनाव अधिकारी के रूप में उनकी निष्पक्षता की कोई मिसाल नहीं। उस सत्र का चुनाव टक्कर की चोट का था। वोटर्स की निगाह चुनावी टीम पर थी किन्तु जिस मेहनत-निष्पक्षता से भाई जी ने कार्य किया, लोगों के लिए मिसाल बन गई। उनकी पारदर्शिता एक अनुकरणीय उदाहरण, वोटिंग के दौरान पूरे समय खड़े रहकर वोट डालकर आने वाले प्रत्येक सदस्य से हाथ जोड़कर पूछना कि कोई शिकायत तो नहीं, कोई परेशानी तो नहीं हुई। उनकी निष्पक्ष कार्यनिष्ठा, सूक्ष्म पारदर्शिता, उत्तम कार्यशेली और विनम्रता की पराकाष्ठा व सामाजिक कार्य के लिए अदम्य समर्पण की मिसाल थी। ऐसे सहज, सरल, सर्मपित व्यक्तित्व को स्मरण करते हुए मस्तिष्क स्वयं ही श्रद्धा से झुक जाता है ।

विपश्यना - वर्ष २ ० १ ३ की बात है , मैं अपने भाई के यहां बॉम्बे गई थी, वहां से मां के यहां उनसे मिलने गये। उन्होंने हमें केशव सृष्टि दिखाने (श्रीमती रत्नी देवी काबरा के साथ) की योजना बनाई। मैंने मां से पूछा, मां मुंबई के विपश्यना सेंटर में आपकी कोई पहचान है क्या ? सुना है वहां मुश्किल से जगह मिलती है। मां ने तुरन्त मेरी बात भाई जी से करवाई। भाई जी विपश्यना के पुराने साधक थे, यह मुझे मालूम नहीं था। बड़े खुश हुए मुझे विपश्यना से जुड़ा जानकर। काफी देर सामाजिक व विपश्यना संबंधित फोन पर ही चर्चा हुई। उन्होंने कहा, जब भी जाना हो बता देना व दोनों साथ-साथ जाना। मैंने कहा मुझे तो जाना है इसलिए इनके पीछे पड़ी हूं किन्तु ये मानते ही नहीं। वे बोले अच्छा मनोरमा, कँवर सा से बात कराना। ग्वालियर आकर मैंने भाई जी को फोन किया, भाई जी आप मेरी बुकिंग करवा दीजिये। उन्होंने कहा, मैं तुम दोनों की बुकिंग करवा दूंगा, मेरी कंवर सा. से बात करा दे। मैंने इनको फोन दिया, ये आना-कानी करने लगे। मैंने कहा, नहीं जाना है तो मत जाना, भाई जी से बात तो कर लो। इनसे भाई जी की क्या बात हुई, मुजे मालूम नहीं किन्तु जादू की तरह इनकी मानसिकता में परिवर्तन हो गया। तुरन्त जाने के लिए तैयार हो गये। आने-जाने के फ्लाईट के टिकिट करवाने के बाद मैंने भाई जी को फोन कर दिया। वे हंस कर बोले - अरे एक दिन तो घर पर आने के लिए रखती। मैंने कहा, भाई जी इस बार टिकिट हो गये, अगले वर्ष जब भी आऊंगी, घर पर जरूर आऊंगी। पर ईश्वर को पता नहीं क्या मंजूर था, अगला वर्ष आने के पहले ही सामाजिक मंदिर के पुजारी व विपश्यना साधना के साधक को उन्होंने अपने पास बुला लिया। किन्तु विपश्यना का जो अमृत हमारे परिवार में घोला, उसके छींटों से मेरे पति, पुत्र, पौत्र सभी अभिसिंचित हो रहे हैं। जून २ ० १ ६ में मेरे पोते कार्तिकेय का अमेरिका (बोस्टन) से फोन आया, दादी आज मैंने आपको यह फोन स्पेशली धन्यवाद देने के लिए लगाया। मैंने कहा, आज क्या खास बात है ? कार्तिकेय बोला, मैं बोस्टन के पास विपश्यना सेंटर में जो दस दिन की साधना के लिए गया था, मैं जितना सोचकर गया उससे कई गुणा ज्यादा प्राप्त किया। दादी सचमुच धन्यवाद और तुरन्त मेरा अन्तर्मन भाई जी के प्रति नतमस्तक हो गया, जिन्होंने मुझे सामाजिक जीवन में आत्मविश्वास, समर्पण, त्याग व सेवाभाव की पगडंडी पर चलना सिखाया और आध्यात्मिक क्षेत्र में मुझे व मेरे परिवार को विपश्यना साधना के मार्ग से जोड़कर मानव जीवन को सार्थक करने का मार्ग दिखाया। धन्य थे वे। उस दिव्यात्मा को मेरा, मेरे परिवार का शत्शत् नमन। उनके द्वारा बताये गये अच्छे पथ-प्रदर्शक को अश्रुपूरित नमन। उनको भुला पाना कठिन ही नहीं असम्भव है। ऐसे महापुरुष को पुन: एक बार हृदय से श्रद्धांजलि।

- श्रीमती मनोरमा लढा, ग्वालियर

श्री श्रीराम जी तापड़िया एक संस्मरण

परम आदरणीय श्री श्रीरामजी तापड़िया को मैंने पहली बार शायद १९६७ में देखा। पुणे शहर के पास आळंदी (महाराष्ट्र) में माहेश्वरी कार्यकर्ता सम्मेलन था। मेरी माताजी को उसमें सम्मिलित होना था। मैं और माताजी वहां पहुंचे तो सारे कार्यकर्ताओं के साथ उनके दर्शन हुए। उन्नत ललाट, गाल की हड्डियाँ उभरी हुई, दुबला -पतला शरीर, साधारण माहेश्वरियों मे अलग ही व्यक्तित्व! वे किस पद पर थे यह तो याद नहीं पर हां, कुछ विशेष पद पर ही थे क्योंकि काफी कार्यकर्ताओं ने उन्हें घेर रखा था। सभा शुरू होने से मालूम हुआ 'समाज सुधार के लिए क्या करना चाहिए' यह विषय था। मार्गदर्शकों में एक श्री राधाकिशनजी लाहोटी भी थे। मेरी माताजी सौ. सोनूबाई हीरालाल जी भुतड़ा ने घूंघट में भाषण दिया। पुणे के १-२ व्यक्तियों ने घूंघट के लिए आपत्ति जताई, पर श्रीरामजी ने हाथ उठाकर उन्हें शांत किया। यहां पर उनकी सर्वसमावेशक प्रवृत्ति का परिचय हुआ। बाद में मैंने भी ३-४ मिनट का वक्तव्य दिया पर १८-१९ वर्ष की पिद्दी-सी लड़की को क्या सुनना, यह भाव उनके चेहरे पर नहीं था बल्कि बहुत ध्यान से वे सुन रहे थे। उनका भाषण बहुत लंबा-चौड़ा भाषण नहीं था। बहुत ही सीमित शब्दों में उन्होंने अपनी बात रखी। कुछ वक्ताओं जैसी कर्कशता और कटुता तो बिल्कुल नहीं थी। एक सौम्य और मृदल स्वभाव के व्यक्ति लगे, वहीं पर श्री मधुजी काबरा, जो उनके निजी सचिव थे, आए थे। उनके हाथ में एक पारदर्शी पेन जैसी चीज थी। उसमें एक चावल के दाने पर श्री रामजी तापड़िया खुदा हुआ था, वे उसे सबको बड़े चाव से दिखा रहे थे। उस वक्त मालूम हुआ कि श्री श्रीरामजी एक बड़े उद्योगपति हैं ,पर उनके व्यवहार से कहीं भी न पैसों का, न ही पद का घमंड झलक रहा था। बहुत ही विनम्रता के साथ सबसे मिल रहे थे। कर्मठ और सच्चे समाजसेवी लगे थे।

ठीक से याद नहीं पर शायद १९७२ या ७३ का वर्ष होगा। मुंबई में गिरगांव के माहेश्वरी भवन के सभागृह में मुंबई के ही की बैठक थी। बोरीवली से २ माहेश्वरी भाइयों के साथ मैं भी गई थी। वहां भी समाज सुधार के लिए, विवाह के फिजूलखर्ची पर रोक लगाने के लिए क्या किया जाए इसकी चर्चा हो रही थी। हम ५-७ महिलाएं और ३०-३५ पुरुष होंगे। भारतीय बैठक थी। मैंने भी खड़े होकर, लड़की दिखाने के कार्यक्रम में होने वाला धन का अपव्यय और झूठा आडंबर इस पर मेरे विचार रखे। तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब श्री राम जी तापड़िया ने उसी वक्त, मेरे बैठने से पहले ही मुझसे पूछा, आप ही बताइए कि इसे कैसे टाला जा सकता है ? क्या उपाय हो सकते हैं ? और मैंने कुछ सुझाव दिए तो उन्होंने कहा, विचारणीय हैं। तब यह बात मेरी समझ में आ गई कि ये केवल हवाई बातें करने वालें में से नहीं हैं। पदलिप्सा के कारण समाज कार्य का दिखावा करने वाले नहीं हैं। तो सच में समाज में सुधार लाना चाहते हैं। और उसके लिए प्रयत्नशील हैं।

तत्पश्चात् अनेक बार श्री मधुजी काबरा के मुंह से उनकी प्रशंसा सुनी। समाज प्रवाह पत्रिका में माहेश्वरी महासभा की कुछ बातों का खुलकर विरोध वे करते रहे। पर महासभा के अध्यक्ष होते हुए भी श्री श्रीरामजी ने उनसे कुछ नहीं कहा। उनकी एक बात और अत्यधिक प्रभावित कर गई कि ईसवी सन २०१४ में, उम्र की ढलान पर भी वे अपनी पुस्तक छपवाने के सिलसिले में ठेठ मुंबई से कलवा -थाने से आगे, स्वयं श्रीमती वैशाली बापट के घर गए। जहां ऑफिस जैसी सुविधाएं नहीं थीं। वहां दो-ढाई घंटे बैठकर अपना काम पूरा किया। किसी तरह की कोई असुविधा नहीं जताई। दूसरा कोई होता तो वैशालीजी को ही अपने यहां बुला लेता, पर हर एक इंसान के काम की कद्र करना और उनके समय का ध्यान रखना यह उनकी आदत और विशेषता थी। वैभव, संपत्ति, यश और कर्मठता के साथ इतनी विनम्रता बहुत ही दुर्लभ गुण हैं।

ईसवी सन २०१२ में मधुश्री काबरा-विशेषांक के विमोचन के अवसर पर मंच पर उनके साथ आसीन होने का सौभाग्य ईश्वर कृपा से मुझे मिला। मुझे बहुत संकोच हो रहा था और मैंने मधुजी से कहा भी कि इतने बड़े व्यक्तियों के साथ में सहज नहीं हो पाऊंगी। मुझे दर्शकों में ही बैठने दीजिए, पर वे नहीं माने। मेरा भाषण होने के पश्चात प्रेक्षकों की भरपूर तालियों के साथ मंचासीन सभी से खासकर श्रीरामजी तापड़िया से भी तालियां मिलीं, यह उनके मन की उदारता ही दर्शाती है। उसी समारोह में परम आदरणीय श्रीरामजी के हाथों, शॉल और स्मृति चिह्न और पीठ पर स्नेह, प्रशंसा भरी थाप पाने का चिरस्मरणीय सुयोग मेरे जीवन में आया। मुझे तो ईश्वर की असीम कृपा का ही आभास होता है जब इतने श्रेष्ठ और विनम्र व्यक्ति से शुभाशीष मिलते हैं।

- पुष्पा बल्दवा

चिरंजीवी व्यक्तित्व

समाज में कुछ लोग ही ऐसे होते है जो स्वयं के साथ पूरे समाज के लिए जीते है, इनकी सोच, इनके विचार, और इनकी दूरदृष्टि व्यापक परिवेश को सम्मोहित करती है, आदरणीय श्रीरामजी तापड़िया ऐसेही बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे।

श्री तापड़ियाजी ने जहाँ लगभग ५० वर्षों तक मुम्बई के समाज की सेवा की, वहाँ पूरे देश का माहेश्वरी समाज भी लाभान्वित हुआ। उनका सम्पूर्ण जीवन निश्चित ही एक आदर्श समाजसेवी का था। उनकी विशेषताओं से सामाजिक संस्थाओं को तो लाभ हुआ ही, साथ में बहुतों को उनसे समाज के लिए कुछ करने की प्रेरणा प्राप्त हुई।

हमें अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि समाज को सही दिशा देने वाले निर्भिक वक्ता, सुस्पष्ट विचार एवं सुलझे हुए विचारों से सम्पन्न श्री तापड़ियाजी के जीवन की विशेषताओं को विस्तार से समाज के समक्ष, प्रस्तुत करने के उद्देश्य से एक संस्मारिका प्रकाशित करने का शुभ निर्णय लिया गया। हम ह्रदय से स्वागत करते हैं।

श्री तापड़ियाजी से हमारा सम्पर्क सदैव रहा है, चाहे प्रादेशिक स्तर पर हो, या महासभा में - हम बड़े ही आत्मीय वातावरण में पारस्परिक विचार विमर्श करते थे। इससे हम काफी लाभान्वित हुए।

उनकी सबसे बड़ी विशेषता थी कि किसी को आहत किए बिना, पूरी निर्भीकता से अपने विचार प्रस्तुत करते थे जिसे सभी बड़े आदर से सुनते थे, कारण उनके विचार बिना लागलपेट के समाज के हित में होते थे।

समाज की प्रचलित प्रणाली से उनकी असहमति थी। वे चाहते थे कि चुनाव निष्पक्ष व शालीनता के साथ हो। नागपुर में महासभा की कार्यसमिति की बैठक में प्राय: सभी ने इस सुझाव का समर्थन किया, लेकिन यह योजना आगे नहीं बढ़ी। श्री तापड़ियाजी ने समाज को सुदृढ और प्रभावशाली बनाने के लिए समय समय पर जो सुझाव दिये, यदि उनका पूर्णत: पालन किया जाता तो आज समाजस्वरूप कहीं और अधिक अच्छा होता।

उनके न रहने से समाज की जो क्षति हुई, उसकी पूर्ति तो कठिन है। हाँ, उनके आदर्शों पर चलकर हम उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि अवश्य अर्पित कर सकते है।

- नथमल डालिया, हैदराबाद

आदरणीय श्रीरामजी तापड़िया मेरे बड़े भाई के समान थे। उनके प्रति मेरे मन में पूरा आदर व सम्मान है। मेरी उनसे अपनी समाज की बैठकों में सदा ही मुलाकात होती थी। वे स्पष्ट वक्ता व सीधे मुद्दे की बात किया करते थे। उनका जीवन सरल और व्यवस्थित था। उन्होंने लम्बे समय तक समाज की सेवा की तथा बड़े-बड़े कार्य किये। वे मेरी बातों को ध्यान से सुनते और उनका समाधान भी निदान पूर्वक करते थे। वे एक दार्शनिक की तरह मुझे मार्गदर्शन करते थे। वे मेरे लिए Guide थे।

आज वे हमारे बीच नहीं है, परन्तु उनके सम्पर्क में रहा हर व्यक्ति उन्हें याद करता है। समाज उनके कार्यों को कभी नहीं भुला पाएगा।

- शंकरलाल गिलड़ा, गुलबर्गा (कर्नाटक)

हमारे प्रेरक, मार्गदर्शक, कुशल, कर्मठ, तेजस्वी, समाज के हृदयहार, अ.भा.माहे महासभा के गौरव, सबके प्रति सहयोग व समपर्ण भाव रखने वाले, सदाचार सेवा से परिपूर्ण आस्था व निष्ठा से जुडे परम आदरणीय भाईजी श्री श्रीरामजी तापड़िया बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे।

भाईजी श्री श्रीरामजी तापडिया के व्यवहार में नम्रता, बेहिचक कार्य करने की सक्रियता, पारदर्शिता, प्रभावशाली मुखमुद्रा, सही सटीक निर्णायक शैली थी, जो किसी भी कार्यकर्ता को प्रभावित करती थी। विद्वत्ता, उद्यम एवं समाज सेवा के क्षेत्र में उनकी अलग पहचान थी। हँसमुख एवं प्रसन्नचित स्वभाव, विनम्रता, मृदुभाषिता व अपनत्व उनके व्यक्तित्व में झलकता था। ओजस्वी एवं गम्भीर भाषा शैली तथा स्पष्ट चिन्तन प्रोत्साहन देने वाला रहा। आपने मुम्बई को अपनी कर्मभूमि बनाया। कर्मभूमि में आर्थिक उपार्जन के साथ अपनी योग्यता का यहाँ के निवासियों को विलक्षण परिचय दिया। उद्योग जगत में आपका जाना पहचाना नाम था। आप मुम्बई समाज सेवा के शुभ संकल्प कर कई संस्थाओं से जुडे। अपनी योग्यता से सभी संस्थाओं के उच्च पद पर पहुँचे। उच्च कोटि के सेवा भावी कार्य कर, उन्हीं संस्थाओं के संरक्षक मार्गदर्शक बने। समाज सुधार के लिए सदैव आपके मन में चिन्तन चलता रहता था। मेरी उनसे जब भी चर्चा होती थी तब समाज उत्थान की ही बातें करते थे। उनका सामाजिक चिन्तन सदैव उच्च कोटि का रहा। आपको मुम्बई में चीरा बाजार एवं अंधेरी में माहेश्वरी भवन निर्माण की प्रथम ईंट कहे तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। आपने भवन निर्माण में अर्थ एवं समय देकर अहम भूमिका निभाई। आप मुम्बई माहेश्वरी समाज के भीष्म पितामह थे।

निस्सन्देह भाईजी श्रीरामजी आज हमारे बीच नहीं है, लेकिन उनकी जीवंत स्मृतियों का प्रेरणादायक इतिहास हमारे मन-मस्तिष्क को झकझोरे बिना नहीं रहता। उनकी स्मृतियों को उकेरते हुये हमारे जीवन को प्रेरणादायी और समाज के प्रति समर्पण की याद दिला रहे है। अनेक अवसरों पर मेने यह अनुभव किया कि जो भी व्यक्ति उनके पास किसी भी समस्या को लेकर आता था, वे बड़े धैर्य और तल्लीनता से उसकी ब्रात सुनते थे और उसके समाधान के लिए प्रयास करते थे। महासभा ने समाज मे जो आचार संहिता का निर्माण किया, उसके क्रियान्वयन एवं पालन में आपका अटूट विश्वास एवं इसके पक्षधर रहे।

मेरा उनसे महासभा स्तर पर सामाजिक सम्बन्ध ही नहीं बल्कि पारिवारिक रिश्ते भी है। मैं तापडिया परिवार का भानजा जवाँई हूँ। वे मुझे हमेशा कंवर साहब के नाम से ही सम्बोधित किया करते थे। परम आदरणीय भाईजी श्री श्रीरामजी तापड़िया आज हमारे बीच में नहीं है, परन्तु अपने गुणों से ऐसे प्रकाश-स्तम्भ बन गयें, जिनके प्रकाश से मानवता, प्रेम व सच्चाई का पथ सदैव आलोकित होता रहेगा। इस स्मारिका के माध्यम से देश एवं प्रदेश के माहेश्वरी समाज के पदाधिकारी एवं समाज के अग्रजों से निवेदन करता हूँ कि उनके बताये हुये रास्तों पर चलकर आपसी मन-मुटाव, गुटबाजी को परे रखते हुये संगठन को मजबूत करें। जिसके लिए आदरणीय भाईजी श्री श्रीरमजी तापडिया सदैव प्रयासरत रहे थे, यही इनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

- रामगोपाल मूंदडा, निर्मला मूंदडा
सूरत

हे नीलकंठ ! तुम्हें प्रणाम ! !

'पद विरत, सेवा निरत' का जीता जागता उदाहरण थे श्रीयुत् श्रीरामजी तापड़िया। पद की आकांक्षा से कभी किसी संस्था से जुड़े नहीं मगर जिस संस्था से जुड़े उसके हमेशा कर्मठ, अनुशासित कार्यकर्ता रहे। 'यश-कामना' नामक प्रभावकारी तत्व के पास यह साहस नहीं था कि उन्हें छू सके। उनकी नाराजगी के भय से उनके निकट के लोग, उनके प्रति श्रद्धा रखने वाले भी उनका सार्वजनिक अभिनंदन करने का साहस नहीं जुटा पाएं। शालीनता के साथ वे अपना पक्ष सशक्त रूप से प्रस्तुत करते थे परन्तु यदि बहुमत उनकी बात को न स्वीकार करे तो उस बात को वहीं छोड़कर वे बहुमत का निर्णय शिरोधार्य करते हुए तद्नुरूप व्यवहार करते थे। अपने विचार को मानने के लिए अपने साथियों को कभी विवश नहीं किया। अपने विचारों के प्रति दूसरे की मत भिन्नता का आदर करना उनसे बेहतर किसी से नहीं सीखा जा सकता। लोगों में विचार-परिवर्तन के लिए प्रतीक्षा करने का उनमें असीम धैर्य था। सशक्त लेखनी और वाणी में ओजस्विता, विचारों में स्पष्टता तीनों ही उनके व्यक्तित्व के अंग थे। जलालत झेलकर भी जीवनभर सिद्धांत पर टिके रहने का उनमें बेजोड़ गुण था। सेवा कार्यों की दृष्टि से माहेश्वरी समाज और 'महासभा' में बीता। अपमान की तपिश झेलते रहे परन्तु उसकी आंच में समाज को नहीं झुलसने दिया। मान-अपमान से उठकर महासभा के एक कर्मठ एवं अनुशासित कार्यकर्ता के रूप में अन्तिम सांस तक महासभा से जुड़े रहे। सिद्धांत पर चलने वाले व्यक्ति को सिद्धांतवादी कहा जाता है, परंतु ऐसे व्यक्ति को क्या कहा जाए, इसका निर्णय तो विद्वतजन करेंगे। तमाम कार्यकर्ताओं के मन में वे वंदनीय से भी ऊपर की श्रेणी के हैं। उनसे सहमति रखने वाले अथवा असहमति रखने वाले सभी उनकी विनम्रता व मिलनसारिता के कायल थे। वे पैसे वाले बड़े उद्योगपति होते हुए साधारण से साधारण कार्यकर्ता से पूरे सद्भाव के साथ मिलते थे। उनकी सरलता, सहजता और स्नेहपूर्ण व्यवहार से कार्यकर्त्ता के समस्त संकोच तिरोहित हो जाते थे। वे अपना पांडित्य कार्यकर्ता पर नहीं झाड़ते थे बल्कि उसकी बात धैर्यपूर्वक सुनते थे और समुचित समाधान देकर उसे संतुष्ट करते थे। सामाजिक संगठन नजदीक से देखने के अभ्यस्त होते हुए भी उनका चिन्तन दूरगामी था। लगभग ३०-३५ वर्ष वाराणसी में कार्यकर्ता के साथ चर्चा करते हुए उन्होंने आशंका जताई थी कि भविष्य में जातिगत संगठनों को अपनी उपादेयता सिद्ध करने के लिए संगठन की रीति-नीति में इस प्रकार का परिवर्तन करना होगा कि प्रत्येक स्तर पर समाज बंधुओं को यह महसूस हो कि संगठन से उन्हें कुछ मिल रहा है।

उनके जीवन के सर्वाधिक वर्ष माहेश्वरी समाज और उसके संगठन 'महासभा' की सेवा करते हुए बीते। मुम्बई माहेश्वरी प्रगति मंडल उनके चिन्तन, उनकी कार्यपद्धति, उनके लोकतांत्रिक मूल्यों की यश-पताका फहरा रहा है। भूल स्वीकार करते हुए उसके लिए क्षमा मांगने वाले को वे क्षमा करने के पक्षधर थे, परंतु उन्हें अपने जीवन में बगैर अपराध किए दण्ड भोगना पड़ा।

बीकानेर अधिवेश में वे महासभा के प्रधानमंत्री (उस समय महासभा के महामंत्री को प्रधानमंत्री कहा जाता था) चुने गए। तापड़िया जी ने अपने यहाँ महासभा के सचिवालय के लिए एक योग्य समाज बंधु भाई मधु श्री काबराजी की अपने यहाँ नियुक्ति की। विचारस्वच्छन्दता मधु भाई का स्वभाव था और महासभा के तत्कालीन अनेक शीर्षस्थ पदाधिकारियों के सोच और कार्यशैली से उनकी मत-भिन्नता थी। तापड़िया जी ने मधु भाई से कहा कि महासभा सचिवालय का काम तो मधु जी को उनकी (तापड़िया जी की) मर्जी और पॉलिसी के अनुसार ही करना होगा। ड्यूटी के समय के अतिरिक्त मैं तुम्हारे विचार-स्वातंत्र्य में बाधक नहीं बनूंगा। दोनों महानुभावों ने अपने वादे को पूरी ईमानदारी के साथ निभाया। तापड़ियाजी के यहाँ ड्यूटी के बाद मधुजी अपनी विचार-स्वच्छन्दता को पार देते हुए महासभा के तत्कालीन शीर्षस्थ लोगों पर तंज कसते हुए भर्त्सना का पहाड़ खड़ा करने में देर नहीं लगाते थे। शब्दों की शिष्टता-अशिष्टता की परिधि तोड़ने में देर नहीं लगती थी। स्वयं भाई मधु श्री काबरा ने स्वाकारा है कि 'श्रीराम जी मुझसे कहा करते थे कि तुम्हारी बातें तो समाज हित की है, सिद्धान्त: ठीक होता है परंतु तरीका सही

नहीं होता। ....भाषा संयत और शालीन रहे तो विरोधी भी सहमत होंगे। ...अपनी भाषा ठीक करो। उन्होंने (मेरे साथ) अपनी बात का आग्रह हमेशा बनाए रखा। इसके फलस्वरूप लंबे समय के बाद मेरी शैली में धीरे-धीरे नरमाई आने लगी, फिर भी तापड़ियाजी की राय की हद तक नहीं। कई बार ऐसे प्रसंग आए जब मेरे (मधु काबराजी की) लेखनी ने श्रीरामजी के बारे में लिखा। ऐसे में श्रीरामजी की प्रतिक्रिया की ओर इशारा करते हुए मधु भाई लिखते हैं कि ''उनके (श्रीरामजी के) लिए भृगु ऋषि (व भगवान विष्णु) वाली उपमा ही मेरा जवाब है।''

तापड़ियाजी के कार्यालय के अतिरिक्त मधु भाई को जो प्लेटफार्म मिलता, जो भी साधन हाथ लगता उसका वे महासभा के खिलाफ जमकर उपयोग करते। यहाँ तक कि इसके लिए अपने सम्पादन में समाज-प्रवाह नामक पत्रिका का प्रकाशन भी शुरू कर दिया। धीरे-धीरे तापड़िया जी पर यह दबाव बढ़ने लगा कि वे मधु काबराजी को अपने यहाँ से कार्यमुक्त करें। इस प्रकरण में तापड़ियाजी का सैद्धान्तिक पक्ष यह था कि मधु काबरा मेरे वहाँ ८ घण्टे की नौकरी करता है। इस अवधि में मेरे विचारों के अनुरूप कार्य करना उसके लिए अनिवार्य है। शेष अवधि में उससे असहमत होने के बावजूद शेष अवधि में उसे उसके विचार-अभिव्यक्ति के लिए रोकना अथवा नौकरी से निकालना उसके संवैधानिक अधिकारों का हनन होगा। तापड़ियाजी के इस जवाब पर लोगों ने उन पर तोहमत लगाना शुरू कर दिया कि आप खुद ही मधु काबरा से वह सब करवा रहे हैं। बहुत समय बाद इसका सन्दर्भ देते हुए भाई मधु काबराजी ने लिखा कि, ''श्रीरामजी की महानता रही कि वे सबके तीर झेलते रहे। मुझको लेकर इतना बवण्डर मचा गया, मेरा घोरतम विरोध हो रहा था परन्तु श्रीरामजी ने मुझे नौकरी से नहीं निकाला और न ही मुझे कोई ठपका दिया।'' अपने सैद्धांतिक पक्ष की रक्षा हेतु और विषाक्त हो रहे वातावरण से महासभा को बचाने के लिए तापड़ियाजी ने महासभा के पद से त्याग पत्र दे दिया। इसके पूर्व मधु श्री काबराजी को महासभा से निष्कासित किया जा चुका था। यहाँ यह स्मरण करना आवश्यक है कि समय-समय पर महासभा के कई शीर्ष-पुरुषों का अपने समय के नेतृत्व से टकराव हुआ तो वे महासभा से इस प्रकार विरत हुए कि वे सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में भी संस्था से जुड़कर नहीं चले। एक मात्र तापड़िया जी अपवाद हैं जो सब कुछ सहने के उपरान्त एक सक्रिय व अनुशासित कार्यकर्ता के रूप में महासभा से जुड़े रहे। उनसे काफी जूनियर लोगों ने नेतृत्व संभालते हुए तापड़िया जी को जब कोई काम सौंपा, उन्होंने बिना हिचक उसका निर्वाह किया।

सामाजिक संस्थाओं व समाज-चिन्तन को लेकर अपने समाज के कार्यकर्ताओं के नाम तापड़िया जी ने १२.०८.२०१० को एक आव्हान-पत्र जारी करते हुए लिखा था कि, ''मैंने जो सामाजिक समस्याओं पर चिन्तन किया उसकी परिधि व गंभीरताओं के बारे में सोचा और समझा, उनको लिपिबद्ध किया है। इस पत्र के साथ चिन्तन का एक संकलन संलग्न कर रहा हूँ। ..... मैं आपका आह्वान करता हूँ कि विभिन्न समस्याओं का अध्ययन करें, साथी कार्यकर्ताओं के साथ चिन्तन व विचार-मन्थन करें एवं समस्याओं के निवारण में अग्रसर हो।'' उनके संकलन में प्राय: समाज की सभी समस्याएँ सम्मिलित हैं, समस्याओं की विवेचना है और उनके समाधान के सूत्र भी हैं। आज से १२ वर्ष पूर्व जारी पत्र आज भी प्रासंगिक है। आज भी हम उससे मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं। उन्हें समाज की समस्याओं की पहचान थी, उसके समाधान के लिए उनके मन में तड़प थी, समाज के कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर वे उनका समाधान करना चाहते थे - यह सब जानने के लिये उनके उसे आह्वान-पत्र व उसके साथ संलग्न 'संकलन' का अध्ययन आवश्यक है।

श्रीरामजी साहब मान-अपमान से ऊपर उठ चुके थे। वे वीतरागी हो गए थे। अपने ऊपर हुए अनर्गल आरोपों को दंश झेलते हुए भी उनका मन-मस्तिष्क किसी अन्यथा भाव से विचलित नहीं हुआ। इतना ही नहीं पूरे प्रकरण की तपिश तो खुद झेल लिया मगर समाज को उसमें झुलसने से बचा लिया। हमारी पीढ़ी इसकी साक्षी है इसलिए बरबस मुंह से निकल पड़ता है कि - हे नीलकण्ठ! तुझे प्रणाम!!

- श्रीराम माहेश्वरी, वाराणसी

माहेश्वरी जुलाई-२०२२ से साभार

आदरणीय श्रीरामजी तापड़िया साहब न केवल मुंबई समाज के बल्कि पूरे देश के माहेश्वरी समाज के अनमोल रत्न थे।

मेरा उनके साथ परिचय १९७० के दशक में हुआ था और तत्पश्चात् उनके साथ पारिवारिक सम्बन्ध भी बन गया क्योंकि मेरे निकट के मित्र श्री गोविंदलालजी काबरा के सुपुत्र के साथ आपकी पुत्री का विवाह सम्पन्न हुआ। इस कारण से उनसे नजदीकियाँ बनी और वे जब भी अहमदाबाद पधारते जब हमारी काबराजी के यहाँ पर गोष्ठी जमती थी और समाज से लेकर देश तक की चर्चाएं होनी स्वाभाविक होती थी। उनके विचारों में समाज के प्रति काफी गहरी रुचि होना इस बात का द्योतक था कि वे माहेश्वरी समाज के उत्थान के बारे में निरंतर सोचते रहते थे। उनका स्पष्ट अभिप्राय था कि समाज के आर्थिक रूप से कमजोर भाईयों को हाथ पसारने वाला नहीं, आत्म सम्मान के साथ अपना जीवनयापन कर सकें, ऐसा बनाना है। आपके विचारों से मैं बहुत प्रभावित था।

श्री तापड़ियाजी के साथ बातों का सिलसिला रोचक होता था और चर्चा करते समय वक्त का ध्यान ही नहीं रहता था। मुझे स्मरण है कि एक बार बातें करते-करते काफी देर हो गई। दूसरे दिन उनका फोन आया जिसने उन्होंने इस बात का अफसोस किया कि उनके कारण रात में देर हो गई। उनके मन में कोई दुविधा नहीं होती थी और सबके साथ बड़े स्पष्टवादी थे। किसी भी समस्या के बारे में उनका स्पष्ट विचार होता था और लेशमात्र राजनीति नहीं थी। इसी कारण से सामाजिक सभाओं में उनकी स्पष्ट विचारधारा होती थी।

- रामनिवास राठी, अहमदाबाद

भाईजी श्रीरामजी अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के एक स्तम्भ अंग थें। प्रारम्भ से ही आपने महासभा को उच्च शिखर पर पहुंचाया। तत् पश्चात् जब चुनाव प्रक्रिया का माहौल शुरू हुआ तब से वह अपने आप महासभा से अलग होते गये। क्योंकि यह जो चुनाव प्रक्रिया प्रारम्भ हुई तब से उनको बहुत बड़ा खेद पहुंचा था। उनकी सोच थी कि जो सेवा करने वाले लोग है वे आगे आयें। उसमे कोई चुनाव का उदेश्य नही रहता है। जब भी चुनाव का कार्यक्रम होता तब मेरे से मोबाइल पर एवं उनका मूल निवास जसवन्तगढ़ में रूबरू वार्तालाप होती थी। वे बोलते थे ''भाई श्रीनिवास अब महासभा केवल धनी लोगों की एवं माला पहनने वालों की संस्था हो गयी है। सेवाभाव अब महासभा में कुछ भी नहीं रहा है। जब महासभा का सोच इस तरह बन जायेगा तो नीचे की सभी संस्थाए उसी राह पर चलेंगी तो मेरा अब महासभा में किसी तरह की रूचि नही रही है। तो यह बहुत ही गम्भीर सोच उनके दिल मे रहती थी। आज उनके सोच का साकार रूप हम लोग देख रहे है।

जसवन्तगढ़ कई बार आते तो मुझे सूचना मिलते ही मै मिलने के लिये जाता था। जसबन्तगढ़ में एक माहेश्वरी भवन का शिलान्यास हुआ। उसमें भी मै राजस्थान प्रदेश अध्यक्ष पद से मौजूद था। तो कई लोगो ने मुझे कहा कि तापड़िया परिवार की इसमें सहमति नही बन रही है। तो मेने उन लोगों से कहा कि श्रीराम भाईजी बहुत उच्च सोच के धनी है आप उनसे सम्पर्क कर तापड़िया परिवार की सहमति बना लें। इससे आपका भवन का भव्य रूप से निर्माण हो जायेगा। मेरी इस बात पर गौर करके इस बात का मनन किया और श्रीराम भाईजी से सम्पर्क करने पर आज भवन का भव्य रूप से निर्माण हुआ है। जो नागौर जिले का एक भव्य अंग है।

भाईजी बहुत ही विशाल सोच के धनी थे। भगवान महेश से प्रार्थना है की ऐसी धार्मिक आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

- श्रीनिवास तापड़िया, जोधपुर

श्रद्धेय श्री श्रीरामजी तापड़िया, मुम्बई

कीर्तिशेष श्री श्रीरामजी तापडिया उम्मीद के रूप में आज भी हमारे बीच हैं. कहते हैं कि महापुरुषों का जन्म होता है लेकिन मृत्यु नहीं होती। महापुरुष अपने विचारों के जरिए जेहन में हमेशा जिंदा रहते हैं। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के सामने आदर्श मार्गदर्शक, नेतृत्व रखने के रूप में सबसे लोकप्रिय श्रीरामजी रहे, श्री श्रीरामजी तापडिया। पर इस मामले में यह कहावत पूरी तरह से सही साबित होती है। लगभग २ वर्ष पूर्व दि. २२ जुलाई २०१४ वे हमसे बिछुड जाने के बावजूद श्रीरामजी सशक्त और सम्पन्न माहेश्वरी महासभा संगठन की उम्मीद के रूप में आज भी हमारे बीच मौजूद हैं। उनकी बातें, उनकी कार्यशैली , कार्यक्षमता, सहन करने की वृत्ति के हम कायल हैं। उन्हे समझ लेने से हमारी जिंदगी भी बदल सकती है। माहेश्वरी महासभा के कुशल सारथी के रुप में श्रीरामजी मनसा-वाचा-कर्मणा सदैव प्रयासरत रहे तथा अभूतपूर्व योगदान दिया. समाजोन्मुखी गतिविधियों के संवाहक के रुप में जीवन के अंत तक समर्पित रहे. भिन्न मत रखनेवालों से, अपने मातहत काम करनेवालों से भी बैर नहीं रखा।

आद. श्री श्रीरामजी तापडिया से मेरा व्यक्तिगत रूप से संपर्क नहीं रहा इसका मुझे खेद है। किंतु सभाओ में तथा पत्र पत्रिकाओं में उनके विचार, चितनपूर्वक उद्बोधनोसे उन्हे अपने निकट पाया. मेरी लिखी किताबों पर उनकी टिप्पणी हरदम मिलती रही। उनकी लेखनी से मानव समाज और मूल्यों को समझने, अपने कर्तव्यों का पालन करने की प्रेरणा मिलती रही। ऊँचा कद, इकहरा बदन, धीर गंभीर चेहरा, मर्मस्पशी नेत्रावली, सौजन्य के भाव, मोहक व्यक्तित्व, वाणी में ओज और तेज था। गहन अध्ययन के बाद ही कुछ कहते लिखते। सामाजिक संगठनों के परामर्शदाता, सामाजिक समस्याओं को न्यायपूर्ण सुलझाने के न्यायाधीश थे। निर्मल, निराभिमानी, रचनात्मक कायों के हिमायती, समाज के गौरव पुरुष एवं समाज के दीपस्तंभ रहे। अनेक संस्थाओं से संपर्क, सुख्यात उद्योगपति के बावजूद बेहद विनम्र और उदार थे।

मेरा सामाजिक कार्यो से ४४ वर्षो से सरोकार रहा। ४० वर्षो से श्रृंखलाबध्द सामाजिक संगठन में जमीनी कार्यकर्ता से महासभा कार्यसमिति सदस्य तक अविरोध चयन हुआ। यह सब कीर्तिशेष अ‍ॅड. नारायणदासजी राठी के मातहत संभव हुआ। लगभग ३० वर्ष पूर्व वे श्री श्रीरामजी द्वारा बिडला सभागृह में आयोजित एक परिचर्चा में भाग लेने मुंबई गए थे। वहां श्री श्रीरामजी ने २ दिवसीय सत्र में सामाजिक ज्वलंत समस्याओंपर अपना शोध प्रबंध प्रस्तुत किया था। पहला विषय था विधवा एवं परित्यक्ता बहिनों की समस्याए एवं समाजक दायित्व... ५ पेज. दूसरा विषय था वधू - हत्या एवं आत्महत्या की समस्या का निराकरण .... १४ पेज। अ‍ॅड राठीजी ने पढने एवं चर्चा के बाद वे मुझे दिये। उन्ही दिनों मैंने सामाजिक चिंतन और लेखन की शुरुवात की थी। आज भी वे आलेख पढ़ता हूं तो उनकी कितनी दूरदृष्टि थी, विचारों से कितने परिपक्व थे, गहन चिंतन था, भविष्यद्रष्टा थे इसका एहसास होता है। उसमें का एक - एक शब्द आज भी प्रासंगिक है। ऐसी महान विभूति को जो नैतिकता, व्यावसायिकता, लौकिकता, सामाजिकता, मनुष्यता आदि के सभी उच्च मापदंड पूरा करते थे, महासभा का नेतृत्व करने नहीं मिला, यह समाज की बडी विडंबना है। काश वे महासभा के सभापतित्व का पद विभूषित करते तो आज की महासभा की दशा और दिशा कुछ और होती। उस समय बाहुबल, धनबल, समूहबल तो नही था पर ब्याही बल अवश्य चल रहा था। इतना अन्याय होने पर भी श्रीरामजी ने कभी अपनी व्यथा प्रकट नहीं की, संयम और अनुशासन बनाए रखा। उनके लिए पद, प्रसिध्दि कोई मायने नहीं रखती थी पर समाज की दृष्टि में पद के लिए उनका अपना महत्व था।

महासभा में सभापति चयन के बजाय अब चुनाव का दौर चल रहा है। प्रथम चुनाव समिति के कर्णधार के रूप में श्रीरामजी को यह दायित्व सौंपा गया। व्यापक समाज हित में एक चुनौती के रूप में उन्होंने स्वीकार किया। कानून

और अधिकारों के बलपर शेषन ने देश में आदर्श पद्धति से चुनाव करवाये। सामाजिक संगठनों में चुनाव बड़ा दुरीह कार्य है। कानून कायदे का तो ध्यान रखना ही पड़ता है साथ में सभी को विश्वास में लेकर सामंजस्य और समझौतापूर्ण रवैय्या अपनाना पडता है। श्री श्रीरामजी ने चुनावों का आयोजन सुव्यवस्थित, पद्धतिपूर्ण किया कि वह अब मॉडल बन गया है। उसी के साथ उन्होंने आगे के चुनाव सम्पन्न करवाने श्री विष्णुदासजी दरक, श्री रमेशजी मरदा जैसे व्यक्तियों को प्रेरित किया। और इन लोगों नें भी तीसरी पंक्ति के लिए श्री प्रकाशजी बाहेती का सही सही चयन किया। यह श्रीरामजी का महासभा के प्रति प्रतिबध्दता का द्योतक है। आज ५-५ उपाध्यक्ष रहनेपर भी अस्थाई सभापति का पद संभालने एक भी व्यक्ति सामने नहीं आया। श्रीरामजी के आचरण को समझने यह मिसाल सामने रखी है।

श्री श्रीरामजी तापडिया कभी पद के आकांक्षी नहीं रहे। प्रसिध्दि से भी अलाहिदा रहे। मैं कागदपत्र टटोल रहा था तो कुछ लोगों के ४-६ परिचय पत्र फोटो मिले। श्री श्रीरामजी बाबत कुछ नहीं मिला। समाज संगठन गठन और राष्ट्रीय चुनाव के प्रणेता, समाज में चल रही उच्छृंखलता को समझने के चाणक्य थे। योग कर्मषु कौशलम् यह सूक्ति तापड़ियाजी पर सटीक बैठती है। नैतिकता, मर्यादा, धर्म, संस्कृति, परंपरा ऐसे समाज के सारे मानक एक ही व्यक्ति में साकार होने से वे समाज के आदर्श बने। उन्होंने संकट और तनाव को असाधारण दुरूह क्षणों में भी संघर्षशील, विवेकशील मनोवृत्ति का परिचय दिया और अपनी भूमिका का सफल निर्वहन किया। यह वर्तमान और भविष्य की पीढी के लिए एक आदर्श है, प्रेरणास्त्रोत है.

श्री श्रीरामजी तापडिया कर्तव्यनिष्ठ पुरुष थे। कर्मनिष्ठ नायक थे। धुन के पक्के, सरल, मधुरभाषी, मिलनसार, विनम्र थे। ऐसे महान समाजसेवी पर हमें गर्व एवं नाज है। समाज के एक अष्टपहलू हीरा थे। दक्षता और दूरदर्शिता का अद्भुत संगम था। समाज का विकास और विकसित समाज का जहास उनके चिंतन के बिंदु मुख्य थे। वर्तमान महासभा नेतृत्व ने इन विषयों को पूरी तरह दफना दिया है। पैसे जमा करना, अपनों के नाम से ट्रस्ट बनवाना, और रुपये बाँटना यही कार्य रह गया है। चुनाव में येनकेन प्रकारेण सफलता हासिल करना यही सेवा कार्य हो गया है। कहाँ ले जायेगा नवोन्मेष ? कथनी करनी के अंतर के कारण समाज में इनका प्रभाव नहीं रहा। एक वाक्य में कहूं तो समाजको गौरवपूर्ण अतीत कायम रखने और वर्तमान की आवश्यकता पूरी करने के लिये फिर किसी राम-श्याम के जन्म की जरूरत है, प्रतीक्षा है।

- श्यामसुंदर टावरी, अमरावती

श्री श्रीरामजी तापड़िया का निधन

मुझे यह जानकर अत्यंत ही दुख हुआ है कि हम सबके प्रिय महासभा के भूतपूर्व महामंत्री श्री श्रीरामजी तापड़िया हम लोगों के बीच नहीं रहे। श्री श्रीरामजी का जीवन सिद्धांतों एवं आदर्शों पर आधारित अभूतपूर्व एवं अविस्मरणीय था। सम्पूर्ण भारत के माहेश्वरी समाज ने अपना एक महान नेता एवं अभिभावक को खोया है। इस क्षति का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता है।

मेरा उनसे व्यक्तिगत निकट का सम्पर्क रहा है। मैं उनके कार्य करने की पद्धति एवं नि:स्वार्थ सेवाभाव से अभिभूत रहा हूं एवं उन्हें सदैव अपना आदर्श मानता रहा हूं। मैं अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा एवं सम्पूर्ण माहेश्वरी समाज की ओर से हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं एवं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनके परिवार को इस सदमे से उभरने की शक्ति प्रदान करें एवं दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें।

ॐ शांति ॐ शांति ॐ शांति

- जोधराज लड्ढा

सभापति - अ.भा. माहेश्वरी महासभा

श्रीराम तापड़िया का नाम आते ही स्मरण हो आता है उनका घनिष्ट स्नेह एवं वात्सल्य से भरा एक व्यक्तित्व। उनका और मेरा परिचय १ ९ ६ ७ में बीकानेर में हुआ जब वह अ.भा माहेश्वरी महासभा के प्रधानमंत्री बनें। उनकी कार्य करने की क्षमता से सदैव प्रभावित रहा, स्पष्टवादिता से बात कहना उनका स्वभाव था।

माहेश्वरी महासभा के अधिवेशन में अक्सर उनसे मुलाकात होती रहती थी। एक बार उनके साथ ही बम्बई से हैदराबाद के अधिवेशन में ट्रेन द्वारा मधुश्री जी काबरा के संग जाने का अवसर मिला। लम्बा सफर था। खूब बातें होतीं रहीं। आपकी सज्जनता का विनम्रता का यह उदाहरण था कि उन्होंने भी अपना रिजर्वेशन उस जमाने में तृतीय श्रेणी में ही हमारे संग करवाया था और हम सबका खाना उनके घर से ही बनकर आया था। यह उनकी सादगी का अनुपम उदाहरण था जिसे मैं आजन्म नहीं भूल सकता ।

महासभा के विभिन्न पदों पर जब-जब मेरी नियुक्ति हुई, उन्होंने मुझे सदैव बधाई प्रेषित की। कार्यसमिति का सदस्य संयुक्त मंत्री, अर्थमंत्री तथा माहेश्वरी बोर्ड के सदस्य रहने पर भी उन्होंने सदैव मेरा मार्गदर्शन किया तथा उत्साहवर्द्धन किया। उनका मुझसे कितना अपनापन था इसका उदाहरण एक वाकया है, एक दिन उनका अचानक फोन आया कि सुरेश, मेरी लड़की मीना बाढ़ के कारण भड़ौच के आसपास पुल क्षतिग्रस्त होने के कारण अटक गई है एवं कोटा १ २ घंटे के विलम्ब से पहुँचेगी। तुम उनके भोजन की व्यवस्था कर देना, उन्होंने उसके मोबाइल नम्बर दे दिये। मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि मुझे उनकी लड़की की सेवा करने का अवसर मिला है। मैं और पत्नी उन सबका खाना घर से लेकर ट्रेन पर पहुँचे एवं मीना से मिले एवं खाना खिलाया। इस बात से वे अत्यधिक भावुक होकर मोबाइल पर कृतज्ञता प्रगट करने लगे। मैंने अत्यधिक विनम्र शब्दों में कहा कि मुझे आपकी सेवा का अवसर मिला इससे मैं धन्य हो गया और आपका आशीर्वाद प्राप्त करने वाले तो भाग्यशाली ही होते है।

इसी सन्दर्भ में एक बार स्वयं उनका फोन आया कि सुरेश, मैं कोटा से गणगौर ट्रेन से जयपुर जाऊंगा। तुम कोटा की कचौरी और खाना ले आना। यह मेरे जीवन में स्वर्णिम अवसर था जब साक्षात श्री एवं श्रीमती तापड़ियाजी के स्वागत का अवसर मिल रहा था। हम दोनों पति-पत्नी यथासमय उनसे मिले और कोटा की कचौड़ी आदि दी एवं भोजन सामग्री भेंट की, वे भी बम्बई से हमारे लिये विभिन्न सामग्री लाये थे जो उनके प्रेम, स्नेह एवं वात्सल्य की प्रतीक थी।

मैं जीवन में उनके द्वारा प्रदत्त स्नेह वात्सल्य एवं आत्मीयता को कभी नही भूल सकता, ऐसे युगपुरुष को मेरी हार्दिक श्रद्धांजलि एवं शत शत नमन।

- सीए सुरेश सोमानी कोटा

पूर्व अर्थमंत्री अ.भा.माहेश्वरी महासभा

१३-८-१४
मोडासा

सम्माननीया सुमन जी,
सादर नमस्कार।

स्वस्थ होंगे। स्वस्थता व कुशलता के लिए मंगल कामना। कुछ दिनों पूर्व पता चला हमारे वरिष्ठ एवं अति सम्माननीय धर्म स्नेही श्री श्रीरामजी की चिर विदाई का। दु:ख हुआ।

आपके लिए उनका वियोग निश्चय ही कष्टकर रहा होगा, पर इसको धर्म भाव जगाये रखकर समता सह लिया होगा। आपका शरीर स्वास्थ्य ठीक बना रहे और धर्म भावना दृढ़ होती रहे यही धर्म कामना।

सम्माननीय वरिष्ठ की निकटता का लाभ पिछले अनेक वर्षों में बहुत बार मिलने का सद्भाग्य मुझे मिला था, जिसकी याद से मन प्रसन्नता से भर जाता है। प्रशंसनीय है उनकी निस्वार्थ सेवा भावना, सबको साथ लेकर चलने की कार्य पद्धति, छोटे से छोटे धर्म सेवक से भी आत्मीय जन सम व्यवहार करते हुए उसे प्रोत्साहित करने का स्वभाव, संघ भावना के महत्त्व को समझते हुए, सभी इसी को प्रमुखता देते हुए सेवा करते रहे, इसके लिए सक्रिय प्रयास! सभी प्रकार की सेवा - चाहे विपश्यना के प्रथम केन्द्र के प्रथम प्रमुख ट्रस्टी के रूप में हो या चाहे किचन की कठिनतम सारी व्यवस्था को सुगठित व सुव्यवस्थित करते रखते हुए इसको संभालने की सेवा हो या समाज के किसी महत्त्वपूर्ण स्थान पर पदाधीन रहते हुए अपना योगदान दिया हो.... उनके लिए एक अर्थ में सभी समान थे। न एक के लिए लगाव नजर आया, न दूसरे के लिए दुराव। स्नेह भी देखा, सद्भाव भी देखा। सत्य का साथ भी देखा, दृढ़ता का आचरण भी देखा। ममत्व भाव में प्रसन्नतापूर्वक अपनी सेवा द्वारा यथायोग्य योगदान करते रहें। पुण्य पारमी संवर्धन अथक करते रहे।

वरिष्ठ का स्मरण मन में कृतज्ञता का भाव भी जागता है। धर्म के पथ पर आगे बढ़ने एवं आगे बढ़ाने में प्रयत्नशील ऐसे अनेक गुणों के धनी को निकटता से देखने-समझने का अवसर मिला। साथ ही पिछले कुछ वर्षों से दीपावली पर्व निमित्त लिखित रूप में संदेश के आदान-प्रदान के अवसर भी रहे थे। जिसको लेकर मन सेवा के भाव से व मोद से भर उठता है। उनके मंगल की... सेवामय, धर्ममय उन्नत जीवन की धर्मकामना भीतर से उठती है। मंगलभाव आ. वडील के लिए। खूब मंगल भाव आपके लिए। श्रद्धा सुमन वरिष्ठ के चरणों में।

- जयेश सोनी

भाई श्री श्रीरामजी तापड़िया सा. के स्वर्गवास के समाचारों से मैं ही नहीं हमारे पूरे समाज को गहन दु:ख हुआ है।

समाज में उन जैसा स्पष्ट विचारक एवं समाज के प्रति चिंतन करने वाला अब कोई नहीं रहा। माहेश्वरी समाज में इस कमी की पूर्ति करना ही कठिन है। वैसे बीच में स्वास्थ्य ठीक था, फिर अचानक क्या हो गया ?

मैं अपनी एवं परिवार की ओर से एवं इन्दौर के समस्त समाज बंधुओं की ओर से उन्हें नमन करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। ईश्वर समस्त तापड़िया परिवार को इस गहन दु:ख को सहन करने की शक्ति दे एवं उनकी चिरशांति प्रदान करें।

बनवारीलाल जाजू (माहेश्वरी)
अध्यक्ष-गीता भवन ट्रस्ट, इन्दौर
प.पू. उपसभापति अ.भा. माहेश्वरी महासभा

शोक संदेश

माहेश्वरी प्रगति मंडल - मुंबई के कर्णधार एवं हमारे समाज के परम सम्माननीय सदस्य आदरणीय श्री श्रीरामजी तापड़िया का स्वर्गवास दिनांक २२ जुलाई २०१४ को मुंबई में हो गया। उनके स्वर्गवास से विदर्भ के पूरे माहेश्वरी समाज में शोक की लहर फैल गयी।

जो सबका मंगल करता है लोग उसी की वंदना में अपने श्रद्धा सुमन आदर पूर्वक समर्पित करते है। ऐसे ही विरले लोगों में परम सम्माननीय एवं हम सबके लाड़ले श्री श्रीरामजी तापड़िया थे, जिन्होंने अपनी कुशाग्र बुद्धि, कर्तव्य परायणता, कर्मनिष्ठा, श्रेष्ठ संचालन तथा निस्वार्थ लगन से अपने व्यक्तित्व का स्वयं निर्माण तथा माहेश्वरी समाज का सुचारू रूप से गठन किया। इस धरा पर आज अपने कार्यों द्वारा खुशबू फैलाना और जाना यही जीवन है। प्रकृति के इस अटल नियम के आगे हम सब मजबूर हैं, नतमस्तक हैं। प्रभु से यही प्रार्थना है कि तापड़िया परिवार को यह असहनीय दु:ख सहन करने की शक्ति प्रदान करे, दु:ख की इस घटी में हम सब सहभागी हैं।

मैं विदर्भ प्रादेशिक माहेश्वरी संगठन की ओर से तापड़िया परिवार को संवेदना प्रगट करता हूँ एवं पूजनीय श्री श्रीरामजी तापड़िया को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। उनके बताये सिद्धांतों को, उनके आदर्शों को जीवन में अपनायें यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी। परम पिता परमेश्वर से यही प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को चिर शांति प्रदान करें।

- सज्जन कुमार मोहता

अध्यक्ष, विदर्भ प्रादेशिक माहेश्वरी संगठन

प्रार्थना

है प्रार्थना गुरूदेव से यह स्वर्गसम संसार हो,
अति उच्चतम जीवन बने, परमार्थमय व्यवहार हो।
ना हम रहें अपने लिए, हमको सभी से गर्ज है.
गुरूदेव यह आशीष दैं, जो सोचने का फर्ज है।।
ॐ शान्ति शान्ति शान्ति

भाईजी के कुछ आदर्श हमारे जीवन में धारण किया उसका संक्षिप्त में विवरण लिख रहा हूँ।

भाईजी का यही बोलना था कि बच्चों का आपके साथ स्नेह, प्यार व लगाव तभी रहेगा - जब आप उनसे बार-बार मिलते रहे - चाहे वह भारत के कोई कोने में होवे या भारत के बाहर - जहाँ बच्चे रहे वहाँ अपने को आते-जाते रहना चाहिये यानि उनसे पूरा सम्पर्क रहना चाहिये।

भाईजी का यही बोलना था कि भाईयों में हमेशा प्रेम रहता है - बाकि नई पीढ़ी के विचार भाईयों से कुछ अलग हो सकते हैं - जो स्वाभाविक है - जब वो व्यापार में आ जावे या इन्कम करने लग जावे उस टाईम पर व्यापार साथ में रहते हुये अलग-अलग हो जावे तो हरजा नहीं - प्रेम ज्यादा बना रहेगा।

भाईजी हमेशा बोलते थे कि जो भी अच्छा काम करोगे तो भी उसमें कमी रह सकती है - उसकी आलोचना हो सकती है - बाकि तुम अपने कार्य करते रहो - आलोचना से घबराओ मत।

भाईजी हमेशा यही बोलते थे कि शहरों में रहने के कारण सभी सदस्यों का मिलना रोज नहीं हो सकता - सो जैसा टाईम मिले सामूहिक रूप से बार-बार मिलते रहना चाहिये ताकि आपस में बैठकर दुख-सुख में सभी भागीदार बन सकें।

भाईजी के ये चार विचार मूँधड़ा परिवार में विचार-विमर्श होता रहता है - परिवार में सुख-शान्ति व समृद्धि बराबर बढ़ रही है। परिवार का कोई सदस्य चाहे भारत में, चाहे विदेश में सब पूरे सम्पर्क में रहते हैं। भाईजी आदर्श के पात्र रहे है व पूरा तापड़िया परिवार प्रेरणा के लायक हैं।

- नोरंगलाल मूँधड़ा

दिव्यात्मा श्रद्धेय भाईजी श्रीराम जी तापड़िया को अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

लाखों आये, लाखों गये, जिनकी नहीं निशानी है। जिसने कुछ कर दिखलाया, उसकी अमर कहानी है।।

समाज में अपने श्रेष्ठ कार्यों के द्वारा अपने नाम की अमर कहानी लिखने वाले कोई और नहीं हमारे अपने सामाजिक चिंतक, श्रेष्ठ विचारक, सहज एवं सरस व्यक्तित्व के धनी आदरणीय भाईजी श्रीराम जी तापड़िया थे। आप दृढ संकल्प शक्ति, सकारात्मक चिंतन, समाज के प्रति समदृष्टिकोण को अपने चरित्र में संजोकर भारतीय संस्कार और संस्कृति के पोषक बने रहे। आपके अचानक चले जाने के समाचार ने सम्पूर्ण समाज बन्धुओं को शोक संतप्त कर दिया। मुम्बई माहेश्वरी समाज के तो आप कर्णधार थे। आपके कुशल नेतृत्व में माहेश्वरी प्रगति मण्डल, मुम्बई पिछले ५० वर्षों से एक सूत्र में अवगुंठित होकर सम्पूर्ण समाज के लिए एक मिसाल बना हुआ है।

किसी व्यक्ति की गरिमा का मापदण्ड सिर्फ उसकी धन संपत्ति से नहीं होता, बल्कि उसका अपना व्यक्तित्व होता है। जिसके पीछे उसको कर्मठता, सेवा, त्याग उसके जीवन के आदर्श उसका सौम्यता, शांतिप्रियता, सहभागिता, स्नेहभाव, समर्पण, सद्भावना, सद्व्यवहार आहि होते हैं और मैंने उनके सम्पर्क में आकर पाया कि सह सभी गुण आदरणीय भाईजी में विद्यमान थे। वे सच्चे अर्थ में नायक थे। वर्ष १९८२ में जब मैं राष्ट्रीय महिला संगठन की महामंत्री बनी और अध्यक्ष ज्ञान कुमारी जी हेड़ा के साथ प्रथम बार महिला महामंत्री की हैसियत से महासभा की सभा में गई तब ज्ञान कुमारी जी हेड़ा ने मेरा आपसे परिचय कराया। तब से मुझे महासभा की सभाओं में हमेशा आपसे मार्गदर्शन मिलता रहा और मैंने पाया कि आपमें वे सब गुण थे जो एक आदर्श गरिमामय व्यक्तित्व में होना चाहिए। आप व्यवसायिक जगत में सफल उद्योग पति एवं सामाजिक जीवन में बहुत ही सहज-सरल व्यक्तित्व के धनी व उत्कृष्ट सामाजिक चिंतक थे। जिस तरह कमल जल में रहते हुए भी जल से निरलिप्त रहता है उसी तरह आप व्यवसाय, परिवार, समाज में सबके प्रति अपने कर्तव्य को निभाते हुए सच्चे मानवीय जीवन जीने की कला के ज्ञाता थे। आप अपनी आध्यात्मिक प्रगति के लिए, जीवन मरण से मुक्ति के लिए सदैव साधना में लगे रहते थे और विपश्यना साधना स्वयं भी करते थे और आत्मोन्नति की इस साधना को सीखने के लिए अन्य साधकों को भी प्रेरित करते थे। आपकी साधना को नमन, आपके सादगीपूर्ण जीवन को शत्-शत् नमन।

आपके वैकुण्ठ गमन से समाज ने एक श्रेष्ठ साधक, सामाजिक विचारक एवं एक निष्पक्ष मार्गदर्शन को खो दिया। आपके जाने से समाज में वैचारिक चिंतनशीलता में शून्यता आ गई। जिसकी भरपाई होना मुश्किल ही नहीं असंभव है। क्योंकि नि:स्वार्थ चिंतनशील व्यक्तित्व की समाज में कमी है। आपकी कमी सदैव बनी रहेगी।

अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला संगठन आपको शत्-शत् श्रद्धांजलि अर्पित करता है एवं ईश्वर से प्रार्थना करता है कि इस आकस्मिक दुख को सहन करने की सभी परिवारजनों को शक्ति प्रदान करे एवं आपकी आत्मा को सद्गति प्राप्त हो।

ॐ शांति-शांति-शांति।

- मनोरमा लड्ढा, ग्वालियर

संपादक, 'माहेश्वरी महिला'

श्रीमती कल्पना गगरानी, डोंबीवली (महामंत्री)   श्रीमती सुशीला काबरा, इंदौर (अध्यक्ष)

श्री तापड़िया जी सरल स्वभाव, मृदुभाषी, स्पष्ट विचारधारा, चिन्तक थे। महासभा के कार्यों में अग्रगति आवे। उनके विचार-सुझाव को सदैव सभी समाज बन्धुओं ने ऊपरी स्थान दिया। उनके निधन से एक मार्गदर्शक की कमी का महासभा को सदैव अहसास रहेगा। मैं परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान कर शोक-सन्तप्त परिवार को धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करें। हरिस्मरण के साथ।

- रामरतन लाहोटी

संयुक्त मंत्री (पूर्वांचल), अ.भा.माहेश्वरी महासभा

२३-०७-१४

श्री श्रीरामजी तापड़िया के आकस्मिक निधन से सम्पूर्ण माहेश्वरी समाज स्तब्ध है। मुम्बई माहेश्वरी समाज की एकरूपता, विश्वसनीयता, उनके कुशल नेतृत्व क्षमता की ही देन है। माहेश्वरी समाज की उन्नति एवं प्रगति में उनका बहुत बड़ा योगदान रहा। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के महामंत्री के रूप में उन्होंने अतुलनीय सेवायें दी। सम्पूर्ण माहेश्वरी समाज के चिर-परिचित व्यक्तित्व, अग्रणी, चिन्तक, सेवाभावी व्यक्तियों में उनका प्रमुख स्थान रहा। महासभा द्वारा निर्मित समाज की आचार संहित को क्रियान्वित कराने में उनका विशेष योगदान था। मैं उनके काफी नजदीक रहा हूँ. उनका मार्गदर्शन मुझे सदैव मिलता रहा। समाज की ज्वलन्त समस्याओं का आभास उनका पहले से ही हो जाता था।

श्री तापड़ियाजी समाज के उच्च वर्ग के लोगों से लेकर सामान्य वर्ग तक बड़ी सहजता से मिलते थे। उनका चिंतन सदैव स्पष्ट सकारात्मक तथा प्रोत्साहन देने वाला था। कुछ भी नया सोचने एवं करने में पूरी तरह उत्साहित रहते थे। बड़े उद्योगपति के साथ-साथ एक आदर्श सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में पहचाने जाते थे। उनके अन्तर्मन में हमेशा सामाजिक कार्यों के प्रति संवेदनशीलता थी। उनकी समाज सेवा अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय है। एक अच्छे मिलनसार एवं व्यवहार कुशल व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने अपना अधिकतर समय जनहित एवं समाज सेवा में लगाया। इनका वैकुंठवास सम्पूर्ण समाज के लिए अपूरणीय क्षति है।

परम पिता परमेश्वरी से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा के अनंत शान्ति देवें एवं आप सब परिजनों को यह वियोग जनित अचानक आये हुये दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें। मूंदड़ा परिवार इस शोक संतप्त दशा में आपका सहभागी है। हर तरह से धैर्यता रखियेगा।

- रामगोपाल मुंदड़ा,

उपसभापति (मध्यांचल), अ.भा. माहेश्वरी महासभा

बाबूजी श्री श्रीरामजी तापड़िया के देवलोक गमन के एसएमएस को पढ़ कर हतप्रभ रह गया। अनेक स्मृतियाँ एवं उनके साथ किये गए वार्तालाप एक-एक कर मस्तिष्क में आने लगे। वस्तुत: आदरणीय तापड़िया जी कर्मठ समाजसेवी, अपने निर्णयों पर दृढ रहने वाले तथा सेवाभावी व्यक्तित्व के धनी थे। सन् १९६७ में आदरणीय बाबूजी रामगोपाल जी माहेश्वरी के सभापति बनने के साथ तापड़िया साहेब को महासभा के महामन्त्री का दायित्व सौंपा गया। इन्होंने अपने कार्यकाल में नवगठित श्रीकृष्णदास जाजू ट्रस्ट के कॉरपस फण्ड को बढ़ाने तथा बीकानेर में माहेश्वरी छात्रावास बनाने का निर्णय लिया गया। इनके महामन्त्री काल में प्रथम बार समाज की आचार संहित को स्वीकार किया गया।

ऐसे कर्मयोगी, कर्मठ समाजसेवी एवं चिन्तक व्यक्तित्व के हमारे बीच से विदा हो जाना सभी के लिए कष्टप्रद है। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वे आदरणीय तापड़िया साहेब को अपने श्री चरणों में स्थान दें तथा सभी परिजनों, इष्टमित्रों एवं समाज सेवियों को इस दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें। ॐ शान्ति:

- देवकरण गग्गड़

कार्यसमिति सदस्य, अ.भा. माहेश्वरी महासभा

२६-०७-१४

आदरणीय श्री श्रीरामजी तापड़िया के स्वर्गवास के समाचार सुनकर स्तब्ध रह गया। आदरणीय तापड़िया जी न केवल समाज सेवी ही थे अपितु सामाजिक सामाजिक समस्याओं पर उनका स्वयं का चिन्तन था, जिस पर वे सदैव दृढ रहते हुए अपनी बात को तर्क पूर्ण तरीके से रखा करते थे।

महासभा के १६ वें सत्र में परम सम्माननीय श्री रामगोपाल जी से साथ महासभा के महामन्त्री के रूप में संगठन को सुदृढ़ करने, स्थानीय पंचायतों से संवाद स्थापित करने के साथ साथ आर्थिक एवं रचनात्मक कार्य हेतु इनका योगदान प्रशंसनीय रहा। मुम्बई माहेश्वरी प्रगति मण्डल मुम्बई की योजनाओं को मूर्तरूप प्रदान करने में उनके सहयोग को भुलाया नहीं जा सकता।

मैं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि उनकी आत्मा को शान्ति तथा परिजनों, सम्बन्धियों एवं इष्ट मित्रों को इस दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

- रामपाल सोनी, भीलवाडा
निवर्तमान सभापति, अ.भा. माहेश्वरी महासभा

२३-०७-१४

आदरणीय श्री श्रीरामजी तापड़िया के स्वर्गवासी होने की जानकारी पाकर संपूर्ण भारत के माहेश्वरी समाज में शोक की लहर छा गई। श्रीयुत तापड़िया जी अंतिम सांस तक समाज सेवा में लगे रहे। उनका संपूर्ण जीवन समाज को समर्पित व प्रेरणास्पद रहा। टीम भावना के वे प्रबल समर्थक थे, व माहेश्वरी प्रगति मंडल-मुंबई के संगठन को मजबूत व एक सूत्र में बांधकर रखने में उनका विशेष योगदान रहा।

आप अखिल भारत वर्षीय माहेश्वरी महासभा के महामंत्री व माहेश्वरी प्रगति मंडल-मुंबई के अध्यक्ष थे। उनका जीवन खुली किताब की तरह रहा व उम्र में छोटे बड़े सभी कार्यकर्ताओं की उनसे मिलकर अपनत्व की अनुभूति होती थी।

''कर्मेण्येवाधिकारस्ते-मा फलेषु कदाचन'' - गीता के इस ब्रह्म वाक्य को उन्होंने जीवन में उतारा व संपूर्ण जीवन को उसी के अनुरूप जिया भी।

भगवान महेश उनको चिरशांति व दिव्य लोक प्रदान करें व उनके परिवार को इस महान् दु:ख को सहने की शक्ति प्रदान करें।

- रामनिवास जैथलिया, मुम्बई
उपसभापति (दक्षिणांचल), अ.भा. माहेश्वरी महासभा

१८-०६-१६

आदरणीय तापड़ियाजी के निधन का समाचार सुनकर गहरा आघात लगा। हम सबके मार्गदर्शक महासभा के भूतपूर्व महामंत्री श्री रामजी तापड़िया का व्यक्तित्व सदैव सिद्धांतो एवं आदर्शों के लिए चिंतनशील रहा।

सन् २००७ में मेरे अध्यक्षीय काल में मुंबई में अ.भा.मा.महिला संगठन की कार्यकारी मंडल की बैठक में अंधेरी माहेश्वरी भवन में संपन्न हुई थी। उस बैठक में आपने तीनों दिन लगातार उपस्थित रहकर समाज की ज्वलंत समस्याओं के निदान पर विचार विमर्श किया, जो सदैव स्मरण रहेगा। फोन से तो आपसे कई बार सम्पर्क रहता ही था।

माहेश्वरी समाज ने एक दूरदर्शी, चिंतक अभिभावक खोया है, उनकी क्षति सदैव महसूस होती रहेगी। दिवंगत आत्मा को ईश्वर के श्रीचरणों में स्थान मिले, ऐसी प्रभु से प्रार्थना है।

- श्रीमती विमलादेवी साबू, सुरत
पूर्व अध्यक्षा, अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला संगठन

ईश्वर धरती पर जब सृजनात्मकता का प्रवाह संचारित करता है तो उसक रूप देशकाल, स्थितियों में अलग-अलग हुआ करते है। मानव रूपी अद्‌भुत कृति में भी कई बार ईश्वर की इस नायाब कलाकारी का आभास होता है। ऐसी ही ईश्वर को सृजनात्मक शक्ति के प्रतीक थे श्रीरामजी तापड़िया ।

मैं जब भी उनसे मिला कुछ न कुछ उनकी अद्‌भुत विशेषता से प्रभावित हुआ, लोगों को साथ जोड़ने और उनमें सकारात्मकता का संचार करने की गजब की शक्ति थी श्रीराम जी में। विद्यालय में संस्कारों और बच्चों में उत्कृष्टता के लिए वे सदैव चिंतित रहते थे।

एक बार हम नागौर गये थे। उस समय के तत्कालीन जिला कलेक्टर श्रीमान् विकास भाले थे। हम केबिन में पहुँचे। कलेक्टर साहब अपने नित्य कामों के हिसाब से हर किसी के साथ पांच से दस मिनिट का समय ही निकाल पाते हैं। केबिन में पहुंचने के बाद श्रीराम जी ने अपनी ओजस्वी वाणी से कलेक्टर महोदय से चर्चा शुरू की, उनकी बातों से वे इतना मंत्रमुग्ध हुए कि लगभग घण्टा भर तक उन्होंने तापड़िया जी के सेवा संकलपों के बारे में चर्चाएं की। कलेक्टर महोदय महाराष्ट्र के मूल निवासी हैं। उन्होंने आश्चर्य के साथ तापड़िया जी के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर मिलने आने के लिए आभार प्रकट किया।

जसवन्तगढ़ में श्रीराम जी तापड़िया के बारे में लोगों में आज भी यह चर्चा होती रहती है कि श्रीराम जी तापड़िया जसवन्तगढ़ के लिए जन्मभूमि को गौरवान्वित करने वाली शख्सियत थे। उनके स्वभाव, संस्कारों की छाप हर जगह मिलेगी। वे परिवार से लेकर, समाज, देश सब जगह आज भी मौजूद है। श्रीराम जी के भाइयों से मिलकर कभी कभी ऐसा लगता है जैसे वो साक्षात हो, उनके संस्कारों की अमिट छाप उनके परिवार में सदैव जीवित रहेगी।

मुझे उनसे बात करने की सदैव उत्सुकता रही क्यों कि उनकी बातों से मुझे कुछ न कुछ ऐसा मिलता था जो सीखने जैसे था।

विराट व्यक्तित्व के धनी थे श्रीराम जी तापड़िया। उनके बारे में लिखकर शब्दों में उनके व्यक्तित्व को बांधना संभव नहीं है। उनकी स्मारिका के प्रकाशन की अपार खुशी है वे प्रेरणा थे और प्रेरणाएं हमेशा संचरित होती रहे तो समाज को दिशा मिलती है। शुभम्

डॉ. रामगोपाल जाट
कसुम्बी (नागौर)

२६-०७-१४

शोक सन्देश

परम श्रद्धेय वरिष्ठ समाजसेवी श्री श्रीरामजी तापड़िया के ब्रह्मलीन होने के समाचार संपूर्ण समाज के लिये ही नहीं, अपितु मानव समाज के लिये अपूरणीय क्षति है।

आदरणीय तापड़िया जी का जीवन एक मनिषी के रूप में समाज के लिये सदैव प्रेरणास्पद रहा। उन्होंने अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा के महामन्त्री के रूप में समाज के विभिन्न दायित्वों का बखूबी निर्वाह किया। अपने आप को समाज में निर्विवाद एवं निष्पक्ष न्यायविद् के रूप में प्रतिष्ठापित किया। उनकी जीवन यात्रा अभूतपूर्व, निरन्तर गतिमान एक मार्गदर्शक के रूप में रही।

हम सबके लिये उनका निधन नि:संदेह दु:खदायी है। मैं अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा एवं संपूर्ण माहेश्वरी समाज की ओर से गहरी संवेदनाऐं प्रेषित करते हुए, परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ, कि उनकी महान आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान दें एवं उनके परिवार एवं सभी शुभचिन्तकों तथा समाज बन्धुओं को धैर्य एवं शक्ति प्रदान करें।

- रामकुमार भूतड़ा, जोधपूर
महामन्त्री, अ.भा. माहेश्वरी महासभा
सभी पदाधिकारी एवं कार्यकारी सदस्यगण

श्री श्रीराम तापड़िया - एक आदर्श व्यक्तित्त्व

आकर्षक व्यक्तित्त्व के धनी श्री तापड़ियाजी अपनी धर्मपत्नी सुमनजी के साथ १९६९ में मुंबई के एक शिविर में सम्मिलित हुए, जिसमें मैं सेवा दे रहा था। तब उनसे एक सामान्य परिचय ही हुआ था कि वे एक कर्मठ उद्योगपति और उदार समाजसेवी हैं। असली परिचय तो तब हुआ जब वे शिविर के बाद विश्व भ्रमण करते हुए बर्मा गये और दादागुरु सयाजी ऊ बा खिन के साथ चार दिन तक उनके आश्रम में रह कर साधना करके, उन घटनाओं की साक्षी एक फिल्म लेकर पूज्य गुरुजी को दिखाने आये। उस चलचित्र में सयाजी के साथ उनके आश्रम की झांकी, पगोडा की रूपरेखा तथा माताजी का चेहरा और वहां की अन्य अनेक आकर्षक बातों का पता चला। उसे देख कर मन भावविभोर हो गया। पूज्य गुरुजी के शब्दचित्रों से सयाजी, मां सयामा और आश्रम के जिन अन्य सहयोगियों के बारे सुना था, मानो उनका प्रत्यक्ष दर्शन करके मन आनंदित हो उठा। सयाजी के कहने पर पूज्य माताजी श्रीमती इलायचीदेवी गोयन्का (उस समय वहीं पर थीं जो गुरुजी के आने के लगभग पौने दो साल बाद भारत आयीं।) ने भी श्रीमती सुमनजी के साथ उनके कमरे में ही रह कर चार दिनों तक साधना की और इन दोनों का उत्साह बनाये रखा। यह सब अपने आप में एक बड़ी घटना है। इसके बाद तो वे समय-समय पर पूज्य गुरुजी से मिलने आते और धर्म संबंधी लंबी चर्चाएं होती रहतीं। तब मुझसे भी थोड़ी-बहुत बातचीत हो जाया करती थी।

श्री तापड़ियाजी भारत के ऐसे पुराने साधक थे जो सयाजी से मिले और वहां उनके साथ साधना करके सुखानुभूति कर सके। साधना के बाद कृतज्ञता व्यक्त करते हुए जब उन्होंने सयाजी से पूछा कि मैं विपश्यना की क्या सेवा कर सकता हूं? तब सयाजी ने उनसे कहा कि आप भारत में एक विपश्यना केंद्र स्थापित करवाने में मदद कर दें। इससे भावविभोर होकर जब श्रीरामजी भारत लौटे तो मुंबई के आस-पास केंद्र के योग्य भूमि देखने में जुट गये। पूज्य गुरुजी को कई जमीने दिखायी गयीं परंतु साधना योग्य कोई उपयुक्त स्थान नहीं मिला। इस बीच १९ जनवरी, १९७१ में सयाजी का शरीर शांत हो गया, परंतु भारत में लगातार अनेक स्थानों पर अकेंद्रीय शिविर लगते रहे। श्रीरामजी अपनी दैनिक साधना का अभ्यास नियमित करते रहे। उनके घर पर साधना-कक्ष का वातावरण आज भी किसी केंद्र के समान धर्मतरंगों से तरंगित है।

साधकों की बढ़ती हुई संख्या और उनसे संपर्क बनाये रखने के लिए, उनकी दैनिक साधना को बल देने के लिए तथा सयाजी तथा विपश्यना की गहनता के बारे में साधकों को नियमित रूप से अवगत कराने हेतु पूज्य गुरुजी ने एक मासिक पत्रिका 'विपश्यना' प्रकाशित करने का प्रस्ताव रखा तो श्री तापड़ियाजी ने इस कार्य को पूर्ण करने के लिए अपने कार्यालय के कर्मचारियों को सक्रिय कर दिया। जुलाई १९७१ में इसका पहला अंक प्रकाशित हुआ। प्रथम छह महीनों तक 'विपश्यना पत्रिका' उनके कार्यालय के माध्यम से साइक्लोस्टाइल होकर पोस्ट की जाती रही। इसके बाद पत्रिका प्रेस में छपने लगी परंतु पोस्टिंग का काम उनके कार्यालय से ही होता रहा। इगतपुरी का विपश्यना केंद्र बन जाने के बाद धीरे-धीरे पत्रिका प्रकाशन का काम इगतपुरी में स्थानांतरित हो गया। अब तो इंटरनेट पर भी यह उपलब्ध है। धम्मगिरि से इसके अंग्रेजी और मराठी संस्करण भी प्रकाशित हो रहे हैं। अन्य स्थानों से भी स्थानीय सूचनाओं के साथ उनकी भाषाओं में विपश्यना के अलग-अलग संस्करण भी प्रकाशित होने लगे हैं।

सयाजी ऊ बा खिन के दिवंगत होने के पश्चात उनके कार्य को आगे बढ़ाने के लिए मुंबई के आसपास एक विपश्यना केंद्र बनाने की योजना बलवती होने लगी। इस निमित्त पूज्य गुरुजी ने एक ट्रस्ट बनाने की बात की तो श्री तापड़ियाजी उसमें तन, मन और धन से हर संभव सहयोग देने के लिए तत्पर हो गये। इस प्रकार 'सयाजी ऊ बा खिन मेमोरियल ट्रस्ट' की स्थापना हुई और श्री श्रीराम तापड़िया भारत के इस प्रथम विपश्यना ट्रस्ट के अध्यक्ष नियुक्त हुए। उनके नेतृत्व में मुंबई के आसपास केंद्र के

लिए जमीन खोजने का प्रयत्न सफल नहीं हो पाया। इस बीच उन्होंने नाशिक में एक विपश्यना शिविर लगवाया। उस समय भी केंद्र-संबंधी चर्चा हुई तो शिविर में बैठे इगतपुरी के एक साधक ने इगतपुरी में ही एक जमीन देखने की पेशकश की। कार से मुंबई लौटते हुए पूज्य गुरुजी वहां रुके और गांव के बाहर एक छोटी पहाड़ी पर स्थित अठारह एकड़ के विस्तृत चौरस भूखंड को देखते ही उन्होंने अनुमति दे दी। यह जमीन खरीद ली गयी और केंद्र का निर्माणकार्य आरंभ करने की बातें होने लगीं। श्री तापड़ियाजी अत्यंत कर्मठ ही नहीं, सूझबूझ में भी अति कुशल थे। उन्होंने अपने भाइयों से सलाह-मशविरा करके मुंबई के एक ठेकेदार को निर्माण का कार्य सौंपा तो नाशिक में रहने वाले अपने दो भाइयों को सही मटीरियल आदि दिलवाने के साथ-साथ काम की देख-रेख की भी जिम्मेदारी दे दी। तब तक ये लोग भी साधना से लाभान्वित हो चुके थे। अतः सारा काम बड़ी तीव्र गति से आरंभ हुआ और अनेकानेक चुनौतियों का सामना करते हुए अंततः धम्मगिरि, विपश्यना विश्व विद्यापीठ में लगभग १०० लोगों का शिविर लगने लायक निर्माणकार्य पूरा हुआ।

दीर्घकाल तक वे ट्रस्ट का कार्य संभालते रहे। उसके बाद ट्रस्ट का अध्यक्षपद और ट्रस्टीपद छोड़ देने के बावजूद भी वे अपनी सेवाएं सतत देते रहे और जीवन के अंत तक धम्मगिरि के रसोईघर की सारी

जिम्मेदारियों को बखूबी निभाया। जो भी समस्या होती, उसके हर पहलू पर विचार करते, सभी पक्षों को संतुष्ट करके, काम को इतना सरल बना देते कि कोई समस्या रह ही नहीं जाती। जैसे-जैसे धम्मगिरि का विस्तार होता गया और साधकों की संख्या के अनुरूप सभी प्रकार के साज-सामान, मशीनरी आदि बढ़ाते गये। कभी कोई सामान कम हो जाता या स्थानीय व्यवस्थापक सहयोग न कर पाते तो महाराज के एक फोन पर उसकी व्यवस्था तुरंत करवा देते। चाहे कोई सामान मुंबई से भिजवाना होता या नाशिक आदि से, विलंब न होता। एक ही उद्देश्य कि साधकों को किसी प्रकार की तकलीफ नहीं होनी चाहिए। उनकी साधना में कोई व्यवधान नहीं होना चाहिए। यों धम्मगिरि में लगभग १००० (एक हजार) साधकों के एक साथ तप सकने की सारी व्यवस्था हो गयी।

एक बार धम्मगिरि विपश्यना केंद्र के कर्मचारियों ने दीर्घकालिक हड़ताल कर दी और रसोईघर के लोगों को भी उसमें सम्मिलित होने के लिए उकसाया। परंतु इन्होंने महाराज को समझा कर उसे शांत रहने और सेवा करते रहने का पुण्य याद दिला कर संभाल लिया। इसे लेकर महाराज को चोट भी खानी पड़ी, मुख्य द्वार पर हड़तालियों ने घेरा डाल कर लोगों का आना-जाना बंद कर दिया, परंतु किचन का एक भी व्यक्ति इधर से उधर नहीं हुआ। सारा काम विधिवत चलता रहा और शिविर में कोई व्यवधान नहीं आने पाया। साधकों को कोई तकलीफ न होने पाये, इसके लिए काम करने वाले व्यक्तियों को संभालना और उनसे अच्छे से अच्छा काम लेना, उनकी सबसे बड़ी विशेषता थी। ऐसा कर्मठ व्यक्तित्त्व और समस्याओं को आसानी से सुलझाने का उनका अद्‌भुत तरीका स्तुत्य रहा।

बड़े उद्योगपति होने के कारण आये दिन कर्मचारियों की मांगे आदि को लेकर होने वाली हड़ताल आदि को वे बड़े सहज ढंग से शांतिपूर्वक संभालते थे। उनके उत्पाद पूरे विश्व में विख्यात हैं। 'तापड़िया हाथ के औजार' (तापड़िया टूल्स) को कौन नहीं जानता? क्योंकि उसकी गुणवत्ता ही सर्वोपरि है।

वे जब भी मिलते, स्वास्थ्य और परिवार आदि की समस्याओं के बारे पूछते और उचित मार्गदर्शन देते रहते। ऐसे चहुँमुखी प्रतिभा के धनी श्री श्रीराम तापड़िया का मैं हृदय से अभिनंदन करता हूं।

रामप्रताप यादव,

संपादक, "विपश्यना" पत्रिका एवं पूज्य गुरुदेव श्री सत्यनारायण गोयन्काजी का निजी सहायक.

श्रद्धांजलि

धीर, गंभीर, मीठा बोलणा, परमारथ की सोच,
वणिक पुतर, दानी, ज्ञानी, शांत भोर का तारा।
बाताँ रेसी जींवती, यादाँ महेश समाज
बैंकुठा में बास करीज्यो, श्रीरामजी सब का प्यारा।।

A Tribute To Sri Sriram ji Taparia

He was grave, Sober, Sweet-tongued, having a contemplation for Salvation, donor, Knowledgeable, son of a commercial family and calm like a morning star, His messages and memories shall ever remain alive in the Maheshwari Community, May the departed soul of Sriram-ji, who was dear and amicable to all, reside in Elysium.

वो लम्हे कितने सुन्दर थे ।
वो घड़ियाँ कितनी प्यारी थी ।।

जसवन्तगढ़ एक प्यारा नन्हा सा सलोना गांव ऐसा प्रतीत होता है जैसे कोई पुष्प अपनी शाखा पर विकसित हो रहा हो। ईसवी सन् १९६४ का जेठ माह का गर्म महीना। उस समय का साढ़े तीन हजार की आबादी का यह ग्राम जल संकट से जूझ रहा था। सभी जातियां जल का अभाव सहन करती जीवन व्यतीत करतीं थीं। आज जसवन्तगढ़ के सेठ जगन्नाथ तापड़िया हाई स्कूल में एक भव्य आयोजन हो रहा है। गांव पूरा यहां उपस्थित है। मंच पर श्री श्रीरामजी तापड़िया, तत्कालीन राज्य गृहमंत्री श्री मथुरादास माथुर, गांव के चौधरी श्री छोगमल जी बगड़िया तथा अन्य महानुभाव उपस्थित हैं। आज पूरा गाँव प्रफुल्लित है। आज गाँव जिस अभाव को सहन करता आया है वह अभाव हमेशा के लिये दूर होने वाला है। आज सेठ लादूराम तापड़िया जल प्रदाय योजना का उद्घाटन होने वाला है।

मंच पर एक स्वीडन के विदेशी नागरिक भी उपस्थित थे। उन्होनें अपने संक्षिप्त भाषण में कहा :-

"I am pleased to see in a large number the colored turbans on the heads of the males" जिसका श्रीराम जी ने उठकर हिन्दी तथा मारवाड़ी में अनुवाद करके सुनाया ''यहां बहुसंख्य लोगों के माथे पर रंगीन साफा देख कर मैं बहुत खुश हूँ।'' काफी देर तक तालियाँ बजीं। आज के इस समारोह के पूर्व की बीती रात में गाँव पानी का जुगाल करके, रात को जाग कर जल को चार-चार बैरियों से संग्रह करके अपने अपने घरों में जल से भरे घड़े रख कर लोग आये।

सेठ लादूराम तापड़िया जल प्रदाय योजना का भव्य समारोह में उद्घाटन हो गया है। यह समारोह आज से ५२ बरस पूर्व हुआ था सन् १९६४ में। जसवन्तगढ़ के इतिहास में ऐसा फंक्शन / समारोह आज तक नहीं हुआ है। जिसने देखा वह गद्गद् हुआ।

अब सभा में आये व्यक्ति अपनें घरों को लौट रहे हैं तो एक अद्भुत नजारा हर गली में देखने को मिला। पानी के फव्वारे उछल रहे हैं। गलियों में भी कहीं पानी लीकेज से बह रहा है चिड़िया पानी में पंख फड़फड़ा रही है। यह परिवर्तन कैसा ? प्रकृति में पले पक्षी भी महसूस कर रहे है। हमारे गांव का हर

नागरिक उस महान आत्मा को आशीर्वाद दे रहा है, जो गाँव का भागीरथ बना।

इस जल सप्लाई का Six Months तक कोई बिल नहीं लिया गया। इसके बाद २ रूपया प्रति महीना से Bill आया था। काफी महिनों तक बिल ''राजस्थान सरकार सेठ लादूराम तापड़िया जल प्रदाय योजना जसवन्तगढ़'' के नाम से आते रहे जो बाद में ''जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग राजस्थान सरकार'' के नाम से आने शुरू हुये। पहले पूरा गांव इस सप्लाई का पानी पीता था तथा टांको (कुण्डों) के बरसाती पानी को कपड़े धोने में काम लेते थे। लोग स्वस्थ थे। सिर्फ जसवन्तगढ़ में ही सप्लाई थी। बड़े बड़े सेठो के शहर लाडनूं, सुजानगढ़, निम्बी, छापर, मिठड़ी ये सभी प्यासे थे। जसवन्तगढ़ के भागीरथ के प्रयासों का फल मिला।

इसके बाद जसवन्तगढ़ में स्वयं की पानी टंकी बनी। उसका उद्घाटन भी उच्च स्तर का ऐतिहासिक स्मृति वाला बन गया। राजस्थान बीजेपी सरकार के PHE विभाग के मंत्री श्री भंवरलाल जी शर्मा, जो बन्नी पाक जयपुर से चुनाव में विजय हुए थे। वे स्वयं अपनी गाड़ी चलाते हुये जयपुर से जसवन्तगढ़ आ गये । पहिले वे स्व. छगनलाल जी दायमा, जो उस समय जीवित थे, उनसे मिलने गये और दोनों साथ-साथ पैदल उनके घर से चल कर टंकी स्थल तक आये। गाड़ी वहीं छोड़ दी थी। ऐसे मंत्री आजकल दुर्लभ हो गये हैं। सभा में मंच पर श्री श्रीरामजी तापड़िया, PHE मंत्री श्री भंवरलाल जी शर्मा, श्री छगनलाल जी दायमा, श्री मदनलाल जी भण्डारी इत्यादि विराजमान थे।

टंकी उद्घाटन समारोह का कार्यक्रम पांच घन्टा तक चला। श्रोतागण बिल्कुल बोर नहीं हुये। सभी हँसते और तालियां बजा रहे थे। श्री श्रीरामजी तापड़िया की उपस्थिति में गाँव का दूसरा बेजोड़ समारोह हुआ था।

जब मैं ९वीं क्लास का छात्र था तो अंग्रेजी में टूटी-फूटी तुकबन्दी करता था। एक बार श्रीरामजी अपने मकान के बाहर चार रास्ता पर खड़े थे। मैं कहीं से आ रहा था उनके पास थोड़ा रुका तथा बोल पड़ा -

There is no tension,
Is Taparia Mansion,
J.P. is very happy.

वे हंसे तथा अन्दर चले गये ।

गाँव में २० जनवरी का एक समारोह

गाँव में २६ जनवरी के एक समारोह में मैं था। समारोह की अध्यक्षता वैद्य तिलोकचंद जी मिश्रा ने की तथा श्री श्रीरामजी तापड़िया मुख्य अतिथि थे। मुख्य अतिथि के रूप में उन्होने स्कूल प्रशासन को आश्वस्त किया कि तापड़िया फेमिली सर्कल में कोई अभाव है तो पूरा करेगा। उन्होने मैं शब्द कभी भी प्रयोग नहीं किया बल्कि उस जगह तापड़िया फेमिली बोला करते थे।

सेठ सूरजमल तापड़िया औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान ITI जसवन्तगढ़ का उद्घाटन

एक चित्ताकर्षक समारोह में ITI का उद्घाटन दिनांक १५/०६ / १९९७ को पूजनीय श्री रमेश भाई जी ओझा के करकमलों से हुआ। श्री बजरंगलाल जी तापड़िया तथा उनके अनुज श्री महावीरप्रसाद जी तापड़िया व्यवस्था देख रहे थे। समारोह में माइक संचालन लाडनूंवासी आनंदी लाल जी माथुर कर रहे

थे। इस समारोह में बीसों व्यक्तियों को शाल ओढ़ाये गये। लाडनूं विधायक श्री हरजीराम जी बुरड़क समारोह में थोड़ा विलम्ब से पूगे थे। पूजनीय रमेश भाई जी के अनुज भी समारोह में थे। उनको भी शाल देकर स्वागत किया गया। इस समारोह में बंगाल से चलाकर पहिले दिन मैं जसवन्तगढ़ पूगा था। समारोह में मैं दो शब्द बोलने का इच्छुक था किन्तु आनन्दी लाल जी माथुर ने टोक दिया, यह कह कर कि यह पर्सनल समारोह है। ITI उद्घाटन में श्री श्रीरामजी तापड़िया भी शरीक हुये थे। राजस्थान सरकार के दो सेक्रेटरी भी थे। एक शायद शिक्षा विभाग तथा दुसरे फांइनेस से थे। मैने दोनों सेक्रेटरीज के साथ काफी देर तक बात की थी। उसके बाद वहाँ श्रीराम जी आये तथा उनके बाद बजरंग लाल जी आये। वार्ता चली। फोटो साक्षी है। एक सेक्रेटरी ने पूछा कितनी तरह की औद्योगिक ट्रेनिंग यहां दी जायेगी। तब श्री श्रीरामजी तापड़िया बोले At Present in six disciplines education will be given and more disciplines will be started as the demand comes. सेक्रेटरी समझ गये थे कि तापड़िया परिवार शिक्षित है इसके बाद वहां बजरंगलाल जी आये थे। उन्होने दोनों सेक्रेटरीज को काफी जानकारीया दी। फोटो में यह परिलक्षित है। उपर लिखी बाते आज इतिहास बन गई है, सत्य है।

डाबड़ी रोड़ प्यारीदेवी हनुमानबगस तापड़िया स्कूल का समारोह

श्रीराम जी तापड़िया द्वारा निर्मित डाबड़ी रोड़ वाली स्कूल में झमेला पड़ने से पूर्व, विद्या भारती के कार्यकर्ताओं तथा पदाधिकारियों का एक आयोजन हुआ था। उस समारोह में बम्बई से एक मुस्लिम विद्वान भी पधारे थे। उनकी बेगम साहिबा भी समारोह में बिराजमान थी। मुस्लिम विद्धान अंग्रेजी साहित्य के महान कवि Longfellow लोंगफेलों की कविता का उदाहरण दे रहे थे। जिसका सारांश था कि जहां सहयोग है, वहां स्वर्ग है। मैं जब सभा से निकल कर घर जा रहा था तो उनके मैनेजर बलदुआ जी मुझे श्रीरामजी तापड़िया के पास उनके कमरे में ऊपर ले गये। मुझे पूछा मीटिंग में कौन बोल रहा है ? कैसी भीड़ है ? मैनें सारी बात बता दी। तब वे बोले ''नहीं नहीं, लाँगफेलों की पोइम यहां कोई नहीं समझेगा।''

जसवन्तगढ़ हितकारिणी में गौशाला की मीटिंग

श्री श्रीरामजी तापड़िया के जसवन्तगढ़ हितकारिणी में आखिरी मीटिंग आज गौशाला की मीटिंग हितकारिणी में हो रही है। श्रीराम जी तापड़िया सफेद पाजामा तथा पीले रंग का कुर्ता पहिने हुये हैं। सीरियस मूड में हैं। वे गौशाला के अध्यक्ष पद से इस्तीफा देकर बंबई जा रहे हैं। उनका जीवन का आखिरी वाक्य जो मैने सुना, वह बड़ा मार्मिक है। उन्होने कहा ''आज मैं बहुत दुख के साथ बंबई जा रहा हूँ। बंबई में छ हजार माहेश्वरी परिवारों को एक प्रेम की डोर में पिरोनें में मैं सफल रहा, किन्तु मुझे गहरा सदमा है कि जसवन्तगढ़ के मात्र तीन सौ परिवारों को एक नहीं कर सका। इस का मुझे हमेशा दुख रहेगा''।

मैं स्वयं सभा में उपस्थित था। सारी बात सत्य लिख रहा हूँ। अतिशयोक्ति कुछ भी नहीं। और वे बम्बई पहुंच गये। कुछ दिनों बाद एक दुखद समाचार सुनने को मिला। अब वे कभी नहीं दिखेंगे। उनकी स्मृतियां हमारे साथ हैं।

सोहन लाल दायमा, जसवन्तगढ़

Shreeramji Taparia

My association with Shreeramji Taparia dates back to 20 years when I first met him in 1996 in connection with the rescue of camels from the beaches of Mumbai. The Hon'ble Bombay High Court had passed an excellent order giving directions to BMC and Police Departments to confiscate all the camels from their cruel 'owners' for plying these camels on the beaches and exploiting them. The Hon'ble Court had passed an order of sending them off to arid areas of Gujarat or Rajasthan where they belong. Implementation of this order was a real challenge, and that is when Shreeramji stepped in.

This was a project taken up by Pune based Beauty Without Cruelty, and I was coordinating everything on their behalf with everyone in Mumbai. When Diana Ratnagar, Chairperson of BWC asked me to meet Shreeramji for rehabilitation of nearly 80 camels in Rajasthan, I was initially very hesitant. But as soon as I met Shreeramji, I felt positive that here is a man who is capable of undertaking this herculean task of transporting these 80 camels that were confiscated and sheltered at the animal hospital at Parel and at the Cattle Pound of BMC at Malad.

The task was indeed onerous, but Shreeramji handled it with complete ease. I was witness to his organizational abilities and capabilities at that time. Though finding a place to house these camels was easily organized by him, the real issue was how to transport these camels safely, in trucks on such a long journey lasting over 36 hours. It was not at all easy but Shreeramji arranged everything beautifully. He got a team of camel handlers from Rajasthan, booked huge trucks to carry 4 camels in each, ensured that each truck had 2 drivers so that the vehicle could travel non-stop and reach Rajasthan in the shortest possible time. The manner in which he handled everything was awesome!! All the camels safely reached the farms of Rajasthan and lived happily thereafter.

Shreeramji's two brothers Shyamji & Jayprakashji were like Laxman and Bharat to their brother 'Ram', and they complied with all his wishes without any hesitation or questions. Shreeramji's wife Sumanji was a strong support to him and always stood by him. Shreeramji-Sumanji's 'jodi' was like Ram-Sita 'jodi'. They both were always very courteous and kind to me, and maintained relations with me, even years after this camel rescue.

Shreeramji's contribution to industry is widely known, so also his philanthropic activities, but above all people always knew him as a wonderful human being!

His passing away was not only a loss to his family, but to all of us who had come in contact with him one way or the other. I pray that he rests in peace after his hectic sojourn on earth…as my heart bleeds for Sumanji and all members of the Taparia family, who lost this Jewel of India to Heaven.

- Sudnya Patkar

आदरणीय भाईजी श्री श्रीरामजी तापड़िया के साथ मेरे कुछ अनुभव आपके साथ share करते हुये मुझे बहुत खुशी हो रही है। मुझे खुशी इसलिये हो रही है कि मेरी समझ में वे एक ऐसे व्यक्तित्व थे कि उनके साथ कोई व्यक्ति यदि एक बार मिल भी लेता था तो उसे उनमें अपनापन दिखायी देता था, मैंने तो उनके साथ करीब १०-१२ वर्ष काम किया है अत: खुशी होना स्वाभाविक है।

मेरे पू. पिताजी स्व. श्री सत्यनारायणजी काबरा के साथ २००२-२००३ से पहले मुझे श्री श्रीरामजी से मण्डल के कार्यक्रमों में कई बार मिलने का अवसर मिला। तत्पश्चात् व्यवस्थापिका सभा के सत्र २००३-२००५ के लिये मेरा नाम तीन में से एक चुनाव अधिकारी के रूप में घोषित किया गया। चुनाव अधिकारियों की meetings के दौरान भाईजी से मिलने और विस्तार से बात करने का मौका मिला। मैंने उनकी बातों से, मण्डल में चुनाव होने जा रहे हैं इस बात का गंभीर चित्र या यों कहें कि, एक अनकहे दबाव सा उनके मन-मस्तिष्क पर अनुभव किया। उन दिनों २-३ बार जब भी मैं और मेरे दो अन्य साथी उनसे मिले तो उनको आश्वासन दिलाते रहे कि वे चिन्तित ना रहे। चुनाव बहुत अच्छी तरह, बिना किसी पक्षपात के, विधान द्वारा अपेक्षित तरीके से सम्पन्न करवा दिये जायेंगे। वे इस बात के प्रति बिलकुल निश्चिन्त रहें। २००३-२००५ के चुनाव बहुत अच्छी तरह से किसी भी पक्ष को शिकायत का मौका न देते हुये सम्पन्न हुये, जिसके लिये सभी मण्डल के कार्यकर्ता बधाई के पात्र हैं और सभी को इस बात की खुशी हुयी, खासकर भाईजी श्रीरामजी को। सत्र २००३-२००५ में Professional catagory में मेरा चयन व्यवस्थापिका सभा के लिये किया गया और तब से आजतक सभी वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के साथ काम करने का मौका मिलता रहा तथा सत्र २००५-०७/०८ में मुझे कोषाध्यक्ष की जवाबदारी दी गयी। भाईजी अधिकतर सभी meetings में उपस्थित रहते थे। मण्डल में Accounts Department के कार्य को लेकर उन्हे बहुत चिन्ता रहती थी, उन्हें यह कार्य बहुत चुनौतीपूर्ण लगता था जिसका जिक्र उन्होंने मुझसे कई बार किया था। इस सम्बन्ध में मैंने उनसे कुछ समय मांगा था और उन्हें आश्वासन दिया कि शायद एक वर्ष बाद, यह विषय उनकी चिन्ता का नहीं रहेगा। मुझे बहुत खुशी है यह बात सभी के साथ share करने में कि एक वर्ष बाद हम जब भी मिले तो उनकी मधुर मुस्कराहट द्वारा उन्होंने इस विषय पर अपना सन्तोष कई बार प्रगट किया और उनकी इस अन्दरूनी खुशी ने मेरा मण्डल में और सक्रियता से काम करने का हौसला बढ़ाया।

भाईजी की बहुत सारी Qualities में से Patience और हर कार्यकर्ता और उसके परिवार के प्रति संवेदनशीलता/ अपनापन दो ऐसी मुख्य बातें थी जो सभी के मन को छू लेती थी और मेरे खयाल से इन दो बातों से ही इतने लम्बे समय तक सभी समाजबन्धुओं के मन/ मस्तिष्क पर भाईजी छाये रहे। अन्त में यदि मैं यह कहूँ कि, भाईजी कोई व्यक्ति नहीं थे वे तो एक ''सोच'' थी, एक ''समझ थी, माहेश्वरी समाज के प्रति एक संकल्प'' था, जिनको अपनाने से हर समाजबन्धु समाज सेवा के उनके इस यज्ञ को पूरा करने में निश्चित ही मददगार साबित होगा ।

भाईजी से सम्पर्क में आने के पश्चात् तापड़िया परिवार से भी मेरा सम्पर्क बना और मुझे इस बात का बहुत हर्ष है कि पू. भाईजी के चले जाने के बाद भी तापड़िया परिवार, विशेषकर सुमन भाभीजी, श्री हरनारायणजी तथा श्री जयप्रकाशजी के साथ आज भी उतना ही प्रेम भाव बना हुआ है, इसे मैं भाईजी का आशीर्वाद ही समझता हूँ। भाईजी को शत् शत् प्रणाम। जय महेश।

- दामोदर काबरा

श्री श्रीरामजी तापड़िया - एक असाधारण आदर्श व्यक्तित्व

सन् १९७७ में मेरा अजमेर (राज.) से मुंबई आगमन हुआ तथा उसी वर्ष में मुंबई समाज की एकमात्र प्रतिनिधि संस्था माहेश्वरी प्रगति मण्डल मुंबई से जुड गया। मुंबई में मेरे लिए मण्डल ही एक ऐसा माध्यम था जिसके कारण मैं आदरणीय श्री .श्रीरामजी तापड़िया के सम्पर्क में आया। हम मण्डल के सभी कार्यकर्ता श्रीरामजी साहब को ''भाईजी'' के नाम से संबोधित करते थे। यद्यपि मुझे सामाजिक कार्यों में प्रारंभ से ही रुचि थी, परंतु मेरे सामाजिक जीवन को गति प्रदान करने में आदरणीय भाईजी की उल्लेखनीय एवं अत्यंन्त महत्वपूर्ण भूमिका रही। इसी के फलस्वरुप मैं मण्डल के सर्वोच्च पद अध्यक्ष का गुरुत्तर भार सफलतापूर्वक वहन कर सका। माहेश्वरी प्रगति मण्डल का आज आप और हम जो स्वरुप देख रहे हैं उसमें भाईजी का योगदान इतना अमूल्य एवम् अतुल्य है, उसे शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। सन् १९९७ में अध्यक्ष बनने एवम् उसके बाद के वर्षों में में अनवरत भाईजी के करीबी सम्पर्क में रहा, उनके जीवन को. बहुत ही नजदीक से देखने एवम् समझने का सुअवसर मुझे प्राप्त हुआ।

भाईजी, बहुमुखी प्रतिमा के धनी थे। भाईजी का मैंने मण्डल के प्रति सम्पूर्ण समर्पण देखा। मण्डल के लिए उनके पास कभी भी समय की कमी नहीं रहीं। यद्यपि भाईजी कई अन्य सामाजिक संस्थाओं से भी जुडे हुये थे, बावजूद इसके भी मण्डल के कार्यकर्ताओं को उन्होंने कभी भी समय की कमी का आभास नहीं होने दिया । यही कारण था कि न केवल कार्यकर्ताओं में अपितु सम्पूर्ण मुंबई समाज में भाईजी एवं मण्डल एक दूसरे के पूरक एवम् प्रतीक माने जाने लगे। भाईजी की मण्डल के प्रति सम्पूर्ण समर्पितता के कारण ही हम मण्डल के सभी कार्यकर्तागण भारतवर्ष के सम्पूर्ण समाज के समक्ष एक रुप एवम् एक छवि रखने में सफल हो सके।

सामाजिक विषयोंपर भाईजी की सोच एक निरन्तर प्रकिया रही। उनके साथ लम्बे समय तक सम्पर्क में रहने के बाद मैं ने यह महसूस किया कि उनके चिन्तन में गहराई थी तथा समाज के प्रति उनके दिल में दर्द झलकता था। मुझे ऐसा प्रतीत होता था कि सामाजिक चिन्तन एवम् सामाजिक सोच की भावना उनके रग रग में भरी हुई थी । अगर मैं यह कहूँ तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि मण्डल में सामाजिक विषयोंपर कार्यकमो की प्रेरणा एवम् स्त्रोत भाईजी के चिन्तन में ही निहित थी । उन्होंने हम सभी मण्डल के कार्यकर्ताओं को हर विषय को सामाजिक दृष्टिकोण से सोचने को प्रेरित किया। उदाहरण के तौर पर कई बार हमें उनके सामाजिक विषयों से सम्बन्धित अखबारों या अन्य पत्र पत्रिकों में प्रकाशित लेख एवम् अग्रेलेखों की कटिंग हमारी सोच को ऊर्जा देने के लिए मिलती रहती थी और उनकी यही सामाजिक सोच मण्डल के कार्यों को गति देने का आधार भी बनी।

भाईजी का जीवन बहुत ही सरल, सहज एवम् सात्विक था। छोटे से छोटे कार्यकर्ता की बात को भी ध्यान से सुनते थे । उनकी किसी भी शंका का पूर्ण समाधान किए बिना भाईजी को संतोष नहीं होता था । विपरीत विचारधारा रखनेवाला कार्यकर्ता को भी समझाने का अथक एवम् निरन्तर प्रयास करते रहना उनकी कार्यपध्दति का अभिन्न अंग था ।

भाईजी की सोच में संगठनात्मक दूरदर्शिता कूट कूट कर भरी हुई थी। उनके हर सिध्दांत में, हर कार्य में, हर व्यवहार में संगठन ही मुख्य भाव थे। किसी भी विषय या समस्या का समाधान या सिध्दान्त के

प्रतिपादन का संगठन पर प्रतिकूल प्रभाव नही पडे यह उनकी सहज एवम् स्वाभाविक दूरदर्शिता थी। वे हमेशा कहते थे, मण्डल के चार कार्यक्रम कम होंगे तो कोई बात नही परन्तु संगठन की कीमत पर हम एक भी कार्यक्रम नहीं करेंगे। मण्डल का संगठन सुदृढ बना रहे यह उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता थी। इसी का परिणाम है कि आज सम्पूर्ण भारतवर्ष के सामाजिक जीवन में मण्डल के मजबूत एवम् अनुशासित संगठन की अलग ही मिसाल एवं पहचान है। तभी तो हिन्दुस्तान के सभी सामाजिक कार्यकर्ताओं के दिल एवम दिमाग में माहेश्वरी प्रगति मण्डल मुंबई के प्रति विशेष आदर एवं सम्मान है। भाईजी, स्वास्थ्य के प्रति बहुत ही जागरुक एवम् सजग थे । उनका जीवन बहुत ही नियमित एवम संयमित था, खान पान बहुत ही शुध्द एवम् सात्विक था, तभी तो वो जीवन के अन्तिम समय तक अर्थात ८४ वर्ष की आयु में भी अपने आपको पूर्ण स्वस्थ रख सके । हर इंसान के जीवन में अपने आपको पूर्ण स्वस्थ रखना बहुत बडी चुनौती होती है । इस मामले में भाईजी का जीवन अपवाद था, जो बहुत ही प्रशंसनीय एवम् सराहनीय तो था ही साथ ही हम सबके लिए अनुकरणीय भी था। वे हम सभी मण्डल के कार्यकर्ताओं को सदैव कहते रहते थे कि आपका स्वास्थ्य समाज की सम्पत्ति है। आपको इसे बिगाड़ने का कतई अधिकार नही है। यह भी कहते थे हम सभी कार्यकर्ताओं की यह अति महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है कि हम अपने आपको पूर्णतया स्वस्थ रखें ताकि समाज सेवा की सभी गतिविधियों में हम सक्रिय रुप से भाग ले सकें।

किसी भी जरुरतमंद की मदद करना एवम् अन्य साथियों से मदद करवाना उनका स्वाभाविक गुण था। उनके दर पर आया हुआ कभी कोई खाली हाथ नहीं लौटा। भाईजी की, सादगी, सरलता, सहजता, विनम्रता, मृदुभाषिता, सहनशीलता, संवेदनशीलता आदि मानवीय गुणों से भला कौन परिचित नहीं था। मेरा कहने का तात्पर्य भाईजी ने बहुत ही आदर्श जीवन जिया।

अंत में मैं तो भाईजी के बारे में इतना ही कह सकता हूँ कि उन जैसे असाधारण आदर्श व्यक्तित्व इस धरा पर बिरलें ही आते हैं जो आज हम सबके बीच नहीं है परन्तु आप हम जैसे असंख्य लोगों के दिल में अपनी अमिट छाप छोड कर गये हैं।

- गोपालकृष्ण छापरवाल, मुम्बई
पूर्व अध्यक्ष - मा.प्र.मं., मुंबई

मानव सेवा ही माधव सेवा है

मानव सेवा ही जिनका कर्म था. मानव सेवा ही जिनका धर्म था.

ऐसे धीर पुरूष थे हमारे आदरणीय भाईजी श्री. श्रीरामजी तापडिया माहेश्वरी प्रगति मंडल से जुडने के बाद हमारा उसने संपर्क हुआ। जैसे जैसे घनिष्टता बढ़ी वैसे वैसे अनेक गुण, उनकी दृढता, simplicity व discipline का परिचय मिलता गया। उन्हे माहेश्वरी समाज का भीष्म पितामह कहे तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी। माहेश्वरी समाज को सही मार्गदर्शन करने मे भाईजी का योगदान अकथनीय व अतुलनीय है। जो स्वर्णाक्षरों में लिखा जा सकता है। आप उनके पास कोई समस्या लेकर जायें तो उसे धैर्यपूर्वक सुनकर वे स्पष्टरुप से उसका उचित निधान करना उनकी खासियत थी। आज वे हमारे बीच नहीं है परंतु उनके विचार व सुझाव आने वाले कई पीढ़ियों तक सभी का मार्गदर्शन करते रहेंगे इसका हमें पूर्ण विश्वास है। ऐसे व्यक्ति को भला कोई कैसे भूल सकता है ?

- ललित डागा

एक आदर्श व्यक्तित्व

भाईजी श्रीरामजी तापड़िया के संदर्भ में लिखने को कहे तो समझ में नहीं आता, कहां से शुरू करूं और कितना लिखूं। यदि एक शब्द में भाईजी के लिए लिखा जाये तो वह शब्द है- 'अजातशत्रु'। आपके संपर्क में जो भी आया उसने आपको अपना हितचिंतक ही समझा। जहां तक सामाजिक कार्यों के क्रियान्वयन की बात है- भाईजी कार्य के हर पहलू को बहुत बारीकी से समझते थे। किस निर्णय का कितना दूरगामी परिणाम होगा, यह सोचने-समझने की उनकी विशेषता थी।

वे हर काम को महत्वपूर्ण समझते थे। Perfection उनका मुख्य लक्ष्य रहता था। उदाहरण के लिए मण्डल के रजत जयंती एवं स्वर्ण जयंती के आयोजनों में मंच पर बैठने वाले कार्यकर्ताओं को पूर्वाभ्यास rehersal। इस निमित्त मण्डल द्वारा भेजे जाने वाले निमंत्रण पत्र, जो बड़ी संख्या में होते थे, उन्हें भी स्वयं देखने के पश्चात कूरियर करवाते थे।

इसी तरह मण्डल के महत्वपूर्ण कागजात- व्यवस्थापिका सभा तथा न्यास मण्डल के महत्वपूर्ण निर्णयों की कार्रवाई भी स्वयं देखते थे और हम साथियों से चर्चा करते थे। मुझे लम्बे समय तक आपके साथ सामाजिक कार्य करने का एवं आपसे बहुत कुछ सीखने का अवसर मिला।

आपने चुनाव की जगह चयन की जो परिपाटी मुम्बई में शुरू की,उससे भारत के अन्य भागों में माहेश्वरी ही नहीं अपितु अन्य समाज भी इसकी उपयोगिता का महत्व समझतें थे।

कार्यकर्ताओं के स्वास्थ्य के लिए वे हमेशा चिंतित रहा करते थे। समय-समय पर वे हमें स्वास्थ्य संबंधी जांच इत्यादि का आग्रह करते थे। आप हमेशा कहते थे, समाजिक कार्यकर्ता का जीवन केवल स्वयं के लिए नहीं बल्कि समाज एवं परिवार के लिए भी उनका स्वस्थ रहना अतिआवश्यक है।

कार्यकर्ताओं के प्रति आपका सदैव वात्सल्य भाव बना रहता था। नये कार्यकर्ताओं के साथ आप हमेशा अभिभावक की भूमिका निभाया करते थे, जिससे कार्यकर्ता आपको सम्मान देते थे।

मुम्बई समाज सदैव भाईजी का ऋणी रहेगा एवं उनकी स्मृति को भुला पाना हमारे लिए असंभव रहेगा।

- सत्यनारायण लोया

२४-०७-१४

श्रद्धांजलि

श्रद्धेय भाईजी श्री श्रीरामजी तापड़िया का निधन दि. २२-०७-२०१४ को हो गया है। आपका निधन माहेश्वरी समाज के लिए अपूरणीय क्षति है। मेवाड माहेश्वरी मंडल मुंबई श्री श्रीरामजी तापड़िया के निधन पर शोक संतप्त है। हम सभी परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना करते है कि दिवंगत आत्मा को प्रभुचरणों में स्थान दे एवम् शोक संतप्त परिवार को इस दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। संसार में आना जाना लगा ही रहता है किंतु कुछ बिरले ही होते है जो हमेशा याद किये जाते रहते है। श्री तापड़ियाजी उनमें से एक थे। आप निष्काम कर्मयोगी थे। आपने जीवनभर समाज की निस्वार्थ भाव से सेवा की। समाज आपके द्वारा की गई सेवाओं एवम् विचारों द्वारा समय-समय पर लाभान्वित होता रहा है। हम सभी समाज बंधु उनके द्वारा बताए हुए मार्ग का अनुसरण करते रहे और समाज की निस्वार्थ भाव से सेवा करते रहे यही दिवंगत श्री तापड़ियाजी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

।। ॐ शांति शांति ।।

मेवाड़ माहेश्वरी मण्डल, मुम्बई

गिरीराज लखोटिया, अध्यक्ष **रमेश जागेटिया, महामंत्री**

श्री श्रीरामजी तापड़िया की अविस्मरणीय घटनायें

स्व. श्री भाईजी श्रीरामजी तापड़िया कितने great (महान) थे इस विषय में दो रोचक अनुभव मैं आप सबके सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ।

(१) श्री श्रीराम भाईजी तापड़िया अपने जिन्दगी के आखिरी दिनों में Breach Candy Hospital में ICU में admit थे। उनकी condition काफी critical थी। मैं being - doctor ICU में जाने को allow (Hospital द्वारा) किया गया था। उनको oxigen एवं I.V. drip तथा अन्य अनेक equipment लगे थे। वे काफी serious थे। मैंने उनके स्वास्थ्य के विषय में कुछ पूछता उससे पहले भाईजी ने पूछा, अरे बालकिशन, बाकी भाई लोग कैसे हैं ? उनका हालचाल जानना चाह रहे थे। उनको अपनी तकलीफ की परवाह नहीं थी। इसका मतलब उनको अपनी तकलीफ से ज्यादा अपने भुवा के लड़कों के विषय में चिंता थी। यह है उनकी greatness (महानता) इसे कहते है निस्वार्थ भाव जो एक देवता ही हो सकता है।

२) मैं श्रीराम भाईजी के स्वर्गवास के बाद की एक रोचक घटना लिख रहा हूँ। एक बार मैं अपने निवास (बांगुर नगर गोरेगांव वेस्ट) से अपने भाईयों के पास (गोकुलधाम गोरेगांव ईस्ट) रिक्शे से जा रहा था क्योंकि मेरी गाड़ी service के लिये गई थी। मैंने timepass के लिहाज से रिक्शाचालक से पूछा कि तुम यह काम (रिक्शा चलाने) कब से कर रहे हो। उसने जवाब दिया यह तो काम पिछले ३-४ साल के कर रहा हूँ। उसके पहले मैं बोरीवली (highway के पास) एक सेठ के यहाँ driving करता था। उत्सुकतावश मैंने पूछा कि वहाँ किस सेठ के यहाँ काम करते थे ? उसके कहा, मैं Permanent Magnet factory के मालिक श्रीराम जी तापड़िया के यहाँ काम करता था। उसने कहा कि वे साहब तो बहुत great थे। उन्होंने अपनी factory में बहुत worker जो कि शराबी या अन्य नशा करते थे, उन्हें अपने खर्चे से एवं salary सहित ईचलकरंजी (Deaddiction Center) भेजा ताकि उस इन्सान की जिन्दगी सुधर सकें। इस दौरान उस मजदूर का पूरा खर्च वे स्वयं देते थे। यहाँ तक कि उनके परिवार में कोई बीमारी हो या शादी वगैरह हो तो Financial help भी करते थे।

मैंने जब उसे कहा कि श्रीरामजी तापड़िया का स्वर्गवास हो गया है। यह सुनते ही उस रिक्शा चालक को अत्यन्त दुख हुआ एवं उसके stearing पर हाथ काँपने लग गये। वह कितना दुखमय था यह उसका चेहरा बता रहा था। यह है श्रीराम भाईजी की greatness.

उस महान पुरुष की जितनी बड़ाई की जाये उतनी ही कम होगी। वास्तव में एक देवता थे। माहेश्वरी प्रगति मंडल के लोग उन्हें भीष्म पितामह कहते हैं।

उस महान आत्मा को अनेक प्रणाम।

- बालकृष्ण मूंधड़ा

धुंधली यादें

सौम्य व्यक्तित्व कोमल ह्रदय एवं मधुर वाणी के धनी श्री श्रीराम जी तापड़िया

जीवन गाथा शेष रह गई पा गये मुक्ति शरीर

भाई जी से मेरा परिचय मेरे पिताजी श्री मधुश्री काबरा के सानिध्य में हुआ। कभी-कभी किसी पारिवारिक प्रसंगों पर वह मुझे घर पर बुलाया करते थे एवं शादी के कार्ड इत्यादि का चुनाव करने के लिए मैं उनके घर पर जाया करता था और उनके स्वभाव अनुसार जब तक वह अपने आप में संतुष्ट नहीं हो जाते थे तब तक उस कार्य को आगे बढ़ने नहीं देते थे। बड़ी तल्लीनता से अपनी बात को बहुत ही सहज रूप से मेरे जैसे छोटे व्यक्ति के साथ भी कर लेते थे।

माहेश्वरी प्रगति मंडल के विभिन्न सामाजिक प्रसंगों एवँ कार्यक्रमों पर जब उनसे मुलाकात होती थी तब वह मेरे कंधे पर हाथ रखकर यह कहा करते थे कि रमेश क्या हालचाल है, परिवार में सब कैसे हैं, मधु की तबीयत कैसी है। तब मुझे इस बात का एहसास होता था कि भाईजी श्रीराम जी कितने विराट एवं विशाल ह्रदय के व्यक्तित्व थे। यदा-कदा उनके द्वारा लिखित लेख एवं माहेश्वरी समाज मुंबई में अनेक प्रसंगों पर अपने विचार समाज हित में रखते थे एवं बहुत ही दूरगामी दृष्टि रखकर वह बात करते थे.. अब जब उनके द्वारा दिए गए प्रेरणा सूत्र विचारों को जब पढ़ते हैं तब हमें लगता है कि माहेश्वरी प्रगति मंडल मुंबई के वह एकमात्र भीष्म पितामह थे।

हर एक छोटे से लेकर बड़े कार्यकर्ता की बातों को ध्यान पूर्वक सुनते थे एवं उनकी जिज्ञासाओं तथा मीमांसा को जब तक सामने वाला कार्यकर्ता संतुष्ट नहीं हो जाते थे तब तक उससे वार्तालाप जारी रखते थे एवं उस बात का समाधान निकलने के पश्चात ही अपनी बात को विराम देते थे।

मुझे एक प्रसंग याद आता है कि उन्होंने एक पुस्तक हमारे रीति रिवाज के प्रकाशन हेतु मेरे कंधे पर भार दिया था और वह एक एक शब्दों को, कोमा,फुलस्टॉप, मात्राओं का इतनी बारीकी एवं गहराई से ध्यान देते थे। कहीं बार तो मैं उनसे बात करके थक जाता था, लेकिन उनके स्वभाव अनुसार जब तक वह अपने आप से संतुष्ट नहीं होते थे वह आगे बढ़ते ही नहीं थे। पुस्तक का प्रकाशन जब अंतिम चरण पर था तब उन्होंने मुझसे कहा कि मैं स्वयं कंप्यूटर पर बैठूंगा जहां पर तुम काम करवा रहे हो, उसके घर पर चलूंगा और एक एक पेज को मैं स्वयं देख कर ही वही पर फाइनल करूंगा। मैं उन्हें बोला बाबूजी आप कहां (कलवा) चलेंगे बहुत छोटी जगह है जहां पर यह कार्य हो रहा था और आप इतने बड़े ...आपका वहां चलना उचित नहीं है।

मैं स्वयं ही उनको आपके यहां पर ले कर आता हूं। तब उन्होंने बड़ी सहजता से मुझे कहा नहीं रमेश काम कभी भी कोई छोटा या बड़ा नहीं होता है मैं स्वयं आऊंगा और तुम मेरे साथ चलना और मुझे याद है कि वह पूरे दिन वैशाली जी बापट के घर पर रुके और इस पुस्तक का कार्य पूर्ण किया और वहीं पर बैठकर घर से लाए हुए टिफिन का खाना खाया। यह सब देख कर मैं भी हतप्रत सा हो गया और मन ही मन यह सोचने लगा की उनके विचार विशाल समुद्र थे जो मेरे जैसे छोटे व्यक्ति के ह्दय की गहराई तक छू गए। उनसे मेरी अंतिम मुलाकात अप्रैल २०१४ में हुई जब वे मुझे मेरे बाबूजी श्री मधु श्री काबरा के देहावसान के पश्चात मेरे घर पर मुझे मिलने के लिए आए एवं लगभग १ घंटे तक मेरे से मेरे पिताजी के उनके साथ बीते उन संस्मरणों की बात कही जहा पर वे आदरणीय भाईजी के पास नौकरी में थे. आदरणीय भाईजी ने उनके साथ बीती हुई बातों का उल्लेख किया। उन बातों के संस्मरण को उन्होंने मुझे विस्तार से बताया तथा यह भी कहा कि मधु विचारों से उग्र जरूर था लेकिन

स्वभाव से बड़ा निर्मल था। और मुस्कुराते हुए मुझे कहां की वो अपने विचारों को मेरे यहां पर नौकरी करते हुए भी मेरे खिलाफ भी अपने विचारों को प्रकट कर देता था और समाज प्रवाह में छाप भी देता था। आगे यह भी कहा कि माहेश्वरी महासभा के विचारों से लेकर काफी गहमागहमी जब चलती थी और लोग मुझे यह कहा करते थे कि मधु आपके पास नौकरी करता है उसे नौकरी से आप निकाल दे। तब मैं यह कहा करता था कि जहां तक नौकरी का सवाल है वह अपना काम पूरा करता है और रही बात विचारों की तो मैं किसी के विचारों के ऊपर अपने विचार नहीं थोप सकता हूं। यह सुनकर मैं भी आश्चर्य प्रकट किया कि वास्तव में भाईजी एक देवतुल्य ऋषि थे। कितने महान विचार थे उनके। ऐसे ऋषि तुल्य मनीषी भाईजी हमारे मुंबई समाज के भीष्म पिता थे। इनका एक ही मूल मंत्र था संगठित समाज ही स्वतंत्रता का अमृत कुंड है। और उनके ही दिए गए सिधान्तों और विचारों पर माहेश्वरी प्रगति मंडल मुंबई समाज पुरे भारत वर्ष में उन्हीं की प्रेरणा तथा पद चिन्हों पर अग्रसर हो रहा है।

रमेश काबरा

सम्पादक - 'समाज प्रवाह'

आदरणीय बाबूजी

चरण स्पर्श बाबूजी। आपसे मेरा संबंध करीब १७ साल से ज्यादा का रहा है। इन १७ सालों में मेरी छोटी समझ या जो मैंने देखा है कि आप एक पीपल के वृक्ष के समान हैं जिसके प्रभाव के स्पर्श से अन्त: चेतना पुलकित और प्रफुल्लित होती हैं। एक ऐसा वृक्ष है जो गर्मी में शीतलता और सर्दी में उष्णता प्रदान करता है। आप में भी क्रोध को जीतने की शीतलता है। मैंने बहुत कम ही या ना के बराबर क्रोध करते हुए देखा है। जिस तरह पीपल के वृक्ष में उसका पुष्प गुप्त रहता है ठीक उसी तरह आप भी अपने दुख को गुप्त रखते हैं किसी दूसरे व्यक्ति के दुख को आप अपना दुख समझ कर उसे हल करने की कोशिश करते हैं। पीपल का वृक्ष हमें हमेशा कर्म करने की शिक्षा देता है। आप भी उसी तरह कर्म पर विश्वास रखते है फल की चिन्ता नहीं करते हैं। जब अन्य वृक्ष शांत हो पीपल की पत्तियां तब भी हिलती रहती है। इससे इस गतिशील प्रकृति के कारण इसे चल वृक्ष भी कहते है। ठीक उसी तरह आप भी चल वृक्ष है, जो कभी भी शांत नहीं रह सकते। कुछ न कुछ हमेशा करने की ललक रहती है। पीपल का वृक्ष का विस्तार, फैलाव तथा ऊँचाई व्यापक और विशाल होती है। आप में भी है उदाहरण तापड़िया फैमिली, इगतपुरी किचन स्टाफ, माहेश्वरी प्रगति मण्डल के ६००० मेम्बर, ६००० कार्यकर्ता को एक सूत्र में पिरोकर रखना वह भी इतने वर्षों से एक विस्तार, फैलाव, ऊर्जा, ऑक्सीजन व व्यापक ही तो है। आप उम्र के ८५ वर्ष पूरे करने के बाद भी पीपल के पेड़ की तरह गतिशील है जो कभी नहीं ठहरता। बस चलना ही उसका काम है।

दूसरी तरफ बाईजी है जो आप के साथ दूसरी तरफ खड़ी होकर एक बरगद के पेड़ के समान है। आज भी बरगद के वृक्ष को ग्रामीण जीवन का केन्द्र बिन्दु माना जाता है। आज भी गांव की परिषद इसी पेड़ की छाया में पंचायत करती है। बाईजी भी आज के नये जमाने में ग्रामीण जीवन जीते हुये अपनी मातृ छाया प्रदान कर रही है। जो भी इस छाया के नीचे आया उसे सिर्फ ममतामय छाया ही मिली है। इसलिये मेरी नजर में आप और बाईजी पीपल और बरगद पेड़ के समान है जो कभी किसी से लिया नहीं, देना ही जीवन है।

- संतोष झा

(भाईजी का निजी सहायक)